इति विषयानुक्रमणिका।

वास्तुप्रकरणम् ।

इति विषयानुक्रमणिका।

परमावश्यक-निवेदन

वाराणसी, कलकत्ता, पटना, दरभंगा आदि की राजकीय संस्कृत परीक्षा की पाठ्य पुस्तकों के सम्बन्ध में शीघ्रताशीघ्र निम्नलिखित पते पर पत्र लिखें—

मेरे यहाँ हर एक विषय की प्रथमा परीक्षा से लेकर शास्त्री तथा आचार्य परीक्षा तक की पुस्तकें संस्कृत और हिन्दी टीका के साथ सर्वदा प्रस्तुत रहा करती हैं। दिन दूनी रात चौगुनी महर्घता के इस कराल कलिकाल में भी पुस्तकों के मूल्य को न बढ़ाते हुए उसमें काफी कमी कर दी गई है। छपाई सर्वाङ्ग सुन्दर, कागज चिकना, सफेद और टिकाऊ, बेजोड़ शुद्धता, गेट-अप मनोमोहक आदि के रखते हुए संस्कृत के विशेष प्रचार की सद्भावना से परीक्षार्थी बन्धुओं को अन्य सभी बुकसेलरों की अपेक्षा कमीशन बहुत अधिक दिया जाता है।

इसलिये नीचे लिखे पते पर आर्डर भेज कर एक बार अवश्य परीक्षा करें।

ठाकुरप्रसाद एण्ड सन्स बुकसेलर,

राजादरवाजा, ब्राञ्च–कचौड़ीगली,

वाराणसी।

❀ अथ ❀

मुहूर्तचिन्तामणिः

सान्वय-सुबोधभाषाटीका-सहितः।

तत्रादौ प्रथमं शुभाशुभप्रकरणमारभते

मङ्गलाचरणार्या

गणपतिपादयुगलममरगिरां देवीम्प्रणम्य चादौ
ज्योतिर्वित्परितुष्ट्यै मौहूर्तिकाम्भोधिमामथ्य ॥
दैवज्ञवाचस्पति--श्रीमद्विनायकशास्त्रिवेताल--
श्रीचन्द्रदेवदीक्षित-"घाटे" श्रीमहादेवशास्त्रि--
प्रभृतिसद्गुरुत्रितयीं ध्यायं ध्यायं सनति नमोवाकम्।
यागेश्वरो वितनुते मुहूर्तचिन्तामणिव्याख्याम् ॥

ग्रन्थकारकृतं मङ्गलाचरणम्

गौरीश्रवःकेतकपत्रभङ्गमाकृष्य हस्तेन ददन्मुखाग्रे।
विघ्नं मुहूर्ताकलितद्वितीयदन्तप्ररोहो हरतु द्विपास्यः ॥

(अन्वयः) मुहूर्ताकलितद्वितीयदन्तप्ररोहः द्विपास्यः हस्तेन गौरीश्रवः-केतकपत्रभङ्गम् आकृष्य मुखाग्रे ददन् विघ्नं हरतु ॥ १ ॥

(हिन्दी) भगवती पार्वतीके कानोंमें शोभाके लिये अलंकारकी तरह लगाये हुए केवड़ेके फूलके टुकड़ेको हस्त (सूँड) से खींचकर मुखके अग्रभागमें लगाने पर उत्पन्न हुए दूसरे दाँतका थोड़ी देरके लिये भ्रम करानेवाले श्रीगणेशजी प्रस्तुत ग्रन्थके समाप्त होनेमें उपस्थित होनेवाले विघ्नोंका नाश करें ॥ १ ॥

इस श्लोकमें गणेशजीको द्विपास्यकी उपमा दी गई है, पर द्विप (हाथी) द्विदन्त है और गणेशजी एकदन्त हैं, इस पारस्परिक असंगतिको सुसंगत करनेके लिये ही मानो अपनी लोकोत्तर सूझसे कविने दाँतकी जगह केतकीपुष्पके टुकड़ेकी कल्पना द्वारा उनका द्विदन्तत्व सिद्ध करनेका प्रयत्न किया है।

गणेशजीके 'द्विपास्य' नामके सम्बन्धमें भी पौराणिकी संक्षिप्त कथा यह है कि :—

गणेश जन्मके सुअवसरपर आशीर्वाद देनेके लिये और-और देवताओं के साथ आँखों पर पट्टी बाँधकर शनि भगवान् भी आये। श्रीपार्वतीजी के आग्रहसे उन्होंने आँखोंकी पट्टी खोलकर आशीर्वाद दिया पर इसका परिणाम यह हुआ कि पट्टीके खुलते ही श्रीगणेशजीका गलेसे ऊपरका भाग खण्डित हो गया। जो कोई शनि भगवान्के दृष्टिपथमें आते हैं, वे शिरोविहीन होते हैं ऐसी प्रसिद्धि भी है। इसके बाद अपने पुत्रकी इस अवस्थाको देखकर शोकातुरा पार्वती विष्णुके निकट आई। पार्वतीके इस असह्य दुःखको देखकर विष्णु भगवान्ने जिस किसीके भी शिरको लाकर गणेशजीके मस्तक पर उसे बैठा देनेका निश्चय किया। उस समय वहाँ समीपही में हाथीका बच्चा दिखाई दिया, बस, उसीको मारकर गणेशजीके गले पर उसका मस्तक बैठा दिया उसी समयसे इनका द्विपास्य नाम पड़ा।

(ब्रह्मवैवर्त-गणेशजन्मखण्ड)

ग्रन्थका विषय और नामनिरूपण—

क्रियाकलापप्रतिपत्तिहेतुं संक्षिप्तसारार्थविलासगर्भम् ।
अनन्तदैवज्ञसुतः स रामो मुहूर्त्तचिन्तामणिमातनोति ॥२॥

अन्वयः—अनन्तदैवज्ञसुतः सः रामः क्रियाकलापप्रतिपत्तिहेतुं संक्षिप्तसारार्थविलासगर्भं मुहूर्तचिन्तामणिम् आतनोति ॥ २ ॥

भाषा—सुप्रसिद्ध अनन्त दैवज्ञके पुत्र रामाचार्य, जातकर्म नामकरण आदि समस्त संस्कार समूहके कालज्ञानके कारणीभूत और सारभूत विशेष अर्थसे भरे थोड़े शब्दोंमें मुहूर्तचिन्तामणि नामक ग्रन्थको बनाते हैं ॥ २ ॥

क्रमानुसार प्रतिपदादि तिथियोंके स्वामी—

तिथीशा वह्निकौ गौरी गणेशोऽहिर्गुहो रविः ।
शिवो दुर्गान्तको विश्वे हरिः कामः शिवः शशी ॥ ३ ॥

अन्वयः—वह्निकौ गौरी गणेशः अहिः गुहः रविः शिवः दुर्गा अन्तकः विश्वे हरिः कामः शिवः शशी एते (क्रमेण) तिथीशाः भवन्ति ॥ ३ ॥

भा०—अग्नि, ब्रह्मा, गौरी, गणेश, सर्प, कार्तिकेय, सूर्य, शिव, दुर्गा, यम, विश्वेदेव, विष्णु, कामदेव, शिव और चन्द्रमा ये क्रमसे प्रतिपदादि तिथियोंके स्वामी हैं ॥

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	तिथयः
अग्नि	ब्रह्मा	गौरी	गणेश	सर्प	कार्तिकेय	रवि	शिव	दुर्गा	यम	विश्वेदेव	हरि	काम	शिव	शशी	ईशाः

नन्दादिसंज्ञा और सिद्धयोग*

नन्दा च भद्रा च जया च रिक्ता पूर्णेति तिथ्योऽशुभमध्यशस्ताः ।
सितेऽसिते शस्तसमाधमाः स्युः सितज्ञभौमार्किगुरौ च सिद्धाः ।४।

वाराः	नन्दादयः	तिथयः
शुक्रवार	नन्दा	१–६–११
बुधवार	भद्रा	२–७–१२
मंगलवार	जया	३–८–१३
शनिवार	रिक्ता	४–९–१४
गुरुवार	पूर्णा	५–१०–१५

अन्वयः—सिते (शुक्ले पक्षे) नन्दा च भद्रा च जया च रिक्ता पूर्णा इति (त्रिरावृत्य) तिथ्यः अशुभ-मध्य-शस्ता ज्ञेयाः । असिते (कृष्णे पक्षे) शस्तसमाधमाः स्युः । तथा सितज्ञभौमार्किगुरौ च सिद्धाः (सिद्धियोगा भवन्ति) ।।४।

भा०—शुक्लपक्षकी प्रतिपदासे पन्द्रहों तिथियाँ क्रमसे नन्दा, भद्रा, जया, रिक्ता तथा पूर्णा संज्ञा कहलाती है। जैसे प्रतिपद् नन्दा, द्वितीया भद्रा, तृतीया जया, चतुर्थी रिक्ता, पंचमी पूर्णा संज्ञक है। इसी प्रकार आगे समझना चहिये, अर्थात् १।६।११ नन्दा, २।७।१२ भद्रा, ३।८।१३ जया, ४।९।१४ रिक्ता, ५।१०।१५ पूर्णा । यहाँ पूर्णामें पूर्णिमा और अमावस्या दोनों का ग्रहण करना चाहिये। ये तिथियाँ शुक्लपक्षमें पहले अशुभ, फिर मध्यम और फिर शुभ होती हैं। कृष्णपक्षमें पहले शुभ, फिर मध्यम, अन्तिम अशुभ है। शुक्रमें नन्दा, बुधमें भद्रा, मंगलमें जया, शनिमें रिक्ता, गुरुमें पूर्णा ये सिद्धयोग हैं ।। ४ ।।

*जैसा कि कश्यप और वसिष्ठने भी कहा है कि—

नन्दा तिथिः शुक्रवारे सौम्ये भद्रा कुजे जया ।
रिक्ता मन्दे गुरोर्वारे पूर्णा सिद्धाह्वया तिथिः ।।
शुक्रज्ञगुरुमन्देज्यवारा नन्दादिषु क्रमात् ।
सिद्धा तिथिः सिद्धिदा स्यात्सर्वकार्येषु सर्वदा ।।

तिथि	१, २, ३, ४, ५,	६, ७, ८, ९, १०,	११, १२, १३, १४, १५
शुक्ल	अशुभ	मध्यम	शस्त
कृष्ण	शस्त	मध्यम	अधम

रवि आदि वारोंमें मृत तिथि तथा दग्ध नक्षत्र—

नन्दाभद्रानन्दिकाख्या जया च रिक्ता भद्रा चैव पूर्णा मृतार्कात् ।
याम्यं त्वाष्ट्रं वैश्वदेवं धनिष्ठार्यम्णं ज्येष्ठान्त्यं रवेर्दग्धभं स्यात् ॥५॥

अन्वयः—अर्कात् 'आरभ्य क्रमेण' नन्दा भद्रा नन्दिकाख्या जया रिक्ता भद्रा पूर्णा च मृता स्यात् । रवेः याम्यं त्वाष्ट्रं वैश्वदेवं धनिष्ठा अर्यम्णं ज्येष्ठा अन्त्यं दग्धभं स्यात् ॥ ५ ॥

भा०—रविसे आरम्भ कर सातो दिनमें जैसे—रविमें नन्दा, सोममें भद्रा, मंगलमें नन्दा, बुधमें जया, गुरुमें रिक्ता, शुक्रमें भद्रा, शनिमें पूर्णा, यदि हो तो ये अशुभ योग होते हैं। अब नक्षत्रवशसे अधम योग कहते हैं—रविमें भरणी, सोममें चित्रा, मंगलमें उत्तराषाढ़ा, बुधमें धनिष्ठा, गुरुमें उत्तराफाल्गुनी, शुक्रमें ज्येष्ठा और शनिमें रेवती हो तो ये दग्ध योग हैं ॥ ५ ॥

अधमयोग—

षष्ठ्यादितिथयो मन्दाद् विलोमं प्रतिपद् बुधे ।
सप्तम्यर्केऽधमाः षष्ठ्याद्यामाश्च रदधावने ॥ ६ ॥

अन्वयः—मन्दात् शनिवासरात् विलोमं (विपरीतक्रमेण) षष्ठ्यादितिथयः, अधमा भवन्ति । बुधे प्रतिपत्, अर्के सप्तमी 'अधमा भवति' षष्ठ्याद्यामाः रदधावने अधमा ज्ञेयाः ॥ ६ ॥

भा०—षष्ठीसे द्वादशी तककी तिथिको शनिवारसे उल्टा दिनोंमें गिने, जैसे शनिमें षष्ठी, शुक्रमें सप्तमी, गुरुमें अष्टमी, बुधमें नवमी, मङ्गलमें दशमी, सोममें एकादशी और रविमें द्वादशी हो तो अधम योग कहा गया है, तथा बुधको प्रतिपदा, रविको सप्तमी ये संवर्त योग नामसे प्रसिद्ध अधम योग है। ६।१।३० षष्ठी, प्रतिपत् और अमावस्या ये तीनों तिथियाँ दन्तधावनमें निषिद्ध हैं ॥ ६ ॥

कार्यविशेषमें निषिद्ध तिथि—

षष्ठ्यष्टमीभूतविधुक्षयेषु नो सेवेत ना तैलपले क्षुरं रतम् ।
नाभ्यञ्जनंविश्वदशद्विके तिथौ धात्रीफलैः स्नानममाद्रिगोष्वसत् ७

अन्वयः—षष्ठ्यष्टमीभूतविधुक्षयेषु तिथिषु क्रमेण ना पुरुषः तैलपले क्षुरं रतं नो सेवेत । विश्वदशद्विके तिथौ अभ्यञ्जनं (उद्वर्तनम्) न, अमाद्रिगोषु (३०।७।९) तिथिषु धात्रीफलैः स्नानं असत् अशुभमुक्तम् ॥ ७ ॥

भा०—षष्ठी, अष्टमी, चतुर्दशी, अमावस्या, इन तिथियोंमें पुरुष क्रमसे तैल, मांस, क्षौर और मैथुन न करे। और द्वितीया, त्रयोदशी, दशमीमें उबटन न लगावे, अमावस्या, सप्तमी, एवं नवमीको आँवला लगाकर स्नान नहीं करना चाहिये ॥ ७ ॥

दग्ध, विष, हुताशन और यमघण्ट योग—

सूर्येशपञ्चाग्निरसाष्टनन्दा वेदांगसप्ताश्विगजाङ्कशैलाः ।
सूर्याङ्गसप्तोरगगोदिगीशा दग्धा विषाख्याश्च हुताशनाश्च ॥ ८ ॥
सूर्यादिवारे तिथयो भवन्ति मघाविशाखाशिवमूलवह्नि ।
ब्राह्मं करोऽर्काद्यमघण्टकाश्च शुभे विवर्ज्या गमने त्ववश्यम् ॥ ९ ॥

अन्वयः—सूर्यादिवारे 'क्रमेण' सूर्येशपञ्चाग्निरसाष्टनन्दाः, वेदांगसप्ताश्विगजांकशैलाः, सूर्याङ्गसप्तोरगगोदिगीशाः एतास्तिथयः यथाक्रमं, दग्धाः, विषाख्याः, हुताशनाः, योगाः, 'स्युः' । च (पुनः) मघाविशाखाशिवमूलवह्नि ब्राह्मं करः (हस्तः) यमघण्टकाः भवन्ति (एते योगाः) शुभे विवर्ज्याः, गमने तु अवश्यं विवर्ज्याः ॥ ८–९ ॥

भा०—सूर्यादि वारोंमें क्रमसे सूर्य द्वादश हैं, इसलिये सूर्य शब्द-से द्वादशी, ईशा=एकादशी, पञ्चमी, अग्नि=तृतीया, रस=षष्ठी, अष्टमी और नवमी ये सात तिथियाँ पड़ें तो दग्धयोग माना गया है। चतुर्थी, षष्ठी, सप्तमी, द्वितीया, अष्टमी, नवमी और सप्तमी ये सात तिथियाँ भी रव्यादि वारोंमें क्रमसे पड़ें तो विषनामक योग होता है। इसी तरह द्वादशी, षष्ठी, सप्तमी, अष्टमी, नवमी, दशमी, और एका-दशी रवि आदिवारोंमें क्रमसे पड़े तो हुताशन योग होता है। अब नक्षत्रवशसे यमघण्ट योग कहते हैं। रव्यादि वारोंमें क्रमसे, मघा, विशाखा, शिव=आर्द्रा, मूल, वह्नि=कृत्तिका, ब्राह्म=रोहिणी, कर= हस्त ये नक्षत्र पड़ें तो यमघण्ट योग होता है। ये चारों योग, शुभ कार्यमें त्याज्य हैं परन्तु यात्रामें तो अवश्य ही छोड़ देने चाहिये॥८-९॥

चैत्रादिक मासों में शून्य तिथियाँ—

भाद्रे चन्द्रदृशौ नभस्यनलनेत्रे माधवे द्वादशी
पौषे वेदशरा इषे दशशिवा मार्गेऽद्रिनागा मधौ ।
गोऽष्टौ चोभयपक्षगाश्च तिथयः शून्या बुधैः कीर्तिताः
ऊर्जाषाढतपस्यशुक्रतपसां कृष्णे शरांगाब्धयः ॥१०॥
शक्राः पञ्च सिते शक्राद्र्यग्निविश्वरसाः क्रमात् ।

अन्वयः—भाद्रे चन्द्रदृशौ, नभसि श्रावणे अनलनेत्रे, माधवे (वैशाखे) द्वादशी, पौषे वेदशराः, इषे (आश्विने) दशशिवाः, मार्गे अद्रिनागाः, मधौ गोऽष्टौ, उभय-पक्षगाः (एताः) तिथयः बुधैः शून्याः कीर्तिताः। ऊर्जाषाढतपस्यशुक्रतपसां कृष्णे क्रमात् शरांगाब्धयः शक्राः पञ्च, सिते शक्राद्र्यग्निविश्वरसाः तिथयः शून्याः कीर्तिताः ॥ १० ॥

भा०—भाद्रपदमासकी प्रतिपदा द्वितीया, श्रावणमें तृतीया द्वितीया,

वैशाखमें द्वादशी, पौषमें चतुर्थी पञ्चमी, आश्विनमें दशमी एकादशी, मार्गशीर्षमें सप्तमी अष्टमी, चैत्रमें नवमी अष्टमी ये तिथियाँ कृष्ण और शुक्ल दोनों पक्षमें शून्य कही गयी हैं। अब विशेष कार्तिक, आषाढ़, फाल्गुन, ज्येष्ठ और माघके कृष्णपक्षमें क्रमसे पञ्चमी, षष्ठी, चतुर्थी, चतुर्दशी, पञ्चमी और शुक्लपक्षमें चतुर्दशी, सप्तमी, तृतीया, त्रयोदशी, षष्ठी ये तिथियाँ क्रमसे शून्य कही गयी हैं ॥ १० ॥

तिथि और नक्षत्रके सम्बन्धसे निन्द्य दिवस—

तथा निन्द्यं शुभे सार्पं द्वादश्यां वैश्वमादिमे ॥११॥
अनुराधा द्वितीयायां पञ्चम्यां पित्र्यभं तथा।
त्र्युत्तराश्च तृतीयायामेकादश्यां च रोहिणी ॥१२॥
स्वातीचित्रे त्रयोदश्यां सप्तम्यां हस्तराक्षसे।
नवम्यां कृत्तिकाऽष्टम्यां पूभा षष्ठ्यां च रोहिणी ॥१३॥

अन्वयः—तथा शुभे (मंगले कार्ये) द्वादश्यां सार्पं, आदिमे वैश्वम्, निन्द्यम्। द्वितीयायां अनुराधा, पञ्चम्यां पित्र्यभम्, तृतीयायां त्र्युत्तरा, एकादश्यां रोहिणी, त्रयोदश्यां स्वातीचित्रे, सप्तम्यां हस्तराक्षसे, नवम्यां कृत्तिका, अष्टम्यां पूभा (पूर्वभाद्रपदा) षष्ठ्यां रोहिणी निन्द्या भवति ॥ ११-१२-१३ ॥

भा०—हर एक शुभकार्यमें द्वादशी तिथिमें आश्लेषा, प्रतिपदामें उत्तराषाढ़ा, द्वितीयामें अनुराधा, पञ्चमीमें मघा, तृतीयामें तीनों उत्तरा—उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपदा, एकादशीमें रोहिणी, त्रयोदशीमें स्वाती और चित्रा, सप्तमीमें हस्त, मूल, नवमीमें कृत्तिका, अष्टमीमें पूर्वाभाद्रपद और षष्ठीमें रोहिणी ये निन्द्य हैं, अतः इन्हें मंगल कार्यमें छोड़ देना चाहिये ॥ ११–१३ ॥

चैत्रादि मासपरत्वेन शून्य नक्षत्र—

कदास्रभे त्वाष्ट्रवायू विश्वेज्यौ भगवासवौ।
वैश्वश्रुती पाशिपौष्णे अजपादग्निपित्र्यभे ॥१४॥
चित्राद्वीशौ शिवाश्व्यर्काः श्रुतिमूले यमेन्द्रभे।
चैत्रादिमासे शून्याख्यास्तारा वित्तविनाशदाः ॥१५॥

अन्वयः—चैत्रादिमासे क्रमशः कदास्रभे, त्वाष्ट्रवायू, विश्वेज्यौ, भगवासवौ, वैश्वश्रुती, पाशिपौष्णे, अजपात्, अग्निपित्र्यभे, चित्राद्वीशौ, शिवाश्व्यर्काः, श्रुतिमूले, यमेन्द्रभे 'एताः' यदि भवेयुः, तदा ताराः वित्तविनाशदाः शून्याख्याः भवन्ति ॥ १४–१५ ॥

भा०—चैत्र आदि मासों में क्रमसे रोहिणी और अश्विनी, वैशाख में चित्रा और स्वाती, ज्येष्ठ में उत्तराषाढ़ा और पुष्य, आषाढमें पूर्वाफाल्गुनी और धनिष्ठा, श्रावणमें उत्तराषाढ़ा और श्रवण, भाद्रमें

शततारका और रेवती, आश्विनमें पूर्वाभाद्रपदा, कार्तिकमें कृत्तिका मघा, मार्गशीर्षमें चित्रा विशाखा, पौषमें आर्द्रा अश्विनी और हस्त, माघमें श्रवण और मूल, फाल्गुनमें भरणी और ज्येष्ठा ये नक्षत्र शून्य कहे गये हैं इनमें किया हुआ कार्य धनको नाश करने वाला कहा जाता है ॥ १४-१५ ॥

मासों की शून्य राशियाँ—

घटो झषो गौर्मिथुनं मेषकन्यालितौलिनः ।
धनुः कर्को मृगः सिंहश्चैत्रादौ शून्यराशयः ॥ १६ ॥

अन्वय-घटः, झषः, गौः, मिथुनं, मेषकन्यालितौलिनः, धनुः, कर्कः, मृगः, सिंहः, चैत्रादौ मासेषु (यथाक्रमं) शून्यराशयः (भवन्ति) ॥ १६ ॥

भा०—चैत्रमें कुम्भ, वैशाखमें मीन, ज्येष्ठमें वृष, आषाढ़में मिथुन, श्रावणमें मेष, भाद्रपदमें कन्या, आश्विनमें वृश्चिक, कार्तिकमें तुला, अगहनमें धनु, पौषमें कर्क, माघमें मकर, और फाल्गुनमें सिंह ये राशियाँ शून्य कही गई हैं अर्थात् इनमें शुभकार्य न करे ॥ १६ ॥

विषम तिथियोंमें दग्ध लग्न—

पक्षादितस्त्वोजतिथौ घटैणौ मृगेन्द्रनक्रौ मिथुनांगने च ।
चापेन्दुभे कर्कहरी हयान्त्यौ गोऽन्त्यौ च नेष्टे तिथिशून्यलग्ने॥१७॥

अन्वयः—पक्षादितः ओजतिथौ क्रमेण घटैणौ, मृगेन्द्रनक्रौ, मिथुनांगने, चापेन्दुभे, कर्कहरी, हयान्त्यौ, गोऽन्त्यौ, तिथिशून्यलग्ने नेष्टे भवतः ॥ १७ ॥

भा०—दोनों पक्षोंकी आदिसे विषम तिथियोंमें क्रमसे जैसे प्रतिपदामें तुला और मकर, तृतीयामें सिंह और मकर, पञ्चमीमें मिथुन और कन्या, सप्तमीमें धनु और कर्क, नवमीमें कर्क और सिंह, एकादशीमें धनु और मीन, त्रयोदशीमें वृष और मीन, इन-इन तिथियोंमें कहे हुए लग्नोंको दग्धलग्न कहा गया है, इनमें मंगल कार्य नहीं करना चाहिये ॥ १७ ॥

दुष्टयोगोंका परिहार—

तिथयो मासशून्याश्च शून्यलग्नानि यान्यपि ।
मध्यदेशे विवर्ज्यानि न दूष्याणीतरेषु तु ॥ १८ ॥

अन्वयः—मासशून्याः तिथयः, अपि च यानि शून्यलग्नानि तानि मध्यदेशे* विवर्ज्यानि इतरेषु (अन्यदेशेषु) तु न दूष्याणि भवन्ति ॥ १८ ॥

भा०—भाद्रे चन्द्रदृशौ और पक्षादितस्त्वोजतिथौ इन श्लोकों द्वारा

*मनुस्मृतौ यथा—हिमवद्विन्ध्ययोर्मध्यं यत्प्राग्विनशनादपि ।
प्रत्यगेव प्रयागाच्च मध्यदेशः प्रकीर्तितः ॥
वाराहसंहितायामपि यथा "मद्रारिमेदमाण्डव्यशाल्वनीपोज्जिहानसंख्यानाः ।
मरुवत्सी-घोष-यामुन-सारस्वत-मत्स्य-माध्यमिकाः ॥

यथाक्रम कही गई मासशून्य तिथियाँ तथा शून्य लग्न मध्यदेशमें वर्जित हैं अन्य देशमें नहीं ॥ १८ ॥

शुभ कृत्य करनेकी आवश्यकता पड़नेपर पङ्गु आदि लग्न और राशियोंका परिहार—

पङ्ग्वन्धकाणलग्नानि मासशून्याश्च राशयः ।
गौडमालवयोस्त्याज्या अन्यदेशे न गर्हिताः ॥ १९ ॥

अन्वयः—पंग्वन्धकाणलग्नानि मासशून्या राशयः एते गौडमालवयोः देशयोः त्याज्याः अन्यदेशे गर्हिताः न भवन्ति ॥ १९ ॥

भा०—पंगु, अन्ध तथा काण लग्न और मासोंमें कही हुई शून्य राशियाँ गौड़ और मालव देशमें त्याज्य हैं, अन्य देशमें नहीं ॥ १९ ॥

तिथि-नक्षत्र और वार तीनोंके योगसे अशुभत्व—

वर्जयेत् सर्व्वकार्य्येषु हस्तार्कं पञ्चमीतिथौ ।
भौमाश्विनीञ्च सप्तम्यां षष्ठ्यां चन्द्रैन्दवं तथा ॥ २० ॥
बुधानुराधामष्टम्यां दशम्यां भृगुरेवतीम् ।
नवम्यां गुरुपुष्यञ्चैकादश्यां शनिरोहिणीम् ॥ २१ ॥

अन्वयः—पंचमीतिथौ हस्तार्कं, सप्तम्यां भौमाश्विनीम्, षष्ठ्यां चन्द्रैन्दवं, अष्टम्यां बुधानुराधां, दशम्यां भृगुरेवतीं, नवम्यां गुरुपुष्यं, च एकादश्यां शनिरोहिणीं सर्वकार्येषु वर्जयेत् ॥ २०–२१ ॥

भा०—यदि पञ्चमीको हस्त नक्षत्र तथा रविवार हो तो वह शुभ कर्मोंमें त्याज्य है। उसी प्रकार सप्तमीको अश्विनी नक्षत्र मङ्गलवार, षष्ठीको मृगशिरा नक्षत्र सोमवार, अष्टमीको अनुराधा नक्षत्र बुधवार, दशमीको शुक्रवार और रेवती, नवमीको गुरुवार, और पुष्य नक्षत्र, एकादशीको रोहिणी नक्षत्र शनिवार हो तो ये योग सभी कार्योंमें त्याज्य हैं। इनको त्रितयज कुयोग कहते हैं ॥ २०–२१ ॥

गृहप्रवेशे यात्रायां विवाहे च यथाक्रमम् ।
भौमाश्विनीं शनौ ब्राह्मं गुरौ पुष्यं विवर्जयेत् ॥ २२ ॥

अन्वयः—गृहप्रवेशे यात्रायां विवाहे च यथाक्रमं भौमाश्विनीं, शनौ ब्राह्मं, गुरौ पुष्यं विवर्जयेत् ॥ २२ ॥

भा०—गृहप्रवेशमें यात्रामें तथा विवाहमें यथाक्रम मङ्गलवारमें अश्विनीनक्षत्र, शनिवारमें रोहिणीनक्षत्र, गुरुवारमें पुष्यनक्षत्रको त्याग देना चाहिये ॥ २२ ॥

आनन्दादि २८ योग—

आनन्दाख्यः कालदण्डश्च धूम्रो
धाता सौम्यो ध्वांक्षकेतू क्रमेण ।

श्रीवत्साख्यो वज्रकं मुद्गरश्च
छत्रं मित्रं मानसं पद्मलुम्बौ ॥ २३ ॥
उत्पातमृत्यू किल काणसिद्धी
शुभोऽमृताख्यो मुसलं गदश्च।
मातंगरक्षश्चरसुस्थिराख्य-
प्रवर्धमानाः फलदाः स्वनाम्ना ॥ २४ ॥

अन्वयः—आनन्दाख्यः कालदण्डः च पुनः धूम्रः धाता सौम्यः ध्वांक्षकेतू श्रीवत्साख्यः वज्रकं च (पुनः) मुद्गरः छत्रं मित्रं मानसं पद्मलुम्बौ उत्पातमृत्यू किल काणसिद्धी शुभः अमृताख्यः मुसलं गदः मातंगरक्षश्चरसुस्थिराख्यप्रवर्धमानाः एते सर्वे योगाः स्वनाम्ना फलदाः भवन्ति ॥ २३–२४ ॥

भा०—आनन्द, कालदण्ड, धूम्र, धाता, सौम्य, ध्वांक्ष, केतु, श्रीवत्स, वज्र, मुद्गर, छत्र, मित्र, मानस, पद्म, लुम्ब, उत्पात, मृत्यु, काण, सिद्धि, शुभ, अमृत, मुसल, गद, मातंग, रक्ष, चर, सुस्थिर तथा प्रवर्द्धमान ये अट्ठाइस योग अपने अपने नामके सदृश फल देनेवाले होते हैं ॥ २३–२४ ॥

योगचक्रम्।

सं.	यो.	रवि.	चंद्र	मंगल	बुध	बृहस्प.	शुक्र	शनि	फल
१	आनंद	अश्वि.	मृग	श्लेषा	हस्त	अनुरा.	उ.षा.	शत.	सिद्धि
२	काल	भरणी	आर्द्रा	मघा	चित्रा	ज्येष्ठा	अभि.	पू.भा.	मृत्यु
३	धूम्र	कृत्ति.	पुनर्व.	पू.फा.	स्वाती	मूल	श्रवण	उ.भा.	असुख
४	धाता	रोहि.	पुष्य	उ.फा.	विशा.	पू.षा.	धनि.	रेवती	सौभाग्य
५	सौम्य	मृग.	श्लेषा	हस्त	अनुरा.	उ.षा.	शत.	अश्वि.	बहुसुख
६	ध्वांक्ष	आर्द्रा	मघा	चित्रा	ज्येष्ठा	अभि.	पू.भा.	भरणी	धनक्षय
७	ध्वज	पुनर्वसु	पू.फा.	स्वाती	मूल	श्रवण	उ.भा.	कृत्ति.	सौभाग्य
८	श्रीवत्स	पुष्य	उ.फा.	विशा.	पू.षा.	धनिष्ठा	रेवती	रोहि.	सौख्यसंपद्
९	वज्र	श्लेषा.	हस्त	अनुरा.	उ.षा	शत.	अश्वि.	मृग.	क्षय
१०	मुद्गर	मघा	चित्रा	ज्येष्ठा	अभि.	पू.भा.	भरणी	आर्द्रा	लक्ष्मीक्षय

सं.	यो.	रवि.	चंद्र	मंगल	बुध	वृहस्प.	शुक्र	शनि	फलम्
११	छत्र	पू.फा.	स्वाती	मूल	श्रवण	उ.भा.	कृत्ति.	पुनर्व.	राजसम्मान
१२	मित्र	उ.फा.	विशा.	पू षा.	धनिष्ठा	रेवती	रोहि.	पुष्य	पुष्टि
१३	मानस	हस्त	अनुरा	उ. षा.	शत.	अश्वि.	मृग.	श्लेषा	सौभाग्य
१४	पद्म	चित्रा	ज्येष्ठा	अभि.	पू.भा.	भरणी	आर्द्रा	मघा	धनागमन
१५	लुम्बक	स्वाती	मूल	श्रवण	उ. भा.	कृत्ति.	पुनर्व.	पू.फा.	धनक्षय
१६	उत्पात	विशा.	पू.षा.	धनिष्ठा	रेवती	रोहि.	पुष्य	उ. फा.	प्राणनाश
१७	मृत्यु	अनुरा.	उ.षा.	शतभि.	अश्वि.	मृग.	श्लेषा	हस्त	मृत्यु
१८	काण	ज्येष्ठा	अभि.	पू. भा.	भरणी	आर्द्रा	मघा	चित्रा	क्लेश
१९	सिद्धि	मूल	श्रवण	उ.भा.	कृत्ति.	पुनर्व.	पू.फा.	स्वाती	कार्यसिद्धि
२०	शुभ	पू. भा.	धनिष्ठा	रेवती	रोहि.	पुष्य	उ.फा.	विशा.	कल्याण
२१	अमृत	उ.षा.	शत.	अश्वि.	मृग.	श्लेषा	हस्त	अनु.	राजसम्मान
२२	मुसल	अभि.	पू. भा.	भरणी	आर्द्रा	मघा	चित्रा	ज्येष्ठा	धनक्षय
२३	गद	श्रवण	उ.भा.	कृत्ति.	पुन.	पू.फा.	स्वाती	मूल	अक्षयविद्या
२४	मातंग	धनिष्ठा	रेवती	रोहि.	पुष्य	उ.फा.	विशा.	पू.षा.	कुलवृद्धि
२५	राक्षस	शतभि.	अश्वि.	मृग.	श्लेषा	हस्त	अनु.	उ.षा.	महाकष्ट
२६	चर	पू. भा.	भरणी	आर्द्रा	मघा	चित्रा	ज्येष्ठा	अभि.	कार्यसिद्धि
२७	स्थिर	उ.भा.	कृत्ति.	पुनर्व.	पू.फा.	स्वाती	मूल	श्रवण	गृहारम्भ
२८	प्रवर्धम	रेवती	रोहि.	पुष्य	उ. फा.	विशा.	पू.षा.	धनि.	विवाह

आनन्दादि योग जानने की रीति—

दास्रादर्के मृगादिन्दौ सार्पाद्भौमे करात् बुधे।
मैत्राद् गुरौ भृगौ वैश्वाद् गण्या मन्दे च वारुणात् ॥२५॥

अन्वयः—अर्के दास्रात् इन्दौ मृगात् भौमे सार्पात्, बुधे करात्, गुरौ मैत्रात्, भृगौ वैश्वात्, मन्दे वारुणात् (एते आनन्दादयो योगाः) गण्याः ॥ २५ ॥

भा०—रविवारमें अश्विनीसे, सोमवारमें मृगशिरासे, मङ्गलवारमें अश्लेषासे, बुधवारमें हस्तसे, गुरुवारमें अनुराधासे, शुक्रवारमें उत्तराषाढ़ासे, शनिवारमें शतभिषासे, जिस दिनका योग जानना हो उपरोक्त कहे हुएके अनुसार उस दिन तक गिनकर जो संख्या आती हो उसी संख्या वाला योग उस दिन आनन्दादि योगोंमेंसे समझना चाहिये। स्पष्ट पीछे चक्रमें देखिये ॥ २५ ॥

आनन्दादियोगोंमें जो दुष्ट योग हैं, उनके रहते कार्य करना आवश्यक होने पर उनका परिहार—

ध्वांक्षे वज्रे मुद्गरे चेषुनाड्यो वर्ज्या वेदाः पद्मलुम्बे गदेऽश्वाः।
धूम्रे काणे मौसले भूर्द्वयं द्वे रक्षोमृत्यूत्पातकालाश्च सर्वे ॥२६॥

अन्वयः—ध्वांक्षे, वज्रे, मुद्गरे (योगे) इषुनाड्यः, पद्मलुम्बे वेदाः, गदे अश्वाः नाड्यः वर्ज्याः, धूम्रे भूः (एका नाड़ी), काणे द्वयं, मौसले द्वे, रक्षोमृत्यूत्पातकालाः सर्वे वर्ज्याः ॥ २६ ॥

भा०—ध्वांक्ष, वज्र, मुद्गर इन योगोंकी आदिकी पाँच-घड़ी, पद्म लुम्बमें आदिकी ४ घड़ी, गदयोगमें आदिकी ७ घड़ी, धूम्र योगकी १ घड़ी, काण योगकी २ घड़ी, मुसल योगकी २ घड़ी छोड़कर उनकी शेष घड़ियोंमें मांगलिक कार्य किया जा सकता है। राक्षस, मृत्यु, उत्पात एवं काल इन योगोंको पूरी घड़ियाँ अर्थात् सम्पूर्ण योग ही त्याज्य हैं ॥ २६ ॥

दोषनाशक रवियोग—

सूर्यभाद्वेदगोतर्कदिग्विश्वनखसम्मिते ।
चन्द्रर्क्षे रवियोगाः स्युर्दोषसंघविनाशकाः ॥ २७ ॥

अन्वयः—सूर्यभात्, वेद-गो-तर्क-दिग्विश्व-नख-सम्मिते चन्द्रर्क्षे दोषसंघविनाशकाः रवियोगाः स्युः ॥ २७ ॥

भा०—सूर्य जिस नक्षत्र पर हो उस नक्षत्रसे चन्द्रके नक्षत्र तक अर्थात् दिनके नक्षत्र तक गिनने पर यदि ४, ९, ६, १०, १३, २० नक्षत्रकी संख्या आवे तो रवियोग होता है, यह योग दोषके समूहको नाश करता है ॥ २७ ॥

उदाहरण—अश्विनी नक्षत्र पर यदि सूर्य हो और आर्द्रापर चन्द्रमा हो तो सूर्याक्रान्त अश्विनीसे आर्द्रा तक गिननेपर छः संख्या आई इसलिये यह रवियोग हुआ। इसी प्रकार सूर्याक्रान्त और २ नक्षत्रोंसे चन्द्र नक्षत्र तक गणना समझनी चाहिये।

रवि आदि वारोंमें नक्षत्रयोगसे सर्वार्थसिद्धियोग—

सूर्येऽर्कमूलोत्तरपुष्यदास्रं चन्द्रे श्रुतिब्राह्मशशीज्यमैत्रम्।
भौमेऽश्व्यहिर्बुध्न्यकृशानुसार्पं ज्ञे ब्राह्ममैत्रार्ककृशानुचान्द्रम् ।२८।

जीवेऽन्त्यमैत्राश्व्यदितीज्यधिष्ण्यं शुक्रेऽन्त्यमैत्राश्व्यदितिश्रवोभम्
शनौ श्रुतिब्राह्मसमीरभानि सर्व्वार्थसिद्ध्यै कथितानि पूर्व्वैः॥२६॥

अन्वयः—सूर्ये (रविवारे) अर्कमूलोत्तरपुष्यदास्रं, चन्द्रे श्रुतिब्राह्मशशीज्यमैत्रम्, भौमे अश्व्यहिर्बुध्न्यकृशानुसार्पम्, ज्ञे (बुधे) ब्राह्ममैत्रार्ककृशानुचांद्रम्, जीवे (गुरौ) अन्त्यमैत्राश्व्यदितीज्यधिष्ण्यम्, शुक्रे अन्त्यमैत्राश्व्यदितिश्रवोभम्, शनौ श्रुतिब्राह्मसमीरभानि, पूर्वैः (पूर्वाचार्यैः) सर्वार्थसिद्धये कथितानि ।२८-२९।

भा०—रविवारको हस्त, मूल, तीनों उत्तरा, पुष्य और अश्विनी, सोमवारको श्रवण, रोहिणी, मृगशिरा, पुष्य, अनुराधा, मङ्गलवारको, अश्विनी, उत्तरभाद्रपद, कृत्तिका, अश्लेषा, बुधवारको रोहिणी, अनुराधा, हस्त, कृत्तिका, मृगशिरा, गुरुवारको रेवती, अनुराधा, अश्विनी, पुनर्वसु, पुष्य, शुक्रवार को रेवती, अनुराधा, अश्विनी, पुनर्वसु, श्रवण, शनिवारको श्रवण, रोहिणी, स्वाती ये नक्षत्र होवे तो पूर्वाचार्योंने इन योगोंको सर्वार्थसिद्धियोग कहा है ॥ २८-२९ ॥

सर्वार्थसिद्धियोगबोधकचक्रम् ।

दिना.	नक्षत्राणि					न.सं.
रवि.	हस्त	मूल	उत्तरा त्रयम्	पुष्य	अश्विनी	७
सोम	श्रवण	रोहि.	मृगशिरा	पुष्य	अनुराधा	५
मंगल	अश्वि.	उ.भा.	कृत्तिका	आश्ले.	×	४
बुध	रोहि.	अनुरा.	हस्त	कृत्ति.	मृगशिरा	५
बृहस्प.	रेवती	अनुरा.	अश्विनी	पुनर्व.	पुष्य	५
शुक्र	रेवती	अनुरा.	अश्विनी	पुनर्व.	श्रवण	५
शनि.	श्रवण	रोहि.	स्वाती	×	×	३

उत्पात, मृत्यु, काण और सिद्धियोग—

द्वीशात्तोयाद्वासवात् पौष्णभाच्च ब्राह्मात् पुष्यादर्यमर्क्षाच्चतुर्भैः ।
स्यादुत्पातो मृत्युकाणौ च सिद्धिर्वारेऽर्काद्ये तत्फलं नामतुल्यम् ३०

अन्वयः—अर्काद्ये वारे क्रमेण द्वीशात् तोयात् वासवात् पौष्णभात् ब्राह्मात् पुष्यात् अर्यमर्क्षात् चतुर्भैः उत्पातः मृत्युकाणौ च (पुनः) सिद्धिः स्यात् । तत्फलं (एषां उत्पातादीनां फलम्) नामतुल्यं भवति ॥ ३० ॥

भा०—रविवारमें विशाखासे चार नक्षत्र, सोमवारमें पूर्वाषाढ़ासे चार नक्षत्र, मङ्गलवारमें धनिष्ठासे चार नक्षत्र, बुधमें रेवतीसे चार

नक्षत्र, गुरुमें रोहिणीसे चार नक्षत्र, शुक्रमें पुष्यसे चार नक्षत्र, शनिमें उत्तराफाल्गुनीसे चार नक्षत्र होनेसे क्रमसे उत्पात, मृत्यु, काण, और सिद्धियोग होते हैं, इन योगोंका नामानुसार ही फल होता है ॥ ३० ॥

स्पष्टार्थ उदाहरण चक्र—

वार नाम	सू,	चं.	मं	बु.	बृ.	शु.	श.	फल
उत्पात	वि.	पू.षा.	ध.	रे.	रो.	पुष्य	उ.भा.	अशुभ
मृत्यु	अनु.	उ.षा.	श.	अश्वि.	मृ.	श्ले.	ह.	अशुभ
काण	ज्ये.	अभि.	पू.भा.	भ.	आ.	म.	चि.	अशुभ
सिद्धि	मू.	श्र.	उ.भा.	कृ.	पुनर्वसु	पू.भा.	स्वा.	शुभ

देशभेदसे दुष्टयोगों का परिहार—

कुयोगास्तिथिवारोत्थास्तिथिभोत्था भवारजाः ।
हूणवंगखशेष्वेव वर्ज्यास्त्रितयजास्तथा ॥ ३१ ॥

अन्वयः-तिथिवारोत्थाः, तिथिभोत्थाः, भवारजाः तथा त्रितयजाः (तिथि-वार भोत्थाः) कुयोगाः हूणवंगखशेष्वेव देशेषु वर्ज्याः ॥ ३१ ॥

भा०—तिथि और वारसे उत्पन्न, तिथि और नक्षत्रसे उत्पन्न, दिन और नक्षत्रसे उत्पन्न कुयोग तथा तिथि, दिन, नक्षत्र, इन तीनोंसे उत्पन्न कुयोग हूण, बंग और खश (नेपाल) देशोंमें ही त्याज्य हैं॥३१॥

शुभ कार्योंमें त्याज्य समय—

सर्व्वस्मिन् विधुपापयुक्ततनुलवावर्द्धे निशाह्नोर्घटी-
त्र्यंशं वै कुनवांशकं ग्रहणतः पूर्व्वं दिनानां त्रयम् ।
उत्पातग्रहतोऽद्र्यहांश्च शुभदोत्पातश्च दुष्टं दिनं
षण्मासं ग्रहभिन्नभं त्यज शुभे यौद्धं तथोत्पातभम् ॥३२॥

अन्वयः-विधुपापयुक्तनुलवौ, निशाह्नोः अर्धे घटीत्र्यंशं, ग्रहणतः पूर्वं दिनानां त्रयं, उत्पातग्रहतः अद्र्यहान् (सप्तदिवसान्) शुभदोत्पातैः दुष्टं दिनं सर्वस्मिन् शुभे कार्ये त्यज । ग्रहभिन्नभं, यौद्धं (नक्षत्रं) तथा उत्पातभम् षण्मासं सर्व-स्मिन् शुभे त्यज ॥ ३२ ॥

भा०—चन्द्रमा और पापग्रहसे युत लग्न और नवांश, रात और दिनका मध्यभाग अर्थात् मध्यरात्रि और मध्याह्न इनको १ घड़ीका तृतीयांश, पापग्रहके नवांश, ग्रहण पूर्वके तीन दिन उत्पात भूकम्प आदि और ग्रहणके आगेके सात दिन, शुभद उत्पातसे युक्त दुष्ट दिन,

ये सब मांगलिक कार्यमें वर्जित हैं। इसी तरह मंगल आदि ग्रहसे विद्ध नक्षत्र, जिसमें ग्रहोंका युद्ध हुआ हो वह नक्षत्र तथा, भौम एवं दिव्य, आकाशीय उत्पातोंसे दूषित नक्षत्रको छः महीना तक छोड़ देना चाहिये ॥ ३२ ॥

ग्रहणवाले नक्षत्रोंके निषिद्धकाल—

नेष्टं ग्रहर्क्षं सकलार्द्धपादग्रासे क्रमात् तर्कगुणेन्दुमासान् ।
पूर्वं परस्तादुभयोस्त्रिघस्रा ग्रस्तेऽस्तगे वाभ्युदितेऽर्द्धखण्डे ॥३३॥

अन्वयः—सकलार्धपादग्रासे क्रमात् तर्कगुणेन्दुमासान् ग्रहर्क्षं नेष्टम् (निषिद्धम्) ग्रस्तेऽस्तगे पूर्वं त्रिघस्राः नेष्टाः, ग्रस्तेऽभ्युदिते परस्तात् त्रिघस्रा नेष्टाः। अर्धखण्डे ग्रासे उभयोः त्रिघस्राः नेष्टाः ॥ ३३ ॥

भा०—सम्पूर्ण आधा अथवा चौथाई ग्रास होने पर क्रमसे ६ मास ३ मास और १ मास तक ग्रहण नक्षत्र अशुभ रहता है। ग्रस्तास्त ग्रस्तोदय और खण्ड ग्रहण होनेपर क्रमसे पहले ३ दिन, बादके तीन दिन और आगे पीछेके ३ तीन-तीन दिन त्याज्य हैं ॥३३॥

वर्ज्य पंचांग दोष—

जन्मर्क्षमासतिथयो व्यतिपातभद्रा
वैधृत्यमापितृदिनानि तिथिक्षयर्द्धी ।
न्यूनाधिमासकुलिकप्रहारार्द्धपाता
विष्कम्भवज्रघटिकात्रयमेव वर्ज्यम् ॥ ३४ ॥

अन्वयः—जन्मर्क्षमासतिथयः, व्यतिपातभद्रावैधृत्यमापितृदिनानि, तिथिक्षयर्द्धी, न्यूनाधिमासकुलिकप्रहारार्धपाताः वर्ज्याः। विष्कम्भवज्रघटिकात्रयम् पूर्वं वर्ज्यम् (एतयोः घटीत्रयमेव त्याज्यम्) ॥ ३४ ॥

भा०—जन्मनक्षत्र, जन्ममास, जन्मतिथि, व्यतिपात, भद्रा, वैधृति, अमावस्या, माता-पिताका श्राद्धदिन, तिथिक्षय एवं तिथिवृद्धि, क्षयमास, मलमास, कुलिक अर्धप्रहर, पात त्याज्य हैं। परन्तु विष्कंभ और वज्र योगोंकी आरंभसे केवल तीन-तीन घड़ी ही त्याज्य हैं ॥३४॥

परिघ आदि योगोंकी निन्द्य घटी—

परिघार्द्धं पञ्च शूले षट् च गण्डातिगण्डयोः ।
व्याघाते नव नाड्यश्च वर्ज्याः सर्वेषु कर्म्मसु ॥३५॥

अन्वयः—सर्वेषु कर्मसु परिघार्धं वर्ज्यम्। शूले पञ्च (घटिकाः), गण्डातिगण्डयोः षट् (घटिकाः), व्याघाते नव (घटिकाः) वर्ज्याः ॥ ३५ ॥

भा०—सभी शुभकार्योंमें परिघयोगकी घड़ीका पहला आधा भाग, शूलके आरंभकी पाँच घड़ी, गंड और अतिगंडयोगकी ६ घड़ी, व्याघातकी ९ घड़ी त्याज्य है ॥ ३५ ॥

असत् तिथि—

वेदाङ्गाष्टनवार्केन्द्रपक्षरन्ध्रतिथौ त्यजेत् ।
वस्वङ्कमनुतत्त्वाशाः शरा नाडीः पराः शुभाः ॥ ३६ ॥

अन्वयः—वेदाङ्गाष्टनवार्केन्द्रपक्षरन्ध्रतिथौ क्रमशः वस्वङ्कमनुतत्त्वाशाः शरा नाडीः त्यजेत् । पराः शुभाः (भवन्ति) ॥ ३६ ॥

भा०—दोनों पक्षकी चतुर्थी, षष्ठी, अष्टमी, नवमी, द्वादशी, चतुर्दशी, ये तिथियाँ पक्षरन्ध्र संज्ञक हैं । इनमें क्रमशः ८ । ६ । १४ । २५ । १० और ५ घटी शुभ कार्यमें त्याज्य हैं, शेष घड़ियाँ शुभ हैं ॥ ३६ ॥

कुलिकादियोग—

कुलिकः कालवेला च यमघण्टश्च कण्टकः ।
वाराद् द्विघ्ने क्रमान्मन्दे बुधे जीवे कुजे क्षणः ॥ ३७ ॥

अन्वयः—वारात् (वर्तमानदिवसात्) मन्दे, बुधे, जीवे, कुजे, द्विघ्ने (द्विगुणिते सति) क्रमात् कुलिकः कालवेला यमघण्टः कण्टकः क्षणः स्यात् ॥ ३७ ॥

भा०—वर्तमान दिनसे शनि तक गणना करनेसे जो संख्या हो उसको दूना करे, दूना करने पर जो संख्या आवे उस संख्या वाला मुहूर्त कुलिक योग हुआ, इसी प्रकार बुध तक गिनकर दूना करे तो कालवेला, गुरु तक गिनकर दूना करे तो यमघण्ट, मंगल तक गिनकर दूना करे तो कण्टक योग होता है ॥ ३७ ॥

उदाहरण—जैसे सोमवार को कुलिक आदि योग जानना है तो सोम से शनि तक की संख्या ६ को दूना करनेसे १२ वाँ कुलिक हुआ । सोमवार से बुध तक की संख्या ३ को दूना करनेसे छठाँ कालवेला, गुरुवार तक की संख्या ४ को दूना करने से ८ वाँ यमघण्ट और मङ्गल तक की संख्या २ को दूना करनेसे चौथा कण्टक मुहूर्त हुआ । इसी प्रकार सब वारोंमें जानना चाहिये ॥ ३७ ॥

मध्यम मानसे २, २, घड़ीका एक एक मुहूर्त होता है । स्पष्ट मानसे दिनमान का १५वाँ भाग दिनका मुहूर्त और रात्रिमानका १५वाँ भाग रात्रिका मुहूर्त समझना चाहिए ॥ ३७ ॥

कुलिकादियोग बोधक चक्र—

	रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
कुलिक	१४	१२	१०	८	६	४	२
कालवेला	८	६	४	२	१४	१२	१०
यमघण्ट	१०	८	६	४	२	१४	१२
कंटक	६	४	२	१४	१२	१०	८

सूर्यादि वारों के दुष्ट मुहूर्त—

सूर्ये षट्स्वरनागदिङ्मनुमिताश्चन्द्रेऽब्धिषट्कुञ्जरा-
ङ्कार्का विश्वपुरन्दराः क्षितिसुते द्व्यब्ध्यग्नितर्का दिशः।
सौम्ये द्व्यब्धिगजाङ्कदिङ्मनुमिता जीवे द्विषड्भास्कराः
शक्राख्यास्तिथयः कलाश्च भृगुजे वेदेषुतर्कग्रहाः ॥ ३८ ॥
दिग्भास्करा मनुमिताश्च शनौ शशिद्वि-
नागा दिशो भवदिवाकरसम्मिताश्च।
दुष्टः क्षणः कुलिकण्टककालवेलाः
स्युश्चार्द्धयामयमघण्टगताः कलांशाः ॥ ३९ ॥

अन्वयः—सूर्ये षट्स्वरनागदिङ्मनुमिताः कलांशाः, चन्द्रे अब्धिषट्कुञ्जराङ्कार्काः विश्वपुरन्दराः, क्षितिसुते द्व्यब्ध्यग्नितर्का दिशः, सौम्ये द्व्यब्धिगजाङ्कदिङ्मनुमिता, जीवे द्विषड्भास्कराः शक्राख्यास्तिथयः कलाश्च, भृगुजे वेदेषुतर्कग्रहाः दिग्भास्करा मनुमिताश्च, शनौ शशिद्विनागा दिशः भवदिवाकरसंमिताश्च कलांशाः (षोडशांशाः) दुष्टः क्षणः स्यात्। एतेषु केषुचित् कुलिक-कण्टक-काल वेला भवन्ति, केषुचिच्च अर्धयामयमघण्टाः भवन्ति, अतः सर्वेऽपीमे मुहूर्ताः शुभकर्मसु त्याज्या भवन्ति, कुलिकण्टककालवेला अर्धयामयमघंटगताः स्युः ॥३८-३९॥

भा०—रविवार में ६।७।८।१०।१४ वाँ, सोमवार में ४।६।८।९।१२।१३ और १४ वाँ, मङ्गलवार में २।४।३।६ और १० वाँ, बुधवार में २।४।८।९।१० और १४ वाँ, गुरुवार में २।६।१२।१४।१५।१६ वाँ, शुक्रवार में ४।५।६।९।१०।१२ और १४ वाँ शनिवार में १।२।८।१०।११ और १२ वाँ कलांश (दिनमान का सोलहवाँ भाग) दुष्टक्षण दुर्मुहूर्त कहा जाता है। इनमें सभी मुहूर्त, कंटक कालवेला, अर्धयाम यमघंट इत्यादि वाले दोषों में से किसी न किसी दोष में दूषित हैं, इसलिये शुभकार्यों में त्याज्य हैं ॥ ३८-३९ ॥

होलिकाष्टक का निषेध—

विपाशेरावतीतीरे शुतुद्र्याश्च त्रिपुष्करे।
विवाहादिशुभे नेष्टं होलिकाप्राग्दिनाष्टकम् ॥ ४० ॥

अन्वयः—विपाशेरावतीतीरे शुतुद्र्याश्च तीरे त्रिपुष्करे (देशे च) विवाहादिशुभे कार्ये होलिकाप्राग्दिनाष्टकम् नेष्टं (निषिद्धं) वर्तते ॥ ४० ॥

भा०—विपाशा, इरावती, शुतुद्रु यथाक्रम पंजाब की रावी नदी और सतलज नदियों के किनारे के देशों में तथा त्रिपुष्कर देश में तथा विवाहादि शुभ कार्य के लिये होली से पहले ८ दिन त्याज्य हैं। दूसरे देश में शुभ है ॥ ४० ॥

मृत्यु क्रकच आदि योगों का परिहार—

मृत्युक्रकचदग्धादीनिन्दौ शस्ते शुभान् जगुः।
केचिद् यामोत्तरं चान्ये यात्रायामेव निन्दितान् ॥४१॥

अन्वयः—इन्दौ शस्ते, मृत्युक्रकचदग्धादीन् (योगान्) शुभान् जगुः, केचित् यामोत्तरं (शुभान् जगुः)। अन्ये यात्रायामेव निन्दितान् जगुः ॥ ४१ ॥

भा०—गोचर में चन्द्रमा के शुद्ध और सम्मुख रहने पर मृत्युयोग, क्रकचयोग और दग्धादियोग शुभ होते हैं। कुछ आचार्यों का मत है कि एक पहर के बाद शुभ होते हैं और कोई आचार्य कहते हैं कि केवल यात्रा में ही ये योग अशुभ हैं, इसलिये यात्रा में इनको छोड़ देना चाहिये ॥ ४१ ॥

सुयोग से कुयोग का परिहार—

अयोगे सुयोगोऽपि चेत् स्यात्तदानीमयोगं निहत्यैष सिद्धिं तनोति।
परे लग्नशुद्ध्या कुयोगादिनाशं दिनार्द्धोत्तरं विष्टिपूर्वं च शस्तम्॥४२॥

अन्वयः—चेत् अयोगे सुयोगः अपि स्यात् तदानीं एषः (सुयोगः) अयोगं निहत्य सिद्धिं तनोति। परे आचार्याः लग्नशुद्ध्या कुयोगादिनाशं कथयन्ति। विष्टिपूर्वं दिनार्द्धोत्तरं शस्तं कथयन्ति ॥ ४२ ॥

भा०—खराब (क्रकच) आदि अयोग (कुयोग) में यदि शुभ योग आ जाय तो वह अशुभ योग का नाश कर शुभ फल देता है। दूसरे आचार्य का मत है कि लग्न शुद्धि से सब अशुभों का नाश होता है। दोपहर के बाद भद्रा आदि कुयोग शुभ होता है अर्थात् मध्याह्न तक का ही काल अशुभ है ॥ ४२ ॥

जैसा कहा भी है कि—

विष्टिरङ्गारकश्चैव व्यतिपातश्च वैधृतिः।
प्रत्यरिर्जन्मनक्षत्रं मध्याह्नात्परतः शुभम् ॥

भद्रा की स्थिति—

शुक्ले पूर्वार्द्धेऽष्टमीपञ्चदश्योर्भद्रैकादश्यां चतुर्थ्यां परार्द्धे।
कृष्णेऽन्त्यार्द्धे स्यात् तृतीयादशम्योः पूर्वे भागे सप्तमीशंभुतिथ्योः॥४३

अन्वयः—शुक्ले (पक्षे) अष्टमीपञ्चदश्योः पूर्वार्द्धे भद्रा भवति। एकादश्यां चतुर्थ्यां च परार्द्धे भद्रा भवति। कृष्णे पक्षे तृतीयादशम्योः अन्त्यार्धे, सप्तमीशम्भुतिथ्योः पूर्वे भागे भद्रा भवति ॥ ४३ ॥

भा०—शुक्लपक्ष में अष्टमी और पूर्णिमा के पूर्वार्ध में, एकादशी और चतुर्थी के परार्ध में भद्रा होती है। कृष्णपक्ष के तृतीया और दशमी के उत्तरार्ध में तथा सप्तमी और चतुर्दशी के पूर्वार्ध में भद्रा होती है ॥ ४३ ॥

चतुर्थी आदि तिथियों में भद्रा के मुख और पुच्छ का विभाग—

पञ्चद्व्यद्रिकृताष्टरामरसभूयामादिघट्यः शरा
विष्टेरास्यमसद्‌गजेन्दुरसरामाद्र्यश्विबाणाब्धिषु ।
यामेष्वन्त्यघटीत्रयं शुभकरं पुच्छं तथा वासरे
विष्टिस्तिथ्यपरार्धजा शुभकरी रात्रौ तु पूर्वार्द्धजा ॥४४॥

अन्वयः—पञ्चद्व्यद्रिकृताष्टरामरसभूयामादिघट्यः शराः (पञ्चघट्यः) विष्टेः आस्यम् असत् (अशुभम्) प्रोक्तम्, तथा गजेन्दुरसरामाद्र्यश्विबाणाब्धिषु यामेषु अन्त्यघटीत्रयं पुच्छं शुभकरं प्रोक्तम् । वासरे (दिने) तिथ्यपरार्धजा विष्टिः तथा रात्रौ पूर्वार्धजा शुभकरी (भवति) ॥ ४४ ॥

भा०—शुक्लपक्ष की चतुर्थी में ५वें प्रहर की आदि की ५ घड़ी, अष्टमी में दूसरे प्रहर की आदि की ५ घड़ी, एकादशी में ७ वें प्रहर की आदि की ५ घड़ी, पूर्णिमा में चौथे प्रहर की आदि की ५ घड़ी और कृष्ण पक्ष की तृतीया में ८ वें प्रहर की आदि की ५ घड़ी, सप्तमी में तीसरे प्रहर की आदि की ५ घड़ी, दशमी में छठे प्रहर की आदि की ५ घड़ी, चतुर्दशी में प्रथम प्रहर की आदि की ५ घड़ी भद्रा का मुख है, यह अशुभ होता है। इसी तरह शुक्ल पक्ष की चतुर्थी में ८ वें प्रहर की अन्तिम ३ घड़ी, अष्टमी में प्रथम प्रहर की तीन घड़ी, एकादशी में छठें प्रहर की अन्तिम ३ घड़ी, पूर्णिमा में तीसरे प्रहर की अन्तिम ३ घड़ी, इसी तरह कृष्णपक्ष में क्रम से तृतीया, सप्तमी, दशमी, चतुर्दशी में ७ वें, दूसरे, ५ वें और चौथे प्रहर की अन्तिम ३ घटी भद्रा की पुच्छ है, यह शुभ होता है। दिनमें तिथि के उत्तरार्ध की भद्रा और रात्रि में पूर्वार्ध की भद्रा शुभ है ॥ ४४ ॥

भद्राज्ञानचक्रम्—

	शुक्लपक्ष				कृष्णपक्ष			
तिथि	४	८	११	१५	३	७	१०	१४
भद्रा	उ.	पू.	उ.	पू.	उ.	पू.	उ.	पू.
प्रहर	५	२	७	४	८	३	६	१
मुख घटी	५	५	५	५	५	५	५	५
प्रहर	८	१	६	३	७	२	५	४
पुच्छघटी	३	३	३	३	३	३	३	३

भद्रा का निवास और उसका फल—

कुम्भकर्कद्वये मर्त्ये स्वर्गेऽब्जेऽजात्त्रयेऽलिगे ।
स्त्रीधनुर्जूकनक्रेऽधो भद्रा तत्रैव तत्फलम् ॥ ४५ ॥

अन्वयः—कुम्भकर्कद्वये अब्जे (चन्द्रे) मर्त्ये (मृत्युलोके निवसति) । अजात् त्रये अलिगे (चन्द्रे) स्वर्गे, स्त्रीधनुर्जूकनक्रे अधः (पाताले) भद्रा तिष्ठति (यत्र भद्रा तिष्ठति) तत्रैव तत्फलं (भवति) ॥ ४५ ॥

भा०—कुम्भ और मीन, तथा कर्क और सिंह राशि में चन्द्रमा हो तो भद्रा मर्त्य (मनुष्य लोक) में रहती है । मेष, वृष, मिथुन और वृश्चिक राशि में चन्द्रमा हो तो भद्रा स्वर्ग में रहती है, कन्या, धनु, तुला, तथा मकर में चन्द्रमा हो तो पाताल में भद्रा रहती है । भद्रा का जहाँ वास होता है वहीं उसका फल होता है ॥ ४५ ॥

गुरु शुक्र के अस्तादि में वर्ज्य कार्य—

वाप्यारामतडागकूपभवनारम्भप्रतिष्ठे व्रता-
रम्भोत्सर्ग—वधूप्रवेशन-महादानानि सोमाष्टके ।
गोदानाग्रयण—प्रपाप्रथमकोपाकर्म्म वेदव्रतं
नीलोद्वाहमथातिपन्नशिशुसंस्कारान् सुरस्थापनम् ४६
दीक्षा—मौञ्जि—मुण्डनमपूर्वं देवतीर्थेक्षणं
संन्यासाग्निपरिग्रहौ नृपतिसन्दर्शाभिषेकौ गमम् ।
चातुर्मास्यसमावृती श्रवणयोर्वेधं परीक्षां त्यजेत्—
वृद्धत्वास्तशिशुत्व इज्यसितयोन्र्यूनाधिमासे तथा ।४७।

अन्वयः—इज्यसितयोः वृद्धत्वास्तशिशुत्वे तथा न्यूनाधिमासे वाप्यारामतडागकूपभवनारम्भप्रतिष्ठे, व्रतारम्भोत्सर्गवधूप्रवेशनमहादानानि, सोमाष्टके गोदानाग्रयणप्रपाप्रथमकोपाकर्म, वेदव्रतम्, नीलोद्वाहम् अथ अतिपन्नशिशुसंस्कारान्, सुरस्थापनम्, दीक्षामौञ्जिविवाहमुण्डनम्, अपूर्वं देवतीर्थेक्षणम्, संन्यासाग्निपरिग्रहौ, नृपतिसन्दर्शाभिषेकौ, गमम्, चातुर्मास्यसमावृती, श्रवणयोः वेधं परीक्षां त्यजेत् ॥ ४६, ४७ ॥

भा०—वापी (बावली), तालाब, कुवाँ, और भवनका आरम्भ=नवनिर्माण प्रतिष्ठा=उत्सर्ग, भवन=इसका आरम्भ और गृहप्रवेश, अनन्त और शिवरात्रि आदि व्रतों का आरम्भ और उत्सर्ग=उद्यापन, वधूप्रवेश, षोडश महादान, सोमयज्ञ अष्टका श्राद्ध, गोदान केशान्तकर्म, नवान्न भोजन, जलशाला (पौसरा-प्याऊ), प्रथम श्रावणी कर्म, वेदव्रत=उपनिषद्व्रत-महानाम्नी व्रत और वेद इनका आरम्भ, नीलवृषोत्सर्ग, समय पर नहीं हुए बालकों का संस्कार, देवताकी स्थापना, गुरु से मन्त्रग्रहण करना, यज्ञोपवीत, विवाह, मुण्डन, प्रथम देवदर्शन

और तीर्थगमन, संन्यास, अग्निहोत्र, राजदर्शन, राज्याभिषेक, यात्रा, चातुर्मास्ययाग, समावर्तन, कर्णवेध, दिव्यपरीक्षा, ये सब कार्य, गुरु और शुक्र के वृद्धत्व, अस्त और बालत्व में, मलमास तथ क्षयमास में त्याग देने चाहिये ॥ ४६-४७ ॥

सिंहस्थ गुर्वादित्य दोष—

अस्ते वर्ज्यं सिंहनक्रस्थजीवे वर्ज्यं केचिद् वक्रगे चातिचारे ।
गुर्वादित्ये विश्वघस्रेऽपि पक्षे प्रोचुस्तद्वद्दन्तरत्नादिभूषाम् ॥४८॥

अन्वयः—अस्ते वर्ज्यं (यत्कर्म तत्) सिंहनक्रस्थजीवेऽपि वर्ज्यम् । केचित् (आचार्याः) वक्रगे अतिचारे च (जीवे) गुर्वादित्ये विश्वघस्रे पक्षेऽपि च तद्वत् दन्तरत्नादिभूषां वर्ज्यां प्रोचुः ॥ ४८ ॥

भा०—जो कार्य गुरु के अस्त में वर्जित है वह सिंह और मकरस्थ गुरु में भी वर्जित है। कोई-कोई आचार्य कहते हैं कि गुरु के वक्र और अतिचारी होनेपर तथा सूर्य और गुरु एक राशि में हों तब और १३ दिन के पक्ष में भी शुभकर्म करना वर्जित है। इसी प्रकार हाथी के दाँत और रत्नादि से बने आभूषण बनवाना और पहनना भी वर्जित है।

सिंहस्थ गुरु का परिहार—

सिंहे गुरौ सिंहलवे विवाहो नेष्टोऽथ गोदोत्तरतश्च यावत् ।
भागीरथीयाम्यतटं हि दोषो नान्यत्र देशे तपनेऽपि मेषे ॥४९॥

अन्वयः—सिंहे सिंहलवे वा गुरौ (सति) विवाहः नेष्टः, अथ गोदोत्तरतः भागीरथीयाम्यतटं यावत्, दोषः, अन्यत्र न दोषः । मेषे तपनेऽपि न दोषः स्यात् ॥ ४९ ॥

भा०—गुरु सिंह राशि में और सिंह के ही नवमांश में हो तो विवाह अशुभ है। गोदावरी नदी से उत्तर और गङ्गा के दक्षिण तट पर्यन्त भाग में आनेवाले मध्यप्रान्त, और राजस्थान आदि देशों में सिंह के बृहस्पति में शुभ कार्य नहीं करना चाहिये। अन्य देशों में नहीं। यदि मेष राशिका सूर्य हो तो किसी भी देश में सिंहस्थ गुरु का दोष नहीं लगता है ॥४९॥

सिंहस्थ गुरु के निषेध का निर्णय—

मघादिपञ्चपादेषु गुरुः सर्वत्र निन्दितः ।
गङ्गागोदान्तरं हित्वा शेषाङ्घ्रिषु न दोषकृत् ॥ ५० ॥
मेषेऽर्के सन् व्रतोद्वाहौ गङ्गागोदान्तरेऽपि च ।
सर्वः सिंहगुरुर्वर्ज्यः कलिंगे गौडगुर्जरे ॥ ५१ ॥

अन्वयः—मघादिपञ्चपादेषु गुरुः सर्वत्र निन्दितः । शेषाङ्घ्रिषु गङ्गागोदान्तरं हित्वा दोषकृत् न स्यात् । मेषे अर्के गङ्गागोदान्तरेऽपि व्रतोद्वाहौ सन् (शुभौ) । कलिंगे गौडगुर्जरे (देशे) सर्वः सिंहगुरुः वर्ज्यः ॥ ५०-५१ ॥

भा०—मघा के चार चरण तथा पूर्वाफाल्गुनी का एक चरण इस तरह पाँच चरण तक सिंहस्थ गुरु सब देशों में निन्दित है। शेष पूर्वफाल्गुनी के तीन चरण और उत्तरफाल्गुनी का एक चरण इस तरह चार चरण गङ्गा और गोदावरी के मध्य के देशों में ही निन्दित है। अन्य देशमें नहीं। मेष का सूर्य रहे तो गङ्गा और गोदावरी के बीच के देशोंमें उपनयन विवाह आदि करना शुभ है। परन्तु कलिंग, गौड़ और गुर्जर देश में सम्पूर्ण सिंह का गुरु वर्जित है ॥ ५०—५१ ॥

मकरस्थ गुरु का परिहार—

रेवापूर्वे गण्डकीपश्चिमे च शोणस्योदग्दक्षिणे नीच इज्यः।
वर्ज्यो नायं कौङ्कणे मागधे च गौडे सिन्धौ वर्जनीयः शुभेषु।५२।

अन्वयः—रेवापूर्वे, गण्डकीपश्चिमे, शोणस्य उदक् दक्षिणे (तीरे) नीच इज्यः न वर्ज्यः। कौङ्कणे मागधे गौडे सिन्धौ च अयं शुभेषु वर्जनीयः ॥ ५२ ॥

भा०—रेवा-नर्मदा नदी, जो जबलपुर आदि देशोंसे होकर बहती है, उसके पूर्व, गण्डकी नदी जो पटना के पास गंगा में जाकर मिल जाती है उसके पश्चिम और शोणनद के उत्तर तथा दक्षिण देशों में नीच (मकर) का गुरु वर्जित नहीं है। यह नीच (मकर का गुरु) कोंकण, दक्षिण भारत के अन्तर्गत कनाडा, रत्नागिरि, कोलाबा, बंबई और थाना आदि भाग में मगध (बिहार प्रान्त का दक्षिण भाग) में गौड और सिन्धु देश में शुभ कार्य के लिये त्याज्य है ॥ ५२ ॥

लुप्तसंवत्सरदोष और तज्जन्यदोष का अपवाद—

गोऽजान्त्यकुम्भेतरभेऽतिचारगो नो पूर्वराशिं गुरुरेति वक्रितः।
तदा विलुप्ताब्द इहातिनिन्दितः शुभेषु रेवासुरनिम्नगान्तरे।५३।

अन्वयः—गोऽजान्त्यकुम्भेतरभे अतिचारगः वक्रितः गुरुः यदा पूर्वराशिं न एति तदा स विलुप्ताब्दः (कथ्यते)। स इह रेवासुरनिम्नगान्तरे शुभेषु अतिनिन्दितः (भवति) ॥ ५३ ॥

भा०—वृष, मेष, मीन, कुम्भ, इनसे भिन्न राशियों में गुरु अतिचारी होकर यदि फिर पूर्व राशि में नहीं आवे तो लुप्त संवत्सर होता है। यह लुप्त संवत्सर गङ्गा और नर्मदा नदी के बीच के देश (मध्यभारत और राजस्थान आदि) में शुभ कार्य के लिए अत्यन्तनिन्दित है ॥ ५३ ॥

वारप्रवृत्ति—

पादोनरेखापरपूर्वयोजनैः पलैर्युतोनास्तिथयो दिनार्धतः।
ऊनाधिकास्तद्विवरोद्भवैः पलैरूर्ध्वं तथाधो दिनपप्रवेशनम्।५४।

अन्वयः—पादोनरेखापरपूर्वयोजनैः पलैः क्रमशः युतोनाः तिथयः (पञ्चदशघट्यः) यदि दिनार्धतः ऊनाधिकास्तदा तद्विवरोद्भवैः पलैः ऊर्ध्वं तथा अधः दिनपप्रवेशनम् (स्यात्) ॥ ५४ ॥

भा०—रेखा=भूमध्यरेखा (लंका से सुमेरु तक दिये हुए सूत्र के नीचे आने वाले देशों को मध्य रेखा कहते हैं) इस से जितने योजन पश्चिम में वार प्रवृत्तिका विचार करना हो तो योजन के चतुर्थांश को योजन में घटा कर शेष को पल मान कर १५ घटी में जोड़ दे और पूर्व देश में १५ घटी में घटा दे। यदि यह घटी दिनार्ध से अल्प हो तो सूर्योदय के बाद उतनी घटीपर वार प्रवृत्ति होगी और यदि दिनार्ध से अधिक हो तो उतनी ही घटी सूर्योदय से पहले वार प्रवेश समझना ॥ ५४ ॥

उदाहरण—जैसे रेखा देश से ७६ योजन पूर्व प्रयाग है तो ७६ में इसके चतुर्थांश, १९ को घटाने से ५७ पल हुए इसको पूर्व देश होने के कारण, १५ घड़ी में घटाने से शेष १४।३ बचा, इष्ट दिन का दिनार्ध १६ घड़ी १५ पल है तो इन दोनों के अन्तर २ घड़ी २२ पल तुल्य सूर्योदय के बाद प्रयाग में वार प्रवेश समझना। शेष यदि दिनार्ध से अधिक हो तो उतनी ही घटी सूर्योदयसे पहिले ही वार प्रवेश समझा जाता है ५४

वारादेर्घटिका द्विघ्नाः स्वाक्षहृच्छेषवर्जिताः ।
सैकास्तष्टा नगैः कालहोरेशा दिनपात् क्रमात् ॥५५॥

अन्वयः—वारादेः घटिका द्विघ्नाः स्वाक्षहृच्छेषवर्जिताः, सैकाः नगैः, तष्टाः, दिनपात् क्रमात् कालहोरेशाः (भवन्ति) ॥ ५५ ॥

भा०—वार प्रवृत्ति से इष्ट घटी तक जो घटी हो उसको दूना कर दो जगह रक्खे। दूसरे जगह ५ का भाग देकर जो शेष बचे उसको प्रथम स्थान की द्विगुणित घटी में घटाकर जो शेष बचे उसमें एक जोड़कर सात का भाग देने पर जो शेष बचे वह दिनपति के क्रम से काल होरेश होगा ॥५५॥

उदाहरण—जैसे शुक्रवार में प्रवेश से १६ घड़ी पर कालहोरेश जानना है तो''' इष्ट घड़ी को दूना करने से ३२ इसमें ५ के भाग से शेष २ को घटाने से ३० फिर इसमें १ जोड़कर ७ के भाग देकर शेष ३ शुक्रवार से गिनने पर रवि कालहोरेश हुआ ॥ ५५ ॥

कालहोरा का प्रयोजन—

वारे प्रोक्तं कालहोरासु तस्य धिष्ण्ये प्रोक्तं स्वामितिथ्यंशकेऽस्य ।
कुर्याद्दिक्छूलादि चिन्त्यं क्षणेषु नैवोल्लंघ्यःपारिघश्चापि दण्डः५६

अन्वयः—वारे प्रोक्तं कर्म तस्य (दिनस्य) कालहोरासु कुर्यात्। धिष्ण्ये प्रोक्तं अस्य (धिष्ण्यस्य) तिथ्यंशके कुर्यात्, दिक्शूलादि क्षणेषु चिन्त्यम्। पारिघः दण्डश्च नैव उल्लंघ्यः ॥ ५६ ॥

भा०—जिस दिनमें जो कार्य कहा गया है, वह दिन यदि दूषित हो और उस दिन वह कर्म करना आवश्यक हो तो उस दिन की कालहोरा में भी वह किया जा सकता है। इसी तरह जिस नक्षत्र में जो कार्य कहे

गये हैं वह कार्य उस नक्षत्र के स्वामी के तिथ्यंश (तिथि स्वामी के मुहूर्त) में भी किये जा सकते हैं। मुहूर्तमें वार शूल, नक्षत्र शूल और लालाटिक योग का विचार अवश्य करना ही चाहिये। परिघदण्ड का उल्लंघन तो कभी भी किसी प्रकार नहीं करना चाहिये ॥ ५६ ॥

मन्वादि और युगादि तिथि—

मन्वाद्यास्त्रितिथी मधौ तिथिरवी ऊर्जे शुचौ दिक्तिथी
ज्येष्ठेऽन्त्ये च तिथिस्त्विषे नव तपस्यश्वाः सहस्ये शिवाः।
भाद्रेऽग्निश्च सिते त्वमाष्ट नभसः कृष्णे युगाद्याः सिते
गोऽग्नी बाहुलराधयोर्मदनदर्शौ भाद्रमाघासिते ॥ ५७ ॥

अन्वयः—मधौ त्रितिथी ऊर्जे तिथिरवी, शुचौ दिक्तिथी, ज्येष्ठे अन्त्ये च तिथिः, इषे नव, तपसि अश्वाः, सहस्ये शिवाः, भाद्रे अग्निः, (एते सिते पक्षे) तथा नभसः कृष्णे अमाष्ट मन्वाद्याः (कथ्यन्ते) बाहुलराधयोः सिते गोऽग्नी भाद्रमाघासिते (पक्षे) मदनदर्शौ युगाद्याः कथ्यन्ते ॥ ५७ ॥

भा०—चैत्र शुक्ल की ३ । १५, कार्तिक शुक्ल की १५ । १२, आषाढ़ शुक्ल की १० । १५, ज्येष्ठशुक्ल की १५, फाल्गुनशुक्लकी १५, आश्विन शुक्ल की ९, माघशुक्ल की ७, पौष शुक्ल की ११, भाद्र शुक्ल की ३, और श्रावण कृष्ण की अमावस्या और अष्टमी ये १४ मन्वादि तिथियाँ हैं, इनमें स्वायंभुव, स्वारोचिष, औत्तम, तामस, रैवत, चाक्षुष, वैवस्वत, सावर्णि, दक्ष सावर्णि, ब्रह्मसावर्णि धर्मसावर्णि, रुद्रसावर्णि, देवसावर्णि और इन्द्रसावर्णि आदि मन्वादिका आरंभ होता है। इस लिये इनको मन्वादितिथि कहते हैं। कार्तिकशुक्लकी ९, वैशाखशुक्ल की ३, भाद्र कृष्णकी १३, और माघ कृष्णकी ३० ये युगादि तिथियाँ हैं, इनमें कोई शुभ कार्य नहीं करना चाहिये ॥ ५७ ॥

इति शुभाशुभप्रकरणं समाप्तम् ॥ १ ॥

अथ नक्षत्रप्रकरणम्—

नक्षत्रों के स्वामी—

नासत्यान्तकवह्निधातृशशभृद्रुद्रादितीज्योरगाः
ऋक्षेशाः पितरो भगोऽर्यमरवी त्वष्टा समीरः क्रमात् ।
शक्राग्नी खलु मित्रशक्रनिऋतिक्षीराणि विश्वे विधि-
र्गोविन्दो वसुतोयपाजचरणाऽहिर्बुध्न्यपूषाभिधाः ॥१॥

अन्वयः—नासत्यान्तकवह्निधातृशशभृद्रुद्रादितीज्योरगाः पितरः भगः अर्यमरवी त्वष्टा समीरः शक्राग्नी मित्रः शक्रनिऋतिक्षीराणि विश्वे विधिः गोविन्दः वसुतोयपाजचरणाहिर्बुध्न्यपूषाभिधा एते क्रमात् ऋक्षेशा ज्ञेयाः ॥ १ ॥

भा०—अश्विनी के अश्विनीकुमार, भरणी के यम, कृत्तिका के अग्नि, रोहिणी के ब्रह्मा, मृगशिरा के चन्द्रमा, आर्द्रा के शिव, पुनर्वसु के अदिति, पुष्य के बृहस्पति, आश्लेषा के सर्प, मघा के पितर, पूर्वाफाल्गुनी के भग (सूर्य विशेष), उत्तराफाल्गुनी के अर्यमा (सूर्य विशेष), हस्त के रवि, चित्रा के विश्वकर्मा, स्वाती के वायु, विशाखा के शक्राग्नि, अनुराधा के मित्र, ज्येष्ठा के इन्द्र, मूल के राक्षस, पूर्वाषाढ़ा के जल, उत्तराषाढ़ा के विश्वेदेव, अभिजित् के विधि, श्रवण के गोविन्द, धनिष्ठा के वसु, शतभिषा के वरुण, पूर्वभाद्रपद के अजचरण, उत्तर भाद्रपद के अहिर्बुध्न्य, और रेवती के पूषा (सूर्य विशेष) स्वामी हैं ॥ १ ॥

नक्षत्रों के स्वामी जानने का चक्र—

नक्षत्र	देवता	तारा	रूप	अवकहड़ा	गण	योनि	नाड़ी
अश्विनी	अ० कु०	३	घोड़ा	चू चे चो ला	दे.	अश्व	१
भरणी	यमराज	३	भग	ली लू ले लो	मनु.	गज	२
कृत्तिका	अग्नि	६	छूरी	अ इ उ ए	राक्ष.	छाग	३
रोहिणी	ब्रह्मा	५	गाड़ी	ओ वा वी वू	म.	नाग	३
मृगशिरा	चन्द्रमा	३	हरिण	वे वो का की	दे.	नाग	२
आर्द्रा	शिव	१	मणि	कू घ ङ छ	म.	श्वान	१
पुनर्वसु	अदिति	४	मकान	के को हा ही	दे.	मार्जा	१
पुष्य	बृहस्पति	३	बाण	हू हे हो डा	दे.	छाग	२
श्लेषा	सर्प	५	चक्र	डी डू डे डो	रा.	मार्जा	१
मघा	पितर	५	घर	मा मी मे मो	रा.	मूषक	३
पू. फा.	भग	२	मचान	मो टा टी टू	म.	मूषक	२
उ. फा.	अर्यमा	२	शय्या	टे टो पा पी	म.	ग	१
हस्त	सूर्य	५	हाथ	पू ष ण ठ	दे.	महि.	१
चित्रा	त्वष्टा	१	मोती	प पो रा री	रा.	व्याघ्र	२
स्वाती	पवन	१	मूँगा	रू रे रो ता	दे.	महि.	३

विशाखा	इन्द्राग्नि	४	तोरण	ती तू ते तो	रा.	व्याघ्र	३
अनुराधा	मित्र	४	भात	न नी नू ने	दे.	मृग	२
ज्येष्ठा	इन्द्र	३	कुण्डल	नो य यी यू	रा.	मृग	१
मूल	राक्षस	११	सिंहपुच्छ	ये यो भा भी	रा.	श्वान	१
पू. षा.	जल	२	हाथीदाँत	भू ध फ ढ	म.	मर्कट	२
उ. षा.	विश्वेदेव	२	मचान	भे भो ज जी	म.	नेवला	३
अभिजि.	विधि	३	त्रिकोण	जू जे जो ख	दे.	नेवला	०
श्रवण	विष्णु	३	वामन	खि खू खे खो	दे.	वानर	३
धनिष्ठा	वसु	४	मृदङ्ग	ग गा गू गे	रा.	सिंह	२
शतभिषा	वरुण	१००	वृत्त	गो सा सी सू	रा.	अश्व	१
पू. भा.	अजपाद	२	मञ्च	से सो दा दी	म.	सिंह	१
उ. भा	अहिर्बुध्न्य	२	यमल	दु थ झ ञ	म.	गौ	२
रेवती	पूषा	३२	मृदङ्ग	दे दो चा ची	दे.	गज	३

ध्रुवसंज्ञक नक्षत्र तथा उनमें किये जाने वाले कृत्य—

उत्तरात्रयरोहिण्यो भास्करश्च ध्रुवं स्थिरम् ।
तत्र स्थिरं बीजगेहशान्त्यारामादिसिद्धये ॥ २ ॥

अन्वयः—उत्तरात्रयरोहिण्यः च (पुनः) भास्करः (रविः) ध्रुवं (.ध्रुवसंज्ञकम्) स्थिरं (स्थिरसंज्ञकं च) वर्तते । तत्र स्थिरं (स्थिरकर्म) बीजगेहशान्त्यारामादि कर्म च सिद्धये (भवति) ॥ २ ॥

भा०—तीनों उत्तरा (उत्तरफाल्गुनी, उत्तराषाढ, उत्तरभाद्रपद) रोहिणी और रविवार ये ध्रुव और स्थिरसंज्ञक हैं। इनमें स्थिरकर्म जैसे गृहारम्भ बीजवपन शान्ति कर्म (ग्रहादिक शान्ति) बगीचा लगाना आदि कार्य, तथा मृदुनक्षत्रोक्त कार्य करना शुभ है ॥ २ ॥

चरसंज्ञक नक्षत्र—

स्वात्यादित्ये श्रुतेस्त्रीणि चन्द्रश्चापि चरं चलम् ।
तस्मिन् गजादिकारोहो वाटिकागमनादिकम् ॥ ३ ॥

अन्वयः—स्वात्यादित्ये श्रुतेः त्रीणि (श्रवण-धनिष्ठा-शत-तारा) तथा चन्द्रः (चन्द्रवारः) चरं (चरसंज्ञकं) चलं (चलसंज्ञकं च ज्ञेयम्) तस्मिन् गजादिकारोहः वाटिकागमनादिकश्च (शुभं स्यात्) ॥ ३ ॥

भा०—स्वाती, पुनर्वसु, श्रवण से तीन (श्रवण धनिष्ठा शतभिषा) ये नक्षत्र और सोमवार ये चर और चल संज्ञक हैं, इनमें हाथी घोड़ा पर चढ़ना, फुलवारी आदि लगाना और यात्रादि तथा लघुसंज्ञक नक्षत्रोक्त कर्म करना भी शुभ है ॥ ३ ॥

उग्र संज्ञक नक्षत्र—

पूर्वात्रयं याम्यमघे उग्रं क्रूरं कुजस्तथा।
तस्मिन् घाताग्निशाठ्यानि विषशस्त्रादि सिद्ध्यति ॥ ४ ॥

अन्वयः—पूर्वात्रयं याम्यमघे तथा कुजः (भौमवारः) इति उग्रं क्रूरश्च (उग्रसंज्ञकं क्रूरसंज्ञकश्च ज्ञेयम्) तस्मिन् घाताग्निशाठ्यानि विषशस्त्रादि सिद्धयति ॥४॥

भा०—तीनों पूर्वा (पू. फा., पू. षा., पू. भा.) भरणी, मघा और मंगलवार ये उग्र और क्रूरसंज्ञक हैं, इनमें घात (मारण) अग्निकार्य, शठता, विषादिका प्रयोग, शस्त्र बनाना तथा दारुण संज्ञक नक्षत्रों के कार्य शुभ होते हैं ॥ ४ ॥

मिश्र संज्ञक नक्षत्र—

विशाखाग्नेयभे सौम्यो मिश्रं साधारणं स्मृतम् ।
तत्राग्निकार्य्यं मिश्रश्च वृषोत्सर्गादि सिद्धयति ॥ ५ ॥

अन्वयः—विशाखाग्नेयभे तथा सौम्यः (बुधवारः) मिश्रं तथा साधारणं स्मृतम् । तत्र तस्मिन् मिश्रं अग्निकार्यं वृषोत्सर्गादि च सिद्धयति ॥ ५ ॥

भा०—विशाखा, कृत्तिका और बुधवार ये मिश्र और साधारण संज्ञक हैं, इनमें अग्नि कार्य, मिश्र और-और नक्षत्रोंमें कहे हुए कार्य और वृषोत्सर्ग, आदि शब्द से उग्रसंज्ञक नक्षत्र के भी कार्य करना शुभ होता है ॥ ५ ॥

क्षिप्र और लघुसंज्ञक नक्षत्र और इनमें किये जानेवाले कर्म—

हस्ताश्विपुष्याभिजितः क्षिप्रं लघु गुरुस्तथा ।
तस्मिन् पण्यरतिज्ञानभूषाशिल्पकलादिकम् ॥ ६ ॥

अन्वयः—हस्ताश्विपुष्याभिजितः गुरुः (गुरुवारः) क्षिप्रं (क्षिप्रसंज्ञकम्) लघु (लघुसंज्ञकश्च) भवति । तस्मिन् पण्यरतिज्ञानभूषाशिल्पकलादिकश्च शुभंज्ञेयम्॥६॥

भा०—हस्त, अश्विनी, पुष्य, अभिजित् नक्षत्र और गुरुवार क्षिप्र और लघुसंज्ञक हैं, इसमें दूकान लगाना, रति, ज्ञान (शास्त्राध्ययन) आभूषण बनाना या बनवाना, शिल्प (चित्र रचना) कला (नृत्य आदि ६४ कलाएँ) सीखना और आदि शब्दसे चरसंज्ञक नक्षत्रों में कहे हुए कार्यों का करना भी शुभ है ॥ ६ ॥

मृदुसंज्ञक नक्षत्र—

मृगान्त्यचित्रामित्रर्क्षं मृदु मैत्रं भृगुस्तथा ।
तत्र गीताम्बरक्रीडामित्रकार्यं विभूषणम् ॥ ७ ॥

अन्वय:—मृगान्त्यचित्रामित्रर्क्षं, तथा भृगुः, मृदु, मैत्रं, च (भवति) तत्र (तस्मिन्) गीताम्बरक्रीडा मित्रकार्यं विभूषणं च (शुभं भवति) ॥ ७ ॥

भा०—मृगशिरा, रेवती, चित्रा, अनुराधा और शुक्रवार ये मृदु और मैत्र संज्ञक हैं, इनमें गीत, वस्त्र, खेल, मित्रकार्य (मित्र का कार्य करना) और आभूषण (गहना) बनाना या धारण करना शुभ है॥७॥

तीक्ष्णसंज्ञक और दारुणसंज्ञक नक्षत्र—

मूलेन्द्राद्राहिभं सौरिस्तीक्ष्णं दारुणसंज्ञकम् ।
तत्राभिचारघातोग्रभेदाः पशुदमादिकम् ॥ ८ ॥

अन्वय:—मूलेन्द्राद्राहिभं सौरिः तीक्ष्णं दारुणसंज्ञकश्च (भवति) । तत्र अभिचारघातोग्रभेदाः पशुदमादिकं (सिद्ध्यति) ॥ ८ ॥

भा०—मूल, ज्येष्ठा, आर्द्रा, आश्लेषा और शनिवार ये तीक्ष्ण और दारुण संज्ञक हैं इनमें अभिचार (मारणादि प्रयोग) घात (हथियार से मारना) उग्रकार्य (भयंकर कृत्य), भेद (फूट करवाना) अत्यन्त घनिष्ठ मित्रों में परस्पर कलह, पशुदम 'पशुशिक्षा' आदि सब काय सिद्ध होता है ॥ ८ ॥

ऊर्ध्वमुख, अधोमुख और तिर्यङ्मुख नक्षत्र—

मूलाहिमिश्रोग्रमधोमुखं भवेदूर्ध्वास्यमार्द्रेज्यहरित्रयं ध्रुवम् ।
तिर्य्यङ्मुखं मैत्रकरानिलादितिज्येष्ठाश्विभानीदृशकृत्यमेषु सत्॥९॥

अन्वय:—मूलाहिमिश्रोग्रं अधोमुखं भवेत् । आर्द्रेज्यहरित्रयं ध्रुवं ऊर्ध्वास्यं (स्यात्) । मैत्रकरानिलादितिज्येष्ठाश्विभानि तिर्यङ्मुख. (भवन्ति) एषु ईदृशं कृत्यं सत् ॥ ९ ॥

भा०—मूल, आश्लेषा, कृत्तिका और विशाखा तीनों पूर्वा और भरणी तथा मघा ये नव नक्षत्र अधोमुख हैं । आर्द्रा, पुष्य, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, तीनों उत्तरा और रोहिणी, ये नव नक्षत्र ऊर्ध्व मुख हैं । मृग, रेवती, चित्रा, अनुराधा, हस्त, स्वाती, पुनर्वसु, ज्येष्ठा, अश्विनी ये नव तिर्यङ्मुख नक्षत्र हैं, इन नक्षत्रों के मुख के अनुसार उसी तरह का कार्य सिद्ध होता है जैसे अधोमुख में कुआँ वगैरह खुदवाना, ऊर्ध्वमुख में मकान वगैरह बनवाना, तिर्यङ्मुख में बाँध बँधवाना यात्रा और चक्र रथ इत्यादि बनवाना शुभ है ॥ ९ ॥

मूँगा हाथी दाँत के कड़े आदिधारणमुहूर्त—

पौष्णध्रुवाश्विकरपञ्चकवासवेज्या-
दित्ये प्रवालरदशङ्खसुवर्णवस्त्रम् ।
धार्यं विरिक्तशनिचन्द्रकुजेऽह्नि रक्तं
भौमे ध्रुवादितियुगे सुभगा न दध्यात् ॥ १० ॥

अन्वयः—पौष्णध्रुवाश्विकरपञ्चकवासवेज्यादित्ये (नक्षत्रे) विरिक्तशनिचन्द्रकुजेऽह्नि प्रवालरदशंखसुवर्णवस्त्रं च धार्यम् । भौमे रक्तं वस्त्रं च धार्यम् । ध्रुवादितियुगे (नक्षत्रे) सुभगा (सधवा स्त्री) नववस्त्रादिकं न दध्यात् ॥१०॥

भा०—रेवती, ध्रुवसंज्ञकः=उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपदा, अश्विनी, हस्त से पाँच नक्षत्र हस्त, चित्रा, स्वाती, विशाखा, अनुराधा, वासव=धनिष्ठा, ईज्य=पुष्य, आदित्य=पुनर्वसु, इन नक्षत्रों में रिक्ता=चतुर्थी, नौमी, चतुर्दशी को छोड़कर अन्य तिथियों में सोम, मंगल, शनि इन वारों को छोड़कर अन्य वारों में प्रवाल (मूँगा), हाथी के दाँत का कंगना, सोना, श्वेतवस्त्र धारण करे । मंगलवार को रक्त वस्त्र धारण करे । ध्रुव संज्ञक तथा पुनर्वसु, और पुष्य नक्षत्र में सौभाग्यवती स्त्री नूतन वस्त्रादिक धारण नहीं करे ॥१०॥

वस्त्राणां नवभागकेषु च चतुष्कोणेऽमरा राक्षसा
मध्यत्र्यंशगता नरास्तु सदशे पाशे च मध्यांशयोः ।
दग्धे वा स्फुटितेऽम्बरे नवतरे पङ्कादिलिप्ते न सद्-
रक्षोंऽशे नृसुरांशयोः शुभमसत् सर्वांशके प्रान्ततः ॥११॥

अन्वयः—वस्त्राणां नवभागकेषु चतुष्कोणे अमराः (देवाः) । मध्यत्र्यंशगताः राक्षसाः तु (पुनः) मध्यांशयोः सदशे पाशे नराः (ज्ञेयाः) । तत्र रक्षोंऽशे नवतरे अम्बरे दग्धे स्फुटिते पङ्कादिलिप्ते वा सति न सत् (अशुभं भवति) । नृसुरांशयोः शुभं, प्रान्ततः सर्वांशके असत् (अशुभं) स्यात् ॥११॥

भा०—नव भागोंमें बाँटे हुए वस्त्र के जलने और फटने आदिके शुभाशुभ फलको जानने के लिये नव कोष्ठक (खाना) का चक्र बनाकर उसके चारों कोनों में अमर (देवता) की कल्पना करना और बीचके तीनों खानों में राक्षस की तथा मध्य अंशके आदि और अन्त के दोनों खानों में मनुष्य की कल्पना करे । यदि राक्षसों के अंश में नया कपड़ा जल जाय अथवा फट जाय किंवा कीचड़ आदि से दगीला हो जाय तो वह वस्त्र अशुभ होता है । व्यवहार में ऐसे वस्त्र को नहीं लाना चाहिये । मनुष्य और देवता के अंश में यदि जल जाय, फट जाय अथवा कीचड़ आदि से दगीला हो जाय तो वह शुभ है और अगर किनारे किनारे सबों के ही अंश में ऐसा हो जाय तो वह अशुभ है ।

वस्त्र चक्र—

देव	राक्षस	देव
मनुष्य	राक्षस	मनुष्य
देव	राक्षस	देव

विशेष—

विप्राज्ञया तथोद्वाहे राज्ञा प्रीत्यार्पितञ्च यत्।
निन्द्येऽपि धिष्ण्ये वारादौ वस्त्रं धार्य्यं जगुर्बुधाः॥१२॥

अन्वयः—विप्राज्ञया तथा उद्वाहे (विवाहकर्मणि) राज्ञा प्रीत्यार्पितञ्च यत् वस्त्रं तत् निन्द्येऽपि धिष्ण्ये वारादौ धार्यं इति बुधा जगुः ॥ १२ ॥

भा०—निन्दित नक्षत्र वार तिथि व्यतीपात और भद्रा आदि दुष्ट-योगों में भी ब्राह्मण की आज्ञा से तथा विवाह में प्रसन्नतापूर्वक राजा से दिये हुए वस्त्र को धारण करना चाहिये ऐसा विद्वानोंने कहा है॥१२॥

लता वृक्षारोपण तथा राजदर्शन मुहूर्त—

राधामूलमृदुध्रुवर्क्षवरुणक्षिप्रैर्लतापादपा-
रोपोऽथो नृपदर्शनं ध्रुवमृदुक्षिप्रश्रवोवासवैः।
तीक्ष्णोग्राम्बुपभेषु मद्यमुदितं क्षिप्रान्त्यवह्नीन्द्रभा-
दित्येन्द्राम्बुपवासवेषु हि गवां शस्तः क्रयो विक्रयः॥१३॥

अन्वयः—राधामूलमृदुध्रुवर्क्षवरुणक्षिप्रैः (नक्षत्रैः) लतापादपारोपः(शुभः)। अथो ध्रुवमृदुक्षिप्रश्रवोवासवैः (नक्षत्रैः) नृपदर्शनम् (शुभं) तीक्ष्णोग्राम्बुपभेषु मद्यम् उदितम्। क्षिप्रान्त्यवह्नीन्द्रभादित्येन्द्राम्बुपवासवेषु हि गवां क्रयः विक्रयः शस्तः (स्यात्) ॥ १३ ॥

भा०-विशाखा, मूल, मृदुसंज्ञक=चित्रा अनुराधा मृग और रेवती, ध्रुवसंज्ञक=रोहिणी और तीनों उत्तरा, वारुण=शतभिषा तथा क्षिप्र-संज्ञक=अश्विनी पुष्य और अभिजित नक्षत्रों में लता और वृक्षों का लगाना शुभ है। ध्रुवसंज्ञक, मृदुसंज्ञक, क्षिप्रसंज्ञक श्रवण धनिष्ठा इन नक्षत्रों में राजा (बड़े आदमियों) से मुलाकात करना शुभ है। तीक्ष्णसंज्ञक, उग्रसंज्ञक शतभिषा इन नक्षत्रों में मद्य बनाना शुभ है। क्षिप्रसंज्ञक, रेवती, विशाखा, पुनर्वसु, ज्येष्ठा, शतभिषा, धनिष्ठा इन नक्षत्रों में गौ का खरीदना और बेचना शुभ है॥१३॥

पशुरक्षा एवं स्थितिनिवेश—

लग्ने शुभे चाष्टमशुद्धिसंयुते रक्षा पशूनां निजयोनिभे चरे ।
रिक्ताष्टमीदर्शकुजश्रवोध्रुवत्वाष्ट्रेषु यानं स्थितिवेशनं न सत् ।१४।

अन्वयः—अष्टमशुद्धिसंयुते शुभे लग्ने च (पुनः) निजयोनिभे, चरे पशूनां रक्षा शुभा भवति । रिक्ताष्टमीदर्शकुजश्रवोध्रुवत्वाष्ट्रेषु दिनतिथिनक्षत्रेषु (पशूनां) यानं स्थितिवेशनं च न सत् ॥ १४ ॥

भा०—अष्टम स्थान शुद्ध (ग्रह से रहित) हो, और लग्न में शुभ ग्रह की राशि हो, अपनी योनि के नक्षत्र (विवाहोक्त नक्षत्र) हो और चर नक्षत्र हो तो पशुओं की रक्षा शुभ है। तथा रिक्ता, अष्टमी, अमावस्या तिथि, मंगलवार, श्रवण, ध्रुवसंज्ञक नक्षत्र और चित्रा नक्षत्र इनमें गौ का घर से बाहर निकालना, घर में रखना और पालन करने का प्रारंभ करना अशुभ होता है ॥ १४ ॥

औषधनिर्माण और भक्षण मुहूर्त—

भैषज्यं सल्लघुमृदुचरे मूलभे द्व्यङ्गलग्ने
शुक्रेन्द्विज्ये विदि च दिवसे चापि तेषां रवेश्च ।
शुद्धे रिःफद्युनमृतिगृहे सत्तिथौ नो जनेर्भे
सूचीकर्माप्यदितिवसुभत्वाष्ट्रमित्राश्विपुष्ये ॥ १५ ॥

अन्वयः—लघुमृदुचरे, मूलभे शुक्रेन्द्विज्ये विदि च द्व्यङ्गलग्ने तेषां रवेश्च दिवसे रिःफद्यूनमृतिगृहे शुद्धे सत्तिथौ च भैषज्यं सत् स्यात् । जनेर्भे नो सत् । अदितिवसुभत्वाष्ट्रमित्राश्विपुष्ये सूचीकर्मापि सत् स्यात् ॥ १५ ॥

भा०—लघुसंज्ञक=हस्त अश्विनी पुष्य अभिजित, मृदुसंज्ञक= मृगशिरा रेवती चित्रा अनुराधा, चरसंज्ञक=स्वाती पुनर्वसु श्रवण धनिष्ठा शतभिषा और मूल नक्षत्र में तथा द्विस्वभाव लग्नमें शुक्र, सोम, गुरु, बुध और रविवारमें लग्नसे बारहवें सातवें और आठवें स्थान शुद्ध हों तो शुभ तिथि में औषध सेवन और बनाना शुभ है। जन्म नक्षत्र में शुभ नहीं है। पुनर्वसु, धनिष्ठा, चित्रा, अनुराधा, अश्विनी और पुष्य इनमें कपड़ा सीना शुभ है ॥ १५ ॥

क्रयविक्रयविचार—

क्रयर्क्षे विक्रयो नेष्टो विक्रयर्क्षे क्रयोऽपि न ।
पौष्णाम्बुपाश्विनीवातश्रवश्चित्राः क्रये शुभाः ॥ १६ ॥

अन्वयः—क्रयर्क्षे विक्रयः नेष्टः विक्रयर्क्षे क्रयः अपि न । पौष्णाम्बुपाश्विनी-वातश्रवश्चित्राः क्रये शुभाः ॥ १६ ॥

भा०—क्रय (खरीदना) के नक्षत्र में विक्रय (बेचना) तथा विक्रय (बेचने) के नक्षत्र में क्रय (खरीद) नहीं करना चाहिये। रेवती, शततारका

अश्विनी, स्वाती, श्रवण और चित्रा नक्षत्र में क्रय करना (खरीदना) शुभ है, विक्रय करना अशुभ है॥ १६॥

बिक्री करने का तथा दुकान खोलने का मुहूर्त—

पूर्वाद्वीशकृशानुसार्पयमभे केन्द्रत्रिकोणे शुभैः
षट्त्र्यायेष्वशुभैर्विना घटतनुं सन्विक्रयः सत्तिथौ।
रिक्ताभौमघटान्विना च विपणिर्मैत्रध्रुवक्षिप्रभै-
र्लग्ने चन्द्रसिते व्ययाष्टरहितैः पापैः शुभैर्द्व्यायखे॥१७॥

अन्वयः—पूर्वाद्वीशकृशानुसार्पयमभे, शुभैः केन्द्रत्रिकोणे, अशुभैः षट्त्र्यायेषु घटतनुं विना सत्तिथौ विक्रयः सन् स्यात्। रिक्ताभौमघटान् विना च मित्रध्रुवक्षिप्रभैः, चन्द्रसिते लग्ने, पापैः व्ययाष्टरहितैः, शुभैः द्व्यायखे विपणिः शुभा स्यात्॥ १७॥

भा०—तीनों पूर्वा, द्वीश=विशाखा, कृशानु=कृत्तिका, सार्प=आश्लेषा, यमभ=भरणी ये नक्षत्र और केन्द्र १।४।७।१० त्रिकोण ६।५ इनमें शुभ ग्रह हों ६।३।११ इनमें पाप ग्रह हों और कुम्भ लग्न को छोड़कर अन्य लग्न में शुभ तिथि में विक्रय शुभ है। रिक्ता ६।४।१४ तिथि मङ्गलवार और कुम्भ लग्न को छोड़कर मित्र संज्ञक ध्रुव संज्ञक क्षिप्र संज्ञक इन नक्षत्रों में और लग्न में शुभ ग्रह हो तो दूकान लगाना शुभ है॥ १७॥

घोड़ा हाथी खरीदने बेचने का मुहूर्त—

क्षिप्रान्त्यवस्विन्दुमरुज्जलेशादित्येष्वरिक्तारदिने प्रशस्तम्।
स्याद्वाजिकृत्यं त्वथ हस्तिकार्यं कुर्यान्मृदुक्षिप्रचरेषु विद्वान्॥१८॥

अन्वयः—क्षिप्रान्त्यवस्विन्दुमरुज्जलेशादित्येषु, अरिक्तारदिने वाजिकृत्यं प्रशस्तम्। अथ मृदुक्षिप्रचरेषु विद्वान् हस्तिकार्यं कुर्यात्॥ १८॥

भा०—क्षिप्र संज्ञक, रेवती, धनिष्ठा, मृगशिरा, स्वाती, शतभिषा पुनर्वसु, नक्षत्रों में, रिक्ता तिथि को छोड़कर अन्य तिथि और मङ्गलवार को छोड़कर अन्य दिनों में घोड़ा खरीदना बेचना या सवारी में लाना शुभ है। इसी तरह मृदु संज्ञक, क्षिप्र संज्ञक और चर संज्ञक नक्षत्र में हाथी का खरीदना आदि शुभ है॥ १८॥

गहना बनवाने और पहिनने का मुहूर्त—

स्याद्भूषाघटनं त्रिपुष्करचरक्षिप्रध्रुवे रत्नयुक्
तत्तीक्ष्णोग्रविहीनभे रविकुजे मेषालिसिंहे तनौ।
तन्मुक्तासहितं चरध्रुवमृदुक्षिप्रे शुभे सत्तनौ
तीक्ष्णोग्राश्विमृगे द्विदैवदहने शस्त्रं शुभं घट्टितम्॥ १९॥

अन्वयः—त्रिपुष्करचरक्षिप्रध्रुवे भूषाघटनं सत् (शुभं स्यात्)। तीक्ष्णोग्र-

विहीनभे, रविकुजे मेषालिसिंहे तनौ रत्नयुक् तत् (भूषाघटनं) सत् । चरध्रुवमृदुक्षिप्रे शुभम्, सत्तनौ मुक्तासहितं तत् (भूषाघटनं) शुभं । तीक्ष्णोग्राश्विमृगे द्विदैवदहने शस्त्रं घट्टितं शुभं स्यात् ॥ १९ ॥

भा०—नक्षत्र प्रकरण के ५० वें श्लोक में कहे हुए त्रिपुष्कर योग में, चरसंज्ञक (स्वाती, पुनर्वसु, श्रवण, धनिष्ठा, शततारका), क्षिप्र संज्ञक (हस्त, अश्विनी, पुष्य, अभिजित्) तथा तीनों उत्तरा, रोहिणी, और ध्रुव संज्ञक नक्षत्रों में आभूषण बनवाना शुभ है। यदि रत्न सहित आभूषण बनवाना हो तो उसके लिये तीक्ष्ण संज्ञक उग्र संज्ञक नक्षत्रों को छोड़कर, शेष १८ नक्षत्रों में और रवि, मंगल का दिन और मेष, वृश्चिक तथा सिंह लग्न शुभ है। चर संज्ञक ध्रुव संज्ञक, मृदु संज्ञक, क्षिप्र संज्ञक नक्षत्र में शुभ लग्न में मुक्तासहित आभूषण बनवाना शुभ है। तीक्ष्ण संज्ञक, उग्र संज्ञक अश्विनी मृगशिरा विशाखा कृत्तिका इन नक्षत्रों में शस्त्र बनवाना शुभ है ॥ १९ ॥

रुपये पैसे ढालने और कपड़े धुलाने का मुहूर्त—

मुद्राणां पातनं सद्ध्रुवमृदुचरभक्षिप्रभैर्वीन्दुसौरे
घस्रे पूर्णाजयाख्ये न च गुरुभृगुजास्ते विलग्ने शुभैः स्यात् ।
वस्त्राणां क्षालनं सद्वसुहयदिनकृत्पञ्चकादित्यपुष्ये
नो रिक्तापर्वषष्ठीपितृदिनरविजज्ञेषु कार्यं कदापि ॥ २० ॥

अन्वयः—ध्रुवमृदुचरभक्षिप्रभैः नक्षत्रैः, वीन्दुसौरे घस्रे, पूर्णाजयाख्ये (तिथौ) न गुरुभृगुजास्ते, शुभैः विलग्ने स्थितैः मुद्राणां पातनं सत् । वसुहयदिनकृत्पंचकादित्यपुष्ये वस्त्राणां क्षालनं सत् । रिक्तापर्वषष्ठीपितृदिनरविजज्ञेषु वस्त्राणां क्षालनं कदापि नो कार्यम् ॥ २० ।

भा०—ध्रुव संज्ञक, मृदुसंज्ञक, चर संज्ञक और क्षिप्र संज्ञक में, सोम शनि को छोड़कर, पूर्णा और जया तिथियों में गुरु और शुक्र अस्त नहीं हो और शुभ ग्रह लग्न में हो तो मुद्रा ढालना शुभ है। धनिष्ठा, अश्विनी, हस्त से पाँच नक्षत्र (हस्त चित्रा, स्वाती विशाखा अनुराधा) पुनर्वसु पुष्य इन नक्षत्रों में कपड़ा धुलवाना शुभ है। रिक्ता तिथि, पर्व दिन, षष्ठी, माता पिता के श्राद्धदिन शनि और बुध को कपड़ा नहीं धुलावे ॥ २० ॥

शस्त्र धारण करने का मुहूर्त—

सन्धार्याः कुन्तवर्म्मेष्वसनशरकृपाणासिपुत्र्यो विरिक्ते
शुक्रेज्यार्केऽह्नि मैत्रध्रुवलघुसहितादित्यशाक्रद्विदैवे-
स्युर्लग्नेऽपि स्थिराख्ये शशिनि च शुभदृष्टे शुभैः केन्द्रगैः स्या-
द्योगः शय्यासनादेर्ध्रुवमृदुलघुहर्यन्तकादित्य इष्टः ॥ २१ ॥

अन्वयः—विरिक्ते तिथौ, शुक्रेज्यार्केऽह्नि, मैत्रध्रुवलघुसहितादित्यशाक्रद्विदैवे (नक्षत्रे), स्थिराख्ये लग्नेऽपि, शशिनि शुभदृष्टे, शुभैः केन्द्रगैः, कुन्तवर्म्मेष्वसनशरकृपाणासिपुत्र्यः सन्धार्याः स्युः। ध्रुवमृदुलघुहर्यन्तकादित्ये 'नक्षत्रे' शय्यासनादेः भोगः इष्टः स्यात्॥ २१॥

भा०—रिक्ता तिथि को छोड़कर शुक्र, गुरु और रविवार में, मैत्र संज्ञक, ध्रुवसंज्ञक, लघु संज्ञक, आदित्य=पुनर्वसु, शाक्र=ज्येष्ठा, द्विदैव=विशाखा इन नक्षत्रों में, स्थिर लग्न में चन्द्रमा को शुभग्रह देखता हो और शुभ ग्रह केन्द्र में हो तो बरछी (भाला) कवच, धनुष, बाण, कृपाण (तलवार) छूरी धारण करे। ध्रुव संज्ञक, मृदु संज्ञक, लघु संज्ञक, और हरि=अश्विनी, अन्तक=भरणी, आदित्य=पुनर्वसु इन नक्षत्रों में शय्या ऊर्णासन और मृगछाला आदि पर बैठना शुभ है॥ २१॥

अन्ध आदि नक्षत्र—

अन्धाक्षं वसुपुष्यधातृजलभद्वीशार्य्यमान्त्याभिधं
मन्दाक्षं रविविश्वमैत्रजलपाश्लेषाश्विचान्द्रं भवेत्।
मध्याक्षं शिवपित्रजैकचरणत्वाष्ट्रेन्द्रविध्यन्तकं
स्वक्षं स्वात्यदितिश्रवोदहनभाहिर्बुध्न्यरक्षोभगम्॥२२॥

अन्वयः—वसुपुष्यधातृजलभद्वीशार्यमान्त्याभिधं अन्धाक्षं (भवेत्) रविविश्वमैत्रजलपाश्लेषाश्विचान्द्रं मन्दाक्षं भवेत्। शिवपित्रजैकचरणत्वाष्ट्रेन्द्रविध्यन्तकं मध्याक्षं भवेत्। स्वात्यदितिश्रवोदहनभाहिर्बुध्न्यरक्षोभगं स्वक्षं भवेत्॥२२॥

भा०—धनिष्ठा, पुष्य, रोहिणी, पूर्वाषाढ़ा, विशाखा, उत्तराफाल्गुनी और रेवती ये अन्ध नक्षत्र हैं। हस्त, उत्तराषाढ़, अनुराधा, शतभिषा, आश्लेषा, अश्विनी, मृगशिरा ये मन्दाक्ष (कमदृष्टि) संज्ञक नक्षत्र हैं। आर्द्रा, मघा, पूर्वाभाद्रपदा, चित्रा, ज्येष्ठा, अभिजित्, भरणी ये नक्षत्र मध्याक्ष (मध्यम दृष्टि) संज्ञक हैं। स्वाती, पुनर्वसु, श्रवण, कृत्तिका, उत्तरभाद्रपदा, मूल, पूर्वाफाल्गुनी ये नक्षत्र सुलोचन संज्ञक हैं॥ २२॥

अन्धादि नक्षत्रों का फल—

विनष्टार्थस्य लाभोऽन्धे शीघ्रं मन्दे प्रयत्नतः।
स्याद् दूरे श्रवणं मध्ये श्रुत्याप्ती न सुलोचने॥ २३॥

अन्वयः—अन्धे विनष्टार्थस्य शीघ्रं लाभः। मन्दे प्रयत्नतः लाभः, मध्ये दूरे श्रवणम्। सुलोचने श्रुत्याप्ती न स्याताम्॥ २३॥

भा०—अन्ध नक्षत्र में खोया हुआ धन शीघ्र मिलता है, मन्दाक्ष में प्रयत्न करने पर, मध्याक्ष में दूर से केवल श्रवण मात्र होता है कि अमुक स्थान पर है परन्तु मिलता नहीं। सुलोचन में न प्राप्त होता है, न पता ही चलता है॥ २३॥

धन के देन-लेन में वर्ज्य नक्षत्र—

तीक्ष्णमिश्रध्रुवोग्रैर्यद् द्रव्यं दत्तं निवेशितम् ।
प्रयुक्तञ्च विनष्टञ्च विष्ट्यां पाते न चाप्यते ॥ २४ ॥

अन्वयः—तीक्ष्णमिश्रध्रुवोग्रैः तथा विष्टयां पाते च यत् द्रव्यं दत्तं निवेशितं प्रयुक्तं च विनष्टं च तत् न आप्यते ॥ २४ ॥

भा०—तीक्ष्ण संज्ञक, मिश्र संज्ञक, ध्रुव संज्ञक, और उग्र संज्ञक नक्षत्रों में दिया अथवा गाड़कर रखा हुआ, प्रयोग में लगाया गया अथवा नष्ट हुआ धन नहीं मिलता है, और भद्रा तथा व्यतीपात योग में भी व्यवहार में लाया हुआ धन वापस नहीं आता ॥ २४ ॥

कुआँ खोदने और उसके बाँधने का मुहूर्त—

मित्रार्कध्रुववासवाम्बुपमघातोयान्त्यपुष्येन्दुभिः
पापैर्हीनबलैस्तनौ सुरगुरौ ज्ञे वा भृगौ खे विधौ ।
आप्ये सर्वजलाशयस्य खननं व्यम्भोमघैः सेन्द्रभै-
स्तैर्नृत्यं हिबुके शुभैस्तनुगृहे ज्ञेऽब्जे ज्ञराशौ शुभम् ॥२५॥

अन्वयः—मित्रार्कध्रुववासवाम्बुपमघातोयान्त्यपुष्येन्दुभिः, पापैः हीनबलैः, सुरगुरौ ज्ञे वा तनौ, भृगौ खे, विधौ आप्ये, सर्वजलाशयस्य खननं शुभं भवति। व्यम्भोमघैः सेन्द्रभैः तैः (पूर्वोक्तनक्षत्रैः) शुभैः हिबुके, ज्ञे तनुगृहे, अब्जे ज्ञराशौ नृत्यं शुभं स्यात् ॥ २५ ॥

भा०—अनुराधा, हस्त, ध्रुव संज्ञक, धनिष्ठा, शतभिषा, मघा, पूर्वाषाढ़ा, रेवती, पुष्य, मृगशिरा इन नक्षत्रों में, पाप ग्रह निर्बल हो, लग्न में बुध वा गुरु हो, लग्न से दशम स्थान में शुक्र हो, जलचर राशि का चन्द्रमा हो तो ऐसे समय में कुआँ, तालाब, पोखरा खुदवाना शुभ है। पूर्वाषाढ़ और मघा इन नक्षत्रों को छोड़कर ज्येष्ठा और ऊपर कहे हुए नक्षत्रों में चतुर्थ स्थान में शुभ ग्रह, और लग्न में बुध हो कन्या अथवा मिथुन में चन्द्रमा हो तो नृत्यारम्भ शुभ होता है॥२५॥

नौकरी करने का मुहूर्त—

क्षिप्रे मैत्रे विरिसतार्केज्यवारे सौम्ये लग्नेऽर्के कुजे वा खलाभे।
योनेर्मैत्र्यां राशिपोश्चापि मैत्र्यां सेवा कार्या स्वामिनः सेवकेन।

अन्वयः—क्षिप्रे मैत्रे विरिसतार्केज्यवारे, सौम्ये लग्ने, अर्के खलाभे कुजे खलाभे, योनेः मैत्र्यां च राशिपोः अपि मैत्र्यां सेवकेन स्वामिनः सेवा कार्या ॥ २६ ॥

भा०—क्षिप्र संज्ञक, मैत्र संज्ञक, नक्षत्र में बुध[1], गुरु[4], शुक्र, रवि[3] इन वारों में, शुभ ग्रह लग्न में हो, रवि और मंगल दशम अथवा ग्यारहवें स्थान में हो, सेव्य और सेवक दोनों की योनि और राशीशों की मैत्री हो तो ऐसे मुहूर्त में सेवक स्वामी की सेवा (नौकरी) करे ॥ २६ ॥

कर्ज देने लेने का मुहूर्त—

स्वात्यादित्यमृदुद्विदैवगुरुभे कर्णत्रयाश्वे चरे
लग्ने धर्म्मसुताष्टशुद्धिसहिते द्रव्यप्रयोगः शुभः ।
नारे ग्राह्यमृणन्तु संक्रमदिने वृद्धौ करेऽर्केऽह्नि यत्-
तद्वंशेषु भवेदृणं न च बुधे देयं कदाचिद् धनम् ॥ २७॥

अन्वयः—स्वात्यादित्यमृदुद्विदैवगुरुभे कर्णत्रयाश्वे नक्षत्रे धर्मसुताष्टशुद्धिसहिते चरे लग्ने द्रव्यप्रयोगः शुभः । आरे तु पुनः संक्रमदिने वृद्धौ करे अर्केऽह्नि ऋणं न ग्राह्यम् । यत् ऋणं तत् तद्वंशेषु भवेत् । च (पुनः) बुधे कदाचित् धनं न देयम् ॥ २७ ॥

भा०—स्वाती, पुनर्वसु, मृदुसंज्ञक, विशाखा, पुष्य, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, अश्विनी, नक्षत्रों में चर लग्न में ९।५।८ ये स्थान ग्रहरहित हो तो द्रव्य सूदपर लगाना शुभ है। मंगलवार संक्रान्ति दिन वृद्धि योग हस्त नक्षत्र और रविवार इनमें ऋण नहीं ले क्योंकि इनमें ऋण लेने से वह वंश सदा ऋणी बना रहता है। कभी भी बुधवार को ऋण न दे ॥ २७ ॥

हल चलाने का मुहूर्त—

मूलद्वीशमघाचरध्रुवमृदुक्षिप्रैर्विनार्कं शनिं
पापैर्हीनबलैर्विधौ जललवे शुक्रे विधौ मांसले ।
लग्ने देवगुरौ हलप्रवहणं शस्तं न सिंहे घटे
कर्काजैणघटे तनौ क्षयकरं रिक्तासु षष्ठ्यां तथा ॥ २८ ॥

अन्वयः—मूलद्वीशमघाचरध्रुवमृदुक्षिप्रैः अर्कं शनिं विना, पापैः हीनबलैः, विधौ जललवे, शुक्रे, विधौ मांसले, देवगुरौ लग्ने (सति) हलप्रवहणं शस्तं (शुभं भवति) सिंहे घटे कर्काजैणघटे तनौ तथा रिक्तासु षष्ठ्यां वा हलप्रवहणं क्षयकरं कथितम् ॥ २८ ॥

भा०—मूल, विशाखा, मघा, चर संज्ञक, ध्रुवसंज्ञक, मृदुसंज्ञक, क्षिप्रसंज्ञक नक्षत्रों में, रवि और शनिवार से इतर दिनों में, पाप ग्रह बलहीन होने पर चन्द्रमा जलचर राशि के नवमांश में हो शुक्र और चन्द्रमा बलवान् हो, लग्न में गुरु हो तो हलप्रवहण (हल जोतना) शुभ है। सिंह, कुम्भ, कर्क, मेष, मकर, और तुला लग्न में तथा रिक्ता और षष्ठी में हल जोतना हानिकारक है ॥ २८ ॥

बीज बोने का मुहूर्त—

एतेषु श्रुतिवारुणादितिविशाखोडूनि भौमं विना
बीजोप्तिर्गदिता शुभा त्वगुभतोऽष्टाग्नीन्दुरामेन्दवः ।

रामेन्द्वग्नियुगान्यसत् शुभकराण्युप्तौ हलेऽर्कोज्झिताद्-
भाद्रामाष्टनवाष्टभानि मुनिभिः प्रोक्तान्यसत् सन्ति च॥२९॥

अन्वयः—श्रुतिवारुणादितिविशाखोडूनि भौमं विना एतेषु (पूर्वकथितनक्ष दिनेषु) बीजोप्तिः शुभा गदिता। तु (पुनः) अगुभतः (राहुभात्) अष्टाग्नी रामेन्दवः रामेन्द्वग्नियुगानि उप्तौ (वपने) असत् शुभकराणि च प्रोक्तानि। ह अर्कोज्झितात् भात् मुनिभिः रामाष्टनवाष्टमानि असत्सन्ति च प्रोक्तानि ॥ २९॥

भा०—श्रवण, शतभिषा, पुनर्वसु, विशाखा नक्षत्रों को औ मंगलवार को छोड़कर इस श्लोक में कहे हुए मुहूर्त में बीज बोना शु है। राहु जिस नक्षत्र में हो उस नक्षत्र से ८ नक्षत्र अशुभ ३ शुभ, अशुभ ३ शुभ, १ अशुभ ३ शुभ, १ अशुभ ३ शुभ, ४ अशुभ हो है। और हल में जिस नक्षत्र में सूर्य हो उससे पहले का नक्षत्र सहि ३ तीन नक्षत्र अशुभ, ८ शुभ, ९ अशुभ और फिर ८ शुभ होते हैं॥२९

विरेचन वमन और धर्मकार्य करने का मुहूर्त—

स्वाष्ट्राग्निमित्रकभाद् द्वयेऽम्बुपलघुश्रोत्रे शिरामोक्षणं
भौमार्केज्यदिने विरेकवमनाद्यं स्याद्बुधार्की विना।
मित्रक्षिप्रचरध्रुवे रविशुभाहे लग्नवर्गे विदो
जीवस्यापि तनौ गुरौ निगदिता धर्म्मक्रिया तद्बले॥३०॥

अन्वयः—स्वाष्ट्राग्निमित्रकभादद्वये अम्बुपलघुश्रोत्रे (नक्षत्रे) भौमार्केज्यदिने शि मोक्षणं, बुधार्की विना विरेकवमनाद्यञ्च (शुभं) स्यात्। मित्रक्षिप्रचरध्रुवे र शुभाहे विदः जीवस्यापि लग्नवर्गे, तनौ गुरौ, तद्बले (गुरुबले) धर्मक्रिया निगदिता। ३०॥

भा०—चित्रा, स्वाती, अनुराधा, ज्येष्ठा, रोहिणी, मृगशिरा, श भिषा और लघुसंज्ञक तथा श्रवण नक्षत्रों में मंगल गुरु और रविवा शिरा खुलवाना शुभ है। बुध और शनिवार को छोड़कर ऊपर हुए नक्षत्रों में जुलाब लेना तथा वमन क्रिया करना शुभ है। अनु क्षिप्रसंज्ञक, चरसंज्ञक, ध्रुवसंज्ञक नक्षत्र रविवार और शुभ दिन, में गुरु का षड्वर्ग हो, लग्न में गुरु हो और वह बली हो तो धर्म प्रारम्भ करना शुभ है॥ ३०॥

धान्य काटने का मुहूर्त—

तीक्ष्णाजपादकरवह्निवसुश्रुतीन्दु-
स्वातीमघोत्तरजलान्तकतक्षपुष्ये।
मन्दाररिक्तरहिते दिवसेऽतिशस्ता
धान्यच्छिदा निगदिता स्थिरभे विलग्ने॥

अन्वयः—तीक्ष्णाजपादकरवह्निवसुश्रुतीन्दुस्वातीमघोत्तरजलान्तकतक्षपुष्ये (नक्षत्रे) मन्दाररिक्तरहिते दिवसे, स्थिरभे (स्थिरराशौ) विलग्ने धान्यच्छिदा अतिशस्ता निगदिता ॥ ३१ ॥

भा०—तीक्ष्ण संज्ञक, पूर्वभाद्रपद, हस्त, कृत्तिका, धनिष्ठा, श्रवण, मृगशिरा, स्वाती, मघा, तीनों उत्तरा, पूर्वाषाढ़, भरणी, चित्रा और पुष्य नक्षत्रों में शनिवार मंगलवार और रिक्ता तिथि को छोड़कर स्थिर लग्न में धान्यादिका छेदन (काटना) शुभ है ॥ ३१ ॥

धान्य मींजने और रोपने का मुहूर्त—

भाग्यार्यमश्रुतिविधातृमघेन्द्रमूल-
मैत्रान्त्यभेषु कथितं कणमर्द्दनं सत् ।
द्वीशाजपान्निर्ऋतिधातृशतार्यमर्क्षे
सस्यस्य रोपणमिहार्किकुजौ विना सत् ॥३२॥

अन्वयः—भाग्यार्यमश्रुतिमघेन्द्रविधातृमूलमैत्रान्त्यभेषु कणमर्दनं सत् कथितम् । द्वीशाजपान्निर्ऋतिधातृशतार्यमर्क्षे, अर्किकुजौ विना। सस्यस्य रोपणं सत् कथितम् ॥ ३२ ॥

भा०—पूर्वाफाल्गुनी, उत्तरफाल्गुनी, श्रवण, रोहिणी, मघा, ज्येष्ठा, मूल, अनुराधा, रेवती, नक्षत्रों में धान्यमर्दन शभ है। विशाखा, पूर्वाभाद्र, मूल, रोहिणी, शतभिषा, उत्तरफाल्गुनी इन नक्षत्रों में शनि मङ्गल को छोड़कर अन्य दिनों में धान्य रोपना शुभ है ॥ ३२ ॥

धान्य रखने का मुहूर्त—

मिश्रोग्ररौद्रभुजगेन्द्रविभिन्नभेषु
कर्काजतौलिरहिते च तनौ शुभाहे ।
धान्यस्थितिः शुभकरी गदिता ध्रुवेज्य-
द्वीशेन्द्रदस्रचरभेषु च धान्यवृद्धिः ॥ ३३ ॥

अन्वयः—मिश्रोग्ररौद्रभुजगेन्द्रविभिन्नभेषु च कर्काजतौलिरहिते तनौ शुभाहे धान्यस्थितिः शुभकरी गदिता । च (पुनः) ध्रुवेज्यद्वीशेन्द्रदस्रचरभेषु धान्यवृद्धिः शुभकरी गदिता ॥ ३३ ॥

भा०—मिश्रसंज्ञक, उग्रसंज्ञक, आर्द्रा, श्लेषा, ज्येष्ठा इनसे भिन्न नक्षत्र में, कर्क, मेष, तुला इन लग्नों को छोड़कर अन्य लग्न में, शुभ दिन में धान्य रखना शुभ है। ध्रुवसंज्ञक, पुष्य, विशाखा, ज्येष्ठा, अश्विनी और चरसंज्ञक नक्षत्र में धान्य ब्याज पर लगाना शुभ है ॥ ३३ ॥

शान्ति और पौष्टिक कर्म का मुहूर्त—

क्षिप्रध्रुवान्त्यचरमैत्रमघासु शस्तं
स्यात् शान्तिकं च सह मङ्गलपौष्टिकाभ्याम् ।

खेऽर्के विधौ सुखगते तनुगे गुरौ नो
मौढ्यादिदुष्टसमये शुभदं निमित्ते ॥ ३४ ॥

अन्वयः—क्षिप्रध्रुवान्त्यचरमैत्रमघासु (नक्षत्रेषु) अर्के खे विधौ सुखगते, गुरौ तनुगे (सति) मंगलपौष्टिकाभ्यां सह शान्तिकं श·तं स्यात् । मौढ्यादिदुष्टसमये नो शुभदम् । निमित्ते शुभदं भवति ॥ ३४ ॥

भा०—क्षिप्रसंज्ञक, ध्रुवसंज्ञक, रेवती, चरसंज्ञक, अनुराधा, मघा, इन नक्षत्रों में सूर्य दशवें में हो और चौथे स्थान में चन्द्रमा हो तथा लग्नमें गुरु हो तो मंगल पौष्टिकादि कार्य और रोगादि शमनार्थ पुरश्चरण करना वगैरह शुभ होते हैं। गुरु शुक्रास्तादि समय में शुभ कर्म ठीक नहीं है परन्तु निमित्त (आवश्यकता पड़ने पर) केतु आदि की ग्रहशान्ति वगैरह अस्त समय में भी करना शुभ है ॥ ३४ ॥

हवन के समय आहुति किस ग्रह के मुख में पड़ना ठीक है—

सूर्य्यभात् त्रित्रिभे चान्द्रे सूर्य्यविच्छुक्रपङ्गवः ।
चन्द्रारेज्यागुशिखिनो नेष्टा होमाहुतिः खले ॥३५॥

अन्वयः—सूर्यभात् त्रित्रिभे चान्द्रे सूर्यविच्छुक्रपंगवः चन्द्रारेज्यागुशिखिनः (ज्ञेयाः) खले होमाहुतिः नेष्टा ॥ ३५ ॥

भा०— सूर्य के नक्षत्र से तीन तीन नक्षत्र क्रम से सूर्य, बुध, शुक्र, शनि, चन्द्र, मङ्गल, गुरु, राहु और केतु इन ग्रहों के होते हैं, पापग्रह के नक्षत्र में आहुति शुभ नहीं होती है ॥ ३५ ॥

अग्नि का निवास—

सैका तिथिर्वारयुता कृताप्ता शेषे गुणेऽभ्रे भुवि वह्निवासः ।
सौख्याय होमे शशियुग्मशेषे प्राणार्थनाशौ दिवि भूतले च ॥३६॥

अन्वयः—तिथिः सैका वारयुता कृताप्ता गुणेऽभ्रे शेषे सति भुवि वह्निवासः होमे सौख्याय (भवति) । च (पुनः) शशियुग्मशेषे दिवि भूतले च वह्निवासः ज्ञेयः, तत्र प्राणार्थनाशौ स्याताम् ॥ ३६ ॥

भा०—जिस दिन और तिथि में होम करना हो शुक्ल पक्षकी प्रतिपदा से वर्तमान तिथि और रविवार से लेकर वर्तमान दिन तक गिने दोनों संख्या को जोड़कर उसमें १ जोड़ दे फिर ४ से भाग दे शेष यदि ३, ०, तीन या शून्य बचे तो पृथ्वी पर अग्नि रहती है उसमें होम करने से सुख मिलता है। यदि १ बचे तो आकाश में अग्नि का वास रहता है, वह प्राण का नाश करता है। दो बचे तो पाताल में अग्नि का वास रहता है वह धन नाश करता है ॥ ३६ ॥

नवान्न भक्षण का मुहूर्त—

नवान्नं स्यात् चरक्षिप्रमृदुभे सत्तनौ शुभम् ।
विना नन्दाविषघटीमधुपौषार्किभूमिजान् ॥ ३७ ॥

अन्वयः—चरक्षिप्रमृदुभे, सत्तनौ नन्दाविषघटीमधुपौषार्किभूमिजान् विना नवान्नं (नवान्नभक्षणं) शुभं स्यात् ॥ ३७ ॥

भा०—चरसंज्ञक, क्षिप्रसंज्ञक, मृदुसंज्ञक नक्षत्रों में शुभलग्न में नन्दा तिथि, विषघटी, चैत्र और पौष मास शनि मंगल इन सबों को छोड़कर नवान्न भक्षण शुभ है ॥ ३७ ॥

नौका और जहाज बनाने का मुहूर्त—

याम्यत्रयविशाखेन्द्रसार्पपित्र्येशभिन्नभे ।
भृग्विज्यार्कदिने नौकाघटनं सत्तनौ शुभम् ॥ ३८ ॥

अन्वयः—याम्यत्रयविशाखेन्द्रसार्पपित्र्येशभिन्नभे भृग्विज्यार्कदिने सत्तनौ (शुभे लग्ने) नौकाघटनं शुभं भवति ॥ ३८ ॥

भा०—भरणी, कृत्तिका, ज्येष्ठा, रोहिणी, विशाखा, श्लेषा, मघा, आर्द्रा इनसे भिन्न नक्षत्रों में शुक्र, गुरु, रविवार में शुभलग्न में नौका बनवाना शुभ है ॥ ३८ ॥

वीरसाधन और अभिचार—

मूलार्द्राभरणीपित्र्यमृगे सौम्ये घटे तनौ ।
सुखे शुक्रेऽष्टमे शुद्धे सिद्धिर्वीराभिचारयोः ॥ ३९ ॥

अन्वयः—मूलार्द्राभरणीपित्र्यमृगे (नक्षत्रे) घटे तनौ सौम्ये, शुक्र सुखे, अष्टमे शुद्धे सति वीराभिचारयोः सिद्धिः स्यात् ॥ ३९ ॥

भा०—मूल, आर्द्रा, भरणी, मघा, मृगशिरा नक्षत्रों में, कुम्भलग्न बुध से युत हो, चतुर्थ स्थान में शुक्र हो, अष्टम स्थान ग्रह रहित हो तो वीरकर्म साधन और अभिचार (मारणादि प्रयोग) सिद्ध होते हैं ॥ ३९ ॥

रोगमुक्तस्नानमुहूर्त—

व्यन्त्यादितिध्रुवमघानिलसार्पधिष्ण्ये
रिक्ते तिथौ चरतनौ विकवीन्दुवारे ।
स्नानं रुजाविरहितस्य जनस्य शस्तं
हीने विधौ खलखगैर्भवकेन्द्रकोणे ॥ ४० ॥

अन्वयः—व्यन्त्यादितिध्रुवमघानिलसार्पधिष्ण्ये, रिक्ते तिथौ, चरतनौ, विकवीन्दुवारे, विधौ हीने, खलखगैः भवकेन्द्रकोणे रुजाविरहितस्य जनस्य स्नानं शस्तं भवति ॥ ४० ॥

भा०—रेवती, पुनर्वसु, ध्रुवसंज्ञक, और मघा, स्वाती, श्लेषा इनसे भिन्न नक्षत्रों में, रिक्ता तिथि में, चर लग्न में, शुक्र, सोमवार को छोड़कर, निर्बल चन्द्रमा हो, पापग्रह ग्यारहवें, केन्द्र, और त्रिकोण में हो तो रोग से मुक्त व्यक्तिको स्नान करना शुभ है ॥ ४० ॥

शिल्पशिक्षामहूर्त—

मृदुध्रुवक्षिप्रचरे ज्ञे गुरौ वा खलग्नगे।
विधौ ज्ञजीववर्गस्थे शिल्पविद्या प्रशस्यते॥ ४१॥

अन्वयः—मृदुध्रुवक्षिप्रचरे नक्षत्रे ज्ञे खलग्नगे वा गुरौ खलग्नगे विधौ ज्ञजीववर्गस्थे सति शिल्पविद्या प्रशस्यते॥ ४१॥

भा०—मृदुसंज्ञक, ध्रुवसंज्ञक, क्षिप्रसंज्ञक नक्षत्रों में बुध और गुरु लग्न या दशम स्थान में हो, बुध और गुरु के षड्वर्ग में चन्द्रमा हो तो शिल्प (कारीगरी, चित्रकारी आदि) सीखना शुभ है॥ ४१॥

मित्रता का मुहूर्त—

सुरेज्यमित्रभाग्येषु चाष्टम्यां तैतिले हरौ।
शुक्रदृष्टे तनौ सौम्यवारे सन्धानमिष्यते॥ ४२॥

अन्वयः—सुरेज्यमित्रभाग्येषु च (पुनः) अष्टम्यां वा हरौ, तैतिले, शुक्रदृष्टे तनौ, सौम्यवारे सन्धानं (मैत्रीकरणं) इष्यते॥ ४२॥

भा०—पुष्य अनुराधा पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्रोंमें, अष्टमी द्वादशी तिथिमें, तैतिल करणमें, शुक्र लग्नको देखता हो और बुधवार हो तो सन्धि करना शुभ है॥ ४२॥

दिव्य परीक्षा करने का मुहूर्त—

त्यक्त्वाष्टभूतशनिविष्टिकुजान् जनुर्भ-
मासौ मृतौ रविविधू अपि भानि नाड्यः।
द्व्यङ्गे चरे तनुलवे शशिजीवतारा-
शुद्धौ करादितिहरीन्द्रकपे परीक्षा॥ ४३॥

अन्वयः—अष्टभूतशनिविष्टिकुजान् जनुर्भमासौ मृतौ रविविधू अपि नाड्यः भानि त्यक्त्वा द्व्यङ्गे चरे तनुलवे सति शशिजीवताराशुद्धौ (सत्यां), करादितिहरीन्द्रकपे परीक्षा कार्या॥ ४३॥

भा०—अष्टमी और चतुर्दशी तिथि, शनि और मंगलवार, भद्रा, जन्मनक्षत्र, जन्ममास, अपने जन्मराशिसे अष्टम सूर्य और चन्द्रमा, नाड़ी के नक्षत्र १।१०।११।१६।२५।१८।२३ इनको छोड़कर द्विस्वभाव लग्न, चरलग्न और इन्हीं के नवमांश में चन्द्रमा गुरु और तारा शुद्ध हो तथा हस्त, पुनर्वसु, श्रवण, ज्येष्ठा, शतभिषा इन नक्षत्रों में सत्य-असत्य की परीक्षा शुभ है॥ ४३॥

सामान्य प्रकार से शुभ कार्यमात्रके आरंभ करने का मुहूर्त—

व्ययाष्टशुद्धोपचये लग्नगे शुभदृग्युते।
चन्द्रे त्रिषड्दशायस्थे सर्व्वारम्भः प्रसिद्ध्यति॥ ४४॥

अन्वय:—व्ययाष्टशुद्धोपचये लग्नगे शुभदृग्युते, चन्द्रे च त्रिषड्दशायस्थे (सति) सर्वारम्भः प्रसिद्धयति ॥ ४४ ॥

भा०—द्वादश स्थान और अष्टम स्थान शुद्ध हो और जन्म राशि अथवा जन्म लग्न से उपचय ३।६।१०।११ इनमें से कोई राशि लग्न में हो शुभ ग्रह से युत किंवा दृष्ट हो चन्द्रमा लग्न से ३।६।१०।११ इनमें से किसी स्थान में हो तो उस मुहूर्त में आरंभ किये हुए सभी कार्य सफल हुआ करते हैं ॥ ४४ ॥

नक्षत्रपरसे रोगोत्पत्ति तथा सर्प के काटने का फल—

स्वातीन्द्रपूर्वाशिवसार्पभे मृति-
ज्वरेऽन्त्यमैत्रे स्थिरता भवेद्रुजः।
याम्यश्रवोवारुणतक्षभे शिवा
घस्रा हि पक्षो द्व्यधिपार्कवासवे ॥ ४५ ॥
मूलाग्निदास्रे नव पित्र्यभे नखा
बुध्न्यार्यमेज्यादितिधातृभे नगाः।
मासोऽब्जवैश्वेऽथ यमाहिमूलभे
मिश्रेशपित्र्ये फणिदंशने मृतिः ॥ ४६ ॥

अन्वय:—स्वातीन्द्रपूर्वाशिवसार्पभे ज्वरे सति मृतिः। अन्त्यमैत्रे रुजः स्थिरता भवेत्। याम्यश्रवोवारुणतक्षभे शिवाः घस्राः, द्व्यधिपार्कवासवे पक्षः। हि मूलाग्निदास्रे नव, पित्र्यभे नखाः, बुध्न्यार्यमेज्यादितिधातृभे नगाः, अब्जवैश्वे मासः (मासपर्यन्तं रोगस्थिरता भवेत्)। अथ यमाहिमूलभे मिश्रेशपित्र्ये फणिदंशने सति मृतिः स्यात् ॥ ४५–४६ ॥

भा०—स्वाती, ज्येष्ठा, तीनों पूर्वा, आर्द्रा, और अश्लेषा नक्षत्रों में ज्वर हो तो मृत्यु होती है। रेवती, अनुराधा इनमें रोग होने से रोग स्थिर रहता है (अर्थात् जल्दी नहीं छूटता है)। भरणी, श्रवण, शतभिषा, चित्रा नक्षत्रों में ११ दिन रोग रहता है। विशाखा, हस्त, धनिष्ठा इन नक्षत्रों में १५ दिन रोग रहता है। मूल, कृत्तिका, अश्विनी इनमें ९ दिन तक रोग रहता है। मघा नक्षत्र में रोग हो तो २० दिन रहता है। उत्तरभाद्रपद, उत्तराफाल्गुनी, पुष्य, पुनर्वसु, रोहिणी इन नक्षत्रों में रोग आरम्भ होने से ७ दिन रहता है। मृगशिरा, उत्तराषाढ़ नक्षत्र में रोग आरम्भ होने से १ महीना रहता है। भरणी, श्लेषा मूल, मिश्रसंज्ञक (कृत्तिका-विशाखा) और आर्द्रा, मघा नक्षत्रों में सर्प काटे तो मृत्यु होती है ॥ ४५–४६ ॥

रोगी का शीघ्र मरणयोग—

रौद्राहिशाक्राम्बुपयाम्यपूर्वाद्विदैववस्वग्निषु पापवारे।
रिक्ताहरिस्कन्ददिने च रोगे शीघ्रं भवेद्रोगिजनस्य मृत्युः ॥४७॥

अन्वयः—रौद्राहिशाक्राम्बुपयाम्यपूर्वाद्विदैववस्वग्निषु नक्षत्रेषु, पापवारे रिक्ताहरिस्कन्ददिने च रोगे सति रोगिजनस्य शीघ्रं मृत्युः भवेत् ॥ ४७ ॥

भा०—आर्द्रा, श्लेषा, ज्येष्ठा, शतभिषा, भरणी, तीनों पूर्वा, विशाखा, धनिष्ठा, कृत्तिका नक्षत्रों में, पाप दिन (रवि मंगल शनि) में, रिक्ता द्वादशी षष्ठी तिथियों में रोग आरम्भ हो तो रोगी की शीघ्र मृत्यु हो जाती है ॥ ४७ ॥

यहाँ 'दिने' रिक्ता हरिस्कन्द दिने के स्थान में तिथौ का पाठ होना चाहिये क्योंकि दिन तो पहले ही "पापवारे" से कहा जा चुका है।

प्रेतदाह का मुहूर्त—

क्षिप्राहिमूलेन्दुहरीशवायुभे प्रेतक्रिया स्याज्झषकुम्भगे विधौ।
प्रेतस्य दाहं यमदिग्गमं त्यजेत् शय्यावितानं गृहगोपनादि च॥

अन्वयः—क्षिप्राहिमूलेन्दुहरीशवायुभे प्रेतक्रिया स्यात् । विधौ (चन्द्रे) झषकुम्भगे प्रेतस्य दाहं यमदिग्गमं शय्यावितानं गृहगोपनादि च त्यजेत् ॥४८॥

भा०—क्षिप्रसंज्ञक, श्लेषा, मूल, मृगशिरा, श्रवण, आर्द्रा, स्वाती इन नक्षत्रों में प्रेत की क्रिया श्राद्ध आदि करना शुभ है। दक्षिण दिशा की यात्रा, शय्या (बिछावन), वितान (सामियाना) और घर छावना छोड़ देना चाहिये क्योंकि धनिष्ठा के दो चरण से लेकर रेवती के अन्तिम चरण तक धनिष्ठादि पञ्चक कहलाता है। इसमें घर के लिए काष्ठ वगैरह भी इकट्ठा नहीं करे ॥ ४८ ॥

काष्ठसंग्रहमुहूर्त—

सूर्यर्क्षात् रसभैरधःस्थलगतैः पाको रसैः संयुतः
शीर्षे युग्ममितैः शवस्य दहनं मध्ये युगैः सर्पभीः।
प्रागाशादिषु वेदभैः स्वसुहृदां स्यात्संगमो रोगभीः
क्वाथादेः करणं सुखं च गदितं काष्ठादिसंस्थापने ॥४९॥

अन्वयः—सूर्यर्क्षात् अधःस्थलगतैः रसभैः काष्ठादिसंस्थापने रसैः संयुतः पाकः स्यात् । शीर्षे युग्ममितैः शवस्य दहनं भवेत् । मध्ये युगैः सर्पभीः स्यात्। प्रागाशादिषु वेदभैः क्रमेण स्वसुहृदां संगमः रोगभीः क्वाथादेः करणं सुखं च गदितम् (कथितम्) ॥ ४९ ॥

भा०—सूर्य के नक्षत्र से नीचे के ६ नक्षत्रों में लकड़ी रखने से पाक (रसोई) रसयुक्त होता है। उसके आगे के २ नक्षत्र सिर के हैं इनमें लकड़ी रखने से मुर्दा जलाने के काम आती है। मध्य के चार नक्षत्र में सर्प का भय होता है और पूर्वादि दिशा के चार २ नक्षत्र में क्रम से मित्र का मिलन, रोग भय, काढ़ा आदि बनाना और सुख प्राप्त होता है ॥ ४९ ॥

त्रिपुष्करयोग—

भद्रातिथौ रविजभूतनयार्कवारे द्वीशायमाजचरणादितिवह्निवैश्वे
त्रैपुष्करो भवति मृत्युविनाशवृद्धौ त्रैगुण्यदो द्विगुणकृद्वसुतक्षचान्द्रे

अन्वयः—भद्रातिथौ रविजभूतनयार्कवारे द्वीशार्यमाजचरणादितिवह्निवैश्वे नक्षत्रे मृत्युविनाशवृद्धौ त्रैगुण्यदः त्रैपुष्करः (एतन्नामा योगः) भवति। भद्रातिथौ रविजभूतनयार्कवारे वसुतक्षचान्द्रे मृत्युविनाशवृद्धौ द्विगुणकृत् (द्विपुष्करः योगः स्यात्) । ५०॥

भा०—भद्रा संज्ञक द्वितीया सप्तमी द्वादशी तिथि, शनि, मंगल और रवि, तथा विशाखा, उत्तराफाल्गुनी, पूर्वभाद्र, पुनः पुनर्वसु, कृत्तिका, उत्तराषाढ़ नक्षत्र इन तीनों जब का योग हो तो त्रिपुष्कर नाम का योग होता है। यह त्रिपुष्कर योग, मृत्यु, विनाश और वृद्धि में त्रिगुण फल देता है। उपर्युक्त दिन व तिथि तथा धनिष्ठा चित्रा मृगशिरा नक्षत्र हो तो द्विपुष्कर योग होता है यह द्विगुण फल देता है ५०

पुत्तलदाह का मुहूर्त—

शुक्रारार्किषु दर्शभूतमदने नन्दासु तीक्ष्णोग्रभे
पौष्णे वारुणभे त्रिपुष्करदिने न्यूनाधिमासेऽयने।
याम्येऽब्दात्परतश्च पातपरिघे देवेज्यशुक्रास्तके
भद्रावैधृतयोः शवप्रतिकृतेर्दाहो न पक्षे सिते ॥ ५१ ॥

अन्वयः—शुक्रारार्किषु (दिनेषु), दर्शभूतमदने नन्दासु तिथिषु, तीक्ष्णोग्रभे पौष्णे वारुणभे (नक्षत्रे), त्रिपुष्करदिने, न्यूनाधिमासे, अब्दात्परतः याम्ये (अयने), च पातपरिघे, देवेज्यशुक्रास्तके, भद्रावैधृतयोः सिते पक्षे, शवप्रतिकृतेर्दाहः न शुभः स्यात् ॥ ५१ ॥

भा०—शुक्र, मङ्गल और शनिवार, अमावस्या, चतुर्दशी, त्रयोदशी, नन्दा १।६।११ इन तिथियों में और तीक्ष्णसंज्ञक, उग्रसंज्ञक, रेवती, शतभिषा, त्रिपुष्कर योग, क्षयमास-अधिमास (मलमास) में, एक वर्षके बाद दक्षिणायनमें व्यतीपात योग और परिघयोगमें, गुरु और शुक्र के अस्त में, भद्रा में और वैधृत (महापात) में, और शुक्ल पक्षमें मुर्दे के बने आकृति (पुत्तल) का दाह शुभ नहीं होता है ॥५१॥

जन्मप्रत्यरितारयोर्मृतिसुखान्त्येऽब्जे च कर्त्तुर्न स-
न्मध्यो मैत्रभगादितिध्रुववविशाखाद्व्यंघ्रिभे ज्ञेऽपि च।
श्रेष्ठोऽर्केज्यविधोर्दिने श्रुतिकरस्वात्यश्विपुष्ये तथा,
त्वाशौचात् परतो विचार्य्यमखिलं मध्ये यथासम्भवम् ॥५२॥

अन्वयः—जन्मप्रत्यरितारयोः, अब्जे च मृतिसुखान्त्ये सति कर्तुः न सत् स्यात्। मैत्रभगादितिध्रुवविशाखाद्व्यङ्घ्रिभे च (पुनः) ज्ञेऽपि कर्तुः मध्यः स्यात्। अर्केज्यविधोर्दिने श्रुतिकरस्वात्यश्विपुष्ये कर्तुः श्रेष्ठः स्यात्। अखिलं आशौचात् परतः विचार्यम्। मध्ये तु यथासम्भवं कर्म कार्यम् ॥ ५२ ॥

भा०—जन्मतारा और प्रत्यरितारा में तथा ८।४।१२ वें चन्द्रमा हो तो कर्ता प्रेत की क्रिया न करे। अनुराधा, पूर्वाफाल्गुनी, पुनर्वसु, ध्रुव

संज्ञक, विशाखा, मृगशिरा, चित्रा धनिष्ठा, ये नक्षत्र और बुधवार प्रेत कर्म में मध्यम है। रवि, गुरु और सोमवार में, श्रवण, हस्त, स्वाती, अश्विनी, पुष्य इन नक्षत्रों में प्रेतक्रिया श्रेष्ठ है। यह विचार अशौच के बाद करना चाहिये, अशौच के बीच में जैसा सम्भव हो वैसा करना चाहिये ॥ ५२ ॥

अभुक्त मूलका प्रमाण—

अभुक्तमूलं घटिकाचतुष्टयं ज्येष्ठान्त्यमूलादिभवं हि नारदः।
वसिष्ठ एकद्विघटीमितं जगौ बृहस्पतिस्त्वेकघटीप्रमाणकम् ॥५३॥

अन्वयः—ज्येष्ठान्त्यमूलादिभवं घटिकाचतुष्टयं अभुक्तमूलं नारदः जगौ। ज्येष्ठान्त्यमूलादिभवं एकद्विघटीमितं अभुक्तमूलं वसिष्ठः जगौ। ज्येष्ठान्त्यमूलादिभवं एकघटीप्रमाणकं अभुक्तमूलं बृहस्पतिः जगौ ॥ ५३ ॥

भा०—अभुक्त मूल का प्रमाण ज्येष्ठा के अन्त और मूल के आदि की ४ घटी मिलाकर अभुक्त मूल होता है, यह नारद मुनिका वाक्य है, ज्येष्ठा की १ और मूलकी दो घटी मिलाकर अभुक्त मूल वशिष्ठजी कहते हैं, और ज्येष्ठा के अन्त तथा मूल के आदिकी १ घटी अभुक्त मूल बृहस्पति कहते हैं ॥ ५३ ॥

अभुक्त मूल में विशेष—

अथोचुरन्ये प्रथमाष्टघट्यो मूलस्य शाक्रान्तिमपञ्चनाड्यः।
जातं शिशुं परित्यजेद्वा मुखं पितास्याष्टसमा न पश्येत् ॥५४॥

अन्वयः—अथ मूलस्य प्रथमाष्टघट्यः शाक्रान्तिमपञ्चनाड्यः अभुक्तमूलं अन्ये ऊचुः। तत्र जातं शिशुं परित्यजेत्, वा अस्य पिता अष्टसमाः मुखं न पश्येत् ।५४।

भा०—अन्य आचार्य कहते हैं कि मूल के आदि की ८ घटी और ज्येष्ठा के अन्त की ५ घटी दोनों मिलाकर १३ घटी अभुक्त मूल का मान है, इस अभुक्त मूल में जो सन्तान पैदा हो उसको त्याग दे अथवा उसका मुख उसका पिता आठ वर्ष तक न देखे ॥ ५४ ॥

मूल आश्लेषा का फल—

आद्ये पिता नाशमुपैति मूलपादे द्वितीये जननी तृतीये।
धनं चतुर्थोऽस्य शुभोऽथ शान्त्या सर्वत्र सत्स्यादहिभे विलोमम् ५५

अन्वयः—आद्ये मूलपादे पिता नाशं उपैति, द्वितीये जननी, तृतीये धनं नाशमुपैति। अस्य चतुर्थः शुभः स्यात्। शान्त्या सर्वत्र सत् स्यात्। अहिभे विलोमं ज्ञेयम् ॥ ५५ ॥

भा०—मूल के प्रथम चरण में जन्म हो तो पिता का नाश, दूसरे चरण में जन्म हो तो माता का नाश, तीसरे चरण में धन का नाश और चौथे चरण में शुभ होता है। आश्लेषा के प्रथम चरण शुभ, दूसरे में धनका नाश, तीसरे में माता का नाश, चौथे में पिता का नाश होता है। नक्षत्रोंकी दोष निवृत्ति के लिये शान्ति करने पर शुभ होता है ॥ ५५ ॥

मूल नक्षत्र का निवास—

स्वर्गे शुचिप्रौष्ठपदेषमाघे भूमौ नभःकार्तिकचैत्रपौषे ।
मूलं ह्यधस्तात् तु तपस्यमार्गवैशाखशुक्रेष्वशुभञ्च तत्र ॥५६॥

अन्वयः—शुचिप्रौष्ठपदेषमाघे मूलं स्वर्गे तिष्ठति, नभःकार्तिकचैत्रपौषे मूलं भूमौ तिष्ठति, तपस्यमार्गवैशाखशुक्रेषु मूलं अधस्तात् तिष्ठति । मूलं यत्र तिष्ठति तत्रैव अशुभं ज्ञेयम् ॥ ५६ ॥

भा०—आषाढ़, भाद्रपद, आश्विन, माघ इन महीनों में मूल नक्षत्र स्वर्ग में रहता है । श्रावण, कार्तिक, चैत्र और पौष में भूमि में तथा फाल्गुन, अगहन, वैशाख, ज्येष्ठ, इनमें पाताल में मूल नक्षत्र वास करता है । मूल नक्षत्र जहाँ रहता है वहीं अशुभ फल देता है ॥५६॥

सन्तानोत्पत्ति में अशुभ काल—

गण्डान्तेन्द्रभशूलपातपरिघव्याघातगण्डावमे
संक्रान्तिव्यतिपातवैधृतिसिनीवालीकुहूदर्शके ।
वज्रे कृष्णचतुर्दशीषु यमघण्टे दग्धयोगे मृतौ
विष्टौ सोदरभे जनिर्न पितृभे शस्ता शुभा शान्तितः ॥५७॥

अन्वयः—गण्डान्तेन्द्रभशूलपातपरिघव्याघातगण्डावमे संक्रान्तिव्यतिपातवैधृतिसिनीवालीकुहूदर्शके वज्रे कृष्णचतुर्दशीषु यमघण्टे दग्धयोगे मृतौ विष्टौ सोदरभे पितृभे जनिः न शस्ता (किन्तु) शान्तितः शुभा भवति ॥ ५७ ॥

भा०—गण्डान्त, ज्येष्ठा नक्षत्र, शूल योग, पात, परिघ योग, व्याघात योग, गण्ड योग, क्षयतिथि, संक्रान्ति, व्यतीपात योग, वैधृति योग, सिनीवाली, कुहू (अमावस्या), वज्र योग, कृष्णपक्ष की चतुर्दशी, यमघण्ट योग, दग्ध योग, मृत्युयोग, भद्रा, सोदर का जन्म नक्षत्र, माता पिता के जन्म नक्षत्र, इनमें यदि जन्म हो तो अशुभ है, शान्ति करने से शुभ होता है ॥ ५७ ॥

नक्षत्रों की तारासंख्या—

त्रित्र्यङ्गपञ्चाग्निकुवेदवह्नयः शरेषुनेत्राश्विशरेन्दुभूकृताः ।
वेदाग्निरुद्राश्वियमाग्निवह्नयोऽब्धयः शतं द्विद्विरदा भतारकाः ॥५८॥

अन्वयः—त्रित्र्यङ्गपञ्चाग्निकुवेदवह्नयः शरेषुनेत्राश्विशरेन्दुभूकृताः वेदाग्निरुद्राश्वियमाग्निवह्नयः अब्धयः शतं द्विद्विरदा भतारकाः ज्ञेयाः ॥ ५८ ॥

भा०—अश्विनी आदि नक्षत्रों के क्रम से ३ । ३ । ६ । ५ । ३ । १ । ४ । ३ । ५ । ५ । २ । २ । ५ । १ । १ । ४ । ४ । ३ । ११ । २ । २ । ३ । ३ । ४ । १०० । २ । २ । ३२ । नक्षत्रों की तारा समझना चाहिये ॥५८॥

नक्षत्रों के स्वरूप—

अश्व्यादिरूपं तुरगास्ययोनि क्षुरोऽन एणास्यमणिर्गृहञ्च ।
पृषत्कचक्रे भवनञ्च मञ्च शय्या करो मौक्तिकविद्रुमञ्च ॥ ५९ ॥
तोरणं बलिनिभञ्च कुण्डलं सिंहपुच्छगजदन्तमञ्चकाः ।
त्र्यस्रि च त्रिचरणाभमर्दलौ वृत्तमञ्चयमलाभमर्दलाः ॥ ६० ॥

अन्वयः—तुरगास्ययोनिक्षुरः अनः एणास्यमणिः गृहं च पृषत्कचक्रे भवनं च मञ्चः शय्या करः मौक्तिकविद्रुमं च तोरणं बलिनिभं कुण्डलं सिंहपुच्छगजदन्त-मञ्चकाः त्र्यस्रि च त्रिचरणाभमर्दलौ वृत्तमञ्चयमलाभमर्दलाः इति अश्व्यादिरूपं (ज्ञेयम्) ॥ ५९ ॥ ६० ॥

भा०—अश्विनी नक्षत्रका घोड़े के मुख ऐसा स्वरूप, भरणीका भग, कृत्तिका का छूरा, रोहिणी का गाड़ी, मृगशिरा का हरिण के मुख जैसा, आर्द्रा का मणि, पुनर्वसु का गृह, पुष्य का वाण, श्लेषा का चक्र, मघा का भवन, पूर्वा फाल्गुनी का मञ्च, उत्तरा फाल्गुनी का शय्या, हस्त का हाथ, चित्रा का मोती, स्वाती का मूंगा, विशाखा का तोरण, अनुराधा का भात, ज्येष्ठा का कुण्डल, मूल का सिंहपुच्छ, पूर्वाषाढ़ा का हाथी दाँत, उत्तराषाढ़ा का मञ्च, अभिजित का त्रिकोण, श्रवण का त्रिचरण, धनिष्ठा का मृदङ्ग, शतभिषा का गोलाकार, पूर्वा भाद्रपद का मञ्च, उत्तरा भाद्रपदा का जुड़वाँ और रेवती का मृदङ्गके समान स्वरूप है। यह नक्षत्रों का स्वरूप हुआ ॥ ५९-६० ॥

जलाशय बगीचा तथा देवप्रतिष्ठा मुहूर्त—

जलाशयारामसुरप्रतिष्ठा सौम्यायने जीवशशाङ्कशुक्रे ।
दृश्ये मृदुक्षिप्रचरध्रुवे स्यात्पक्षे सिते स्वर्क्षतिथिक्षणे वा ॥६१॥
रिक्तारवर्ज्ये दिवसेऽतिशस्ता शशाङ्कपापैस्त्रिभवाङ्गसंस्थैः ।
व्यन्त्याष्टगैः सत्खचरैर्मृगेन्द्रे सूर्यो घटे को युवतौ च विष्णुः ॥६२॥
शिवो नृयुग्मे द्वितनौ च देव्यः क्षुद्राश्चरे सर्व इमे स्थिरर्क्षे ।
पुष्ये ग्रहा विघ्नपयक्षसर्पभूतादयोऽन्त्ये श्रवणे जिनश्च ॥ ६३ ॥

अन्वयः—सौम्यायने, जीवशशांकशुक्रे दृश्ये, मृदुक्षिप्रचरध्रुवे, सिते पक्षे वा स्वर्क्षतिथिक्षणे, रिक्तारवर्ज्ये दिवसे, शशांकपापैः त्रिभवांगसंस्थैः, सत्खचरैः व्यन्त्याष्टगैः जलाशयारामसुरप्रतिष्ठा अतिशस्ता । मृगेन्द्रे सूर्यः, घटे कः (ब्रह्मा), युवतौ विष्णुः, नृयुग्मे शिवः, च (पुनः) द्वितनौ देव्यः, चरे क्षुद्राः, इमे सर्वे स्थिरर्क्षे (स्थाप्याः) पुष्ये ग्रहाः, अन्त्ये विघ्नपयक्षसर्पभूतादयः, श्रवणे जिनः (स्थाप्यः) ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥

भा०—उत्तरायणके सूर्य में, गुरु, चन्द्रमा शुक्रके उदय में, मृदु संज्ञक क्षिप्र संज्ञक चर संज्ञक ध्रुव संज्ञक नक्षत्रमें शुक्लपक्षमें जिस देवकी स्थापना करना

की स्थापना करना हो उस देवता के नक्षत्र तिथि और मुहूर्त में, रिक्ता तिथि और मंगल दिन छोड़कर अन्य तिथि और दिन में चन्द्रमा और पाप ग्रह ३।६।११ इन स्थानों में से किसी एक में हों, शुभ ग्रह ८।१२ इन स्थान से रहित अन्य स्थान में हो तो तालाब बगीचा देवमन्दिर वगैरह की प्रतिष्ठा शुभ है। अब विशेष कहते हैं कि सिंह लग्न में सूर्य की, कुम्भ लग्न में ब्रह्मा, कन्या लग्न में विष्णु, मिथुन में शिव, द्विस्वभाव लग्न में देवी भगवती आदिकी, चर लग्न में क्षुद्र देवता और स्थिर लग्न में सब देवताओं की, चतुःषष्ठी आदि और स्थिर लग्न में सब देवताओं की, पुष्य नक्षत्र में चन्द्रादि आठ ग्रहों की, गणेश, यक्ष नाग भूत आदि की स्थापना, रेवती में और बुद्धदेव की श्रवण नक्षत्रमें स्थापना करे ॥६१॥६२॥६३॥

इति नक्षत्रप्रकरणं समाप्तम् ।

संक्रान्तिप्रकरणम् ।

संक्रान्तियों के नाम तथा फल ।

घोरार्कसंक्रमणमुग्ररवौ हि शूद्रान्
ध्वांक्षी विशो लघुविधौ च चरर्क्षभौमे ।
चौरान् महोदरयुता नृपतीन् ज्ञमैत्रे
मन्दाकिनी स्थिरगुरौ सुखयेच्च मन्दा ॥ १ ॥
विप्रांश्च मिश्रभृगौ तु पशूंश्च मिश्रा
तीक्ष्णार्कजेऽन्त्यजसुखा खलु राक्षसी च ।

अन्वयः—उग्ररवौ अर्कसंक्रमणं घोरा, सा शूद्रान् सुखयेत् । लघुविधौ ध्वांक्षी सा विशः, च (पुनः) चरर्क्षभौमे महोदरयुता, सा चौरान्, ज्ञमैत्रे मन्दाकिनी, सा नृपतीन्, स्थिरगुरौ मन्दा, सा विप्रान्, मिश्रभृगौ मिश्रा, सा पशून् सुखयेत्, तीक्ष्णार्कजे राक्षसी, सा अन्त्यजसुखा भवति ॥ १ ॥

भा०—उग्र संज्ञक नक्षत्र या रविवार को सूर्य की संक्रान्ति होने से घोरा नाम की संक्रान्ति होती है यह शूद्रों को सुख देनेवाली होती है। लघु संज्ञक नक्षत्र और सोमवार को संक्रान्ति हो तो ध्वांक्षी नामकी वैश्योंको सुख देती है, चर संज्ञक नक्षत्र और मंगलवार को संक्रान्ति हो तो महोदरी नामक वह चोरों को सुख देती है, मैत्र संज्ञक बुधवार को संक्रान्ति हो तो मन्दाकिनी नामकी क्षत्रियों को सुख देती है, स्थिर संज्ञक गुरुवार को संक्रान्ति हो तो मन्दा नामकी ब्राह्मणों को सुख देती है। मिश्र संज्ञक शुक्रवार को संक्रान्ति हो तो मिश्रा नामक संक्रान्ति

पशुओं को सुख देती है, तीक्ष्ण संज्ञक नक्षत्र शनिवार को संक्रान्ति हो तो राक्षसी नामक संक्रान्ति अन्त्यज को सुख देती है ॥ १ ॥

त्र्यंशे दिनस्य नृपतीन् प्रथमे निहन्ति
मध्ये द्विजानपि विशः परके च शूद्रान् ॥ २ ॥
अस्ते निशाप्रहरकेषु पिशाचकादीन्
नक्तञ्चरानपि नटान् पशुपालकांश्च ।
सूर्योदये सकललिंगिजनञ्च सौम्य-
याम्यायनं मकरकर्कटयोर्निरुक्तम् ॥ ३ ॥

अन्वयः—दिनस्य प्रथमे त्र्यंशे (अर्कसंक्रमणं) नृपतीन् निहन्ति, मध्ये द्विजान्, परके विशः, च (पुनः) अस्ते शूद्रान् । निशाप्रहरकेषु पिशाचकादीन् नक्तञ्चरान्, अपि च नटान्, पशुपालकान्, निहन्ति । सूर्योदये सकललिंगिजनं निहन्ति च (पुनः) मकरकर्कटयोः संक्रमणं सौम्ययाम्यायनम् निरुक्तम् ॥२॥३॥

भा०—दिन के प्रथम तृतीयांश में सूर्य की संक्रान्ति हो तो क्षत्रियों का, मध्य समय में ब्राह्मणों का, तृतीय भाग में वैश्यों का और अस्त समय में शूद्रों का नाश करती है । रात्रि के प्रथम पहर में संक्रान्ति हो तो पिशाचादिकों का, द्वितीय प्रहर में राक्षसों का, तृतीय प्रहर में नर्तकों का, चतुर्थ प्रहर में पशुपालकों का और सूर्योदय काल में पाखण्डियों का नाश करती है । मकर राशि की संक्रान्ति सौम्यायन (उत्तरायण) और कर्क राशि को संक्रान्ति दक्षिणायन कहलाती है ॥२॥३॥

अन्य संक्रान्तियों की संज्ञा—

षडशीत्याननं चापनृयुकन्याझषे भवेत् ।
तुलाजौ विषुवं विष्णुपदं सिंहालिगोघटे ॥ ४ ॥

अन्वयः—चापनृयुक्कन्याझषे षडशीत्याननं, तुलाजौ विषुवं, सिंहालिगोघटे विष्णुपदं (संक्रमणं) भवेत् ॥ ४ ॥

भा०—धनु, मिथुन, कन्या और मीन राशि में संक्रान्ति हो तो षडशीति मुख नामक संक्रान्ति होती है, मेष तुलाकी विषुवती नामकी होती है । सिंह, वृश्चिक, वृष, तथा कुम्भकी संक्रान्ति विष्णुपद नाम की होती है ॥ ४ ॥

संक्रान्ति का पुण्यकाल—

संक्रान्तिकालादुभयत्र नाडिकाःपुण्या मताः षोडश षोडशोष्णगोः
निशीथतोऽर्वागपरत्र संक्रमे पूर्वापराहान्तिमपूर्वभागयोः ॥ ५ ॥

अन्वयः—उष्णगोः संक्रान्तिकालात् उभयत्र षोडश षोडश नाडिकाः पुण्या मताः । निशीथतः अर्वागपरत्र संक्रमे सति क्रमेण पूर्वापराह्नान्तिमपूर्वभागयोः पुण्यघटिका भवन्ति ॥ ५ ॥

भा०—सूर्य के संक्रान्ति समय से १६ घटी पूर्व (पहले) और १६ घटी बाद पुण्यकाल होता है, अर्धरात्रि के पूर्व संक्रान्ति हो तो पहले दिन का उत्तरार्ध पुण्यकाल होता है और अर्धरात्रि के बाद संक्रान्ति हो तो दूसरे दिन का पूर्वार्ध पुण्यकाल होता है॥ ५॥

अर्द्धरात्रिकी संक्रान्ति में विशेषता—

पूर्णे निशीथे यदि संक्रमः स्याद्दिनद्वयं पुण्यमथोदयास्तात्।
पूर्वं परस्तात् यदि याम्यसौम्यायने दिने पूर्वपरे तु पुण्ये॥६॥

अन्वयः—पूर्णे निशीथे यदि संक्रमः स्यात (तदा) दिनद्वयं पुण्यं (कथितम्)। अथ उदयास्तात् पूर्वं परस्तात् यदि याम्यसौम्यायने संक्रमणे भवेतां, तदा पूर्वपरे दिने पुण्ये॥ ६॥

भा०—यदि अर्धरात्रि में सूर्य की संक्रान्ति हो तो दोनों दिन पुण्यकाल होता है। अब मकर और कर्क में विशेषता कहते हैं कि सूर्योदय से पहले यदि कर्क की संक्रान्ति हो तो पहले दिन पुण्यकाल होता है और सूर्यास्त के बाद मकर संक्रान्ति हो तो दूसरे दिन पुण्यकाल होता है॥ ६॥

सन्ध्याकाल में विशेषता—

सन्ध्या त्रिनाडीप्रमितार्कबिम्बादर्धोदितास्तादध ऊर्ध्वमत्र।
चेद्याम्यसौम्ये अयने क्रमात् स्तः पुण्यौ तदानीं परपूर्वघस्रौ॥७॥

अन्वयः—अर्द्धोदितास्तात् अर्कबिम्बात् अधः ऊर्ध्वं च त्रिनाडीप्रमिता सन्ध्या (प्रोक्ता)। अत्र चेत् याम्यसौम्ये अयने संक्रमणे भवेतां तदानीं क्रमात् परपूर्वघस्रौ पुण्यौ स्तः॥ ७॥

भा०—आधा सूर्य बिम्ब के उदय होने के पहले ३ घड़ी प्रातः संध्या और आधा सूर्य बिम्ब अस्त होने के बाद ३ घड़ी सायं संध्या होती है, यदि प्रातः संध्या में कर्क की संक्रान्ति हो तो परदिन संपूर्ण पुण्यकाल रहता है; और सायं सन्ध्या में मकर की संक्रान्ति हो तो पूर्वदिन, भरदिन पुण्यकाल होता है॥ ७॥

याम्यायने विष्णुपदे आद्या मध्या तुलाजयोः।
षडशीत्यानने सौम्ये परा नाड्योऽतिपुण्यदाः॥ ८॥

अन्वयः—याम्यायने विष्णुपदे च आद्याः नाड्यः, तुलाजयोः मध्याः नाड्यः, षडशीत्यानने सौम्ये च परा नाड्यः अतिपुण्यदाः कथिताः॥ ८॥

भा०—कर्क, वृष, वृश्चिक, सिंह, कुम्भ के संक्रान्तिकाल से पहले की सोलह घड़ी विशेष पुण्यकाल होता है। मेष और तुला की संक्रान्ति की मध्य की सोलह घड़ी विशेष पुण्यकाल है। मिथुन, कन्या, धनु, मीन, और मकर इनमें संक्रान्ति के बाद की सोलह घड़ी में विशेष पुण्यकाल होता है॥ ८॥

सायनांश संक्रान्ति में पुण्यकाल—

तथायनांशाः खरसाहताश्च स्पष्टार्कगत्या विहृता दिनाद्यैः ।
मेषादितः प्राक्चलसंक्रमाः स्युर्दाने जपादौ बहुपुण्यदास्ते ॥९॥

अन्वयः—अयनांशाः खरसाहताः स्पष्टार्कगत्या विहृता लब्धैः दिनाद्यैः मेषादितः प्राक् चलसंक्रमाः स्युः । ते च दाने जपादौ तथा बहुपुण्यदाः कथिताः ॥

भा०—अयनांश को ६० से गुणाकर स्पष्ट सूर्य की गति से भाग दे जो लब्धि हो उतने दिन मेषादि संक्रान्ति समय से पहले चल (सायन) संक्रान्ति होती है । वह सायन संक्रान्ति दान और जपादि में उसी प्रकार अत्यन्त पुण्यदायक होती है जैसे निरयन संक्रान्ति ॥ ९ ॥

नक्षत्रों की जघन्यादि संज्ञा—

समं मृदुक्षिप्रवसुश्रवोऽग्निमघात्रिपूर्वास्त्रभं बृहत्स्यात् ।
ध्रुवद्विदैवादितिभं जघन्यं सार्पाम्बुपार्द्रानिलशाक्रयाम्यम् ॥१०॥

अन्वयः—मृदुक्षिप्रवसुश्रवोऽग्निमघात्रिपूर्वास्त्रभं समं समसंज्ञकं स्यात् । ध्रुवद्विदैवादितिभं बृहत् बृहत्संज्ञकं स्यात् । सार्पाम्बुपार्द्रानिलशाक्रयाम्यं जघन्यं जघन्यसंज्ञकं स्यात् ॥ १० ॥

भा०—मृदु संज्ञक, क्षिप्र संज्ञक, धनिष्ठा, श्रवण, कृत्तिका, मघा, तीनों पूर्वा, मूल इन नक्षत्रों की सम संज्ञा (नाम) है । ध्रुव संज्ञक, विशाखा, पुनर्वसु ये बृहत्संज्ञक नक्षत्र हैं । अश्लेषा, शतभिषा, आर्द्रा, स्वाती, ज्येष्ठा, भरणी ये जघन्य संज्ञक नक्षत्र हैं ॥ १० ॥

संक्रान्ति के मुहूर्त और फल—

जघन्यभे संक्रमणे मुहूर्ताः शरेन्दवो बाणकृता बृहत्सु ।
खरामसंख्याः समभे महर्घसमर्घसाम्यं विधुदर्शनेऽपि ॥ ११॥

अन्वयः—जघन्यभे संक्रमणे सति शरेन्दवः मुहूर्ताः । बृहत्सु बाणकृताः मुहूर्ताः । समभे खरामसंख्याः मुहूर्ताः (भवन्ति) । तत्र संक्रमणे विधुदर्शनेऽपि महर्घसमर्घसाम्यं फलं ज्ञेयम् ॥ ११ ॥

भा०—जघन्य नामक नक्षत्र में संक्रान्ति हो तो १५ मुहूर्त बृहत्संज्ञक नक्षत्र में ४५ और सम संज्ञक नक्षत्र में ३० मुहूर्त संक्रान्ति काल होता है । जो संक्रान्ति १५ मुहूर्त हो उसमें अन्न महँगा, ४५ मुहूर्त में सस्ता और ३० मुहूर्त में अन्न सम (न महँगा, न सस्ता रहेगा) इसी प्रकार इन नक्षत्रों में चन्द्रमा के उदय होने से भी विचार करना चाहिये ॥ ११ ॥

कर्क की संक्रान्ति वश संवत्सर का विंशोपक—

अर्कादिवारे संक्रान्तौ कर्कस्याब्दविंशोपकाः ।
दिशो नखा गजाः सूर्या धृत्योऽष्टादश सायकाः ॥१२॥

अन्वयः—अर्कादिवारे कर्कस्य संक्रान्तौ क्रमात् दिशः, नखाः, गजाः, सूर्याः, वृत्यः, अष्टादश, सायकाः अब्दविंशोपकाः (भवन्ति) ॥ १२ ॥

भा०—रव्यादि वार में कर्क की संक्रान्ति हो तो क्रम से १०।२०।८। १२।१८।१८।५ वर्ष विंशोपक होता है। जिस दिन कर्क की संक्रान्ति होती है उसी दिन के अनुसार पंचांग में विंशोपक (विस्वा) लिखा जाता है॥१२॥

संक्रान्ति की स्थिति तथा फल—

स्यात् तैतिले नागचतुष्पदे रविः सुप्तो निविष्टस्तु गरादिपञ्चके ।
किंस्तुघ्न ऊर्ध्वः शकुनौ सकौलवे नेष्टः समः श्रेष्ठ इहार्घवर्षणे॥१३॥

अन्वयः—तैतिले नागचतुष्पदे (करणे) रविः सुप्तः सन् तु (पुनः) गरादिपञ्चके निविष्टः सन्, किंस्तुघ्ने, सकौलवे शकुनौ च ऊर्ध्वः (सन् संक्रमणं करोति) इह अर्घवर्षणे [क्रमशः] नेष्टः समः श्रेष्ठश्च भवति ॥ १३ ॥

भा०—तैतिल, नाग, चतुष्पद करणों में संक्रान्ति रवि की सुप्तावस्था में, गरादि पञ्चक करण में (गर, वणिज, विष्टि, बव और बालव में) बैठकी की अवस्थामें, किंस्तुघ्न, शकुनि और कौलव करणमें खड़ी अवस्था में संक्रान्ति होती है। ये क्रम से अर्घ (अन्नादि के मूल्य) और वर्षण (जलवृष्टि) में अनिष्ट, सम और श्रेष्ठ होते हैं। अर्थात् सुप्तावस्था में अनिष्ट बैठे हुए में सम और उठे हुए में श्रेष्ठ होता है॥१३॥

संक्रान्ति वाहन, वस्त्र आदि का फल—

सिंहव्याघ्रवराहरासभगजा वाहद्विषद्घोटकाः
श्वाजो गौश्चरणायुधश्च बवतो वाहा रवेः संक्रमे ।
वस्त्रं श्वेतसुपीतहारितकपांडुवारक्तकालासितं
चित्रं कम्बलदिग्घनाभमथ शस्त्रं स्याद्भुशुण्डी गदा ॥१४॥
खड्गो दण्डशरासतोमरमथो कुन्तश्च पाशांकुशो-
ऽस्त्रं बाणस्त्वथ भक्ष्यमन्नपरमान्नं भैक्ष्यपक्वान्नकम् ।
दुग्धं दध्यपि चित्रितान्नगुडमध्वाज्यं तथा शर्करा-
ऽथो लेपो मृगनाभिकुङ्कुममथो पाटीरमृद्रोचनम् ॥१५॥
यावश्चोतुमदो निशाञ्जनमथो कालागुरुश्चन्द्रको
जातिर्दैवतभूतसर्पविहगाः पश्वेणविप्रास्ततः ।
क्षत्रीवैश्यकशूद्रसङ्करभवाः पुष्पञ्च पुन्नागकं
जातीबाकुलकेतकानि च तथा बिल्वार्कदूर्वाम्बुजम् ॥१६॥
स्यान्मल्लिका पाटलिका जपा च संक्रान्तिवस्त्राशनवाहनादेः ।
नाशश्च तद्वृत्युपजीविनाश्च स्थितोपविष्टस्वपताश्च नाशः ॥१७॥

अन्वयः—बवतः रवेः संक्रमे सति क्रमशः सिंहव्याघ्रवराहरासभगजाः वाह-द्विषद्घोटकाः श्वा अजः गौः चरणायुधः वाहाः स्युः। श्वेतसुपीतहारितकपांडुवा-रक्तकालासितं चित्रं कम्बलदिग्घनाभं वस्त्रं ज्ञेयम्। अथ भुशुण्डी गदा खड्ग-दण्डशरासतोमरं अथो कुन्तः पाशः अंकुशः अस्त्रं बाणः शस्त्रं स्यात्। अथ अन्न-परमान्नं भैक्ष्यपक्वान्नकं दुग्धं दधि अपि चित्रितान्नगुडमध्वाज्यं तथा शर्करा भक्ष्यं (भोजनं) स्यात्। अथ मृगनाभिकुंकुमम् अथो पाटीरमृद्रोचनम् यावः ओतुमदः निशाञ्जनम् अथ कालागुरुः चन्द्रकः लेपः स्यात्। दैवतभूतसर्पविहगा-पश्वेणविप्राः क्षत्रीवैश्यकशूद्रसंकरभवा जातिः, तथा च जातीवाकुलकेतका-तथा बिल्वार्कदूर्वाम्बुजमल्लिका पाटलिका जपा पुष्पं स्यात्। संक्रान्तिवस्त्राशन-वाहनादेः तद्वृत्त्युपजीविनां च नाशः तथा स्थितोपविष्टस्वपतां च नाश स्यात् ॥ १४–१७ ॥

भा०—बवादि ११ करण में सूर्य की संक्रान्ति हो तो क्रम से सिंह, व्याघ्र, वराह, गदहा, हाथी, भैंसा, घोड़ा, कुत्ता, मेष (भेंड़ा), वृष, मुर्गा ये संक्रान्ति के वाहन और उजला, पीला, हरा, पाण्डुवर्ण, लाल, काला, कज्जल वर्ण, अनेक प्रकार के रंग, कम्बल, दिग्वस्त्र, मेघ सदृश वर्ण ये वस्त्र होते हैं, भुशुंडी, गदा, खड्ग, दण्ड, धनुष, तोमर, भाला, पाश, अंकुश, अस्त्र, बाण ये शस्त्र हैं। अन्न, खीर, भीख में प्राप्त अन्न, पकवान, दूध, दधि, चित्रान्न, गुड़, शहद, घृत, शक्कर ये भोजन हैं, कस्तूरी, कुंकुम, लालचन्दन, मिट्टी, गोरोचन, महावर, ओतुमद, हल्दी, सुरमा, अगर, कपूर ये लेपन (शरीर में लगाने वाला) है। देवता, भूत, सर्प, पक्षी, पशु, मृग, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, वर्णशंकर ये जातियाँ हैं; पुन्नाग, चमेली, मौलश्री, केतकी, बेल के फूल, मन्दार, दूर्वा, कमल, चमेली, पाटलिका, ओड़हुल का फूल ये पुष्प हैं। अर्थात् बवनामक करण में सिंह वाहन श्वेत वस्त्र भुशुण्डी शस्त्र अन्न खाती हुई, कस्तूरी लगाये देवता जाति और हाथ में पुन्नाग का फूल ऐसा स्वरूप संक्रान्ति का समझना चाहिये। इसी प्रकार आगे भी जिस मास की संक्रान्ति के जो वाहन कहे गये हैं उस मासमें उन वस्तुओंका नाश तथा उनसे जीविका चलाने वालों का नाश होता है उससे पहले श्लोक में जो अवस्था कही गयी है उसमें वर्तमान सोये उठे और बैठे हुए प्राणियों का नाश होता है ॥ १४–१७ ॥

संक्रान्ति से शुभाशुभ फल का जानना—

संक्रान्तिधिष्ण्याधरधिष्ण्यतस्त्रिभे स्वभे निरुक्तं गमनं ततोऽङ्गभे।
सुखं त्रिभे पीडनमंगभेंऽशुकं त्रिभेऽर्थहानी रसभे धनागमः ॥१८॥

अन्वयः—संक्रान्तिधिष्ण्याधरधिष्ण्यतः त्रिभे स्वभे सति गमनं निरुक्तम्, ततः अङ्गभे सुखम्, त्रिभे पीडनम्, अङ्गभे अंशुकम्, त्रिभे अर्थहानिः, रसभे धनागमः स्यात्

भा०—संक्रान्ति जिस नक्षत्र में हो उससे पूर्व नक्षत्र से गिनने से यदि अपना जन्मनक्षत्र ३ नक्षत्र के भीतर पड़े तो यात्रा (गमन), फिर छठे नक्षत्र में पड़े तो शरीर में सुख, फिर तीसरे नक्षत्र में पड़े तो पीड़ा, फिर छठे नक्षत्र में पड़े तो नवीन वस्त्र प्राप्ति, फिर तीसरे नक्षत्र में पड़े तो धन की हानि और उसके बाद ६ में पड़े तो धनागम हो ॥ १८ ॥

विशेष कार्य में ग्रहों का बल जानना—

नृपेक्षणं सर्वकृतिश्च संगरः शास्त्रं विवाहो गमदीक्षणे रवेः ।
वीर्येऽथ ताराबलतः शुभो विधुर्विधोर्बलेऽर्कोऽर्कबले कुजादयः॥१६॥

अन्वयः—रवेः सूर्यादेः वीर्ये क्रमेण नृपेक्षणं, सर्वकृतिः, संगरः, शास्त्रं, विवाहः, गमदीक्षणे (शुभे स्याताम्) । ताराबलतः विधुः शुभः, विधोः बलात् रविः शुभः, अर्कबले परे कुजादयः शुभाः भवन्ति ॥ १९ ॥

भा०—रवि आदि ग्रह बली हो तो क्रम से राजा का दर्शन, सर्वकार्यारम्भ, युद्ध, शास्त्राभ्यास, विवाह, यात्रा, दीक्षा (मन्त्र ग्रहण) करना शुभ है। तारा बलवती हो तो अशुभ भी चन्द्रमा शुभ होता है। इसी प्रकार यदि चन्द्रमा बली हो तो अशुभ सूर्य भी शुभ होता है। सूर्य बलवान् हो तो मङ्गलादिक सब ग्रह शुभ होते हैं॥ १६ ॥

संक्रान्ति से क्षयमास एवं अधिकमास का निर्णय—

स्पष्टार्कसंक्रान्तिविहीन उक्तो मासोऽधिमासः क्षयमासकस्तु ।
द्विसंक्रमस्तत्र विभागयोः स्तस्तिथेर्हि मासौ प्रथमान्त्यसंज्ञौ॥२०॥

अन्वयः—स्पष्टार्कसंक्रान्तिविहीनः मासः अधिमासः उक्तः । तु पुनः द्विसंक्रमः मासः क्षयमासकः स्यात् । तत्र तिथेः विभागयोः प्रथमान्त्यसंज्ञौ मासौ स्तः ॥२०॥

भा०—जिस चन्द्रमा में स्पष्ट सूर्य की संक्रान्ति नहीं हो तो वह अधिमास (मलमास) कहलाता है और जिस मास में सूर्य की दो संक्रान्ति हो वह क्षयमास कहलाता है, १ क्षयमास में २ मास व्यतीत हो जाते हैं इसलिये शुक्लपक्ष पहला और कृष्णपक्ष दूसरा महीना हुआ, यदि तिथि के पूर्वार्ध में जन्म या मरण हो तो पहले मास में उसका क्षयाह और जन्मदिन माना जाता है, उत्तरार्ध हो तो दूसरे मास में माना जाता है ॥ २० ॥

इति संक्रान्तिप्रकरणम् ।

अथ ग्रहगोचरप्रकरणम् ।

गोचर में ग्रहवश शुभाशुभ फल—

सूर्यो रसान्त्ये खयुगेऽग्निनन्दे शिवाक्षयोर्भौमशनी तमश्च ।
रसाङ्कयोर्लाभशरे गुणान्त्ये चन्द्रोऽम्बराद्यौ गुणनन्दयोश्च ॥१॥

लाभाष्टमे चाद्यशरे रसान्त्ये नगद्वये ज्ञो द्विशरेऽब्धिरामे।
रसाङ्कयोर्नागविधौ खनागे लाभव्यये देवगुरुः शराब्धौ ॥ २ ॥
द्व्यन्त्ये नवांशे द्विगुणे शिवाह्वौ शुक्रः कुनागे द्विनगेऽग्निरूपे।
वेदाम्बरे पञ्चनिधौ गजेषौ नन्देशयोर्भानुरसे शिवाग्नौ ॥ ३ ॥
क्रमाच्छुभो विद्ध इति ग्रहः स्यात् पितुः सुतस्यात्र न वेधमाहुः।
दुष्टोऽपि खेटो विपरीतवेधात् शुभो द्विकोणे शुभदः सितेऽब्जः॥४॥

अन्वयः—सूर्यः-स्वजन्मराशेः रसान्त्ये, खयुगे, अग्निनन्दे, शिवाक्षयोः, पुनः भौमशनी तमः-रसांकयोः, लाभशरे, गुणान्त्ये च, तथा चन्द्रः-अम्बराब्धौ, गुणनन्दयोः, लाभाष्टमे, आद्यशरे, रसान्त्ये नागद्वये, ज्ञः (बुधः)-द्विशरे, अब्धिरामे, रसांकयोः नागविधौ खनागे, लाभव्यये, देवगुरुः-शराब्धौ, द्व्यन्त्ये, नवांशे, द्विगुणे, शिवाह्वौ, शुक्रः-कुनागे, द्विनगे, अग्निरूपे, वेदाम्बरे, पञ्चनिधौ, गजेषौ, नन्देशयोः, भानुरसे, शिवाग्नौ इति क्रमात् ग्रहः शुभः तथा विद्धः स्यात्। अत्र पितुः सुतस्य वेधं न आहुः। तथा दुष्टः अपि खेटः ग्रहः विपरीतवेधात् शुभः स्यात्। तथा सिते अब्जः द्विकोणे शुभदः स्यात् ॥ १–४ ॥

भा०—अपनी जन्म राशि से छठे और बारहवें स्थानस्थित सूर्य क्रम से शुभ और विद्ध होता है, जैसे छठे भाव में सूर्य शुभ है और जन्म राशि से बारहवें स्थान में शनि को छोड़कर अन्य ग्रह हो तो वह विद्ध होता है, अर्थात् अशुभ होता है। दशम भावस्थित सूर्य शुभ होता है और चौथे में शनि छोड़कर अन्य ग्रह हो तो अशुभ होता है। तृतीय भावस्थित सूर्य शुभ है, परन्तु शनि को छोड़कर अन्य ग्रह नवम भाव में हो तो वह अशुभ है, एकादश भावस्थित सूर्य शुभ है और यदि पञ्चम में अन्य ग्रह हो तो वह अशुभ है। मङ्गल शनि राहु के ये छठे में शुभ, नवें में अन्य ग्रह रहने से विद्ध अर्थात् अशुभ है। ११ में शुभ, ५ में कोई ग्रह हो तो अशुभ, ३ में शुभ, १२वें में ग्रह होने से अशुभ, परन्तु शनि सूर्य से विद्ध नहीं होता है। १०वें में चन्द्रमा शुभ है यदि बुध छोड़कर चौथे में अन्य ग्रह हो तो विद्ध है। इसी तरह ३।९ में ११।८ में, पहला पाचवाँ में, ६।१२ में, ७।२ में, क्रमानुसार शुभ और विद्ध होता है। इसी प्रकार चन्द्रमा के वेध स्थान में २।५ में, ४।३ में ६।९ में, ८।१ में, १०।८ में, ११।१२ में, बुध, चन्द्रमा को छोड़कर अन्य ग्रह हो तो वह शुभ और अशुभ होता है। बृहस्पति ५।४ में, २।१२ में ९।१० में, २।३ में, ११।८ में, शुभ और अन्य ग्रह से विद्ध होनेपर अशुभ होता है। शुक्र १।८ में, २।७ में, ३।१ में, ४।१० में, ५।९ में, ८।५ में ९।११ में, १२।६ में परस्पर शुभ और विद्ध समझना चाहिये। और पिता पुत्र का वेध नहीं कहा गया है, और विपरीत वेध होने पर शुभ कहा गया है। सूर्य को शनि का और चन्द्रमा को बुध का परस्पर वेध

होने पर भी सूर्य और चन्द्रमा शुभ फल ही देते हैं, अशुभ फल नहीं देते । शुक्ल पक्ष का चन्द्रमा २।६।५ इन स्थानों में रहने पर भी शुभ है यदि क्रम से ६।८।४ इन स्थानों में कोई ग्रह नहीं हो तब ॥ १-४ ॥

उदाहरण—जैसे जिसकी जन्म राशि मेष है उसके लिये कन्या का सूर्य शुभप्रद होगा। यदि शनि को छोड़कर कोई अन्य ग्रह मीन में नहीं हो तब, क्योंकि छठे स्थान के लिये १२ वाँ वेध का स्थान है। तथा मीन राशि का सूर्य १२ वाँ होने से अशुभ होगा। यदि उसके विपरीत वेध होता हो—अर्थात् शनि को छोड़कर कोई अन्य ग्रह यदि कन्या में हो तो १२ वाँ सूर्य भी शुभ समझा जायगा। इसी प्रकार प्रत्येक शुभ और वेध स्थान का विचार करना चाहिये ॥ ४ ॥

ग्रहों के शुभ और विद्ध जानने का चक्र

ग्रह	रवि				चन्द्र						भौम. श. रा. के.		
शुभ	६	१०	३	११	१०	३	११	१	६	७	६	११	३
विद्ध	१२	४	९	५	४	९	८	५	१२	२	९	५	१२

ग्रह	बुध						गुरु					शुक्र								
शुभ	२	४	६	८	१०	११	५	२	९	७	११	१	२	३	४	५	८	९	१२	११
विद्ध	·	३	९	१	८	१२	४	१२	१०	३	८	८	७	१	१०	९	५	११	६	३

वेध में दो प्रकार का फल—

स्वजन्मराशेरिह वेधमाहुरन्ये ग्रहाधिष्ठितराशितः सः ।
हिमाद्रिविन्ध्यान्तर एव वेधो न सर्वदेशेष्विति काश्यपोक्तिः ॥५॥

अन्वयः—इह स्वजन्मराशेः सकाशात् वेधं आहुः । अन्ये ग्रन्थकर्तारः ग्रहाधिष्ठितराशितः सः वेधः हिमाद्रिविन्ध्यान्तरे एव देशे (ज्ञेयः) । सर्वदेशेषु वेधः न इति काश्यपोक्तिः ॥ ५ ॥

भा०—इस वेध को अपने जन्मराशि से कहा है परन्तु कश्यपादि अन्य आचार्यों ने उस वेध को जिस घर में ग्रह बैठा हो उसी स्थान से लिया है । वह भी केवल हिमालय और विन्ध्याचल के बीच के देशों में ही माना है, अन्य देशों में नहीं ॥ ५ ॥

ग्रहण का फल—

जन्मर्क्षे निधनं ग्रहे जनिभतो घातः क्षतिः श्रीर्व्यथा
चिन्तासौख्यकलत्रदौःस्थ्यमृतयः स्युर्माननाशः सुखम् ।

लाभोऽपाय इति क्रमात्तदशुभध्वस्त्यै जपः स्वर्णगो-
दानं शान्तिरथो ग्रहं त्वशुभदं नो वीक्ष्यमाहुः परे ॥६॥

अन्वयः—जन्मर्क्षे (जन्मनक्षत्रे) ग्रहे सति निधनं (स्यात्)। जनिभतः (जन्मराशितः) ग्रहणे घातः, क्षतिः, श्रीः, व्यथा, चिन्तासौख्यं, कलत्रदौःस्थ्यं, मृतयः, माननाशः, सुखं, लाभः, अपायः इति क्रमात् फलानि स्युः। तदशुभध्वस्त्यै जपः कार्यः, स्वर्णं, गोदानं, शान्तिः कार्या। अथो परे (अन्ये) तु अशुभदं ग्रहं नो वीक्ष्यं आहुः ॥ ६ ॥

भा०—जन्म नक्षत्र में यदि सूर्य या चन्द्रमा का ग्रहण हो तो मरण होता है। जन्म राशि से क्रम से ग्रहण का फल समझना चाहिये जैसे जन्म राशि में घात, दूसरे में हानि, तीसरे में लक्ष्मी, चौथे में व्यथा, ५ वें में चिन्ता, छठे में सौख्य, ७ वें में स्त्री कष्ट, ८ वें में मरण, ९ वें में माननाश, १० वें में सुख, ११ वें में लाभ, १२ वें में मरण होता है। इन अशुभ फलों के नाश करने के लिये जप, सुवर्ण दान, गोदान करना चाहिये, परन्तु दूसरे आचार्य का मत है कि ग्रहण ही न देखे ॥ ६ ॥

चन्द्रबल में विशेष विचार—

पापान्तः पापयुग्द्यूने पापाच्चन्द्रः शुभोऽप्यसन् ।
शुभांशे चाधिमित्रांशे गुरुदृष्टोऽशुभोऽपि सन् ॥ ७ ॥

अन्वयः—चन्द्रः पापान्तः, पापयुक्, पापात् द्यूने शुभोऽपि असन्, शुभांशे वा अधिमित्रांशे गुरुदृष्टः अशुभः अपि सन् स्यात् ॥ ७ ॥

भा०—चन्द्रमा दो पाप ग्रहों के बीच में हो, अथवा पाप ग्रह से युत हो, अथवा पाप ग्रह से सातवें स्थान में हो तो शुभ रहने पर भी अशुभ फल देता है। और वही चन्द्रमा शुभ ग्रहों के नवांश में वा अपने अधिमित्र के नवांश में गुरु से दृष्ट हो (देखा जाता हो) तो अशुभ भी चन्द्रमा शुभ फल देता है ॥ ७ ॥

शुक्लपक्षादि से चन्द्रबल—

सितासितादौ सद्दुष्टे चन्द्रे पक्षौ शुभाशुभौ ।
व्यत्यासे च शुभौ प्रोक्तौ संकटेऽब्जबलं त्विदम् ॥ ८ ॥

अन्वयः—सितासितादौ सद्दुष्टे चन्द्रे सति उभौ पक्षौ शुभौ प्रोक्तौ। व्यत्यासे च अशुभौ प्रोक्तौ। इदं अब्जबलं संकटे आवश्यके विचार्यम् ॥ ८ ॥

भा०—शुक्लपक्ष के प्रतिपद् में जिसका चन्द्रमा शुभ हो और कृष्णपक्ष के प्रतिपदा में अशुभ हो तो भी दोनों पक्ष शुभ होता है। इसके विपरीत दशा में यदि चन्द्रमा शुक्लपक्ष की प्रतिपदा में अशुभ और कृष्णपक्ष के प्रतिपद में शुभ भी हो तो भी दोनों पक्ष में अशुभ फल देता है। यह चन्द्रबल आवश्यक कार्य में ही विचार करना चाहिये ॥ ८ ॥

ग्रहदोषनिवारणार्थं रत्नधारण—

वज्रं शुक्रेऽब्जे सुमुक्ता प्रवालं भौमेऽगौ गोमेदमार्कौ सुनीलम्।
केतौ वैदूर्यं गुरौ पुष्पकं ज्ञे पाचिः प्राङ्माणिक्यमर्के तु मध्ये ॥९॥

अन्वयः—शुक्रे वज्रं, अब्जे सुमुक्ता, भौमे प्रवालं, अगौ गोमेदम्, आर्कौ सुनीलम्, केतौ वैदूर्यम्, गुरौ पुष्पकं, ज्ञे पाचिः इति प्राक् (पूर्वादिदिशाक्रमेण मुद्रिकायां रत्नानि धार्याणि) अर्के मध्ये माणिक्यं धार्यम् ॥ ९ ॥

भा०—अंगूठी में पूर्वादि क्रम से शुक्र के वास्ते वज्र, चन्द्र के लिये मुक्ता, मंगल के लिये मूंगा, राहु के लिये गोमेद, शनि के लिये नीलम, केतु के लिये वैदूर्य, गुरु के लिये पन्ना और सूर्य ग्रह के लिये मध्य में माणिक्य धारण करने से ग्रहों के दोष से उत्पन्न पीड़ा शान्त होती है ॥ ९ ॥

सूर्यादिग्रहों के भिन्न भिन्न रत्न—

माणिक्यमुक्ताफलविद्रुमाणि गारुत्मकं पुष्पकवज्रनीलम्।
गोमेदवैदूर्य्यकमर्कतः स्यू रत्नान्यथो ज्ञस्य मुदे सुवर्णम् ॥१०॥

अन्वयः—माणिक्यमुक्ताफलविद्रुमाणि गारुत्मकं पुष्पकवज्रनीलम् गोमेद-वैदूर्यकम् अर्कतः रत्नानि धार्याणि। अथो ज्ञस्य मुदे सुवर्णं धार्यम् ॥ १० ॥

भा०—माणिक, मोती, मूँगा, पन्ना, पुखराज, हीरा, नीलम, गोमेद, वैदूर्य ये क्रम से सूर्यादि ग्रहों को प्रसन्न करने के लिये धारण करने चाहिये और बुध की तुष्टि के लिये सोना धारण करना चाहिये ॥

रत्नधारण और तारा का प्रकार—

धार्य्यं लाजावर्त्तकं राहुकेत्वो रौप्यं शुक्रेन्द्वोश्च मुक्ता गुरोस्तु।
लोहं मंदस्यारभान्वोः प्रवालं तारा जन्मर्क्षात्त्रिरावृत्तितः स्यात् ॥

अन्वयः—राहुकेत्वोः लाजावर्तकं, शुक्रेन्द्वोः च रौप्यं, गुरोः मुक्ता, तु पुनः मन्दस्य लोहं, आरभान्वोः प्रवालं (धार्यम्)। जन्मर्क्षात् त्रिरावृत्तितः तारा ज्ञेयाः ॥ ११ ॥

भा०—राहु केतु के लिये लाजावर्त, शुक्र और चन्द्रमा के लिए चाँदी, गुरु के लिये मुक्ता, शनि के लिये लोहा, मङ्गल और सूर्य के लिये प्रवाल (मूंगा) धारण करना चाहिये। जन्म नक्षत्र से अभीष्ट दिन नक्षत्र तक गिनने से जितनी संख्या हो उसमें ९ का भाग दे जो शेष बचे वह तारा होती है। उदाहरण—जैसे किसी का जन्म नक्षत्र अनुराधा है और वर्तमान दिन नक्षत्र शतभिषा है तो अनुराधा से शतभिषा ८ नक्षत्र हुआ अर्थात् यही आठवीं तारा हुई ॥ ११ ॥

नौ ताराओं के नाम—

जन्माख्यसम्पद्विपदः क्षेमप्रत्यरिसाधकाः।
वधमैत्रातिमैत्राः स्युस्तारा नामसदृक्फलाः ॥ १२ ॥

अन्वयः—जन्माख्यसम्पद्विपदः क्षेमप्रत्यरिसाधकाः वधमैत्रातिमैत्राः एताः ताराः नामसदृक्फलाश्च स्युः ॥ १२ ॥

भा०—जन्म नक्षत्र से दिन नक्षत्र तक संख्या में ९ का भाग देने से १ शेष में जन्म, २ में संपत्, ३ में विपत्, ४ में क्षेम, ५ प्रत्यरि, ६ साधक, ७ वध, ८ मैत्र, ९ अतिमैत्र ये नवो ताराएं अपने नाम के अनुसार फल देती हैं ॥ १२ ॥

आवश्यकता पड़ने पर दुष्ट तारा के लिए दान—

मृत्यौ स्वर्णतिलान्विपद्यपि गुडं शाकं त्रिजन्मस्वथो
दद्यात् प्रत्यरितारकासु लवणं सर्वो विपत्प्रत्यरिः ।
मृत्युश्चादिमपर्यये न शुभदोऽथैषां द्वितीयेंऽशका-
नादिप्रान्त्यतृतीयका अथ शुभाः सर्वे तृतीये स्मृताः ॥१३॥

अन्वयः—मृत्यौ स्वर्णतिलान् दद्यात् । विपदि गुडं, त्रिजन्मसु शाकं, प्रत्यरितारकासु लवणं दद्यात् ; आदिमे पर्यये विपत् प्रत्यरिः मृत्युश्च सर्वो न शुभः । एषां विपत्प्रत्यरिमृत्यूनाम् द्वितीये पर्यये आदिप्रान्त्यतृतीयकाः अंशकाः न शुभदाः । अथ (तृतीयावृत्तौ) सर्वे शुभाः स्मृताः ॥ १३ ॥

भा०—वध तारा में स्वर्ण और तिल, विपद में गुड़, जन्म तारा में शाक, प्रत्यरि तारा में लवण दान करने से शुभ होता है । तारा की तीन आवृत्ति होती है । पहली आवृत्ति में विपद प्रत्यरि और वध सम्पूर्ण अशुभ होता है । और दूसरी आवृत्ति में विपद के प्रथम चरण, अशुभ और बाकी शुभ होते हैं । प्रत्यरि का चतुर्थ चरण अशुभ होता है और वध का तृतीय चरण अशुभ होता है । और तीसरी आवृत्ति में सब तारा शुभ होती है ॥ १३ ॥

चन्द्र की अवस्था और गणना—

षष्ठिघ्नं गतभं भुक्तघटीयुक्तं युगाहतम् ।
शराब्धिहृल्लब्धतोऽर्कशेषेऽवस्थाः क्रियाद्विधोः ॥ १४ ॥

अन्वयः—गतभं षष्टिघ्नं भुक्तघटीयुक्तं युगाहतं शराब्धिहृल्लब्धतः अर्कशेषे क्रियात् (मेषात् क्रमशः) विधोः अवस्थाः स्युः ॥ १४ ॥

भा०—गत नक्षत्र की संख्या को ६० से गुणाकर (यहाँ नक्षत्र की गिनती अश्विनी से होती है) उसमें वर्तमान नक्षत्र की भुक्त घटी जोड़कर ४ से गुणाकर फिर ४५ का भाग दे जो लब्धि हो, उसमें १२ के भाग से जो शेष बचे वह मेषादि राशि स्थित चन्द्रमा की भुक्त अवस्था होती है । लब्धि यदि बारह से अधिक हो तो उसमें १२ का भाग दे जो शेष बचे वही चन्द्रमा की भुक्त अवस्था होगी ॥ १४ ॥

चन्द्रकी १२ अवस्थाओं के नाम—

प्रवासनाशौ मरणं जयश्च हास्यारतिक्रीडितसुप्तभुक्ताः ।
ज्वराख्यकम्पस्थिरता अवस्था मेषात्क्रमान्नामसदृक्फलाः स्युः॥

अन्वयः—प्रवासनाशौ मरणं जयः हास्यारतिक्रीडितसुप्तभुक्ताः ज्वराख्य-कम्पस्थिरताः मेषात् क्रमात् नामसदृक्फलाः अवस्थाः स्युः ॥ १५ ॥

भा०—एकादि शेष में चन्द्रमा की अवस्था का फल इस प्रकार होता है । १ में प्रवास, २ में नाश, ३ में मरण, ४ में जय, ५ में हास्य, ६ में रति, ७ में क्रीड़ा, ८ में सुप्त, ९ में भुक्त, १० में ज्वर, ११ में कम्प, १२ में स्थिरता ये मेषादि क्रम से होते हैं और अपने नाम के अनुसार फल देते हैं ॥ १५ ॥

ग्रहों के दोष निवारणार्थ औषधि स्नान और दान—

लाजाकुष्ठबलाप्रियंगुघनसिद्धार्थैर्निशादारुभिः
पुङ्खालोध्रयुतैर्जलैर्निगदितं स्नानं ग्रहोत्थाघहृत् ।
धेनुः कम्बुररुणो वृषश्च कनकं पीताम्बरं घोटकः
श्वेतो गौरसिता महासिरज इत्येता रवेर्दक्षिणाः ॥ १६ ॥

अन्वयः—लाजाकुष्ठबलाप्रियंगुघनसिद्धार्थैः निशादारुभिः पुंखालोध्रयुतैः जलैः ग्रहोत्थाघहृत् स्नानं निगदितम् । धेनुः, कम्बुः (शंखः), अरुणः वृषः, च कनकं, पीताम्बरं, श्वेतः घोटकः, असिता गौः, महासिः, अजः इति एताः रवेर्दक्षिणाः स्युः ॥ १६ ॥

भा०—धान का लावा, कूठ, बरियार, कङ्कुनी, पोस्ता (अफीम की बीज), पीली सरसों, हल्दी, देवदारू, शरफोंका, लोध इन औषधियों को जल में मिलाकर स्नान करने से ग्रहजनित दोष दूर हो जाते हैं । अब ग्रह के दोष शान्त्यर्थ दान कहते हैं, रवि में धेनु (सवत्सा गौ), चन्द्र में शंख, मंगल में लाल (गेहुँआँ रङ्ग का) बैल, बुध में सोना, गुरु में पीत वस्त्र, शुक्र में उजला घोड़ा, शनि में काली गऊ, राहु में तलवार, और केतु में बकरी (वा बकरा) दान करना चाहिये ॥१६॥

ग्रहों के राश्यन्तर में जाने का फल—

सूर्य्यारसौम्यास्फुजितोऽक्षनागसप्ताद्रिघस्रान्विधुरग्निनाडीः ।
तमोयमेज्यास्त्रिरसाश्विमासान् गन्तव्यराशेः फलदाः पुरस्तात् ॥

अन्वयः—सूर्यारसौम्यास्फुजितः गन्तव्यराशेः पुरस्तात् अक्षनागसप्ताद्रि-घस्रान् फलदाः (भवन्ति) । विधुः अग्निनाडीः फलदः तमोयमेज्याः त्रिरसा-श्विमासान् फलदाः भवन्ति ॥ १७ ॥

भा०—गन्तव्य राशि (आगे की राशि) में जाने के दिन से पहले सूर्य ५ दिन, मंगल ८ दिन, बुध ७ दिन, शुक्र ७ दिन, चन्द्रमा ३ घटी, राहु केतु ३ मास, शनि ६ मास, गुरु २ मास, पहले ही फल को देने लग जाते हैं ॥ १७ ॥

दुष्ट योग आदि का दान—

दुष्टे योगे हेम चन्द्रे च शंखं धान्यं तिथ्यर्द्धे तिथौ तण्डुलांश्च ।
वारे रत्नं भे च गां हेम नाड्यां दद्यात् सिन्धूत्थश्च तारासु राजा ॥

अन्वयः—योगे दुष्टे हेम, च (पुनः) चन्द्रे दुष्टे शंखं, तिथ्यर्द्धे धान्यं, तिथौ तण्डुलान्, च वारे रत्नं, भे गां, नाड्यां हेम, तारासु राजा सिन्धूत्थं सैन्धवं लवणं दद्यात् ॥ १८ ॥

भा०—यात्रा या आवश्यक कार्य में दुष्ट योग हो तो सोना, चन्द्रमा दुष्ट हो तो शंख, करण खराब हो तो धान्य, तिथि दुष्ट हो तो चावल, दिन दुष्ट हो तो रत्न, नक्षत्र दुष्ट हो तो गौ, मुहूर्त दुष्ट हो तो हेम (सोना) और तारा दुष्ट हो तो यात्रा करनेवाला राजा सेंधा नमक दान करे, यहाँ राजा एक नियमित रख दिया गया है दान सभी कर सकते है ॥ १८ ॥

ग्रहों के क्रम से राशि के पूर्व पश्चात् का फल—

राश्यादिगौ रविकुजौ फलदौ सितेज्यौ
मध्ये सदा शशिसुतश्चरमेऽब्जमन्दौ ।
अध्वान्नवह्निभयसन्मतिवस्त्रसौख्य-
दुःखानि मासि जनिभे रविवासरादौ ॥ १९ ॥

अन्वयः—रविकुजौ राश्यादिगौ फलदौ, सितेज्यौ मध्ये फलदौ, शशिसुतः सदा, फलदः, अब्जमन्दौ चरमे फलदौ । रविवासरादौ जनिभे मासि (क्रमेण) अध्वान्नवह्निभयसन्मतिवस्त्रसौख्यदुःखानि भवन्ति ॥ १९ ॥

भा०—सूर्य मंगल ये राशि के आदि भाग में फल देते हैं, गुरु शुक्र मध्य भाग ११ अंश से २० अंश तक में फल देते हैं, बुध सम्पूर्ण राशि में फल देता है, चन्द्रमा और शनि अन्तिम भाग २१ अंश से ३० अंश तक फल देते हैं। महीने के अन्दर में यदि जन्म नक्षत्र रविवार को पड़े तो मार्ग गमन, सोमवार को अन्न लाभ, मंगल को अग्नि भय, बुध को सुन्दर बुद्धि, गुरु को वस्त्र, शुक्र को सुख, और शनि को दुःख होता है ॥ १९ ॥

इति गोचरप्रकरणम् ।

अथ संस्कारप्रकरणम्—

आद्यं रजः शुभं माघमार्गराधेषफाल्गुने ।
ज्येष्ठश्रावणयोः शुक्ले सद्वारे सत्तनौ दिवा ॥ १ ॥

अन्वयः—माघमार्गराधेषफाल्गुने ज्येष्ठश्रावणयोः शुक्ले सद्वारे सत्तनौ दिवा आद्यं रजः शुभं स्यात् ॥ १ ॥

भा०—माघ, अगहन, वैशाख, आश्विन, फाल्गुन, ज्येष्ठ, श्रावण, इन सात मासों के शुक्ल पक्ष में, शुभ ग्रह के दिन में, शुभ लग्न में और दिन में स्त्री को प्रथम मासिक धर्म हो तो शुभ है ॥ १ ॥

रजोदर्शन में नक्षत्र फल—

श्रुतित्रयमृदुक्षिप्रध्रुवस्वातौ सिताम्बरे।
मध्यश्च मूलादितिभे पितृमिश्रे परेष्वसत् ॥ २ ॥

अन्वयः—श्रुतित्रयमृदुक्षिप्रध्रुवस्वातौ, सिताम्बरे आद्यं रजः शुभं, मूलादितिभे पितृमिश्रे मध्यं, परेषु असत् भवति ॥ २ ॥

भा—श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, मृदुसंज्ञक, क्षिप्रसंज्ञक, ध्रुवसंज्ञक, स्वाती इन नक्षत्रों में प्रथम मासिक धर्म होना शुभ है। मूल, पुनर्वसु मघा और मिश्रसंज्ञक नक्षत्र में होना मध्यम है तथा अन्य नक्षत्र में होना अशुभ है और सफेद साड़ी पहने हुए में हो तो शुभ है ॥ २ ॥

रजःकाल में निषिद्ध समय—

भद्रानिद्रासंक्रमे दर्शरिक्तासन्ध्याषष्ठीद्वादशीवैधृतेषु।
रोगेऽष्टम्यां चन्द्रसूर्योपरागे पाते चाद्यं नो रजोदर्शनं सत् ॥३॥

अन्वयः—भद्रानिद्रासंक्रमे दर्शरिक्तासन्ध्याषष्ठीद्वादशीवैधृतेषु रोगे अष्टम्यां चन्द्रसूर्योपरागे पाते च आद्यं (प्रथमं) रजोदर्शनं नो सत् ॥ ३ ॥

भा०—भद्रा में, सुप्तावस्था में, संक्रान्ति में, अमावस्यामें, रिक्तातिथि, सन्ध्याकाल, षष्ठी, द्वादशी तिथियों में, वैधृति योग में, रुग्णावस्था में, अष्टमी में, चन्द्र और सूर्य के ग्रहण समय में, पातयोग में, प्रथम रजोदर्शन अशुभ है ॥ ३ ॥

रजस्वला होने के वाद स्नानमुहूर्त—

हस्तानिलाश्विमृगमैत्रवसुध्रुवाख्यैः
शक्रान्वितैः शुभतिथौ शुभवासरे च।
स्नायादथार्त्तववती मृगपौष्णवायु-
हस्ताश्विधातृभिररं लभते च गर्भम् ॥ ४ ॥

अन्वयः—हस्तानिलाश्विमृगमैत्रवसुध्रुवाख्यैः शक्रान्वितैः, शुभतिथौ शुभवासरे च आर्तववती स्नायात्। मृगपौष्णवायुहस्ताश्विधातृभिः (स्नाता) अरं (शीघ्रं) गर्भं लभते (प्राप्नोति) ॥ ४ ॥

भा०—हस्त, स्वाती, अश्विनी, मृगशिरा, अनुराधा, धनिष्ठा, ध्रुवसंज्ञक, ज्येष्ठा इन नक्षत्रों में शुभ तिथि और शुभ वार में प्रथम रजोवती स्त्री का स्नान करना शुभ है। मृगशिरा, रेवती, स्वाती, हस्त, अश्विनी रोहिणी इन नक्षत्रों में स्नान करे तो शीघ्र गर्भ धारण करती है ॥ ४ ॥

गर्भाधान में त्याज्य—

गण्डान्तं त्रिविधं त्यजेन्निधनजन्मर्क्षे च मूलान्तकं
दास्रं पौष्णमघोपरागदिवसान् पातं तथा वैधृतिम्।

पित्रोः श्राद्धदिनं दिवा च परिघाद्यर्धं स्वपत्नीगमे
भान्युत्पातहतानि मृत्युभवनं जन्मर्क्षतः पापभम् ॥ ५ ॥

अन्वयः—त्रिविधं गण्डान्तं निधनजन्मर्क्षे च (पुनः) मूलान्तकं दास्रं पौष्णमघोपरागदिवसान् पातं तथा वैधृतिं पित्रोः श्राद्धदिनं, दिवा परिघाद्यर्धं, उत्पातहतानि भानि, जन्मर्क्षतः मृत्युभवनम् पापभं एतानि स्वपत्नीगमे त्यजेत् ॥ ५ ॥

भा०—रजस्वला के स्नान के बाद अपनी स्त्री के पास जाने में तीनों प्रकारके गण्डान्त (नक्षत्र गण्डान्त तिथि गण्डान्त, और लग्न गण्डान्त), जन्मनक्षत्र से सातवाँ नक्षत्र (वध तारा), मूल, भरणी, अश्विनी, रेवती, मघा, सूर्य और चन्द्रग्रहण के दिन, पात, वैधृति योग, माता पिताके श्राद्धदिन, दिनमें, परिघयोगके पूर्वार्ध, उत्पात से हत नक्षत्र, जन्मराशि और लग्नसे आठवाँ लग्न, पापग्रहके नक्षत्र ये सब छोड़ देना चाहिये ॥ ५ ॥

गर्भाधान का मुहूर्त—

भद्रा षष्ठी पर्वरिक्ताश्च सन्ध्याभौमार्कार्कीनाद्यरात्रीश्चतस्रः ।
गर्भाधानं त्र्युत्तरेन्द्वर्कमैत्रब्राह्मस्वातीविष्णुवस्वम्बुपे सत् ॥ ६ ॥

अन्वयः—भद्राषष्ठीपर्वरिक्ताः च (पुनः) सन्ध्याभौमार्कार्कीन् चतस्रः आद्यरात्रीः (स्वपत्नीगमे त्यजेत्) । त्र्युत्तरेन्द्वर्कमैत्रब्राह्मस्वातीविष्णुवस्वम्बुपे गर्भाधानं सत् (शुभं) भवति ॥ ६ ॥

भा०—भद्रा, षष्ठी, पर्वके दिन १४।८।३०।१५ और संक्रान्ति, रिक्ता ४।६।१४ तिथि, सन्ध्याकाल, मंगलवार, रविवार, शनिवार और रजोदर्शन से ४ रात्रि, इन सबोंको गर्भाधान में छोड़कर तीनों उत्तरा, मृगशिरा, हस्त, अनुराधा, रोहिणी, स्वाती, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा इन नक्षत्रों में (शुभ वार, शुभ लग्न, शुभ तिथि, शुभ योग में) गर्भाधान शुभ होता है ॥ ६ ॥

गर्भाधान में लग्न शुद्धि—

केन्द्रत्रिकोणेषु शुभैश्च पापैस्त्र्यायारिगैः पुंग्रहदृष्टलग्ने ।
ओजांशगेऽब्जेऽपि च युग्मरात्रौ चित्रादितीज्याश्विषु मध्यमं स्यात् ७

अन्वयः—शुभैः शोभनग्रहैः, केन्द्रत्रिकोणेषु स्थितैः, पापैः, त्र्यायारिगैः, पुंग्रहदृष्टलग्ने (सति) अब्जे ओजांशगे (विषमराशिनवमांशस्थिते), च (पुनः) युग्मरात्रौ शुभं भवति । चित्रादितीज्याश्विषु गर्भाधानं मध्यमं स्यात् ॥ ७ ॥

भा०—लग्न से केन्द्र त्रिकोण १।४।७।१०।९।५ इन स्थानों में शुभग्रह और पाप ग्रह ३।६।११ में हों, लग्न को पुरुष ग्रह देखते हों, चन्द्रमा विषम राशि और विषम राशि के नवांश में हो, समरात्रि हो, जैसे ६।८।१० इत्यादि, तो गर्भाधान शुभ होता है । चित्रा, पुनर्वसु, पुष्य, अश्विनी इन नक्षत्रों में गर्भाधान मध्यम कहा गया है ॥ ७ ॥

सीमन्तसंस्कार का मुहूर्त—

जीवार्कारदिने मृगेज्यनिर्ऋतिश्रोत्रादितिब्रध्नभैः
रिक्तामार्करसाष्टवर्ज्यतिथिभिर्मासाधिपे पीवरे ।
सीमन्तोऽष्टमषष्ठमासि शुभदैः केन्द्रत्रिकोणे खलै-
र्लाभारित्रिषु वा ध्रुवान्त्यसदहे लग्ने च पुंभांशके ॥ ८ ॥

अन्वयः—जीवार्कारदिने, मृगेज्यनिर्ऋतिश्रोत्रादितिब्रध्नभैः एभिर्नक्षत्रैः, रिक्तामार्करसाष्टवर्ज्यतिथिभिः, मासाधिपे पीवरे (बलवति) सति, अष्टमषष्ठमासि, शुभदैः शुभग्रहैः केन्द्रत्रिकोणे स्थितैः, खलैः (पापग्रहैः) लाभारित्रिषु स्थितैः, ध्रुवान्त्यसदहे, पुंभांशके लग्ने, सीमन्तः (सीमन्ताख्यसंस्कारः) शुभः (स्यात्) ॥ ८ ॥

भा०—गुरु, रवि और मङ्गल के दिन, मृगशिरा, पुष्य, मूल, श्रवण, पुनर्वसु, हस्त नक्षत्रों में, रिक्ता अमावस्या, द्वादशी, षष्ठी, अष्टमी, तिथिको छोड़कर अन्य तिथियों में, मासेश्वर बलवान हो, गर्भाधान से छठे आठवें मासमें, केन्द्र त्रिकोण में शुभ ग्रह हो, पाप-ग्रह ११।६।३ में हो, ध्रुवसंज्ञक नक्षत्र अथवा रेवती नक्षत्र में पुरुषग्रहके लग्न और नवांशमें सीमन्त कर्म करना शुभ है ॥ ८ ॥

गर्भकालीन १० मास तक के स्वामी और चन्द्रबल—

मासेश्वराः सितकुजेज्यरवीन्दुसौरि-
चन्द्रात्मजास्तनुपचन्द्रदिवाकराः स्युः ।
स्त्रीणां विधोर्बलमुशन्ति विवाहगर्भ-
संस्कारयोरितरकर्मसु भर्तुरेव ॥ ९ ॥

अन्वयः—सितकुजेज्यरवीन्दुसौरिचन्द्रात्मजाः, तनुपचन्द्रदिवाकराः एते क्रमशः मासेश्वराः स्युः । विवाहगर्भसंस्कारयोः स्त्रीणां विधोः च बलं उशन्ति । इतर कर्मसु भर्तुः एव विधोः बल उशन्ति ॥ ९ ॥

भा०—गर्भाधान समय से १० मास तक के क्रम से शुक्र, मङ्गल, गुरु, रवि, चन्द्रमा, शनि, बुध, लग्नेश, चन्द्रमा, और सूर्य मासाधिप होते हैं । विवाह और गर्भादि संस्कार में स्त्री के चन्द्रबल का विचार करना चाहिये और-और अन्य कार्यों में उसके स्वामी का चन्द्रबल देखना चाहिये ॥ ९ ॥

विष्णुपूजा का मुहूर्त—

पूर्वोदितैः पुंसवनं विधेयं मासे तृतीये त्वथ विष्णुपूजा ।
मासेऽष्टमे विष्णुविधातृजीवैर्लग्ने शुभे मृत्युगृहे च शुद्धे ॥१०॥

अन्वयः—पूर्वोदितैः सीमन्तसंस्कारोक्तैः (दिनतिथ्यादिभिः) तृतीये मासे पुंसवनं विधेयम् । अथ अष्टमे मासे, विष्णुविधातृजीवैः शुभे लग्ने, मृत्युगृहे शुद्धे सति विष्णुपूजा कर्तव्या ॥ १० ॥

भा०—सीमन्त संस्कार में कहे हुए तिथि वार दिन नक्षत्र और गर्भाधान समय से ३ रे महीने में पुंसवन संस्कार करना चाहिये। आठवें मास में, श्रवण रोहिणी और पुष्य नक्षत्रों में, शुभ ग्रह के लग्न में, आठवाँ स्थान ग्रह रहित हो तो विष्णु भगवान् का पूजन करना शुभ है ॥ १० ॥

जातकर्म मुहूर्त—

तज्जातकर्मादि शिशोर्विधेयं पर्वाख्यरिक्तोनतिथौ शुभेऽह्नि।
एकादशे द्वादशकेऽपि घस्रे मृदुध्रुवक्षिप्रचरोडुषु स्यात् ॥११॥

अन्वयः—पर्वाख्यरिक्तोनतिथौ, शुभेऽह्नि एकादशके द्वादशके अपि घस्रे मृदुध्रुवक्षिप्रचरोडुषु भेषु शिशोः तत् जातकर्मादि विधेयम् ॥ ११ ॥

भा०—पर्व के दिन और रिक्ता तिथि को छोड़ कर अन्य तिथियों में, शुभ दिनमें, जन्म कालसे ११ वें १२ वें दिनमें, मृदुसंज्ञक ध्रुवसंज्ञक क्षिप्रसंज्ञक नक्षत्रों में, बालक का जातकर्म और नामकर्म करना शुभ है ॥ ११ ॥

प्रसूति के स्नान का मुहूर्त—

पौष्णध्रुवेन्दुकरवातहयेषु सूती-
स्नानं समित्रभरवीज्यकुजेषु शस्तम्।
नार्द्रात्रयश्रुतिमघान्तकमिश्रमूल-
त्वाष्ट्रे ज्ञसौरिवसुषड्विरिक्ततिथ्याम् ॥ १२ ॥

अन्वयः—समित्रभरवीज्यकुजेषु पौष्णध्रुवेन्दुकरवातहयेषु भेषु सूतीस्नानं शस्तं स्यात। आर्द्रात्रयश्रुतिमघान्तकमिश्रमूलत्वाष्ट्रे ज्ञसौरिवसुषड्विरिक्ततिथ्याम् सूतीस्नानं न शस्तम् ॥ १२ ॥

भा०—रेवती, ध्रुवसंज्ञक, मृगशिरा, हस्त, स्वाती, अश्विनी, अनुराधा नक्षत्रोंमें, रवि, मङ्गल गुरुवारों में प्रसूता स्त्री के लिये स्नान करना शुभ है। आर्द्रा पुनर्वसु पुष्य श्रवण मघा भरणी मिश्रसंज्ञक नक्षत्र, मूल चित्रा इन नक्षत्रों में बुध शनि दिनों में, अष्टमी षष्ठी द्वादशी और रिक्ता तिथि में, प्रसूता स्नान न करे ॥ १२ ॥

बालक के प्रथमादि मास में दाँत निकलने का फल—

मासे चेत्प्रथमे भवेत्सदशनो बालो विनश्येत् स्वयं
हन्यात् स क्रमतोऽनुजातभगिनीमात्रग्रजान्द्वयादिके।
षष्ठादौ लभते हि भोगमतुलं तातात्सुखं पुष्टतां
लक्ष्मीं सौख्यमथो जनौ सदशनोवोर्ध्वं स्वपित्रादिहा॥१३॥

अन्वयः—चेत् (यदि) प्रथमे मासे बालः सदशनः स्यात् तदा सः स्वयं विनश्येत्। द्वयादिके मासे चेत् सदशनो भवेत्तदा क्रमतः सः अनुजातभगिनीमात्रग्रजान् हन्यात्। षष्ठादौ मासे क्रमतः अतुलं भोगं, तातात्सुखं, पुष्टतां, लक्ष्मीं, सौख्यं च लभते। अथो जनौ जन्मकाले सदशनः बालः स्वपित्रादिहा स्यात्।१३।

भा०—पहले मास में यदि बालक को दाँत की उत्पत्ति हो तो बालक स्वयं मर जाता है। दूसरे मास में उत्पत्ति हो तो भाई का, तीसरे में बहन का, चौथे मास में माता का, पाँचवें मास में बड़े भाई का नाश करता है। छठें मास में अतुलनीय सुख, सातवें में पिता से सुख, आठवें मास में स्वास्थ्य लाभ, ९ में लक्ष्मी, दशवें में सुख होता है। यदि बालक दाँत सहित उत्पन्न हो तो अपने का नाश करनेवाला होता है। इसी तरह निषिद्ध काल में ऊपर की पंक्ति में पहले दाँत हो तो अपने माता पिता भाई बन्धु का नाश करने वाला होता है॥ १३॥

दोलाचक्र—

दोलारोहेऽर्कभात् पंचशरपंचेषुसप्तभैः।
नैरुज्यं मरणं कार्श्यं व्याधिः सौख्यं क्रमाच्छिशोः॥ १४॥

अन्वयः—अर्कभात् सूर्यनक्षत्रात् पञ्चशरपंचेषुसप्तभैः नक्षत्रैः दोलारोहे क्रमात् शिशोः नैरुज्यं, मरणं, कार्श्यं (दुर्बलत्वम्), व्याधिः, सौख्यं च स्यात्॥१४॥

५	५	५	५	७	नक्षत्रसंख्या
आरोग्य	मरण	कृशता	व्याधि	सुख	फलम्

भा०—सूर्य जिस नक्षत्र में हो उससे ५ नक्षत्र तक में यदि बालक को झूला पर बैठाकर झुलावे तो निरोग, उसके आगे के ५ में मरण, उसके आगे के ५ में दुर्बलता, उसके आगे के ५ में व्याधि, फिर ७ में सुख होता है॥ १४॥

बालक के दोलारोहण और बाहर लाने का मुहूर्त—

दन्तार्कभूपधृतिदिङ्मितवासरे स्या-
द्वारे शुभे मृदुलघुध्रुवभैः शिशूनाम्।
दोलाधिरूढिरथ निष्क्रमणं चतुर्थ-
मासे गमोक्तसमयेऽर्कमितेऽह्नि वा स्यात्॥१५॥

अन्वयः—दन्तार्कभूपधृतिदिङ्मितवासरे, शुभे वारे, मृदुलघुध्रुवभैः एभिर्नक्षत्रैः शिशूनां दोलाधिरूढिः स्यात्। अथ चतुर्थमासे वा अर्कमिते अह्नि (द्वादशे वासरे) वा गमोक्तसमये यात्राविहितकाले शिशूनां निष्क्रमणं स्यात्॥ १५॥

भा०—जन्म के दिन से आरम्भ कर ३२, १२, १६, १८, १० वें दिन, शुभ ग्रह के दिन, मृदुसंज्ञक और लघुसंज्ञक नक्षत्र में बालक को

पहले पहल झूलापर बैठाना शुभ है। जन्म मास से चौथे मास में कहे हुए तिथिवार नक्षत्र योग में बालक को घर से बाहर निकालना शुभ है। अथवा बारहवें रोज यात्रा में कहे हुए अनुसार बालक को बाहर निकालना शुभ है॥ १५॥

प्रसूता स्त्री का जलपूजन मुहूर्त—

कवीज्यास्तचैत्राधिमासे न पौषे जलं पूजयेत्सूतिकामासपूर्तौ।
बुधेन्द्विज्यवारे विरिक्ते तिथौ हि श्रुतीज्यादितीन्द्वर्कनैर्ऋत्यमैत्रैः॥१६॥

अन्वयः—कवीज्यास्तचैत्राधिमासे पौषे मासपूर्तौ सूतिका जलं न पूजयेत्। बुधेन्द्वीज्यवारे विरिक्ते तिथौ, श्रुतीज्यादितीन्द्वर्कनैर्ऋत्यमैत्रैः नक्षत्रैः जलं पूजयेत्॥

भा०—शुक्र गुरु के अस्त में, चैत्र और मलमास में, पौष मास में, मास पूर्ति होने पर भी प्रसूता स्त्री जलका पूजन न करे। बुध, सोम, गुरुवारों में, रिक्ता तिथि को छोड़कर दूसरी तिथियों में, श्रवण, पुष्य, पुनर्वसु, मृगशिरा, हस्त, मूल, अनुराधा इन नक्षत्रों में प्रसूता जल की पूजा करे॥ १६॥

अन्नप्राशन का मुहूर्त—

रिक्तानन्दाष्टदर्शं हरिदिवसमथो सौरिभौमार्कवारान्
लग्नं जन्मर्क्षलग्नाष्टमगृहलवगं मीनमेषालिकं च ।
हित्वा षष्ठात्समे मास्यथ हि मृगदृशां पञ्चमादोजमासे
नक्षत्रैः स्यात् स्थिराख्यैः समृदुलघुचरैर्बालकान्नाशनं सत्॥१७॥

अन्वयः—रिक्ता, नन्दाष्टदर्शं, हरिदिवसं, सौरिभौमार्कवारान्, जन्मर्क्ष लग्नाष्टमगृहलवगं, मीनमेषालिकं च लग्नं हित्वा, बालकानां षष्ठात् समे मासि, अथ हि मृगदृशां कन्यकानां पञ्चमात् ओजमासे समृदुलघुचरैः स्थिराख्यैः नक्षत्रैः बालकान्नाशनं सत्, भवति॥ १७॥

भा०—रिक्ता (६।४।१४), १।६।११।८।१२।३० इन तिथियों को छोड़कर, शनि, मङ्गल, रवि इन वारों को छोड़कर, जन्म राशि अथवा जन्म लग्न से आठवीं राशि वा उसका नवांश मीन मेष वृश्चिक लग्न को छोड़कर अन्य लग्नों में, छ, आठ इत्यादि सम मासों में बालकों को और पंचमादि विषम मासों में कन्या को मृदुसंज्ञक लघु संज्ञक और स्थिरसंज्ञक नामक नक्षत्रों में अन्नप्राशन कराना शुभ है।

लग्नशुद्धि—

केन्द्रत्रिकोणसहजेषु शुभैः खशुद्धे
लग्ने त्रिलाभरिपुगैश्च वदन्ति पापैः।
लग्नाष्टषष्ठरहितं शशिनं प्रशस्तः
मैत्राम्बुपानिलजनुर्भमसच्च केचित्॥ १८॥

अन्वयः—शुभैः केन्द्रत्रिकोणसहजेषु स्थितैः, खशुद्धे लग्ने, त्रिलाभरिपुगैः पापैः, लग्नाष्टषष्ठरहितं शशिनं (बालकान्नाशने) प्रशस्तं वदन्ति (मुनयः)। केचित् मैत्राम्बुपानिलजनुर्भं असत् (अशुभं) वदन्ति ॥ १८ ॥

भा०—केंद्र १।४।७। यहाँ यद्यपि केन्द्र शब्द से दशम स्थान भी लिया जाना चाहिए परन्तु चिन्तामणिकार ने ही "खशुद्धे" कह कर दशम स्थान को ग्रह रहित कह दिया है। त्रिकोण ९।५ सहज ३ इन स्थानों में शुभ ग्रह हो और दशवाँ स्थान ग्रह से रहित हो, ३।६।११ इन स्थानों में पाप ग्रह हो तथा लग्न छठें और आठवें स्थान से भिन्न घरमें चन्द्रमा हो तो बालक का अन्नप्राशन शुभ है। किसी के मत से अनुराधा शतभिषा स्वाती और जन्मनक्षत्र बालकों के अन्नप्राशन में अशुभ है ॥ १८ ॥

ग्रहों के स्थानवश फल—

क्षीणेन्दुपूर्णचन्द्रेज्यज्ञभौमार्कार्किभार्गवैः।
त्रिकोणव्ययकेन्द्राष्टस्थितैरुक्तं फलं ग्रहैः ॥ १९ ॥
भिक्षाशी यज्ञकृद्दीर्घजीवी ज्ञानी च पित्तरुक्।
कुष्ठी चान्नक्लेशवातव्याधिमान् भोगभागिति ॥ २० ॥

अन्वयः—क्षीणेन्दुपूर्णचन्द्रेज्यज्ञभौमार्कार्किभार्गवैः एभिर्ग्रहैः त्रिकोणव्ययकेन्द्राष्टस्थितैः भिक्षाशी, यज्ञकृत्, दीर्घजीवी, ज्ञानी, पित्तरुक्, कुष्ठी च पुनः अन्नक्लेशवातव्याधिमान्, भोगभाक् इति फलानि ज्ञेयानि ॥ १९ ॥ २० ॥

भा०—अन्नप्राशन समय के लग्न से १।४।७।९।५।१२। और अष्टम स्थान में क्षीण चन्द्रमा हो तो बालक भीख माँगकर खानेवाला अर्थात् दरिद्र होगा, पूर्ण चन्द्रमा हो तो यज्ञ करनेवाला, उक्त स्थानों में से किसी स्थान में बृहस्पति हो तो दीर्घायु, बुध हो तो ज्ञानी, मंगल हो तो पित्तरोगी, सूर्य हो तो कोढ़ी, शनि हो तो अन्न से क्लेशित और वातव्याधि से दुःखी, तथा शुक्र हो तो भोगी होता है ॥ १९–२० ॥

बालक के भूमि पर बैठाने का मुहूर्त—

पृथ्वीं वराहमभिपूज्य कुजे विशुद्धे-
ऽरिक्ते तिथौ व्रजति पञ्चममासि बालम्।
बद्ध्वा शुभेऽह्नि कटिसूत्रमथ ध्रुवेन्दु-
ज्येष्ठर्क्षमैत्रलघुभैरुपवेशयेत्कौ ॥ २१ ॥

अन्वयः—पृथ्वीं वराहं अभिपूज्य कुजे विशुद्धे सति अरिक्ते रिक्तावर्जिते तिथौ पञ्चममासि व्रजति सति शुभेऽह्नि ज्येष्ठर्क्षमैत्रलघुभैः कटिसूत्रं बद्ध्वा बालं कौ पृथिव्यां उपवेशयेत् ॥ २१ ॥

भा०—५ वें मास में रिक्ता तिथि को छोड़कर अन्य तिथियों में, शुभवार में, ध्रुवसंज्ञक ज्येष्ठा, अनुराधा और लघुसंज्ञक नक्षत्रों में, मंगल बलवान् हो तब पृथ्वी और वराह भगवान् की पूजा करके कमर में करधनी बाँधकर बालक को भूमि पर बैठावे ॥ २१ ॥

आजीविका की परीक्षा—

तस्मिन् काले स्थापयेत्तत्पुरस्ताद्
वस्त्रं शस्त्रं पुस्तकं लेखनीं च ।
स्वर्णं रौप्यं यच्च गृह्णाति बाल-
स्तैराजीवैस्तस्य वृत्तिः प्रदिष्टा ॥ २२ ॥

अन्वयः—तस्मिन् काले तत्पुरस्तात् वस्त्रं, शस्त्रं, पुस्तकं, लेखनीं, स्वर्णं, रौप्यं च,स्थापयेत् । बालः यद् वस्तु गृह्णाति तैः आजीवैः तस्य वृत्तिः प्रदिष्टा उक्ता।

भा०—भूमि पर बैठाने के समय में बालक के आगे वस्त्र शस्त्र पुस्तक कलम सोना चाँदी आदि रखे । जिस वस्तु को बालक उठा ले उसी पर उसकी जीविका आधारित है, ऐसा समझना चाहिये ॥२२॥

पान खिलाने का मुहूर्त—

वारे भौमार्किहीने ध्रुवमृदुलघुभैर्विष्णुमूलादितीन्द्र-
स्वातीवस्वभ्युपेतैर्मिथुनमृगसुताकुम्भगोमीनलग्ने ।
सौम्यैः केन्द्रत्रिकोणैरशुभगगनगैः शत्रुलाभत्रिसंस्थै-
स्ताम्बूलं सार्द्धमासद्वयमितसमये प्रोक्तमन्नाशने वा ॥ २३ ॥

अन्वयः—भौमार्किहीने वारे ध्रुवमृदुलघुभैः विष्णुमूलादितीन्द्रस्वातीवस्वभ्युपेतैः एभिर्नक्षत्रैः मिथुनमृगसुताकुम्भगोमीनलग्ने, सौम्यैः केन्द्रत्रिकोणैः, अशुभगगनगैः पापग्रहैः शत्रुलाभत्रिसंस्थैः, सार्धमासद्वयमितसमये, अन्नाशने (बालकान्नप्राशनसमये) वा ताम्बूलं प्रोक्तम् ॥ २३ ॥

भा०—मंगल शनि को छोड़कर अन्य दिनों में, ध्रुवसंज्ञक लघुसंज्ञक मृदुसंज्ञक श्रवण मूल पुनर्वसु ज्येष्ठा स्वाती धनिष्ठा इन नक्षत्रों में, मिथुन मकर कन्या कुम्भ वृष और मीन लग्नों में, शुभ ग्रह केन्द्र त्रिकोण में हो, पाप ग्रह ६।३।११ इन स्थानों में हो तो ढाई महीने के समय में या अन्नप्राशनोक्त समय में ताम्बूल (पान) खिलाना शुभ है ॥ २३ ॥

कर्णवेध का मुहूर्त—

हित्वैतांश्चैत्रपौषावमहरिशयनं जन्ममासं च रिक्तां
युग्माब्दं जन्मतारामृतुमुनिवसुभिः सम्मिते मास्यथो वा ।

जन्माहात् सूर्यभूपैः परिमितदिवसे ज्ञेज्यशुक्रेन्दुवारे-
ऽथोजाब्दे विष्णुयुग्मादितिमृदुलघुभैः कर्णवेधः प्रशस्तः ॥२४॥

अन्वयः—चैत्रपौषावमहरिशयनं जन्ममासं रिक्तां च हित्वा युग्माब्दं जन्मतारां, एतान् हित्वा ऋतुमुनिवसुभिः सम्मिते मासि, अथो वा जन्माहात् सूर्यभूपैः परिमितदिवसे, ज्ञेज्यशुक्रेन्दुवारे, अथ ओजाब्दे विष्णुयुग्मादितिमृदु-लघुभैः कर्णवेधः प्रशस्तः ॥२४॥

भा०—चैत्र और पौष मास, तिथि क्षय, हरिशयन—(आषाढ़ शुक्ल ११ में भगवान् सोते हैं और कार्तिक शुक्ल ११ को उठते हैं इतना समय हरिशयन कहलाता है) जन्ममास, रिक्तातिथि, समवर्ष, जन्म तारा इन सबों को छोड़कर, छठे सातवें और आठवें महीने में अथवा जन्म दिन से १२।१६ वें दिन में, बुध शुक्र सोमवार में, विषम वर्ष में, श्रवण धनिष्ठा पुनर्वसु मृदुसंज्ञक और लघुसंज्ञक नक्षत्र में कर्णवेध शुभ है ॥ २४ ॥

कर्णवेध में शुभ लग्न—

संशुद्धे मृतिभवने त्रिकोणकेन्द्र-
त्र्यायस्थैः शुभखचरैः कवीज्यलग्ने ।
पापाख्यैररिसहजायगेहसंस्थै-
र्लग्नस्थे त्रिदशगुरौ शुभावहः स्यात् ॥ २५ ॥

अन्वयः—मृतिभवने संशुद्धे सति, शुभखचरैः त्रिकोणकेन्द्रत्र्यायस्थैः, कवीज्य-लग्ने, पापाः, अरिसहजायगेहसंस्थैः त्रिदशगुरौ लग्नस्थे सति शुभावहः स्यात् ॥ २५

भा०—लग्न से अष्टम स्थान शुद्ध हो, केन्द्र में त्रिकोण में और ३।११ में शुभ ग्रह हो, लग्न में गुरु शुक्र की राशि हो, ६।३।११ में पाप ग्रह हो, लग्न में गुरु हो तो कर्णवेध शुभ है ॥ २५ ॥

शुभ कार्यों का निषेध समय—

गीर्वाणाम्बुप्रतिष्ठापरिणयदहनाधानगेहप्रवेशा-
श्चौलं राज्याभिषेको व्रतमपि शुभदं नैव याम्यायने स्यात् ।
नो वा बाल्यास्तवार्द्धे सुरगुरुसितयोर्नैव केतूदये स्यात्
पक्षं वार्द्धञ्च केचिज्जहति तमपरे यावदीक्षां तदुग्रे ॥२६॥

अन्वयः—याम्यायने सूर्ये सति गीर्वाणाम्बुप्रतिष्ठापरिणयदहनाधानगेहप्रवेशाः, चौलं राज्याभिषेकः, व्रतमपि, नैव शुभदं स्यात् । सुरगुरुसितयोः गुरुशुक्रयोः बाल्यास्तवार्द्धे वा नैव शुभदं, केतूदयेऽपि नैव शुभदं भवति । केचित् केतूदयं पक्षं, अर्धं वा जहति (परित्यजन्ति) अपरे तदुग्रे यावद् दृश्यं यावत् जहति ॥

भा०—दक्षिणायन में गुरु शुक्र के बाल्य तथा वृद्धत्व और अस्त में, केतु के उदय में, देवता और जलाशय की प्रतिष्ठा, विवाह, अग्न्याधान, गृहप्रवेश, मुण्डन, राज्याभिषेक और उपनयन ये कर्म करना शुभ नहीं है (वर्जित है)। किसी-किसी आचार्य के मत में केतु का उदय १ एक पक्ष अर्थात् १५ दिन वा आधा पक्ष (७॥ दिन) अशुभ और कितने तो जबतक दिखाई दे तबतक छोड़ना चाहिये ऐसा कहते हैं ॥ २६ ॥

गुरु शुक्र का बाल्य और वृद्धत्व—

पुरः पश्चाद् भृगोर्बाल्यं त्रिदशाहं च वार्द्धकम् ।
पक्षं पञ्चदिनं ते द्वे गुरोः पक्षमुदाहृते ॥ २७ ॥

अन्वयः—भृगोः पुरः पश्चात् (क्रमेण) त्रिदशाहं बाल्यं च पुनः पक्षं पञ्चदिनं वार्द्धकं प्रोक्तम्। गुरोः बृहस्पतेः ते द्वे पक्षं पंचदशदिवसं यावत् उदाहृते (कथिते)॥

भा०—शुक्र पूर्व दिशा में उदय होने पर उसका ३ दिन बालत्व, १० दिन वृद्धत्व, पश्चिम में उदय होने पर १० दिन बालत्व और ५ दिन वृद्धत्व रहता है, गुरु के दोनों दिशा में (पूर्व पश्चिम) में उदय से १५ दिन बाल्य और अस्त से पूर्व १५ दिन वृद्धत्व रहता है ॥ २७ ॥

बालवृद्धत्व के विषय में मतभेद—

ते दशाहं द्वयोः प्रोक्ते कैश्चित् सप्तदिनं परैः ।
त्र्यहं त्वात्ययिकेऽप्यन्यैर्द्धाहं च त्र्यहं विधोः ॥ २८ ॥

अन्वयः—कैश्चित् द्वयोः ते दशाहं प्रोक्ते। परैस्तु सप्तदिनं, अन्यैः आत्ययिके त्र्यहं प्रोक्ते, विधोः अर्धाहं त्र्यहं च प्रोक्ते ॥ २८ ॥

भा०—किसी-किसी ने तो गुरु और शुक्र के बाल्य और वृद्धत्व का दस २ दिन कहा है और किसी ने ७ दिन कहा है। अन्य आचार्य ने आवश्यक कार्य में ३ दिन ही कहा है और चन्द्रमा की बाल्यावस्था आधा दिन और वृद्धावस्था ३ दिन होती है ॥ २८ ॥

मुण्डन का मुहूर्त—

चूडा वर्षात् तृतीयात्प्रभवति विषमेऽष्टार्करिक्ताद्यषष्ठी-
पर्वोनाहे विचैत्रोदगयनसमये ज्ञेन्दुशुक्रेज्यकानाम् ।
वारे लग्नांशयोश्चास्वभनिधनतनौ नैधने शुद्धियुक्ते
शाक्रोपेतैर्विमैत्रैर्मृदुचरलघुभैरायषट्त्रिस्थपापैः ॥ २९ ॥
क्षीणचन्द्रकुजसौरिभास्करैर्मृत्युशस्त्रमृतिपंगुताज्वराः ।
स्युः क्रमेण बुधजीवभार्गवैः केन्द्रगैश्च शुभमिष्टतारया ॥ ३० ॥

अन्वयः—तृतीयात् वर्षात् विषमे अष्टार्करिक्ताद्यषष्ठीपर्वोनाहे विचैत्रोदगयनसमये, ज्ञेन्दुशुक्रेज्यकानाम् वारे, लग्नांशयोश्च, अस्वभनिधनतनौ, नैधने शुद्धियुक्ते सति, शाक्रोपेतैः विमैत्रैः मृदुचरलघुभैः, आयषट्त्रिस्थपापैः चूडा (शुभा) प्रभवति। क्षीणचन्द्रकुजसौरिभास्करैः केन्द्रगैः क्रमेण मृत्युशस्त्रमृतिपङ्गुता ज्वराः स्युः। तथा बुधजीवभार्गवैः केन्द्रगैः, इष्टतारया च चूडाकर्म शुभं प्रोक्तम् ॥२९-३०॥

भा०—जन्म समय वा गर्भाधान समय से तीन वर्ष से लेकर विषम वर्ष में, द्वादशी रिक्ता चतुर्थी, नवमी, चतुर्दशी प्रतिपत् षष्ठी पर्व तिथियाँ पूर्णिमा अमावस्या इनको छोड़कर, उत्तरायण सूर्य में चैत्र मास को छोड़कर, बुध चन्द्र शुक्र गुरुवार में इन्हीं ग्रहों के लग्न और नवमांश में बालक के जन्म लग्न वा राशि से आठवें लग्न को छोड़कर, आठवाँ घर ग्रह से रहित हो ऐसे समय में अनुराधा को छोड़कर ज्येष्ठा मृदुसंज्ञक चरसंज्ञक लघुसंज्ञक नक्षत्रों में, पाप ग्रह ११।३।६ स्थान में हो, तो बालक का प्रथम केशच्छेदन कर्म (मुण्डन) शुभ है। यदि क्षीण चन्द्रमा केन्द्र में हो तो मुण्डन कराने से मृत्यु, मङ्गल हो तो शस्त्र से मृत्यु, शनि हो तो पंगुता और रवि केन्द्र में हो तो ज्वर होता है। बुध गुरु शुक्र केन्द्र में हो और शुभ तारा हो तो मुण्डन शुभ है ॥२९-३०॥

माता के गर्भवती होने पर मुण्डन का निर्णय—

पञ्चमासाधिके मातुर्गर्भे चौलं शिशोर्न सत् ।
पञ्चवर्षाधिकस्येष्टं गर्भिण्यामपि मातरि ॥ ३१ ॥

अन्वयः—मातुः गर्भे पंचमासाधिके सति शिशोः चौलं चूडाकर्म न सत्। पंचवर्षाधिकस्य शिशोः मातरि गर्भिण्यां अपि (सत्यां) चौलं इष्टं स्यात् ॥३१॥

भा०—बालक की माता पाँच महीने की यदि गर्भवती हो तो मुण्डन शुभ नहीं होता है। और यदि बालक ५ वर्ष से अधिक का हो तो माता के गर्भवती होने पर भी मुण्डन शुभ होता है ॥ ३१ ॥

मुण्डन में दुष्टतारा का अपवाद—

तारादौष्ट्येऽब्जे त्रिकोणोच्चगे वा चौरं सत्स्यात्सौम्यमित्रस्ववर्गे ।
सौम्ये भेऽब्जे शोभने दुष्टतारा शस्ता ज्ञेया चौरयात्रादिकृत्ये ॥

अन्वयः—तारादौष्ट्ये अब्जे त्रिकोणोच्चगे वा सौम्यमित्रस्ववर्गे सति क्षौर मुण्डनकर्म सत् स्यात्। शोभने अब्जे सौम्ये भे क्षौरयात्रादिकृत्ये दुष्टतारा अपि शस्ता ज्ञेया ॥ ३२ ॥

भा०—यदि तारा दुष्ट भी हो परन्तु चन्द्रमा अपने उच्चका या त्रिकोण का हो अथवा शुभप्रद और मित्र के षड्वर्ग में हो तो मुण्डन शुभ होता है। चन्द्रमा शुभ ग्रह की राशि में हो, गोचर से भी शुभ हो तो क्षौर कर्म में, यात्रादि में वह दुष्ट तारा भी शुभ हो जाती है ॥३२॥

मुण्डनादिक में निषिद्ध समय—

ऋतुमत्याः सूतिकायाः सूनोश्चौलादि नाचरेत् ।
ज्येष्ठापत्यस्य न ज्येष्ठे कैश्चिन्मार्गेऽपि नेष्यते ॥ ३३ ॥

अन्वयः—ऋतुमत्याः सूतिकायाः सूनोः चौलादि न आचरेत् (न कुर्यात्) ज्येष्ठापत्यस्य ज्येष्ठे (मासे) चौलं न आचरेत्। कैश्चित् मार्गेऽपि चौलं न इष्यते ॥

भा०—बालक की माता ऋतुमती या प्रसूता हो तो बालक का मुण्डन कर्म नहीं करना चाहिये। और ज्येष्ठ सन्तान का ज्येष्ठ मास में मुण्डन न करे। अन्य आचार्य मार्गशीर्ष (अगहन) में भी ज्येष्ठ सन्तान का मुण्डन संस्कार न करे ऐसा कहते हैं ॥ ३३ ॥

साधारण क्षौर का मुहूर्त तथा निषिद्ध काल—

दन्तक्षौरनखक्रियात्र विहिता चौलोदिते वारभे
पातङ्ग्यारवीन्विहाय नवमं घस्रं च सन्ध्यां तथा ।
रिक्तां पर्व निशां निरासनरणग्रामप्रयाणोद्यत-
स्नाताभ्यक्तकृताशनैर्न हि पुनः कार्या हितप्रेप्सुभिः ॥३४॥

अन्वयः—पातंग्यारवीन् विहाय, पुनः नवमं घस्रं, संध्यां, रिक्तां, पर्व, निशां च विहाय परित्यज्य चौलोदिते वारभे दन्तक्षौरनखक्रिया विहिता कथिता। अत्र निरासनरणग्रामप्रयाणोद्यतस्नाताभ्यक्तकृताशनैः हितप्रेप्सुभिः कल्याण-मिच्छद्भिः दन्तक्षौरनखक्रिया न हि कार्या ॥ ३४ ॥

भा०—शनि मंगल और रविवार को छोड़कर और पहले किये हुए क्षौर दिन से नौवें दिन, सन्ध्या काल, रिक्ता तिथि (४-९-१४), पर्व की तिथि, रात्रि, इनको छोड़कर मुण्डन कर्म में कहे हुए दिनादि में दाँत की सफाई, बाल बनवाना, नाखून कटवाना शुभ है। अपना हित चाहने वाले बिना आसन के, युद्ध क्षेत्र में, किसी अन्य गाँव के लिये यात्रा के समय में, स्नान कर, तेल लगाकर, भोजन कर दाँत की सफाई करना, नाखून कटाना और बनवाना कभी भी नहीं करे ॥३४॥

क्षौर के लिये विशेष समय—

क्रतुपाणिपीडमृतिबन्धमोचणे क्षुरकर्म च द्विजनृपाज्ञया चरेत् ।
शववाहतीर्थगमसिन्धुमज्जनं क्षुरमाचरेन्न खलु गर्भिणीपतिः ॥३५॥

अन्वयः—क्रतुपाणिपीडमृतिबन्धमोक्षणे द्विजनृपाज्ञया क्षुरकर्म आचरेत् । खलु निश्चयेन गर्भिणीपतिः शववाहतीर्थगमसिन्धुमज्जनं क्षुरं न आचरेत् ॥ ३५ ॥

भा०—यज्ञ, विवाह, गुरुजनों के मरने पर, जेलसे आनेपर, ब्राह्मण और राजाकी आज्ञासे निन्द्य समयमें भी बाल बनवाना चाहिये। जिसकी

स्त्री गर्भवती हो तो उसको मुर्दा लेकर श्मशान जाना, तीर्थ यात्रा करना, समुद्र स्नान करना, और बाल बनवाना छोड़ देना चाहिये ॥३५॥

श्मश्रु और क्षौर में वर्जित नक्षत्र—

नृपाणां हितं क्षौरभे श्मश्रुकर्म
दिने पञ्चमे पञ्चमेऽस्योदये वा।
षडग्निस्त्रिमैत्रोऽष्टकः पञ्चपित्र्यो-
ऽब्दतोऽब्ध्यर्यमा चौरकृन्मृत्युमेति ॥ ३६ ॥

अन्वयः—क्षौरभे, पञ्चमे पञ्चमे दिने वा, अस्य (क्षौरविहितनक्षत्रस्य) उदये (मुहूर्ते) नृपाणां श्मश्रुकर्म हितं (शोभनं) भवति। षडग्निः, त्रिमैत्रः, अष्टकः, पंचपित्र्यः, अब्ध्यर्यमा, क्षौरकृत् अब्दतः मृत्युं एति प्राप्नोति ॥ ३६ ॥

भा०—बाल बनवाने के नक्षत्रादि में, वा उनके मुहूर्त में ५ वें, ५ वें दिन पर दाढ़ी का बाल बनवाना शुभ है। बाल बनवाने में एक वर्ष में कृत्तिका ६ बार, अनुराधा ३ बार, रोहिणी ८ बार, मघा ५ बार, उत्तर फाल्गुनी ४ बार आ जाय तो एक वर्ष के भीतर चौर कर्म कराने-वाले की मृत्यु हो जाती है ॥ ३६ ॥

अक्षरारम्भ का मुहूर्त—

गणेशविष्णुवाग्रमाः प्रपूज्य पञ्चमाब्दके
तिथौ शिवार्कदिग्द्विषट्शरत्रिके रवावुदक्।
लघुश्रवोनिलान्त्यभादितीशतक्षमित्रभे
चरोनसत्तनौ शिशोर्लिपिग्रहः सतां दिने ॥ ३७ ॥

अन्वयः—पञ्चमाब्दके गणेशविष्णुवाग्रमाः प्रपूज्य शिवार्कदिग्द्विषट्शरत्रिके तिथौ, उदक् रवौ, लघुश्रवोऽनिलान्त्यभादितीशतक्षमित्रभे, चरोनसत्तनौ, सतां दिने शिशोः लिपिग्रहः शुभः स्यात् ॥ ३७ ॥

भा०—पाँचवें वर्ष में गणेश विष्णु सरस्वती और लक्ष्मी का पूजन कर एकादशी, द्वादशी, दशमी, द्वितीया, षष्ठी, पंचमी, तृतीया इन तिथियों में सूर्य उत्तरायण में हो, लघुसंज्ञक, श्रवण, स्वाती, रेवती, पुनर्वसु, आर्द्रा, चित्रा, मित्र (अनुराधा) इन नक्षत्रों में, चर-लग्न को छोड़ दूसरे लग्न में बालक को अक्षरारम्भ कराना शुभ है ॥३७॥

विद्यारंभ का मुहूर्त्त—

मृगात्कराच्छ्रुतेस्त्रयेऽश्विमूलपूर्विकात्रये
गुरुद्वयेऽर्कजीववित्सितेऽह्नि षट्शरत्रिके।

शिवार्कदिग्द्विके तिथौ ध्रुवान्त्यमित्रभे परैः-
शुभैरधीतिरुत्तमा त्रिकोणकेन्द्रगैः स्मृता ॥ ३८ ॥

अन्वयः—मृगात् करात् श्रुतेः त्रये अश्विमूलपूर्विकात्रये, गुरुद्वये, अर्कजीववित्सिते अह्नि, षट्शरत्रिके शिवार्कदिग्द्विके तिथौ, परैः ध्रुवान्त्यमित्रभे नक्षत्रे, शुभैः त्रिकोणकेन्द्रगैः अधीतिः उत्तमा स्मृता ॥ ३८ ॥

भा०—मृगशिरा से तीन नक्षत्र, हस्त से तीन नक्षत्र, श्रवण से तीन नक्षत्र, अश्विनी, मूल, तीनों पूर्वा, पुष्य और अश्लेषा तथा रविवार, गुरुवार, बुधवार और शुक्र के दिनों में ६।५।३।११।१२।१०।२। इन तिथियों में, शुभग्रह केन्द्र त्रिकोण में हो तो विद्या का आरम्भ शुभ है। दूसरे आचार्य कहते हैं कि ध्रुवसंज्ञक, रेवती और अनुराधा नक्षत्रों में भी विद्यारम्भ शुभ होता है ॥ ३८ ॥

यज्ञोपवीत का समय—

विप्राणां व्रतबन्धनं निगदितं गर्भाज्जनेर्वाष्टमे
वर्षे वाप्यथ पञ्चमे क्षितिभुजां षष्ठे तथैकादशे ।
वैश्यानां पुनरष्टमेऽप्यथ पुनः स्याद् द्वादशे वत्सरे
कालेऽथ द्विगुणे गते निगदिते गौणं तदाहुर्बुधाः ॥ ३९ ॥

अन्वयः—गर्भात् वा जनेः (जन्मकालात्) अष्टमे वा पंचमे वर्षे अपि विप्राणां, एवं षष्ठे तथा एकादशे वर्षे क्षितिभुजां (क्षत्रियाणां), पुनः अष्टमे वा द्वादशे वत्सरे वैश्यानां, व्रतबन्धनं निगदितम् (प्रोक्तम्)। अथ निगदिते काले द्विगुणे गते सति बुधाः पण्डिताः तत् व्रतं गौणं आहु ॥ ३९ ॥

भा०—गर्भाधान समय से वा जन्म समय से ५ वें अथवा ८ वें वर्ष में ब्राह्मणों का, ६ ठे किंवा ११ वें वर्ष में क्षत्रियों का, ८ वें अथवा १२ वें वर्ष में वैश्यों का यज्ञोपवीत संस्कार श्रेष्ठ है। उपरोक्त समय से दूने वर्ष तक उपनयन मध्यम होता है ॥ ३९ ॥

व्रतबन्ध का मुहूर्त—

क्षिप्रध्रुवाहिचरमूलमृदुत्रिपूर्वा-
रौद्रेऽर्कविद्गुरुसितेन्दुदिने व्रतं सत् ।
द्वित्रीषुरुद्ररविदिक्प्रमिते तिथौ च
कृष्णादिमत्रिलवकेऽपि न चापराह्णे ॥ ४० ॥

अन्वयः—क्षिप्रध्रुवाहिचरमूलमृदुत्रिपूर्वारौद्रे (नक्षत्रे) अर्कविद्गुरुसितेन्दुदिने, द्वित्रीषुरुद्ररविदिक्प्रमिते तिथौ व्रतं सत् स्यात्। कृष्णादिमत्रिलवके अपि सत्। च (पुनः) अपराह्णे (दिनार्धोत्तरे) व्रतं सत् न भवति ॥ ४० ॥

भा०—क्षिप्रसंज्ञक, ध्रुवसंज्ञक, आश्लेषा, चर संज्ञक, मूल, मृदुसंज्ञक, तीनों पूर्वा और आर्द्रा इन नक्षत्रों में, रवि, बुध, गुरु, शुक्र, सोम इन वारों में द्वितीया, तृतीया, पञ्चमी, एकादशी, द्वादशी, दशमी इन तिथियों में, शुक्ल पक्ष तथा कृष्ण पक्ष की पंचमी तक, दोपहर के पहले उपनयन करना शुभ है ॥ ४० ॥

यज्ञोपवीत में निन्द्य—

कवीज्यचन्द्रलग्नपा रिपौ मृतौ व्रतेऽधमाः ।
व्ययेऽब्जभार्गवौ तथा तनौ मृतौ सुते खलाः ॥ ४१ ॥

अन्वयः—कवीज्यचन्द्रलग्नपा रिपौ मृतौ स्थिरा व्रते अधमाः प्रोक्ताः । तथा अब्जभार्गवौ व्यये, खलाः तनौ मृतौ वा स्थिता अशुभा भवन्ति ॥ ४१ ॥

भा०—शुक्र, गुरु, चन्द्र और लग्नेश ये छठे और आठवें स्थान में हो तो उपनयन संस्कार अशुभ है। १२ वें में चन्द्र और शुक्र हों तथा लग्न में, आठवें में और पाँचवें स्थान में पाप ग्रह हो तो अशुभ है ॥ ४१ ॥

व्रतबन्ध में लग्नशुद्धि—

व्रतबन्धेऽष्टषड्रिःफवर्जिताः शोभनाः शुभाः ।
त्रिषडाये खलाः पूर्णो गोकर्कस्थो विधुस्तनौ ॥ ४२ ॥

अन्वयः—शुभाः अष्टषड्रिःफवर्जिताः व्रतबन्धे शोभनाः भवन्ति। खलाः त्रिषडाये शोभना भवन्ति । पूर्णः विधुः गोकर्कस्थः तनौ स्थितः शोभनः स्यात् ॥

भा०—व्रतबन्ध में (उपनयन में) लग्न से ६।८।१२ इनसे भिन्न स्थान में शुभ ग्रह हो, ३।६।११ इनमें पापग्रह हो और पूर्ण चन्द्रमा वृष कर्क राशि होकर लग्न में हो तो उपनयन में शुभ है ॥ ४२ ॥

ब्राह्मणादि वर्ण तथा वेदों के स्वामी—

विप्राधीशौ भार्गवेज्यौ कुजार्कौ
राजन्यानामोषधीशो विशां च ।
शूद्राणां ज्ञश्चान्त्यजानां शनिः स्या-
च्छाखेशाः स्युर्जीवशुक्रारसौम्याः ॥ ४३ ॥

अन्वयः—भार्गवेज्यौ विप्राधीशौ, कुजार्कौ राजन्यानां ईशौ, ओषधीशः चन्द्रमाः विशां ईशः. ज्ञो बुधः शूद्राणां, शनिः अन्त्यजानां ईशः । जीवशुक्रारसौम्याः शाखेशा भवन्ति ॥ ४३ ॥

भा०—गुरु और शुक्र ब्राह्मणों के, मंगल सूर्य क्षत्रियों के, चन्द्रमा वैश्यों के, बुध शूद्रों के, शनि अन्त्यजों (चाण्डालों) के स्वामी हैं। अब वेद के स्वामी कहते हैं, ऋग्वेद के गुरु, यजुर्वेद के शुक्र, सामवेद के मङ्गल, अथर्ववेद के बुध स्वामी हैं ॥ ४३ ॥

वर्गेश और शाखेश का प्रयोजन—

शाखेशवारतनुवीर्य्यमतीवशस्तं
शाखेशसूर्य्यशशिजीवबले व्रतं सत् ।
जीवे भृगौ रिपुगृहे विजिते च नीचे
स्याद्वेदशास्त्रविधिना रहितो व्रतेन ॥ ४४ ॥

अन्वयः—शाखेशवारतनुवीर्यं व्रतबन्धे अतीव शस्तं भवति । शाखेशसूर्यशशिजीवबले व्रतं सत् स्यात् । जीवे भृगौ च रिपुगृहे विजिते नीचे सति व्रतेन वेदशास्त्रविधिना रहितः स्यात् ॥ ४४ ॥

भा०— ऊपर कहे हुए वेदों के स्वामी का दिन हो, उसी का लग्न हो, तथा वे बलवान् हों तो उपनयन अति शुभदायक होता है । शाखेश और सूर्य, चंद्रमा गुरु बली हो तो भी उपनयन शुभ होता है । गुरु शुक्र शत्रु के घर में या किसी ग्रह से पराजित हों या नीच में हों ऐसे समय में उपनयन संस्कार किया हुआ बालक वेद शास्त्र के कथित कर्म से रहित होता है ॥ ४४ ॥

यज्ञोपवीत में जन्ममासादि का अपवाद—

जन्मर्क्षमासलग्नादौ व्रते विद्याधिको व्रती ।
आद्यगर्भेऽपि विप्राणां क्षत्रादीनामनादिमे ॥ ४५ ॥

अन्वयः—विप्राणां आद्यगर्भेऽपि क्षत्रादीनां अनादिमे गर्भे जन्मर्क्षमासलग्नादौ व्रते सति व्रती विद्याधिकः स्यात् ॥ ४५ ॥

भा०—जन्म नक्षत्र, जन्म मास, जन्म लग्न, जन्म तिथि, जन्म दिन इनमें ब्राह्मण के ज्येष्ठ बालक और क्षत्रिय, वैश्य के दूसरे गर्भ के बालक का उपनयन संस्कार हो तो वह बालक प्रसिद्ध विद्वान् होता है ॥ ४५ ॥

गुरुशुद्धि—

बटुकन्याजन्मराशे-स्त्रिकोणायद्विसप्तगः ।
श्रेष्ठो गुरुः खषट्त्र्याद्ये पूजयान्यत्र निन्दितः ॥ ४६ ॥

अन्वयः—बटुकन्याजन्मराशेः त्रिकोणायद्विसप्तगः गुरुः श्रेष्ठः स्यात् । खषट्त्र्याद्ये पूजया शुभः स्यात् । अन्यत्र ४।८।१२ स्थानेषु निन्दितः स्यात् ॥४६॥

भा०—बालक और कन्या के जन्म राशि से ९।५।११।२।७ इन स्थानों में गुरु श्रेष्ठ होते हैं । १०।६।३।१ इन स्थानों में पूजा द्वारा शुभ होते हैं और ४।८।१२ में वे अशुभ ही होते हैं, इनमें पूजा से भी शुभ नहीं होते ॥ ४६ ॥

बृहस्पति का अपवाद—

स्वोच्चे स्वभे स्वमैत्रे वा स्वांशे वर्गोत्तमे गुरुः ।
रिःफाष्टतुर्यगोऽपीष्टो नीचारिस्थः शुभोऽप्यसन् ॥ ४७ ॥

अन्वय:—गुरुः स्वोच्चे स्वभे स्वमैत्रे वा स्वांशे रि:फाष्टतुर्यगोऽपि इष्टः स्यात् तथा नीचारिस्थः शुभोऽपि असन् स्यात् ॥ ४७ ॥

भा०—अपने उच्चका, अपने राशिका, अपने मित्र के घरका, अपने नवांशका और वर्गोत्तम नवांश का गुरु यदि ४।८।१२ इन दुष्ट स्थान में हो तो भी शुभ है। और नीच या शत्रु का हो तो शुभ भी अशुभ है ॥ ४७ ॥

यज्ञोपवीत में वर्जित काल—

कृष्णे प्रदोषेऽनध्याये शनौ निश्यपराह्णके ।
प्राक्संध्यागर्जिते नेष्टो व्रतबन्धो गलग्रहे ॥ ४८ ॥

अन्वय:—कृष्णे, प्रदोषे, अनध्याये, शनौ, निशि, अपराह्णके प्राक्सन्ध्यागर्जिते तथा गलग्रहे काले व्रतबन्धः नेष्टः ॥ ४८ ॥

भा०—कृष्ण पक्ष में, प्रदोष में (५५ श्लोक में कहेंगे) अनध्याय (५४ श्लोक में कहेंगे) शनिवार में, रात्रि में, दोपहर के बाद, प्रातः और सायंकाल में, मेघ गर्जने पर, गलग्रह (१३।१४।३०।१।७।८।६।४) ये आठो तिथि गलग्रह कही जाती हैं इनमें उपनयन संस्कार अशुभ कहा गया है ॥ ४८ ॥

यज्ञोपवीत के समय सूर्यादिनवमांशफल—

क्रूरो जडो भवेत् पापः पटुः षट्कर्मकृद्बटुः ।
यज्ञार्थभाक् तथा मूर्खो रव्याद्यंशे तनौ क्रमात् ॥ ४९ ॥

अन्वय:—रव्याद्यंशे तनौ सति—बटुः क्रमात् क्रूरः, जडः, पापः, पटुः, षट्कर्मकृत्, यज्ञार्थभाक्, तथा मूर्खः स्यात् ॥ ४९ ॥

भा०—यज्ञोपवीत के लग्न में यदि सूर्य का नवांश हो तो क्रूर, चन्द्र का हो तो जड़, मंगल का हो तो पापी, बुध का हो तो चतुर, बृहस्पति का हो तो षट्कर्मी, शुक्र का नवांश हो तो यज्ञ करने वाला और धनी, तथा शनि का नवांश हो तो मूर्ख होता है ॥ ४९ ॥

चन्द्रनवमांशफल एवं अपवाद—

विद्यानिरतः शुभराशिलवे पापांशगते हि दरिद्रतरः ।
चन्द्रे स्वलवे बहुदुःखयुतः कर्णादितिभे धनवान्स्वलवे ॥५०॥

अन्वय:—चन्द्रे शुभराशिलवे सति व्रती विद्यानिरतः स्यात्। पापांशगते दरिद्रतरः स्यात्। स्वलवे चन्द्रे बहुदुःखयुतः स्यात्। स्वलवे चन्द्रे कर्णादितिभे सति धनवान् स्यात् ॥ ५० ॥

भा०—उपनयन काल में चन्द्रमा शुभ राशि के नवांश में हो तो जिसका यज्ञोपवीत होता है वह बालक विद्याभ्यास करने वाला होता है। पाप राशि के नवांश में चन्द्रमा हो तो दरिद्र से भी दरिद्र होता है। चन्द्रमा अपने नवांश में हो तो बहुत दुःखी और अपने नवांश में, श्रवण और पुनर्वसु नक्षत्र में हो तो धनी होता है ॥ ५० ॥

केन्द्रस्थित सूर्यादि का फल—

राजसेवी वैश्यवृत्तिः शस्त्रवृत्तिश्च पाठकः ।
प्राज्ञोऽर्थवान् म्लेच्छसेवी केन्द्रे सूर्यादिखेचरैः ॥ ५१ ॥

अन्वयः—चन्द्रे सूर्यादिखेचरैः सद्भिः व्रती क्रमशः राजसेवी, वैश्यवृत्तिः, शस्त्रवृत्तिः, पाठकः, प्राज्ञः, अर्थवान्, म्लेच्छसेवी च स्यात् ॥ ५१ ॥

भा०—यज्ञोपवीत संस्कार के समय यदि सूर्यादि ग्रह केन्द्र में हो तो क्रम से राजा का सेवक, व्यापारी, हथियार चलाने वाला, पढ़ाने-वाला, पण्डित, धनवान् और यवनादि जाति का नौकर होता है ॥५१॥

अन्यग्रहों के साथ गुरु, शुक्र तथा चन्द्र के फल—

शुक्रे जीवे तथा चन्द्रे सूर्य्यभौमार्किसंयुते ।
निर्गुणः क्रूरचेष्टः स्यान्निर्घृणः सद्युते पटुः ॥ ५२ ॥

अन्वयः—शुक्रे, जीवे च चन्द्रे सूर्यभौमार्किसंयुते सति व्रती निर्गुणः क्रूरचेष्टः निर्घृणः च स्यात् । सद्युते पटुः स्यात् ॥ ५२ ॥

भा०—उपनयन समय में गुरु शुक्र चन्द्रमा इनमें कोई भी ग्रह सूय मंगल और शनि से युत हो तो, क्रम से गुण से हीन, निर्दयी और निर्लज्ज होता है और शुभ ग्रह से युत हो तो चतुर होता है ॥५२॥

चन्द्रनवमांश का शुभाशुभ फल—

विधौ सितांशगे सिते त्रिकोणगे तनौ गुरौ ।
समस्तवेदविद्व्रती यमांशगेऽतिनिघृणः ॥ ५३ ॥

अन्वयः—विधौ सितांशगे, सिते त्रिकोणगे, गुरौ तनौ स्थिते सति व्रती समस्तवेदविद् भवति । यमांशगे अतिनिर्घृणः स्यात् ॥ ५३ ॥

भा०—उपनयन काल में चन्द्रमा शुक्र के नवांश में हो और शुक्र ९।५ वें में हो गुरु लग्न में हो तो बालक समस्त शास्त्र को जानने वाला होता है। और यदि शनि के नवांश में हो तो अत्यन्त निर्लज्ज होता है ॥ ५३ ॥

यज्ञोपवीत में अनध्याय—

शुचिशुक्रपौषतपसां दिगश्विरुद्रार्कसंख्यसिततिथयः ।
भूतादित्रितयाष्टमि संक्रमणञ्च व्रतेष्वनध्यायाः ॥ ५४ ॥

अन्वयः—शुचिशुक्रपौषतपसां मासानां क्रमेण दिगश्विरुद्रार्कसंख्यसिततिथयः तथा भूतादित्रितयाष्टमि संक्रमणं च व्रतेषु अनध्यायाः प्रोक्ताः ॥ ५४ ॥

भा०—आषाढ़, ज्येष्ठ, पौष, माघ इन मासों के शुक्ल पक्ष की क्रम से १०।२।११।१२ ये तिथियाँ और साधारणतया १४।१५।३०।१।८ ये तिथियाँ और संक्रान्ति ये अनध्याय हैं। इनमें उपनयन नहीं करना चाहिये ॥ ५४ ॥

प्रदोष का लक्षण—

अर्कतर्कत्रितिथिषु प्रदोषः स्यात्तदग्रिमैः।
रात्र्यर्धसार्धप्रहरयाममध्यस्थितैः क्रमात् ॥ ५५ ॥

अन्वयः—अर्कतर्कत्रितिथिषु क्रमात् रात्र्यर्धसार्धप्रहरयाममध्यस्थितैः तदग्रिमैः तिथिभिः प्रदोषः स्यात् ॥ ५५ ॥

भा०—१२।६।३ इन तीनों तिथियों में क्रम से द्वादशी में आधी रात के पहले त्रयोदशी, तथा षष्ठी के दिन डेढ़ पहर रात से पूर्व सप्तमी, और तृतीया में एक पहर रात बीतने पर चतुर्थी लग जाय तो प्रदोष होता है ॥ ५५ ॥

ब्रह्मौदनपाक से पहले उत्पातादि की शान्ति—

प्राग्ब्रह्मौदनपाकाद्व्रतबन्धानन्तरं यदि चेत्।
उत्पातानध्ययनोत्पत्तावपि शान्तिपूर्वकं तत् स्यात् ॥५६॥

अन्वयः—व्रतबन्धानन्तरे ब्रह्मौदनपाकात् प्राक् यदि चेद् उत्पातानध्ययनोत्पत्तावपि शान्तिपूर्वकं तत् स्यात् ॥ ५६ ॥

भा०—व्रतबन्ध के बाद और ब्रह्मौदन पाक से पहले यदि उत्पात या अनध्याय पड़ जाय तो उसकी शान्ति करके ब्रह्मौदन पाक कर्म करे ॥ ५६ ॥

वेद क्रम से यज्ञोपवीत में नियत नक्षत्र—

वेदक्रमाच्छशिशिवाहिकरत्रिमूल-
पूर्वासु पौष्णकरमैत्रमृगादितीज्ये।
ध्रौवेषु चाश्विवसुपुष्यकरोत्तरेश-
कर्णे मृगान्त्यलघुमैत्रधनादितौ सत् ॥ ५७ ॥

अन्वयः—शशिशिवाहिकरत्रिमूलपूर्वासु, पौष्णकरमैत्रमृगादितीज्ये ध्रौवेषु च, अश्विवसुपुष्यकरोत्तरेशकर्णे, मृगान्त्यलघुमैत्रधनादितौ, वेदक्रमात ऋग्यजुःसामाथर्वक्रमतः व्रतं सत् शोभनं स्यात् ॥ ५७ ॥

भा०—मृगशिरा आर्द्रा आश्लेषा हस्त, चित्रा, स्वाती, मूल और तीनों पूर्वा ये नक्षत्र ऋग्वेद के लिये, रेवती, हस्त, अनुराधा, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, और ध्रुवसंज्ञक यजुर्वेदियों के लिये, अश्विनी, धनिष्ठा, पुष्य, हस्त, तीनों उत्तरा, आर्द्रा, श्रवण ये सामवेदियों के लिये तथा मृगशिरा, रेवती, लघुसंज्ञक, धनिष्ठा और पुनर्वसु ये नक्षत्र अथर्ववेदियों के लिये उपनयन में शुभ हैं ॥ ५७ ॥

शुभकार्य में रजस्वला का परिहार—

नान्दीश्राद्धोत्तरं मातुः पुष्पे लग्नान्तरे न हि।
शान्त्या चौलं व्रतं पाणिग्रहः कार्योऽन्यथा न सत् ॥५८॥

अन्वयः—नान्दीश्राद्धोत्तरं मातुः पुष्पे सति लग्नान्तरे न हि प्राप्ते शान्त्या चौलं, व्रतं, पाणिग्रहश्च कार्यः। अन्यथा न सत् स्यात् ॥ ५८ ॥

भा०—नान्दीमुख श्राद्ध के बाद यदि बालक की माता रजस्वला हो जाय और नजदीक में कोई दूसरा लग्न न मिले तो शान्ति करके मुंडन उपनयनादि संस्कार को करे, अन्यथा अशुभ होता है ॥ ५८ ॥

क्षत्रियों को छुरिकादि बन्धन मुहूर्त—

विचैत्रव्रतमासादौ विभौमास्ते विभूमिजे ।
छुरिकाबन्धनं शस्तं नृपाणां प्राग्विवाहतः ॥ ५९ ॥

अन्वयः—विचैत्रव्रतमासादौ विभौमास्ते विभूमिजे दिने नृपाणां विवाहतः प्राक् छुरिकाबन्धनं शस्तं स्यात् ॥ ५९ ॥

भा०—चैत्र को छोड़कर उपनयन में कहे हुए महीनों में, मङ्गलादिक ग्रहों के अस्त न रहने पर मङ्गल दिन को भी छोड़कर क्षत्रियों को विवाह से पूर्व छुरिका शस्त्र बन्धन कर्म करना चाहिये ॥ ५९ ॥

केशान्त और समावर्तन का मुहूर्त—

केशान्तं षोडशे वर्षे चौलोक्तदिवसे शुभम् ।
व्रतोक्तदिवसादौ हि समावर्त्तनमिष्यते ॥ ६० ॥

अन्वयः—बालकस्य षोडशे वर्षे चौलोक्तदिवसे केशान्तं शुभं स्यात् तथा व्रतोक्तदिवसादौ हि समावर्तनं कर्म इष्यते ॥ ६० ॥

भा०—सोलहवें वर्ष में और मुण्डन में कहे हुए समय में केशान्त कर्म करना चाहिये। तथा उपनयन में कहे हुये समय में समावर्तन कर्म करना चाहिये ॥ ६० ॥

इति मुहूर्तचिन्तामणौ संस्कारप्रकरणं समाप्तम्।

अथ विवाहप्रकरणम्।

विवाहसमय में विचारणीय प्रमुख बातें—

भार्या त्रिवर्गकरणं शुभशीलयुक्ता
शीलं शुभं भवति लग्नवशेन तस्याः ।
तस्माद् विवाहसमयः परिचिन्त्यते हि
तन्निघ्नतामुपगताः सुतशीलधर्माः ॥ १ ॥

अन्वयः—शुभशीलयुक्ता भार्या त्रिवर्गकरणं भवति। लग्नवशेन तस्याः शीलं शुभं भवति। तस्मात् हेतोः विवाहसमयः परिचिन्त्यते। हि यतः सुतशील-धर्माः तन्निघ्नतां उपगताः सन्ति ॥ १ ॥

भा०—सुन्दर विचार और शिष्टाचरण वाली स्त्री धर्म, अर्थ और काम को देने वाली होती है। उसका उस प्रकार का आचरण होना लग्न के वश होता है। इसलिये विवाह समय में इसका विचार करना चाहिये क्योंकि पुत्र, स्वभाव, आचरण और धर्म ये सब विवाह समय के ही अधीन हैं॥ १॥

प्रश्नलग्न द्वारा विवाहयोग—

आदौ सम्पूज्य रत्नादिभिरथ गणकं वेदयेत् स्वस्थचित्तं
कन्योद्वाहं दिगीशानलहयविशिखे प्रश्नलग्नाद्यदीन्दुः।
दृष्टो जीवेन सद्यः परिणयनकरो गोतुलाकर्कटाख्यं
वा स्यात्प्रश्नस्य लग्नं शुभखचरयुतालोकितं तद्विदध्यात्॥२॥

अन्वयः—आदौ रत्नादिभिः स्वस्थचित्तं गणकं सम्पूज्य अथ कन्योद्वाहं वेदयेत् यदि चेत् इन्दुः (चन्द्रः) प्रश्नलग्नात् दिगीशानलहयविशिखे (स्थितः) जीवेन [गुरुणा] दृष्टः स्यात्तदा सद्यः परिणयनकरः स्यात्। वा गोतुलाकर्कटाख्यं प्रश्नस्य लग्नं शुभखचरयुतालोकितं यदि स्यात [तदा] तत् विदध्यात् (कुर्यात्)॥ २।

भा०—स्वस्थ चित्त से बैठे ज्योतिषी की रत्नादि से पूजा करके कन्या के विवाह के समय का प्रश्न करे। प्रश्नकाल में यदि चन्द्रमा १०।११।३।७।५ वें स्थान में से किसी एक स्थान में हो और गुरु से देखा जाता हो अथवा प्रश्न लग्न में वृष तुला या कर्क कोई लग्न हो और शुभ ग्रह से देखा जाता हो तो इस योग से भी शीघ्र विवाह होगा ऐसा कहे॥ २॥

विवाह योग—

विषमभांशगतौ शशिभार्गवौ तनुगृहं बलिनौ यदि पश्यतः।
रचयतो वरलाभमिमौ यदा युगलभांशगतौ युवतिप्रदौ॥ ३॥

अन्वयः—यदि बलिनौ शशिभार्गवौ विषमभांशगतौ तनुगृहं पश्यतः तदा वरलाभं रचयतः। यदा इमौ शशिभार्गवौ युगलभांशगतौ तदा युवतिप्रदौ भवेताम्॥ ३॥

भा०—प्रश्नकाल में चन्द्रमा और शुक्र यदि विषम राशि या विषम राशि के नवांश में बली होकर लग्न को देखता हो, तो कन्या को वर लाभ कराता है। और शुक्र चन्द्रमा यदि समराशि नवांश में हो और बली होकर लग्न को देखता हो तो वर को स्त्री लाभ कराता है॥

प्रश्न लग्न से वैधव्ययोग—

षष्ठाष्टस्थः प्रश्नलग्नाद्यदीन्दुर्लग्ने क्रूरः सप्तमे वा कुजः स्यात्।
मूर्त्ताविन्दुः सप्तमे तस्य भौमो रण्डा सा स्यादष्टसंवत्सरेण॥४॥

अन्वयः—यदि इन्दुः प्रश्नलग्नात् षष्ठाष्टस्थः, लग्ने क्रूरः, वाऽस्य सप्तमे कुजः, मूर्तौ इन्दुः तस्य सप्तमे भौमः स्यात्तदा सा (कन्या) अष्टसंवत्सरेण रण्डा स्यात्॥ ४॥

भा०—प्रश्न लग्न से चन्द्रमा यदि छठे या आठवें स्थान में हो और लग्न में क्रूर ग्रह हो तथा सातवें स्थान में मङ्गल हो अथवा लग्न में चन्द्रमा हो और उससे ७ वें स्थान में मङ्गल हो तो विवाह के ८ वर्ष के भीतर कन्या विधवा हो जाती है ॥ ४ ॥

कुलटा तथा मृतवत्सा योग—

प्रश्नतनोर्यदि पापनभोगः पञ्चमगो रिपुदृष्टशरीरः ।
नीचगतश्च तदा खलु कन्या सा कुलटा त्वथ वा मृतवत्सा ॥५॥

अन्वयः—यदि पापनभोगः प्रश्नतनोः सकाशात् पञ्चमगः रिपुदृष्टशरीरः नीचगतो वा तदा सा कन्या खलु (इति निश्चयेन) कुलटा अथवा मृतवत्सा स्यात् ॥ ५ ॥

भा०—प्रश्न लग्न से यदि पाप ग्रह पञ्चम स्थान में हो और शत्रु से देखा जाता हो या नीच का हो तो स्त्री कुलटा अथवा मृतवत्सा (जिसकी सन्तान हो होकर मर जाय उसे मृतवत्सा कहते हैं) होती है ॥ ५ ॥

विवाह भङ्ग योग—

यदि भवति सितातिरिक्तपक्षे
तनुगृहतः समराशिगः शशांकः ।
अशुभखचरवीक्षितोऽरिरन्ध्रे
भवति विवाहविनाशकारकोऽयम् ॥ ६ ॥

अन्वयः—यदि शशांकः सितातिरिक्तपक्षे तनुगृहतः समराशिगः अशुभखचरवीक्षितः अरिरन्ध्रे भवति तदा अयं विवाहविनाशकारकः स्यात् ॥ ६ ॥

भा०—कृष्णपक्ष का चन्द्रमा यदि प्रश्न लग्न से समसंख्यक राशि में हो और पापग्रह से देखा जाता हो अथवा ६ ठें आठवें स्थान में हो तो विवाह पक्का होने नहीं देता ॥ ६ ॥

बालविधवा योग तथा परिहार—

जन्मोत्थश्च विलोक्य बालविधवायोगं विधाय व्रतं
सावित्र्या उत पैप्पलं हि सुतया दद्यादिमां वा रहः ।
सल्लग्नेऽच्युतमूर्तिपिप्पलघटैः कृत्वा विवाहं स्फुटं
दद्यात् तां चिरजीविनेऽत्र न भवेद्दोषः पुनर्भूभवः ॥ ७ ॥

अन्वयः—जन्मोत्थं च बालविधवायोगं विलोक्य हि इति निश्चयेन सुतया सावित्र्या व्रतं उत वा पैप्पलं व्रतं विधाय इमां कन्यां चिरजीविने वराय दद्यात् । वा सल्लग्ने रहः अच्युतमूर्तिपिप्पलघटैः स्फुटं विवाहं कृत्वा तां चिरजीविने वराय दद्यात् । अत्र पुनर्भूभवः पुनर्विवाहभवः दोषः न भवेत् ॥७॥

भा०—जन्म काल तथा प्रश्न काल से विधवा योग देख कर कन्या को सावित्री या पिप्पल व्रत कराकर अथवा शुभ लग्न में विष्णु भगवान् की मूर्ति, पिप्पल वृक्ष अथवा कुम्भ से विवाह कर उस कन्या का किसी चिरंजीवी वर के साथ विवाह कर दे। इसमें पुनर्विवाह का दोष नहीं होता है ॥ ७ ॥

सन्तान ज्ञान प्रश्नोत्तर—

प्रश्नलग्नक्षणे यादृशापत्ययुक्
स्वेच्छया कामिनी तत्र चेदाव्रजेत्।
कन्यका वा सुतो वा तदा पण्डितै-
स्तादृशापत्यमस्या विनिर्दिश्यते ॥ ८ ॥

अन्वयः—प्रश्नलग्नक्षणे स्वेच्छया यादृशापत्ययुक् कामिनी तत्र आव्रजेत् चेत् तदा कन्यका वा सुतः तादृशापत्यं अस्याः पण्डितैः विनिर्दिश्यते ॥ ८ ॥

भा०—प्रश्न लग्न के समय में अपनी इच्छा से कोई स्त्री जिस तरह किसी और की सन्तान अपने साथ लेकर आ जाय उसी प्रकार उस स्त्री की संतान होगी ऐसा विद्वान् प्रश्नकर्ता से कहे। यदि कन्या हो तो कन्या और यदि लड़का हो तो लड़का कहना चाहिये ॥ ८ ॥

प्रश्नसमय के शुभाशुभ फल—

शंखभेरीविपञ्चीरवैर्मङ्गलं
जायते वैपरीत्यं तदा लक्षयेत्।
वायसो वा खरः श्वा शृगालोऽपि वा
प्रश्नलग्नक्षणे रौति नादं यदि ॥ ९ ॥

अन्वयः—प्रश्नलग्नक्षणे शङ्खभेरीविपञ्चीरवैः मंगलं जायते। वायसो वा खरः श्वा शृगालः अपि यदि नादं रौति तदा वैपरीत्यं लक्षयेत् ॥ ९ ॥

भा०—प्रश्न लग्न समय में शंख, भेरी (नगाड़ा), वीणा इन सबका शब्द सुन पड़े तो वर और कन्या के लिये मंगल कारक होता है। यदि कौआ, गदहा, कुत्ता और सियार जानवरों का शब्द सुन पड़े तो अमंगल होता है ॥ ९ ॥

कन्यावरण का मुहूर्त—

विश्वस्वातीवैष्णवपूर्वात्रयमैत्रै-
र्वस्वाग्नेयैर्वा करपीडोचितऋक्षैः।
वस्त्रालंकारादिसमेतैः फलपुष्पैः
सन्तोष्यादौ स्यादनु कन्यावरणं हि ॥ १० ॥

अन्वयः—विश्वस्वातीवैष्णवपूर्वात्रयमैत्रैः, वस्वाग्नेयैः एभिः नक्षत्रैः करपीडोचितऋक्षैर्वा आदौ वस्त्रालंकारादिसमेतैः फलपुष्पैः संतोष्य अनु (पश्चात्) कन्यावरणं स्यात् ॥ १० ॥

भा०—उत्तराषाढ़ा, स्वाती, श्रवण, तीनों पूर्वा, अनुराधा, धनिष्ठा, कृत्तिका इन नक्षत्रों में अथवा विवाहोक्त नक्षत्रों में वस्त्र आभूषण आदि से युक्त फल पुष्प लेकर पहले कन्या को सन्तुष्ट कर फिर उस कन्या का वरण करे ॥ १० ॥

वर को फलदान का मुहूर्त—

धरणिदेवोऽथवा कन्यकासोदरः
शुभदिने गीतवाद्यादिभिः संयुतः ।
वरवृतिं वस्त्रयज्ञोपवीतादिना
ध्रुवयुतैर्वह्निपूर्वात्रयैराचरेत् ॥ ११ ॥

अन्वयः—ध्रुवयुतैः वह्निपूर्वात्रयैः नक्षत्रैः शुभदिने धरणिदेवः अथवा कन्यका सोदरः गीतवाद्यादिभिः संयुतः सन् वस्त्रयज्ञोपवीतादिना वरवृतिं आचरेत् ॥ ११ ॥

भा०—ध्रुव संज्ञक, कृत्तिका, तीनों पूर्वा इन नक्षत्रों में शुभ दिन में शुभ समय में गाजे-बाजे के साथ ब्राह्मण अथवा कन्या के सोदर भाई वस्त्र जनेऊ द्रव्यादि से वर का वरण करे ॥ ११ ॥

विवाह काल और ग्रह शुद्धि—

गुरुशुद्धिवशेन कन्यकानां
समवर्षेषु षडब्दकोपरिष्टात् ।
रविशुद्धिवशाच्छुभो वराणा-
मुभयोश्चन्द्रविशुद्धितो विवाहः ॥ १२ ॥

अन्वयः—कन्यकानां षडब्दकोपरिष्टात् समवर्षेषु गुरुशुद्धिवशेन तथा वराणां रविशुद्धिवशात्, उभयोः कन्यावरयोः चन्द्रविशुद्धितः विवाहः शुभः ॥ १२ ॥

भा०—छ वर्ष के ऊपर सम वर्ष में गुरु शुद्धि देखकर कन्या का तथा रवि शुद्धि से वर का और चन्द्र शुद्धि से वर और कन्या दोनों का विवाह शुभ होता है ॥ १२ ॥

विवाह के मास—

मिथुनकुम्भमृगालिवृषाजगे मिथुनगेऽपि रवौ त्रिलवे शुचेः ।
अलिमृगाजगते करपीडनं भवति कार्तिकपौषमधुष्वपि ॥ १३ ॥

अन्वयः—मिथुनकुम्भमृगालिवृषाजगे मिथुनगे अपि वा रवौ शुचेः त्रिलवे, अलिमृगाजगते वा रवौ कार्तिकपौषमधुषु अपि करपीडनं शुभं भवति ॥ १३ ॥

भा०—मिथुन, कुम्भ, मकर, वृश्चिक, वृष, मेष इन राशियों के सूर्य में विवाह शुभ है और मिथुन के सूर्य में आषाढ़ शुक्ल की १० तक

शुभ है और वृश्चिक का सूर्य होने पर कार्तिक में, मकर का सूर्य होने पर पौष में, मेष का सूर्य हो तो चैत में भी विवाह शुभ है। अर्थात् इन महीनों में उक्त राशि में सूर्य होने पर भी विवाह होना शुभ है॥१३॥

सन्तान भेद से जन्ममासादि का फल—

आद्यगर्भसुतकन्ययोर्द्वयोर्जन्ममासभतिथौ करग्रहः ।
नोचितोऽथ विबुधैः प्रशस्यते चेद् द्वितीयजनुषोः सुतप्रदः ॥१४॥

अन्वयः—जन्ममासभतिथौ आद्यगर्भसुतकन्ययोः द्वयोः करग्रहः न उचितः, द्वितीयजनुषोः सुतकन्ययोः सुतप्रदः विवाहः विबुधैः प्रशस्यते ॥ १४ ॥

भा०—जन्म मास, जन्म नक्षत्र, जन्म तिथि में प्रथम सन्तान पुत्र अथवा कन्या का विवाह शुभ नहीं होता है। द्वितीय गर्भ से उत्पन्न सन्तान सन्तति देने वाला होता है ऐसा विद्वानों का मत है ॥ १४ ॥

ज्येष्ठ की विशेषता—

ज्येष्ठद्वन्द्वं मध्यमं संप्रदिष्टं
त्रिज्येष्ठं चेन्नैव युक्तं कदापि ।
केचित् सूर्यं वह्निगं प्रोज्झ्य चाहु-
र्नैवान्योन्यं ज्येष्ठयोः स्याद्विवाहः ॥ १५ ॥

अन्वयः—ज्येष्ठद्वन्द्वं मध्यमं सम्प्रदिष्टम्। चेत् त्रिज्येष्ठं स्यात्तदा कदापि नैव युक्तं (भवेत्)। केचित् वह्निगं सूर्यं प्रोज्झ्य विवाहं आहुः (कथयन्ति)। किन्तु अन्योन्यं ज्येष्ठयोः (सुतकन्ययोः) विवाहः नैव शुभः स्यात् ॥ १५ ॥

भा०—विवाह में ज्येष्ठ मास ज्येष्ठ लड़का या ज्येष्ठ मास और ज्येष्ठा कन्या हो तो इनका विवाह मध्यम होता है। और यदि ज्येष्ठ बालक और ज्येष्ठा कन्या तथा ज्येष्ठ महीना ये तीनों हो तो अशुभ होता है। किसी किसी आचार्य का मत है कि आवश्यकता पड़ने पर कृत्तिका के सूर्य को छोड़ कर तीनों ज्येष्ठ शुभ हैं परन्तु ज्येष्ठा कन्या और ज्येष्ठ वर कभी भी शुभ नहीं है ॥ १५ ॥

विवाह में विशेष विचार—

सुतपरिणयात् षण्मासान्तः सुताकरपीडनं
न च निजकुले तद्वद्वा मण्डनादपि मुण्डनम् ।
न च सहजयोर्देये भ्रात्रोः सहोदरकन्यके
न सहजसुतोद्वाहोऽब्दार्धे शुभे न पितृक्रिया ॥१६॥

अन्वयः—सुतपरिणयात् षण्मासान्तः सुताकरपीडनं न, तद्वत् निजकुले मण्डनात् मुण्डनं अपि न (कुर्यात्)। च (पुनः) सहजयोः भ्रात्रोः सहोदरकन्यके न देये। च (पुनः) अब्दार्धे सहजसुतोद्वाहः न कार्यः। शुभे (कार्ये) पितृक्रिया न (कर्तव्या) ॥ १६ ॥

भा०—लड़का के विवाह के बाद ६ महीने के भीतर लड़की का विवाह नहीं करना चाहिये। और लड़की के विवाह के बाद ६ महीने तक अपने कुल में किसी का मुण्डन भी नहीं करना चाहिये। दो सहोदरों को दो सोदर कन्यायें नहीं देनी चाहिये। तथा ६ महीने के भीतर दो सोदर भाई और दो सोदर कन्याओं का विवाह न करे। विवाहादि शुभ कार्य में पिता या माता का ब्याह न पड़ना चाहिये॥१६॥

विपत्तिकाल में विवाह की समस्या—

वध्वा वरस्यापि कुले त्रिपूरुषे
नाशं व्रजेत् कश्चन निश्चयोत्तरम्।
मासोत्तरं तत्र विवाह इष्यते
शान्त्याथ वा सूतकनिर्गमे परैः॥ १७॥

अन्वयः—वध्वा वा वरस्य अपि त्रिपूरुषे कुले निश्चयोत्तरं यदि कश्चन नाशं व्रजेत् चेत् तत्र मासोत्तरं विवाहः इष्यते। अथवा परैः सूतकनिर्गमे शान्त्या विवाहः इष्यते॥ १७॥

भा०—विवाह के निश्चय हो जाने पर कन्या या वर के कुल में तीन पीढ़ी तक (३ पुरुष तक) कोई मर जाय तो एक महीने के बाद विवाह करना शुभ है। आवश्यकता में अशौच के बाद शान्ति करके शुभ होता है ऐसा भी एक आचार्य का मत है॥ १७॥

विशेष—

चूडा व्रतञ्चापि विवाहतो व्रताच्चूडा च नेष्टा पुरुषत्रयान्तरे।
वधूप्रवेशाच्च सुताविनिर्गमः षण्मासतो वाब्दविभेदतः शुभः॥१८॥

अन्वयः—पुरुषत्रयान्तरे विवाहतः चूडा नेष्टा च (पुनः) व्रतम् अपि नेष्टम्। व्रतात् चूडा अपि नेष्टा। वधूप्रवेशात् सुताविनिर्गमः षण्मासतः (नेष्टः) अथवा अब्दविभेदतः शुभः स्यात्॥ १८॥

भा०—तीन पुरुष के भीतर यदि किसी का विवाह हो तो ६ महीना तक उस कुल में किसी का मुण्डन और उपनयन नहीं करे। उपनयन के बाद मुण्डन और वधूप्रवेश के बाद ६ मास तक लड़की का गौना या बिदाई वगैरह न करे। और यदि ६ महीना के अन्दर दूसरा संवत्सर आ जाय तो यह कार्य करना शुभ है॥ १८॥

मूलादि नक्षत्रों में उत्पन्न वरकन्या का फल—

श्वश्रूविनाशमहिजौ सुतरां विधत्तः
कन्यासुतौ निर्ऋतिजौ श्वशुरं हतश्च।
ज्येष्ठाभजाततनया स्वधवाग्रजञ्च
शक्राग्निजा भवति देवरनाशकर्त्री॥ १९॥

अन्वयः—अहिजौ (आश्लेषानक्षत्रजौ) कन्यासुतौ श्वशुरं हतः । ज्येष्ठाभजाततनया स्वधवाग्रजं हन्ति । शक्राग्निजा (कन्या) देवरनाशकर्त्री भवति १९

भा०—आश्लेषा नक्षत्र में उत्पन्न हुआ बालक अथवा कन्या सास का और मूलमें उत्पन्न बालक वा कन्या श्वशुर का, निश्चय नाश करते हैं। ज्येष्ठामें उत्पन्न कन्या अपने पति के ज्येष्ठ भाई (भसुर) का नाश करती है। और विशाखा में उत्पन्न कन्या देवर का नाश करती है।१६।

मूलादि जन्य दोष परिहार—

द्वीशाद्यपादत्रयजा कन्या देवरसौख्यदा ।
मूलान्त्यपादसार्पाद्यपादजाते तयोः शुभे ॥ २० ॥

अन्वयः—द्वीशाद्यपादत्रयजा कन्या देवरसौख्यदा (स्यात्) मूलान्त्यपादसार्पाद्यपादजाते तयोः (श्वश्रूश्वशुरयोः) शुभे (स्याताम्) ॥ २० ॥

भा०—विशाखा के आदि से तीन चरण तक उत्पन्न कन्या देवर को सुख देने वाली होती है। मूल के चौथे चरण में उत्पन्न कन्या श्वशुर को और श्लेषा के प्रथम चरण में उत्पन्न कन्या सास को सुख देती है ॥ २० ॥

वर्ण आदि के ३६ गुण—

वर्णो वश्यं तथा तारा योनिश्च ग्रहमैत्रकम् ।
गणमैत्रं भकूटश्च नाडी चैते गुणाधिकाः ॥ २१ ॥

अन्वयः—वर्णः, वश्यं, तथा तारा, योनिः, च (पुनः) ग्रहमैत्रकम्, गणमैत्रं, भकूटं, नाडी च–एते (सर्वे) गुणाधिकाः भवन्ति ॥ २१ ॥

भा०—वर्ण, वश्य, तारा, योनि, ग्रहमैत्री, गणमैत्री, भकूट, नाड़ी– में उत्तरोत्तर गुण में एक से एक गुण अधिक होते हैं ॥ २१ ॥

वर्णादि अष्टकूट चक्र ३६ गुण—

नाम	वर्ण	वश्य	तारा	योनि	ग्र.मै.	गण	भकूट	नाड़ी
गुण संख्या	१	२	३	४	५	६	७	८

वर्णज्ञान—

द्विजा झषालिकर्कटास्ततो नृपा विशोऽङ्घ्रिजाः ।
वरस्य वर्णतोऽधिका वधूर्न शस्यते बुधैः ॥ २२ ॥

अन्वयः—झषालिकर्कटा द्विजाः (सन्ति) । ततः नृपाः, ततः विशः (वैश्याः), ततः अंघ्रिजाः (शूद्राः) ज्ञेयाः । बुधैः वर्णतः वरस्य अधिका वधूर्न शस्यते ॥२२॥

भा०—मीन, वृश्चिक, कर्क ये ब्राह्मण वर्ण, मेष सिंह धनु ये क्षत्रिय, वृष मकर कन्या ये वैश्य, कुम्भ मिथुन तुला ये शूद्र वर्ण हैं। वर के वर्ण से कन्या का वर्ण अधिक हो तो शुभप्रद नहीं है ॥ २२ ॥

अथ वर्ण ज्ञानचक्र।

वर्ण	ब्राह्मण	क्षत्रिय	वैश्य	शूद्र
राशि	१२	१	२	३
राशि	८	९	१०	११
राशि	४	५	६	७

वश्य विचार—

हित्वा मृगेन्द्रं नरराशिवश्याः सर्वे तथैषां जलजाश्च भक्ष्याः।
सर्वेऽपि सिंहस्य वशे विनालिं ज्ञेयं नराणां व्यवहारतोऽन्यत्॥२३॥

अन्वयः—मृगेन्द्रं हित्वा सर्वे नरराशिवश्याः, तथा एषां जलजा राशयः भक्ष्याः भवन्ति। अलिं विना सर्वे सिंहस्य वशे (भवन्ति)। अतः अन्यत् नराणां व्यवहारतः ज्ञेयम्॥ २३॥

भा०—सिंह को छोड़ कर सब नरराशि के वश होते हैं और जल से उत्पन्न होने वाली राशि वाले सब नरराशि के भक्ष्य हैं, वृश्चिक को छोड़ कर सब सिंह के वश हैं। और बातें मनुष्यों के व्यवहार से जानना चाहिये॥ २३॥

अथ वश्य ज्ञानचक्र—

चतुष्पद	द्विपद	जलचर	कीट		संज्ञा
मे. वृ. सिं. धनुउत्तरार्द्धं मकरपूर्वार्द्धं	धनुपूर्वार्द्धं मिथुन कन्या तुला	कुम्भ मकरउत्तरार्ध मीन	कर्क	वृश्चिक	राशि

ताराविचार—

कन्यर्क्षाद्वरभं यावत् कन्याभं वरभादपि।
गणयेन्नवहृच्छेषे त्रीष्वद्रिभमसत् स्मृतम्॥ २४॥

अन्वयः—कन्यर्क्षात् वरभं यावत् गणयेत्। वरभात् अपि कन्याभं यावत् गणयेत्। नवहृच्छेषे त्रीष्वद्रिभम् असत् स्मृतम्॥ २४॥

भा०—कन्या के नक्षत्र से वर के नक्षत्र तक और वर के नक्षत्र से कन्या के नक्षत्र तक गिने उसमें ९ का भाग देने से यदि ३, ५, ७ शेष बचे तो तारा अशुभ है॥ २४॥

योनिविचार—

अश्विन्यम्बुपयोर्हयो निगदितः स्वात्यर्कयोः कासरः
सिंहो वस्वजपाद्भयोः समुदितो याम्यान्त्ययोः कुञ्जरः।
मेषो देवपुरोहितानलभयोः कर्णाम्बुनोर्वानरः
स्याद्वैश्वाभिजितोस्तथैव नकुलश्चान्द्राब्जयोन्योरहिः ॥२५॥
ज्येष्ठामैत्रभयोः कुरङ्ग उदितो मूलार्द्रयोः श्वा तथा
मार्जारोऽदितिसार्पयोरथ मघायोन्योस्तथैवोन्दुरुः।
व्याघ्रो द्वीशभचित्रयोरपि च गौरर्यम्णबुध्न्यर्क्षयो-
र्योनिः पादगयोः परस्परमहावैरं भयोन्योस्त्यजेत् ॥ २६ ॥

अन्वयः—अश्विन्यम्बुपयोः योनिः हयः निगदितः (प्रोक्तः), एवमेव स्वात्यर्कयोः कासरः (महिषः), वस्वजपाद्भयोः सिंहः, याम्यान्त्ययोः कुञ्जरः (हस्ती), देवपुरोहितानलभयोः मेषः, कर्णाम्बुनोः वानरः, तथैव वैश्वाभिजितोः नकुलः, चान्द्राब्जयोन्योः अहिः, ज्येष्ठामैत्रभयोः कुरंगः, तथा मूलार्द्रयोः श्वा, अदितिसर्पयोः मार्जारः, अथ मघायोन्योः उन्दुरुः, द्वीशभचित्रयोः व्याघ्रः, अपि च अर्यम्णबुध्न्यर्क्षयोः गौः योनिः (उक्ता)। पादगयोः भयोन्योः परस्परं महावैरं स्यात् तत्त्यजेत् ॥२५-२६॥

भा०—अश्विनी और शतभिषा के घोड़ा, हस्त स्वामी के महिष, धनिष्ठा पूर्वभाद्रपद के सिंह, भरणी और रेवती के हाथी, पुष्य कृत्तिका के भेड़ा, श्रवण पूर्वाषाढ़ के वानर, उत्तराषाढ़ अभिजित के नकुल, मृगशिरा रोहिणी के सर्प, ज्येष्ठा अनुराधा के हरिण, मूल आर्द्रा के श्वान, पुनर्वसु आश्लेषा के मार्जार (बिल्ली), मघा पूर्वा फाल्गुनी के मूषक, विशाखा चित्रा के व्याघ्र, उत्तरभाद्र उत्तरफाल्गुनी की गाय, योनि है। इनमें एक एक चरण में जो दो दो योनि कही गई है उनमें परस्पर शत्रुता है। जैसे घोड़ा भैंस में इसलिये ये त्याज्य हैं ॥२५-२६॥

अथ योनिचक्र गुण ४।

बैर		बैर		बैर		बैर		बैर
हय	महिष	सिंह	हाथी	मेढ़ा	वानर	नेवला	सर्प	योनि
अश्वि.	स्वाती	ध.	भ.	पुष्य	श्रवण	उ.षा.	मृ०	नक्षत्र
शत.	हस्त	पू.भा.	रेवती	कृत्ति.	पूर्वाषा	अभि.	रोहि.	

वैर		वैर		वैर		वैर
मृग०	श्वान	मार्जा	मू०	व्या.	गो०	योनि
ज्ये०	मू०	पुन०	म०	वि०	उषा०	नक्षत्र
अ०	आ०	श्ले०	पू०	चि०	उफा०	×

ग्रहमैत्रीचक्र।

मित्राणि द्युमणेः कुजेज्यशशिनः शुक्रार्कजौ वैरिणौ
सौम्यश्चास्य समो विधोर्बुधरवी मित्रे न चास्य द्विषत् ।
शेषाश्चास्य समाः कुजस्य सुहृदश्चन्द्रेज्यसूर्या बुधः
शत्रुः शुक्रशनी समौ च शशभृत्सूनोः सिताहस्करौ ॥२७॥

मित्रे चास्य रिपुः शशी गुरुशनिक्ष्माजाः समा गीष्पते-
र्मित्राण्यर्ककुजेन्दवो बुधसितौ शत्रू समः सूर्यजः ।
मित्रे सौम्यशनी कवेः शशिरवी शत्रू कुजेज्यौ समौ
मित्रे शुक्रबुधौ शनेः शशिरविक्ष्माजा द्विषोऽन्यः समः॥२८॥

अन्वयः—द्युमणेः सूर्यस्य कुजेज्यशशिनः मित्राणि, शुक्रार्कजौ वैरिणौ, सौम्यः अस्य समः । विधोः बुधरवी मित्रे, अस्य द्विषत् शत्रुः न विद्यते, शेषाः सर्वे ग्रहाः अस्य समाः सन्तिः । कुजस्य चन्द्रेज्यसूर्याः सुहृदः, बुधः शत्रुः, शुक्रशनी समौ । शशभृत्सूनोः (बुधस्य) सिताहस्करौ मित्रे, अस्य शशी रिपुः, गुरुशनिक्ष्माजाः समाः प्रोक्ताः । गीष्पतेः गुरोः अर्ककुजेन्दवः मित्राणि, बुधसितौ शत्रू, सूर्यजः समः । कवेः शुक्रस्य सौम्यशनी मित्रे, शशिरवी शत्रू कुजेज्यौ समौ, शनेः शुक्रबुधौ मित्रे शशिरविक्ष्माजाः द्विषः शत्रवः सन्ति, अन्यो बृहस्पतिः समः ।२७,२८।

भा०—सूर्य के मंगल, चन्द्रमा और गुरु मित्र, बुध सम और शुक्र, शनि शत्रु हैं। चन्द्रके रवि और बुध मित्र, मंगल गुरु शुक्र और शनि सम, शत्रु कोई नहीं। मंगल के रवि चंद्र गुरु मित्र, शुक्र शनि सम, बुध शत्रु हैं। बुध के सूर्य शुक्र मित्र, मंगल गुरु शनि सम, चन्द्रमा शत्रु। गुरु के रवि, सोम, मंगल मित्र, शनि सम, बुध शुक्र शत्रु। शुक्र के बुध शनि मित्र, मङ्गल गुरु सम, रवि सोम शत्रु। शनि के शुक्र बुध मित्र, गुरु सम, रवि सोम मंगल शत्रु ये नैसर्गिक मित्र, सम और शत्रु होते हैं॥ २७–२८॥

ग्रहमैत्रीचक्र ।

सू०	चं०	मं०	बु०	बृ०	शु०	श०	ग्रहः
म० बृ० चं०	सू० बु०	बृ० सू० चं०	शु० सू०	सू० मं० चं०	बु० श०	शु० बु०	मित्राणि
बु०	मं० बृ० शु० श०	शु० श०	श० बृ० मं०	श०	बृ० मं०	बृ०	समाः
शु० श०	००	बु०	चं०	बु० शु०	सू० चं०	सू० चं० मं०	शत्रुः

गणविचार—

रक्षोनरामरगणाः क्रमतो मघाहि-
वस्विन्द्रमूलवरुणानलतक्षराधाः ।
पूर्वोत्तरात्रयविधातृयमेशभानि
मैत्रादितीन्दुहरिपौष्णमरुल्लघूनि ॥ २९ ॥
निजनिजगणमध्ये प्रीतिरत्युत्तमा स्या-
दमरमनुजयोः सा मध्यमा सम्प्रदिष्टा ।
असुरमनुजयोश्चेत् मृत्युरेव प्रदिष्टो
दनुजविबुधयोः स्याद्वैरमेकान्ततोऽत्र ॥ ३० ॥

अन्वय—मघाहिवस्विन्द्रमूलवरुणानलतक्षराधाः, पूर्वोत्तरात्रयविधातृयमेशभानि, मैत्रादितीन्दुहरिपौष्णमरुल्लघूनि क्रमतः रक्षोनरामरगणाः भवन्ति। निजनिजगणमध्ये अत्युत्तमा प्रीतिः (भवति), अमरमनुजयोः सा मध्यमा सम्प्रदिष्टा । असुरमनुजयोः चेत् स्यात्तदा मृत्युः एव प्रदिष्टः । दनुजविबुधयोः एकान्ततः वैरं भवेत् ॥ २९–३० ॥

भा०—मघा, श्लेषा, धनिष्ठा, मूल, शतभिषा, कृत्तिका, चित्रा, विशाखा ये नक्षत्र राक्षस गण हैं। तीनों पूर्वा, तीनों उत्तरा, रोहिणी, भरणी, आर्द्रा, ये मनुष्य गण हैं। अनुराधा, पुनर्वसु, मृगशिरा, श्रवण, रेवती, स्वाती और लघु संज्ञक (अश्विनी हस्त पुष्य) ये देव गण हैं। अपने अपने गण में (स्त्री पुरुष दोनों के एक गण हो तो) अति उत्तम प्रीति और देवगण में मध्यम, राक्षस और मनुष्य गण हो तो मृत्यु, राक्षस और देवगण हो तो परस्पर वैर होता है ॥ २९–३० ॥

गणचक्र—

म.	श्ले.	ध.	ज्ये.	मू.	श.	कृ.	चि.	वि.	राक्षस
पू.फा.	पू.षा.	पू.भा.	उ.फा.	उ.षा.	उ.भा.	रो.	भ.	आ.	मनुष्य
अनु.	पुनर्वसु	मृ.	श्र.	रे.	स्वा.	अ.	ह.	पु.	देवता

राशिकूट—

मृत्युः षडष्टके ज्ञेयोऽपत्यहानिर्नवात्मजे ।
द्विर्द्वादशे निर्धनत्वं द्वयोरन्यत्र सौख्यकृत् ॥ ३१ ॥

अन्वयः—षडष्टके मृत्युः, नवात्मजे अपत्यहानिः स्यात् । द्विर्द्वादशे द्वयोः (कन्यावरयोः) निर्धनत्वं स्यात् । अन्यत्र सौख्यकृत् भवेत् ॥ ३१ ॥

भा०—वर और कन्या के राशि परस्पर गिनने से ६।८ हो तो मृत्यु, ९।५ हो तो सन्तान की हानि, २।१२ हो तो निर्धनता इससे भिन्न पड़े तो सुख होता है ॥ ३१ ॥

दुष्ट भकूट का परिहार—

प्रोक्ते दुष्टभकूटके परिणयस्त्वेकाधिपत्ये शुभो-
ऽथो राशीश्वरसौहृदेऽपि गदितो नाडयृक्षशुद्धिर्यदि ।
अन्यर्क्षांशपयोर्बलित्वसखिते नाडयृक्षशुद्धौ तथा
ताराशुद्धिवशेन राशिवशताभावे निरुक्तो बुधैः ॥ ३२ ॥

अन्वयः—प्रोक्ते दुष्टभकूटके एकाधिपत्ये (सति) परिणयः शुभः स्यात् । अथो राशीश्वरसौहृदेऽपि यदि नाडयृक्षशुद्धिः स्यात्तदा दुष्टभकूटके परिणयः शुभः गदितः । अन्यर्क्षे अंशपयोः बलित्वसखिते नाडयृक्षशुद्धौ तथा ताराशुद्धिवशेन राशिवशताभावेऽपि बुधैः परिणयः शुभः निरुक्तः ॥ ३२ ॥

भा०—पहले कहे हुए दुष्ट भकूट (अर्थात् ६।८) इत्यादि में यदि वर और कन्या का राशिपति एक हो अथवा दोनों के राशीश में मैत्री हो तो विवाह शुभ है। तथा यदि नाड़ी शुद्ध हो और अंशपति (नवांश पति) में मित्रता हो एवं बलवान् हो तो विवाह शुभ है। नाड़ी नक्षत्र शुद्ध हो तारा शुद्धि से यदि राशिवश नहीं भी हो तो पण्डितों ने विवाह शुभ कहा है ॥ ३२ ॥

दुष्ट गणकूट, भकूट, और ग्रहकूट का परिहार—

मैत्र्यां राशिस्वामिनोरंशनाथद्वन्द्वस्यापि स्याद् गणानां न दोषः।
खेटारित्वं नाशयेत् सद्भकूटं खेटप्रीतिश्चापि दुष्टं भकूटम् ॥३३॥

अन्वयः—राशिस्वामिनोः मैत्र्यां, अपि वा अंशनाथद्वन्द्वस्यापि मैत्र्यां गणानां दोषः न स्यात् । सद्भकूटं खेटारित्वं नाशयेत् । च पुनः, खेटप्रीतिः अपि दुष्टं भकूटं नाशयेत् ॥ ३३ ॥

भा०—वर और कन्या के राशीश में तथा अंशाधिपतियों में मित्रता होने पर गण दोष नहीं होता, शुभ भकूट होने पर ग्रहों की शत्रुता को नाश करता है और ग्रहों में परस्पर मैत्री होने पर भकूट के दोष को नाश करता है ॥ ३३ ॥

नाड़ीविचार और फल—

ज्येष्ठारौद्रार्यमाम्भःपतिभयुगयुगं दास्रभं चैकनाडी
पुष्येन्दुत्वाष्ट्रमित्रान्तकवसुजलभं योनिबुध्न्ये च मध्या।
वाय्वग्निव्यालविश्वोडुयुगयुगमथो पौष्णभं चापरा स्याद्
दम्पत्योरेकनाड्यां परिणयनमसन्मध्यनाड्यां हि मृत्युः ॥३४॥

अन्वयः—ज्येष्ठारौद्रार्यमाम्भःपतिभयुगयुगं दास्रभं च एकनाडी (स्यात्) पुष्येन्दुत्वाष्ट्रमित्रान्तकवसुजलभं योनिबुध्न्ये च मध्या (नाडी भवति)। वाय्वग्निव्यालविश्वोडुयुगयुगमथो पौष्णभं च अपरा नाडी स्यात्। एकनाड्यां दम्पत्योः परिणयनं असत् (स्यात्)। मध्यनाड्यां हि निश्चयेन मृत्युः स्यात् ॥ ३४ ॥

भा०—ज्येष्ठा, मूल, आर्द्रा, पुनर्वसु, उत्तराफाल्गुनी, हस्त, शतभिषा, पूर्वा, भाद्रपदा और अश्विनी इन ९ नक्षत्रों की आदि नाड़ी है। पुष्य, मृगशिरा, चित्रा, अनुराधा, भरणी, धनिष्ठा, पूर्वाषाढ़ा, पूर्वाफाल्गुनी और उत्तराभाद्रपदा इन ९ नक्षत्रों की मध्य नाड़ी है। स्वाती, कृत्तिका, श्लेषा, उत्तराषाढ़ा, विशाखा, रोहिणी, मघा, श्रवण और रेवती इन ९ नक्षत्रों की अन्त्य नाड़ी है। वर कन्या के नक्षत्र एक नाड़ी में हो तो विवाह अशुभ होता है। उसमें भी मध्य नाड़ी में दोनों का नक्षत्र हो तो मरण समझना ॥ ३४ ॥

नाड़ीचक्र गुण ८।

ज्ये.	आ.	उ.फा.	श.	मू.	ह.	पुन.	पू.भा.	अश्वि.	आ.ना.
पु.	मृ.	चि.	अनु.	भ.	ध.	पू.षा.	पू.फा.	उ.भा.	म.ना.
स्वा.	कृ.	श्ले.	उ.षा.	वि.	रो.	म.	श्र.	रे.	अं.ना.

मेलापक उदाहरण—

	वर	कन्या	
	पुनर्वसु चतुर्थ चरण में जन्म	पूर्व फाल्गुनी प्रथम चरण में जन्म	
गुण	राशि कर्क	सिंह	प्राप्त गुण संख्या
१	वर्ण विप्र	क्षत्रिय	१
२	वश्य जलचर कीट	चतुष्पद	०
३	तारा ५	६	१॥०
४	योनि मार्जार	मूषक	०
५	राशीश चन्द्र	सूर्य	५
६	गण देव	मनुष्य	६
७	भकूट २	१२	०
८	नाड़ी आदि	मध्य	८

उदाहरण—यहाँ कन्या के वर्ण से वर का वर्ण श्रेष्ठ है, इसलिये वर्णगुण १, वर के वश्य कन्या नहीं है इसलिये वश्य गुण=० । तारा एक से शुभ, एक से अशुभ है इसलिये तारा गुण १॥० । योनि में शत्रुता होने से योनि गुण=० । गण में मैत्री होने से गुण=० ग्रह मैत्री होने से गुण=६ । भकूट द्विर्द्वादश होने से गुण=० । नाड़ी भिन्न होने के कारण-नाड़ी गुण=८ सब गुणों के योग २१॥ साढ़े एक्कीस हुआ । जो सर्व गुण योग (३६) के आधे १८ से अधिक है इसलिये इन दोनों वर कन्या में वैवाहिक सम्बन्ध शुभप्रद है ।

अशुभोऽष्टादशाल्पश्चेत् शुभस्त्वष्टादशाधिकः ।
गुणयोगः शुभोऽतीव सप्तविंशाधिकः स्मृतः ॥

अर्थ—वर्णादि ८ कूटों के गुणों का योग १८ से कम हो तो अशुभ, १८ से अधिक २७ तक शुभ तथा २७ से अधिक हो तो अत्यन्त शुभप्रद समझना चाहिये ॥

नक्षत्र वश से पूर्व मध्य पर भाग का सम्मेलन—

पौष्णेशशाक्राद्रससूर्यनन्दाः
पूर्वाधमध्यापरभागयुग्मम् ।
भर्ता प्रियः प्राग्युजिभे स्त्रियाः स्या-
न्मध्ये द्वयोः प्रेम परे प्रिया स्त्री ॥ ३५ ॥

अन्वयः—पौष्णेशशाक्रात् रससूर्यनन्दाः (क्रमात्) पूर्वार्धमध्यापरभागयुग्मं ज्ञेयम् प्राक् युजिभे स्त्रियाः भर्ता प्रियः स्यात् । मध्ये द्वयोः प्रेम (भवति) । परे स्त्री प्रिया (भवति) ॥ ३४ ॥

भा०—पौष्ण-रेवती, ईश-आर्द्रा, शाक्र-ज्येष्ठा से यथा क्रम जैसे रेवती से ६ नक्षत्र पूर्वभाग, आर्द्रा से १२ नक्षत्र मध्यभाग और ज्येष्ठा से ६ नक्षत्र अपर भाग वाले हैं । ६।१२।९ क्रम से नक्षत्रों का मेलन होता हो तो पूर्व, मध्य और अपर भाग हैं । यदि पूर्व भाग के नक्षत्रों में वर-वधू के नक्षत्रों का मेलन होता हो तो स्त्री को स्वामी प्रिय होता है, मध्य भाग में परस्पर नाम वाले नक्षत्रों में मेलन होता हो तो परस्पर प्रीति होती है और अपर भाग में मेलन होता हो तो पुरुष को स्त्री प्यारी होती है ॥ ३५ ॥

अकचटतपयशवर्गाः खगेशमार्जारसिंहशुनाम् ।
सर्पाखुमृगावीनां निजपञ्चमवैरिणामष्टौ ॥ ३६ ॥

अन्वयः—निजपञ्चमवैरिणां खगेशमार्जारसिंहशुनाम् अष्टौ (क्रमशः) अकचटतपयशवर्गाः (भवन्ति) ॥ ३६ ॥

भा०—अ, क, च, ट, त, प, य, श, इन ८ वर्गों के क्रम से गरुड़, मार्जार, सिंह, कुत्ता, सर्प, मूषक, हिरण, भेंड़, अधिपति हैं, इनमें अपने से पाँचवां परस्पर शत्रु हैं ॥ ३६ ॥

अवर्गादिचक्र।

गरुड़	अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ॠ, ऌ, ॡ, ए, ऐ, ओ, औ,	अवर्ग	सर्प
विलाव	क, ख, ग, घ, ङ,	कवर्ग	मूषक
सिंह	च, छ, ज, झ, ञ	चवर्ग	हिरण
कुत्ता	ट, ठ, ड, ढ, ण,	टवर्ग	भेंड़ा
सर्प	त, थ, द, ध, न,	तवर्ग	गरुड़
मूषक	प, फ, ब, भ, म,	पवर्ग	विलार
हिरण	य, र, ल, व,	यवर्ग	सिंह
भेंड़	श, ष, स, ह,	शवर्ग	कुत्ता
ईश	वर्ण (अक्षर)	वर्ग	वैरी

नक्षत्र तथा राशि की एकता में विशेष—

राश्यैक्ये चेद्भिन्नमृक्षं द्वयोः स्यात्
नक्षत्रैक्ये राशियुग्मं तथैव।
नाडीदोषो नो गणानाञ्च दोषो
नक्षत्रैक्ये पादभेदे शुभं स्यात्॥ ३७॥

अन्वयः—द्वयोः वरकन्ययोः राश्यैक्ये चेत् भिन्नं ऋक्षं तथा नक्षत्रैक्ये चेत् राशियुग्मं स्यात् तदा नाडीदोषो गणानां दोषश्च न (भवेत्)। नक्षत्रैक्ये पादभेदे शुभम् स्यात्॥ ३७॥

भा०—वर कन्या दोनों की एक राशि हो और नक्षत्र भिन्न हो, तथा एक नक्षत्र राशि भिन्न हो तो नाड़ी और गण दोष नहीं होता है, एक नक्षत्र हो और चरण अलग २ हो तो शुभ है॥ ३७॥

राशीश तथा नवांश—

कुंजशुक्रसौम्यशशिसूर्य्यचन्द्रजाः
कविभौमजीवशनिसौरयो गुरुः।

इह राशिपाः क्रियमृगास्यतौलिके-
न्दुभतो नवांशविधिरुच्यते बुधैः ॥३८॥

अन्वयः—इह कुजशुक्रसौम्यशशिसूर्यचन्द्रजाः कविभौमजीवशनिसौरयो गुरुः (क्रमशः) राशिपाः (राशिस्वामिनः) भवन्ति । क्रियमृगास्यतौलिकेन्दुभतः नवांशविधिः बुधैः उच्यते (कथ्यते) ॥ ३८ ॥

भा०—मंगल, शुक्र, बुध, चन्द्रमा, सूर्य, बुध, शुक्र, मंगल, गुरु, शनि, शनि और गुरु ये क्रम से मेषादि राशियों के स्वामी हैं। मेषादि राशियों में नवमांश की मेष, मकर, तुला और कर्क से गणना होती है ॥ ३८ ॥

राशिचक्र ।

राशि	मे·	वृ·	मि·	क·	सिं·	क·
स्वामी	मं·	शु·	मं·	चं·	सू·	बु·
राशि	तु·	वृ·	ध·	म·	कुं·	मी·
स्वामी	शु·	मं·	बृ·	शु·	श·	बृ·

नवांशचक्र ।

नवांश	मे·	वृ·	मि·	क·	सिं·	क·	तु·	वृ·	ध·	म·	कुं·	मी·
३।२०	मे·	म·	तु·	क·	मे·	म·	तु·	क·	मे·	म·	तु·	मी·
६।४०	वृ·	कुं·	वृ·	सिं·	वृ·	कुं·	वृ·	सिं·	वृ·	कुं·	वृ·	सिं·
१०	मि·	मी·	ध·	क·	मि·	मी·	ध·	क·	मि·	मी·	ध·	क·
१३।२०	क·	मे·	म·	तु·	क·	मे·	म·	तु·	क·	मे·	म·	तु·
१६।४०	सिं·	वृ·	कुं·	वृ·	सिं·	वृ·	कुं·	वृ·	सिं·	वृ·	कुं·	वृ·
२०	क·	मि·	मी·	ध·	क·	मि·	मी·	ध·	क·	मि·	मी·	ध·
२३।२०	तु·	क·	मे·	म·	तु·	क·	मे·	म·	तु·	क·	मे·	म·
२६।४०	वृ·	सिं·	वृ·	कुं·	वृ·	सिं·	वृ·	कुं·	वृ·	सिं·	वृ·	कुं·
३०	ध·	क·	मि·	मी·	ध·	क·	मि·	मी·	ध·	क·	मि·	मी·

होरा—

समगृहमध्ये शशिरविहोरा ।
विषमभमध्ये रविशशिनोः सा ॥ ३९ ॥

अन्वयः—समगृहमध्ये (क्रमेण) शशिरविहोरा (स्यात्) विषमभमध्ये सा (होरा) रविशशिनोः ज्ञेया ॥ २९ ॥

भा०—सम राशि में पहले १५ अंश चन्द्रमा की होरा, बाद १६ से ३० तक रवि की होरा होती है और विषम राशि में पहले १५ अंश तक रवि की होरा, १६ से ३० तक चन्द्रमा की होरा होती है ॥ ३९ ॥

होराचक्र ।

अं.	मे·	वृ·	मि·	क·	सिं·	क·	तु·	वृ·	ध·	म·	कुं·	मी·
१५	सू·	चं·	सू·	चं·	सू·	चं·	सू·	चं·	सू·	चं·	सू·	चं·
३०	चं·	सू·	चं·	सू·	चं·	सू·	चं·	सू·	चं·	सू·	चं·	सू·

त्रिशांश और द्रेष्काण विधि—

शुक्रज्ञजीवशनिभूतनयस्य बाण-
शैलाष्टपञ्चविशिखाः समराशिमध्ये ।
त्रिंशांशको विषमभे विपरीतमस्माद्-
द्रेष्काणपाः प्रथमपञ्चनवाधिपानाम् ॥ ४० ॥

अन्वयः—समराशिमध्ये बाणशैलाष्टपञ्चविशिखाः अंशाः क्रमेण शुक्रज्ञजीवशनिभूतनयस्य त्रिंशांशकाः भवन्ति । विषमभे अस्मात् विपरीतं (ज्ञेयम्) । तथा प्रथमपंचनवाधिपानां द्रेष्काणपका ज्ञेयाः ॥ ४० ॥

भा०—सम राशि में शुक्र, बुध, गुरु, शनि और मङ्गल के क्रम से ५।७।८।५।५ अंश त्रिंशांश होते हैं । विषम राशि में ५।५।८।७।५ अंश क्रमसे मङ्गल, शनि, गुरु, बुध और शुक्र के त्रिंशांश होते हैं । किसी राशि का पहला द्रेष्काण अपना, दूसरा उससे पाँचवीं राशिका, तीसरा उससे नवीं राशिका द्रेष्काण होता है ॥ ४० ॥

द्रेष्काणचक्र ।

मे·	वृ·	मि·	क·	सिं·	क·	तु·	वृ·	ध·	म·	कुं·	मी·	अं.
मं·	शु·	बु·	चं·	सू·	बु·	शु·	मं·	बृ·	श·	श·	बृ·	१०
सू·	बु·	शु·	मं·	बृ·	श·	श·	बृ·	मं·	शु·	बु·	चं·	२०
बृ·	श·	श·	बृ·	मं·	शु·	बु·	चं·	सू·	बु·	शु·	मं·	३०

द्वादशांश और षड्वर्गफल—

स्याद् द्वादशांश इह राशित एव गेहं
होराथ दृक्नवमांशकसूर्यभागाः ।

त्रिंशांशकाश्च षडिमे कथितास्तु वर्गाः
सौम्यैः शुभं भवति चाशुभमेव पापैः ॥ ४१ ॥

अन्वयः—इह राशित एव द्वादशांशः स्यात् । अथ गेहं होरा दृक्कनवमांशक-सूर्यभागाः च (पुनः) त्रिंशांशकाः इमे षड्वर्गाः कथिताः (तत्र) सौम्यैः षड्वर्गैः शुभं, पापैः षड्वर्गैः अशुभं भवति ॥ ४१ ॥

भा०—द्वादशांश अपने राशि से आरम्भ कर क्रमसे १२ राशियों का होता है। इस प्रकार गृह, होरा, द्रेष्काण, नवांश, द्वादशांश, त्रिंशांश ये षड्वर्ग कहलाता है। यह शुभ ग्रह के होनेसे शुभ और पाप ग्रह के होने से अशुभ होता है ॥ ४१ ॥

अथ द्वादशांशचक्रम् ।

अं.	मे·	वृ·	मि·	क·	सिं·	क·	तु·	ध·	म·	कुं·	मी·
२।३०	मे·	वृ·	मि·	क·	सिं·	क·	तु·	ध·	म·	कुं·	मी·
५	वृ·	मि·	क·	सिं·	क·	तु·	वृ·	म·	कुं·	मी·	मे·
७।३०	मि·	क·	सिं·	क·	तु·	वृ·	ध·	कुं·	मी·	मे·	वृ·
१०	क·	सिं·	क·	तु·	वृ·	ध·	म·	मी·	मे·	वृ·	मि·
१२।३०	सिं·	क·	तु·	वृ·	ध·	म·	कुं·	मे·	वृ·	मि·	क·
१५	क·	तु·	वृ·	ध·	म·	कुं·	मी·	वृ·	मि·	क·	सिं·
१७।३०	तु·	वृ·	ध·	म·	कुं·	मी·	मे·	मि·	क·	सिं·	क·
२०	वृ·	ध·	म·	कुं·	मी·	मे·	वृ·	क·	सिं·	क·	तु·
२२।३०	ध·	म·	कुं·	मी·	मे·	वृ·	मि·	सिं·	क·	तु·	वृ·
२५	म·	कुं·	मी·	मे·	वृ·	मि·	क·	क·	तु·	वृ·	ध·
२७।३०	कुं·	मी·	मे·	वृ·	मि·	क·	सिं·	तु·	वृ·	ध·	म·
३०	मी·	मे·	वृ·	मि·	क·	सिं·	क·	वृ·	ध·	म·	कुं·

त्रिंशांशचक्र ।

ग्रह	शु·	बु·	वृ·	श·	मं·	ईश०
समराशि	५	७	८	५	५	अंश
ग्रह	मं·	श·	बृ·	बु·	शु·	ईश०
वि०राशि	५	५	८	७	५	श.

नृदूरदोष नक्षत्र से शुभाशुभ—

सेव्याधमर्णयुवतीनगरादिभं चेत्
पूर्वं हि भृत्यधनिभर्तृपुरादिसद्भात् ।

सेवाविनाशधननाशनभर्तृनाश-
ग्रामादिसौख्यहृदिदं क्रमशः प्रदिष्टम् ॥४२॥

अन्वयः—भृत्यधनिभर्तृपुरादिसङ्घात् पूर्वं चेत् सेव्याधमर्णयुवतीनगरादिभं (स्यात्) तदा सेवाविनाशधननाशनभर्तृनाशग्रामादिसौख्यहृद् इदं क्रमशः प्रदिष्टम् (प्रोक्तम्) ॥ ४२ ॥

भा०—सेव्य, ऋण लेने वाला, स्त्री और ग्राम इनका नक्षत्र यदि सेवक, ऋण देने वाला, पति और नगर से पहला हो तो सेवा विनाश, धननाश स्वामी का नाश और नगर के सुखको हरने वाला होता है ४२

गण्डान्तदोष—

ज्येष्ठापौष्णभसार्पभान्त्यघटिकायुग्मञ्च मूलाश्विनी-
पित्र्यादौ घटिकाद्वयं निगदितं तद्भस्य गण्डान्तकम् ।
कर्कालिण्डजभान्ततोऽर्धघटिका सिंहाश्वमेषादिगाः
पूर्णान्ते घटिकात्मकं त्वशुभदं नन्दातिथेश्चादिमम् ॥ ४३ ॥

अन्वयः—ज्येष्ठापौष्णभसार्पभान्त्यघटिकायुग्मं च (पुनः) मूलाश्विनीपित्र्यादौ घटिकाद्वयं तद्भस्य नक्षत्रस्य गण्डान्तकं निगदितम् । कर्कालिण्डजभान्ततः अर्ध-घटिकाः सिंहाश्वमेषादिगाः अर्धघटिका लग्नगण्डान्तकं, अथ, पूर्णान्ते घटिकात्मकं नन्दातिथेः आदिमं घटिकात्मकं तिथेः गण्डान्तकं अशुभदं [निगदितम्] ।४३।

भा०—ज्येष्ठा, रेवती, आश्लेषा की अन्त की दो घड़ी, मूल अश्विनी मघाकी आदि की दो घड़ी को नक्षत्र गण्डान्त कहते हैं । कर्क वृश्चिक मीन की अन्त की आधी घड़ी तथा सिंह धनु मेष के आदि की आधी घड़ी लग्न गण्डान्त कही जाती है । इसी तरह पूर्णा तिथि के अन्त की और नन्दा तिथि के आदि की १ घटी तिथि गण्डान्त कहलाती है । ये तीनों गण्डान्त अशुभ हैं ॥ ४३ ॥

कर्तरीदोष—

लग्नात्पापावृज्वनृजू व्ययार्थस्थौ यदा तदा ।
कर्त्तरी नाम सा ज्ञेया मृत्युदारिद्र्यशोकदा ॥ ४४ ॥

अन्वयः—यदा ऋज्वनृजू पापी लग्नात् व्ययार्थस्थौ स्याताम् तदा कर्तरी नाम ज्ञेया । सा कर्तरी मृत्युदारिद्र्यशोकदा भवति ॥ ४४ ॥

भा० – लग्न से व्यय तथा दूसरे स्थान में दो पाप ग्रह क्रमसे मार्गी और वक्री हों तो कर्त्तरी नामक योग मृत्यु, दारिद्र्य और शोक देने वाला होता है ॥ ४४ ॥

सग्रह चन्द्रमा का योग—

चन्द्रे सूर्यादिसंयुक्ते दारिद्र्यं मरणं शुभम् ।
सौख्यं सापत्नवैराग्ये पापद्वययुते मृतिः ॥ ४५ ॥

अन्वयः—चन्द्रे सूर्य्यादिसंयुक्ते क्रमेण दारिद्र्यं, मरणं, शुभं, सौख्यं, सापत्न्यवैराग्ये च भवेताम् तथा पापद्वययुते मृतिः मरणं स्यात् ॥ ४५ ॥

भा०—विवाह या प्रश्न लग्न में चन्द्रमा यदि सूर्य, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र और शनि से युत हो तो क्रम से दारिद्र्य, मरण, शुभ, सुख, शत्रुता और वैराग्य होता है। और यदि दो पाप ग्रह से युत हो तो मृत्यु होती है ॥ ४५ ॥

लग्नमें अष्टम भावका दोष एवं उसका परिहार—

जन्मलग्नभयोर्मृत्युराशौ नेष्टः क्रूरग्रहः ।
एकाधिपत्ये राशीशमैत्रे वा नैव दोषकृत् ॥ ४६ ॥

अन्वयः—जन्मलग्नभयोः मृत्युराशौ क्रूरग्रहः नेष्टः भवति । एकाधिपत्ये वा राशीशमैत्रे सति नैव दोषकृत् ॥ ४६ ॥

भा०—जन्मलग्न और जन्मराशि से अष्टमलग्न में विवाह अशुभ है। परञ्च राशि स्वामी एक हो वा दोनों में मित्रता हो तो शुभ होता है ॥ ४६ ॥

अष्टम गृहदोष परिहार—

मीनोक्षकर्कालिमृगस्त्रियोऽष्टमं
लग्नं यदा नाष्टमगेहदोषकृत् ।
अन्योन्यमित्रत्ववशेन सा वधू-
र्भवेत्सुतायुर्गृहसौख्यभागिनी ॥ ४७ ॥

अन्वयः—मीनोक्षकर्कालिमृगस्त्रियः यदा अष्टमं लग्नं भवेत्तदा अष्टमगेहदोषकृत् न भवेत् । अन्योन्यमित्रत्ववशेन सा वधूः सुतायुर्गृहसौख्यभागिनी भवति ॥ ४७ ॥

भा०—मीन, वृष, कर्क, वृश्चिक, मकर, कन्या, इन छ राशियों में से कोई अष्टम राशि लग्न में हो या जन्म लग्न से अष्टम हो तो अष्टम स्थान का दोष नहीं होता है। परस्पर ग्रहों में मैत्री होने से वर-वधू पुत्र आयु और गृहस्थाश्रम के सुख के भागी होते हैं ॥ ४७ ॥

लग्न में अष्टमभाव का विचार—

मृतिभवनांशो यदि च विलग्ने
तदधिपतिर्वा न शुभकरः स्यात् ।
व्ययभवनं वा भवति तदंश-
स्तदधिपतिर्वा कलहकरः स्यात् ॥ ४८ ॥

अन्वयः—मृतिभवनांशः, वा तदधिपतिः यदि च विलग्ने भवेत् तदा शुभकरः न स्यात् । यदि व्ययभवनं वा तदंशः वा तदधिपतिः विलग्ने तदा कलहकरः ज्ञेयः ॥ ४८ ॥

भा०—जन्म राशि या लग्नसे अष्टम राशि का नवांश वा उसका

स्वामी विवाह लग्न में हो तो विवाह शुभकारक नहीं होता है। बारहवाँ घर अथवा द्वादशांश वा उनका स्वामी लग्नमें हो तो वह विवाह कलह-कारक होता है ॥ ४८ ॥

वर्ज्यविषवटी—

खरामतो ३० ऽन्त्यादितिवह्निपित्र्यभे
खवेदतः ४० के रदतश्च ३२ सार्पभे।
खबाणतो ५० ऽश्वे धृतितोऽ १८र्यमाम्बुपे
कृते २० र्भगत्वाष्ट्रभविश्वजीवभे ॥ ४९ ॥
मनो १४ द्विदैवानिलसौम्यशाक्रभे
कुपक्षतः २१ शैवकरेऽष्टि १६ तोऽजभे।
युगाश्वितो २४ बुध्न्यभतोययाम्यभे
खचन्द्रतो १० मित्रभवासवश्रुतौ ॥ ५० ॥
मूलेऽङ्गबाणा ५६ द्विषनाडिकाः कृता
वर्ज्याः शुभेऽथो विषनाडिका ध्रुवाः।
निघ्ना भभोगेन खतर्क ६० भाजिताः
स्फुटा भवेयुर्विषनाडिकास्तथा ॥ ५१ ॥

अन्वयः—अन्त्यादितिवह्निपित्र्यभे खरामतः, के खवेदतः, सार्पभे रदतः, अश्वे खबाणतः, अर्यमाम्बुपे धृतितः, भगत्वाष्ट्रभजीवभे कृतेः, द्विदैवानिलसौम्यशाक्रभे मनोः, शैवकरे कुपक्षतः, अजभे अष्टितः, बुध्न्यभतोययाम्यभे युगाश्वितः, मित्र-भवासवश्रुतौ खचन्द्रतः, मूले अङ्गबाणात् कृताः (चतस्रः) विष-नाडिकाः शुभे वर्ज्याः। अथो विषनाडिकाः ध्रुवाः भभोगेन निघ्नाः खतर्कभाजिताः तदा स्फुटा ध्रुवा ज्ञेयाः विषनाडिका अपि तथा (भभोगेन) निघ्नाः खतर्कभाजिताः स्फुटा भवेयुः ॥ ४९-५१ ॥

भा०—रेवती, पुनर्वसु, कृत्तिका, मघा में ३० घटी के बाद, रोहिणी में ४० घड़ी के बाद, आश्लेषा में ३२ घटी बाद, अश्विनी में ५० घड़ी के बाद, उत्तर फाल्गुनी और शतभिषा में १८ घटी के बाद, पूर्वा फाल्गुनी चित्रा उत्तराषाढ़, पुष्य में २० घटी के बाद, विशाखा, स्वाती, मृगशिरा और ज्येष्ठा में १४ घटी के बाद, आर्द्रा हस्त में २१ घटी के बाद, पूर्वभाद्रपद में १६ घटी उपरान्त, उत्तरा भाद्रपद पूर्वाषाढ़ा और भरणी में २४ घटी बाद, अनुराधा धनिष्ठा तथा श्रवण में १० घटी के बाद, मूल में ५६ घड़ी के बाद, ४-४ घटी विषघटी कहलाती है। ये शुभ कार्य में वर्जित हैं। कहे हुए घड़ीकी संख्या को भभोग से गुना कर ६० का भाग दें तो स्पष्ट ध्रुव घटी होती है। इसी प्रकार ४ को भी भभोग से गुना कर ६० का भाग देने से त्याज्य विषघटी का मान होता है ॥ ४९-५०-५१ ॥

दिवामुहूर्त—

गिरिशभुजगमित्राः पित्र्यवस्वम्बुविश्वे-

ऽभिजिदथ च विधातापीन्द्र इन्द्रानलौ च ।

निर्ऋतिरुदकनाथोऽप्यर्यमाथो भगः स्युः

क्रमश इह मुहूर्त्ता वासरे बाणचन्द्राः ॥ ५२ ॥

अन्वयः—गिरिशभुजगमित्राः पित्र्यवस्वम्बुविश्वे अभिजित् अथ च विधाता अपि च इन्द्रः इन्द्रानलौ, निर्ऋतिः उदकनाथः अर्यमापि अथो भगः इमे बाणचन्द्राः मुहूर्ताः (क्रमशः) वासरे स्युः ॥ ५२ ॥

भा०—शिव, सर्प, मित्र, पित्र्य, वसु, जल, विश्वेदेव, अभिजित्, ब्रह्मा, इन्द्र, इन्द्राग्नि, राक्षस, वरुण, अर्यमा, भग—ये १५ मुहूर्त क्रमसे दिन में होते हैं ॥ ५२ ॥

रात्रि मुहूर्त—

शिवोऽजपादादष्टौ स्युर्भेशा अदितिजीवकौ ।

विष्ण्वर्कत्वाष्ट्रमरुतो मुहूर्त्ता निशि कीर्त्तिताः ॥ ५३ ॥

अन्वयः—शिवः अजपादात् अष्टौ भेशाः, अदितिजीवकौ, विष्ण्वर्कत्वाष्ट्रमरुतः, एते निशि मुहूर्ताः स्युः ॥ ५३ ॥

भा०—शिव, अजपाद, अहिबुध्न्य, पूषा, अश्विनीकुमार, यम, अग्नि, ब्रह्मा, चन्द्रमा, अदिति, गुरु, विष्णु, सूर्य, त्वाष्ट्र, वायु—ये क्रमसे रात्रिके १५ मुहूर्त हैं ॥ ५३ ॥

निषिद्ध मुहूर्त—

रवावर्यमा ब्रह्मरक्षश्च सोमे

कुजे वह्निपित्र्ये बुधे चाभिजित्स्यात् ।

गुरौ तोयरक्षो भृगौ ब्राह्मपित्र्ये

शनावीशसार्पौ मुहूर्त्ता निषिद्धाः ॥ ५४ ॥

अन्वयः—रवौ अर्यमा, सोमे ब्रह्मरक्षः, कुजे वह्निपित्र्ये, बुधे अभिजित, गुरौ तोयरक्षः, भृगौ ब्रह्मपित्र्ये, शनौ ईशसार्पौ इमे मुहूर्ताः निषिद्धाः भवन्ति ॥५४॥

भा०—रविवार में अर्यमा, सोमवार में ब्रह्म तथा राक्षस, मंगलमें अग्नि, पित्र्य, बुध में अभिजित्, गुरुवार में जल तथा राक्षस, शुक्रवार में ब्रह्मा, पित्र्य, शनिवार में शिव, सर्प, ये मुहूर्त निषिद्ध हैं ॥ ५४ ॥

विवाह में विहित नक्षत्र तथा अभिजित का मान—

निर्वेधैः शशिकरमूलमैत्रपित्र्य-

ब्राह्मान्त्योत्तरपवनैः शुभो विवाहः ।

रिक्तामारहिततिथौ शुभेऽह्नि वैश्व-
प्रान्त्यांघ्रिः श्रुतितिथिभागतोऽभिजित्स्यात् ॥५५॥

अन्वयः—निर्वेधैः शशिकरमूलमैत्रपित्र्यब्राह्मान्त्योत्तरपवनैः एभिर्नक्षत्रैः रिक्तामारहिततिथौ शुभे अह्नि विवाहः शुभः स्यात्। तथा वैश्वप्रान्त्यांघ्रिः श्रुतितिथिभागतः अभिजित् स्यात् ॥ ५५ ॥

भा०—मृगशिरा हस्त मूल, अनुराधा मघा रोहिणी रेवती तीनों उत्तरा स्वाती ये नक्षत्र निर्वेध हो तो विवाह शुभ है। ६।४।१४।३० इन तिथियों को छोड़कर अन्य तिथियों में, शुभ अवसर में विवाह शुभ है। उत्तराषाढ़ का चतुर्थ चरण तथा श्रवण के आदि का १५ वाँ भाग मिलकर अभिजित् कहलाता है ॥ ५५ ॥

पंचशलाका चक्रोद्धार—

वेधोऽन्योन्यमसौ विरिञ्च्यभिजितोर्याम्यानुराधर्क्षयो-
र्विश्वेन्द्वोर्हरिपित्र्ययोर्ग्रहकृतो हस्तोत्तराभाद्रयोः।
स्वातीवारुणयोर्भवेन्निर्ऋतिमादित्योस्तथोपान्त्ययोः
खेटे तत्र गते तुरीयचरणाद्योर्वा तृतीयद्वयोः ॥ ५६ ॥

अन्वयः—विरिञ्च्यभिजितोः, याम्यानुराधर्क्षयोः, विश्वेन्द्वोः, हरिपित्र्ययोः, हस्तोत्तराभाद्रयोः, स्वातीवारुणयोः, निर्ऋतिमादित्योः, तथा उपान्त्ययोः अन्योन्यं असौ ग्रहकृतः वेधः स्यात्। तत्र गते खेटे तुरीयचरणाद्योः तथा तृतीयद्वयोः (वेधः) भवेत् ॥ ५६ ॥

भा०—रोहिणी अभिजित् में, भरणी अनुराधा, में, उत्तराषाढ़ मृगशिरा में, श्रवण मघा में, हस्त उत्तराभाद्रपद में, स्वाती शतभिषा में, मूल पुनर्वसु में, उत्तराफाल्गुनी रेवती में, परस्पर ग्रहकृत वेध होता है। और प्रथम चरण का चतुर्थ चरण के साथ तथा द्वितीय चरण का तृतीय चरण के साथ परस्पर वेध होता है ॥ ५६ ॥

स्पष्टार्थ—

यदि कोई ग्रह भरणी पर हो तो उससे अनुराधा विद्ध होता है अथवा अनुराधा पर कोई ग्रह हुआ तो उससे भरणी नक्षत्र विद्ध होता है।

इसी तरह यदि भरणी के चतुर्थ चरण पर कोई ग्रह हो तो अनुराधा का प्रथम चरण विद्ध हुआ और द्वितीय चरण पर कोई ग्रह हुआ तो तृतीय चरण पर विद्ध हुआ। अन्य नक्षत्रों में भी इसी तरफ समझ लेना चाहिये।

पञ्चशलाका चक्र
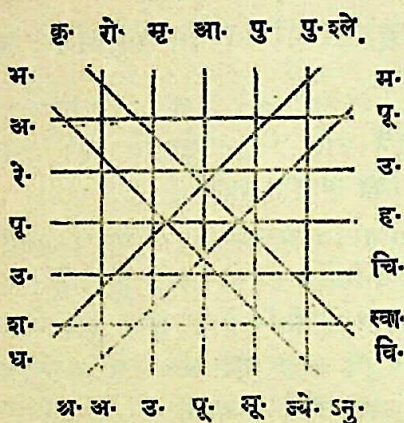
विवाहातिरिक्त मङ्गल कार्य में सप्तशलाका चक्रोद्धार—

शाक्रेज्ये शतभानिले जलशिवे पौष्णार्यमर्क्षे वसु-
द्वीशे वैश्वसुधांशुभे हयभगे सार्पानुराधे तथा ।
हस्तोपान्तिमभे विधातृविधिभे मूलादिती त्वाष्ट्रभा-
जाङ्घ्री याम्यमघे कृशानुहरिभे विद्धेऽद्रिरेखे मिथः ॥५७॥

अन्वयः—अद्रिरेखे (सप्तशलाकाचक्रे) शाक्रेज्ये शतभानिले जलशिवे पौष्णार्यमर्क्षे वसुद्वीशे वैश्वसुधांशुभे हयभगे सार्पानुराधे हस्तोपान्तिमभे विधातृविधिभे मूलादिती त्वाष्ट्रभाजांघ्री याम्यमघे कृशानुहरिभे मिथः परस्परं विद्धे स्तः ॥

भा०—ज्येष्ठा पुष्य में, शतभिषा स्वाती में, पूर्वाषाढ़ आर्द्रा में, रेवती उत्तरफाल्गुनी में, धनिष्ठा विशाखा में, उत्तराषाढ़ मृगशिरा में, अश्विनी पूर्वाफाल्गुनी में, हस्त उत्तराभाद्रपद में, रोहिणी अभिजित् में, चित्रा पूर्वाभाद्रपद में, भरणी मघा में, कृत्तिका श्रवण में परस्पर सप्तशलाका चक्र में वेध होता है ॥ ५७ ॥

सप्तशलाका चक्र—
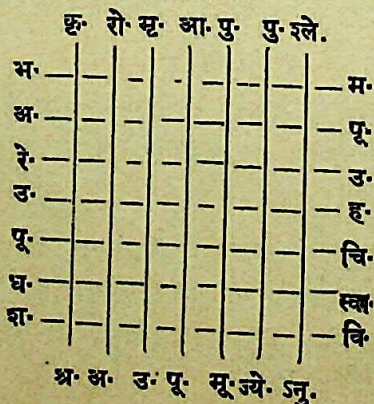
क्रूराक्रांत आदि नक्षत्रों का दोष परिहार—

ऋक्षाणि क्रूरविद्धानि क्रूरभुक्तादिकानि च ।
भुक्त्वा चन्द्रेण मुक्तानि शुभार्हाणि प्रचक्षते ॥ ५८ ॥

अन्वयः—क्रूरविद्धानि क्रूरभुक्तादिकानि च ऋक्षाणि यदि चन्द्रेण भुक्त्वा मुक्तानि तदा शुभार्हाणि प्रचक्षते (विद्वांस इति शेषः) ॥ ५८ ॥

भा०—क्रूर ग्रह से विद्ध और क्रूर ग्रह से भुक्त या भोग्य नक्षत्र और पाप ग्रह जिन पर हो अथवा जिन पर पाप ग्रह जाने वाले हों इस तरह के नक्षत्रों को यदि चन्द्रमा भोगकर छोड़ दिया हो तो वे नक्षत्र शुभ होते हैं ॥ ५८ ॥

लत्तादोष—

ज्ञराहुपूर्णेन्दुसिताः स्वपृष्ठे भं सप्तगोजातिशरैर्मितं हि ।
संलत्तयन्तेऽर्कशनीज्यभौमाः सूर्याष्टतर्काग्निमितं पुरस्तात् ॥५९॥

अन्वयः—ज्ञराहुपूर्णेन्दुसिताः स्वपृष्ठे सप्तगोजातिशरैर्मितं भं संलत्तयन्ते । तथा अर्कशनीज्यभौमाः पुरस्तात् (अग्रे) सूर्याष्टतर्काग्निमितं भं संलत्तयन्ते ॥५९॥

भा०—बुध, राहु, पूर्ण चन्द्रमा और शुक्र जिस नक्षत्र में हो उससे क्रम से ७ वें ९ वें २२ वें और ५ वें पिछले नक्षत्र को अपनी लात से मारता है और सूर्य, शनि, गुरु तथा मंगल अपने नक्षत्र से १२ वें ८ वें ६ ठे और ३ रे अगले नक्षत्र को लात से मारते हैं इस लिये लत्ता दोष इसका नाम रक्खा गया है ॥ ५९ ॥

पातदोष—

हर्षणवैधृतिसाध्यव्यतिपातकगण्डशूलयोगानाम् ।
अन्ते यन्नक्षत्रं पातेन निपातितं तत्स्यात् ॥ ६० ॥

अन्वयः—हर्षणवैधृतिसाध्यव्यतिपातकगण्डशूलयोगानां अन्ते यत् नक्षत्रं तत् पातेन निपातितं स्यात् ॥ ६० ॥

भा०—हर्षण, वैधृति, साध्य, व्यतिपात, गण्ड, शूल इन योगों के अन्त में जो नक्षत्र हो वह पात से दूषित होता है ॥ ६० ॥

क्रान्तिसाम्यदोष—

पञ्चास्याजौ गोमृगौ तौलिकुम्भौ
कन्यामीनौ कर्क्यली चापयुग्मे ।
तत्रान्योन्यं चन्द्रभान्वोर्निरुक्तं
क्रान्तेः साम्यं नो शुभं मङ्गलेषु ॥ ६१ ॥

अन्वयः—पंचास्याजौ गोमृगौ तौलिकुम्भौ कन्यामीनौ कर्क्यली चापयुग्मे तत्र अन्योन्यं स्थितयोः चन्द्रभान्वोः क्रान्तेः साम्यं निरुक्तं तत् मंगलेषु नो शुभं स्यात् ॥ ५१ ।

भा०—सिंह मेष, वृष मकर, तुला कुम्भ, कन्या मीन, कर्क वृश्चिक, धनु मिथुन, इन दो दो राशियों पर परस्पर सूर्य और चन्द्रमा हो

अर्थात् सिंह का सूर्य, मेष का चन्द्रमा अथवा मेष का सूर्य सिंह का चन्द्रमा हो तो क्रान्ति-साम्य दोष होता है। यह शुभ कार्य में अशुभ कहा गया है ॥ ६१ ॥

खार्जूर अथवा एकार्गलदोष—

व्याघातगण्डव्यतिपातपूर्वे
शूलान्त्यवज्रे परिघातिगण्डे ।
एकार्गलाख्यो ह्यभिजित्समेतो
दोषः शशी चेद्विषमर्क्षगोऽर्कात् ॥ ६२ ॥

अन्वयः—व्याघातगण्डव्यतिपातपूर्वे शूलान्त्यवज्रे परिघातिगण्डे (अस्मिन् योगे) चेत् अभिजित्समेतः शशी अर्कात् विषमर्क्षगः विषमे विषमसंख्याके नक्षत्रे स्थितः तदा एकार्गलाख्यो दोषः स्यात् ॥ ६२ ॥

भा०—व्याघात, गण्ड, व्यतिपात, विष्कम्भ, शूल, वैधृति, वज्र, परिघ, अतिगण्ड इन योगों में अभिजित् सहित सूर्य से विषम नक्षत्र में चन्द्रमा हो तो एकार्गल नामक दोष होता है। इसी को खार्जूर दोष भी कहते हैं ॥ ६२ ॥

उपग्रह दोष—

शराष्टदिक्शक्रनगातिधृत्यस्तिथिर्धृतिश्च प्रकृतेश्च पंच ।
उपग्रहाः सूर्यभतोऽब्जताराः शुभा न देशे कुरुबाह्लिकानाम् ॥६३॥

अन्वयः—सूर्यभतः अब्जताराः शराष्टदिक्शक्रनगातिधृत्यः तिथिः धृतिः प्रकृतेः पञ्च स्युश्चेत्तदा उपग्रहाः भवन्ति। ते कुरुबाह्लिकानां देशे शुभाः न भवन्ति ॥ ६३ ॥

भा०—सूर्य के नक्षत्र से ५।८।१०।१४।७।१९।१५।१८।२१।२२।२३।२४।२५ इतने इतने संख्या पर चन्द्रमा का नक्षत्र हो तो उपग्रह नामक दोष होता है। यह कुरुदेश और बाह्लीक देश में विवाह के लिये शुभ नहीं है ॥ ६३ ॥

पातादि दोषों का परिहार और अर्द्धयाम—

पातोपग्रहलत्तासु नेष्टोऽङ्घ्रिः खेटपत्समः ।
वारस्त्रिघ्नोऽष्टभिस्तष्टः सैकः स्यादर्द्धयामकः ॥ ६४ ॥

अन्वयः—पातोपग्रहलत्तासु खेटपत्समः अंघ्रिः नेष्टः स्यात् । वारः त्रिघ्नः सैकः अष्टभिः तष्टः अर्धयामकः स्यात् ॥ ६४ ॥

भा०—पात, उपग्रह, लत्ता में ग्रह के चरण तुल्य नक्षत्र का चरण अनिष्टकारक है। वार की संख्या को ३ से गुना कर ८ का भाग दे जो शेष बचे उसमें १ जोड़ दे तो अधयाम दोष होता है ॥ ६४ ॥

कुलिकदोष—

शक्रार्कदिग्वसुरसाब्ध्यश्विनः कुलिका रवेः ।
रात्रौ निरेकास्तिथ्यंशाः शनौ चान्त्योऽपि निन्दितः ॥६५॥

अन्वयः—रवेः (रविमारभ्य) शक्रार्कदिग्वसुरसाब्ध्यश्विनः तिथ्यंशाः

मुहूर्ताः कुलिकाः कथ्यन्ते । ते निरेकाः रात्रौ कुलिकाः भवन्ति । शनौ अन्त्योऽपि मुहूर्तः निन्दितः स्यात् ॥ ६५ ॥

भा०—रवि आदि वारोंमें क्रम से १४ वाँ, १२ वाँ, १० वाँ, ८ वाँ, ६ ठाँ, ४ था, २ रा—ये मुहूर्त कुलिक होते हैं। और रात्रि में क्रम से १३।११।९।७।५।३।१ ये मुहूर्त कुलिक होते हैं। शनि का अन्तिम मुहूर्त भी निन्द्य है ॥ ६५ ॥

दग्धा तिथि—

चापान्त्यगे गोघटगे पतंगे कर्काजगे स्त्रीमिथुने स्थिते च ।
सिंहालिगे नक्रघटे समाः स्युस्तिथ्यो द्वितीयाप्रमुखाश्च दग्धाः॥६६॥

अन्वयः—चापान्त्यगे गोघटगे कर्काजगे स्त्रीमिथुने सिंहालिगे नक्रघटे पतंगे (सूर्ये) स्थिते क्रमशः द्वितीयाप्रमुखाः समाः तिथ्यः दग्धाः भवन्ति ॥ ६६ ॥

भा०—धनु, मीन। वृष, कुम्भ। कर्क, मेष। कन्या, मिथुन। सिंह, वृश्चिक। मकर, तुला, इन दो दो राशियों में सूर्य रहे तो, क्रमसे द्वितीया चतुर्थी षष्ठी अष्टमी दशमी तथा द्वादशी तिथियाँ दग्ध कही जाती हैं ॥ ६६ ॥

जामित्र दोष—

लग्नाच्चन्द्रान्मदनभवनगे खेटे न स्यादिह परिणयनम् ।
किं वा बाणाशुगमितलवगे जामित्रं स्यादशुभकरमिदम् ॥६७॥

अन्वयः—लग्नात् वा चन्द्रात् मदनभवनगे किं वा बाणाशुगमितलवगे खेटे सति जामित्रं स्यात् । इह परिणयं न स्यात् । इदं अशुभकरमुक्तम् ॥ ६७ ॥

भा०—लग्न अथवा चन्द्रमासे सप्तम भवनमें कोई ग्रह हो तो विवाह अशुभ कारक होता है। या उससे ५५ नवांश में ग्रह हो तो भी विवाह में अशुभ है। इसको जामित्र दोष कहते हैं ॥ ६७ ॥

एकार्गल आदि दोष का अपवाद—

एकार्गलोपग्रहपातलत्ताजामित्रकर्त्तर्युदयास्तदोषाः ।
नश्यन्ति चन्द्रार्कबलोपपन्ने लग्ने यथार्काभ्युदये तु दोषा ॥६८॥

अन्वयः—चन्द्रार्कबलोपपन्ने लग्ने सति एकार्गलोपग्रहपातलत्ताजामित्रकर्त-र्युदयास्तदोषाः नश्यन्ति । यथा अर्काभ्युदये दोषा रात्रिः नश्यति ॥ ६८ ॥

भा०—लग्न यदि सूर्य और चन्द्रमा के बल से युत हो तो एकार्गल, उपग्रह, लत्ता, कर्त्तरी तथा उदयास्त दोषका नाश हो जाता है। जिस तरह सूर्योदय होने पर रात्रि (अन्धकार) का नाश हो जाता है ॥ ६८ ॥

देशभेद से दोषपरिहार—

उपग्रहर्क्षं कुरुबाह्लिकेषु कलिंगवंगेषु च पातितं भम् ।
सौराष्ट्रशाल्वेषु च लत्तितं भं त्यजेत् तु विद्धं किल सर्वदेशे ॥६९॥

अन्वयः—कुरुबाह्लिकेषु देशेषु उपग्रहर्क्षं (पुनः) कलिङ्गवंगेषु लत्तितं भं त्यजेत् । विद्धं भं तु सर्वदेशे किल निश्चयेन त्यजेत् ॥ ६९ ॥

भा०—काश्मीर के पश्चिम हिमपर्वत निकटस्थ कुरुक्षेत्र, और बाह्लीक देश में, उपग्रह दोष उड़ीसा के दक्षिण और मद्रास के उत्तर तीरवर्ती कलिंग प्रदेशमें तथा बंगदेश में पात दोष, अहमदाबाद से सोमनाथ तक सूरत नाम से प्रसिद्ध सौराष्ट्र और शाल्व देश में लत्ता दोष को त्याग दे। क्रूर ग्रह से अथवा शुभ ग्रह से विद्ध पञ्चशलाकादि चक्र द्वारा भिन्न नक्षत्र सब देशों में त्याज्य है ॥ ६९ ॥

दशयोग—

शशांकसूर्यर्क्षयुतेर्भशेषे खं भूयुगांगानि दशेशतिथ्यः ।
नागेन्द्वोऽकेन्दुमिता नखाश्चेद्भवन्ति चैते दशयोगसंज्ञाः ॥७०॥

अन्वयः—शशांकसूर्यर्क्षयुतेः भशेषे खं भूयुगांगानि दशेशतिथ्यः नागेन्दवः अंकेन्दुमिता नखाः चेत् भवन्ति तदा एते (क्रमशः) दशयोगसंज्ञाः भवन्ति ॥७०॥

भा०—जिस नक्षत्र में सूर्य और जिस नक्षत्र में चन्द्रमा हो उसको अश्विनी से गिनकर इकट्ठा कर ले उसमें २७ का भाग दे यदि ०।१।४।६।१०।११।१५।१८।१९।२० इन संख्या में कोई अंक शेष रहे तो क्रम से दशयोग होता है ॥ ७० ॥

दशयोगों के नाम—

वाताभ्राग्निमहीपचौरमरणं रुग्वज्रवादाः क्षति-
र्योगांके दलिते समे मनुयुतेऽथौजे तु सैकेऽर्धिते ।
भं दास्रादथ सम्मितास्तु मनुभी रेखाः क्रमात् संलिखे-
द्वेऽधोऽस्मिन् ग्रहचन्द्रयोर्न शुभदः स्यादेकरेखास्थयोः ॥७१॥

अन्वयः—वाताभ्राग्निमहीपचौरमरण रुग्वज्रवादाः क्षतिः (एतानि दशयोगनामानि भवन्ति)। अथ समे योगांके दलिते मनुयुते ओजे योगांके सैके अर्धिते सति दास्रात् भ (ज्ञेयम्)। अथ मनुभिः सम्मिता रेखाः क्रमात् संलिखेत्। अस्मिन् एकरेखास्थयोः ग्रहचन्द्रयोः वेधः न शुभदः स्यात् ॥ ७१ ॥

भा०—शून्य शेष में वात-भय, १ शेष में मेघ-भय, ४ में अग्नि-भय, ६ में राजभय, १० में चोरभय, ११ में मृत्युभय, १५ में रोगभय, १८ में वज्रभय, १९ में वादभय, और २० शेष में क्षति नामक धन-नाशयोग होता है। ऊपर कहे हुए सूर्य नक्षत्र और चन्द्र नक्षत्र का योग सम संख्या हो तो उसका आधा करके १४ जोड़ें, यदि विषम संख्या हो तो १ जोड़कर आधा करे, वह अश्विनी आदि गिनकर नक्षत्र समझे। फिर तिरछी १४ रेखा खींचकर क्रम से उनमें उसी नक्षत्र से आरम्भ करके अभिजित् सहित २८ नक्षत्रों का न्यास करे। यदि कोई ग्रह और चन्द्रमा एक रेखा में पड़े तो यह वेध शुभप्रद नहीं होता है ॥ ७१ ॥

दाक्षिणात्य पञ्चबाणदोष—

लग्नेनाढ्या याततिथ्योऽङ्कतष्टाः
शेषे नागद्व्यब्धितर्केन्दुसंख्ये ।

रोगो वह्नी राजचौरौ च मृत्यु-
र्बाणश्चायं दाक्षिणात्यप्रसिद्धः ॥ ७२ ॥

अन्वयः—याततिथ्यः लग्नेन आढ्याः अङ्कतष्टाः नागद्विचन्वितर्कैन्दुसंख्ये शेषे (सति) क्रमेण रोगः, वह्निः, राजचौरौ तथा मृत्युः बाणः स्यात्। अयं दाक्षिणात्यप्रसिद्धः अस्ति ॥ ७२ ॥

भा०—शुक्लपक्ष की प्रतिपद् से गत तिथियों की लग्न संख्या को राशि की संख्या में जोड़े, उसमें ६ का भाग दे। ८ शेष बचे तो रोगबाण, २ बचे तो अग्निबाण, ४ बचे तो राजबाण, ६ बचे तो चोरबाण, और १ शेष बचे तो मृत्यु नामक बाण होता है। यह बाणदोष दाक्षिणात्य प्रदेश में प्रसिद्ध है ॥ ७२ ॥

रसगुणशशिनागाब्ध्याढ्यसंक्रान्तियातां-
शकमितिरथ तष्टाङ्कैर्यदा पञ्च शेषाः ।
रुगनलनृपचौरा मृत्युसंज्ञश्च बाणो
नवहृतशरशेषे शेषकैक्ये सशल्यः ॥ ७३ ॥

अन्वयः—रसगुणशशिनागाब्ध्याढ्यसंक्रान्तियातांशकमितिः अङ्कैः तष्टा यदा पञ्च शेषाः तदा क्रमेण रुगनलनृपचौराः मृत्युसंज्ञश्च बाणः स्यात्। शेषकैक्ये नवहृतशरशेषे सति स बाणः सशल्यः स्यात् ॥ ७३ ॥

भा०—सूर्य संक्रान्तिके गतांशों को पाँच स्थानमें रखकर ६।३।१।८।४ जोड़ें और उनमें पृथक् पृथक् ६ का भाग दे जहाँ ५ बचे वहाँ क्रम से रोग, अग्नि, राजा, चोर और मृत्यु नामक बाण होता है। शेषों को इकट्ठा कर ६ का भाग देने पर ५ शेष बचे तो वह बाण सशल्य कहा जाता है। ये बाण दाक्षिणात्येतर प्रदेशों में त्याज्य हैं ॥ ७३ ॥

रात्रौ चौररुजौ दिवा नरपतिर्वह्निः सदा संध्ययो-
र्मृत्युश्चाथ शनौ नृपो विदि मृतिर्भौमेऽग्निचौरौ रवौ ।
रोगोऽथ व्रतगेहगोपनृपसेवायानपाणिग्रहे
वर्ज्याश्च क्रमतो बुधै रुगनलक्ष्मापालचौरा मृतिः ॥७४॥

अन्वयः—रात्रौ चौररुजौ (वर्ज्यौ), दिवा नरपतिः (वर्ज्यः), वह्निः सदा (वर्ज्यः), सन्ध्ययोः मृत्युः (वर्ज्यः) स्यात्। अथ शनौ नृपः (वर्ज्यः), विदि, मृतिः (वर्ज्यः), भौमे अग्निचौरौ (वर्ज्यौ), रवौ रोगः वर्ज्यः, अथ व्रतगेहगोपनृपसेवायानपाणिग्रहे क्रमशः रुगनलक्ष्मापालचौरा मृतिश्च बुधे वर्ज्याः ॥७४॥

भा०—रात्रि में चोर तथा रोगबाण, दिन में राजबाण, सर्वदा अग्निबाण, दोनों संध्यामें मृत्युबाण त्याज्य है। शनिवारमें राजबाण, बुधवारमें मृत्युबाण, मङ्गलवार में अग्नि और चोरबाण, रविवार में

रोगबाण त्याग देना चाहिये। उपनयन, घर छावने में, राजा की नौकरी करने में, यात्रा में, विवाह में, क्रमसे रोग, वह्नि, अग्नि, राजा, चोर, और मृत्युबाण छोड़ देना चाहिये ॥ ७४ ॥

ग्रहों की दृष्टि—

त्र्याशं त्रिकोणं चतुरस्रमस्तं
　　पश्यन्ति खेटाश्चरणाभिवृद्धया।
मन्दो गुरुर्भूमिसुतः परे च
　　क्रमेण सम्पूर्णदृशो भवन्ति ॥ ७५ ॥

अन्वयः—त्र्याशं, त्रिकोणं चतुरस्रं,अस्तं खेटाः चरणाभिवृद्धया पश्यन्ति। मंदो (शनिः), गुरुः, भूमिसुतः, परे (रविचन्द्रबुधशुक्राः) च क्रमेण सम्पूर्णदृशो भवन्ति॥

भा०—सभी ग्रह अपने स्थान से ३।१० को, ९।५ को, ४।८ को और ७ को एक एक चरण वृद्धि से देखते हैं। जैसे ३।१० को एक चरण से, ५।९ को दो चरण से, ४।८ को ३ चरण से और ७ को चारों चरण से देखते हैं। उनमें ३।१० को शनि संपूर्ण दृष्टिसे देखते हैं, इसी तरह गुरु ९।५ को, मङ्गल ४।८ को तथा बाकी ग्रह ७ को सम्पूर्ण दृष्टि से देखते हैं ७५

उदयास्तशुद्धि—

यदा लग्नांशेशो लवमथ तनुं पश्यति युतो
भवेद्वायं वोढुः शुभफलमनल्पं रचयति।
लवद्यूनस्वामी लवमदनभं लग्नमदनं
प्रपश्येद्वा वध्वाः शुभमितरथा ज्ञेयमशुभम्॥७६॥

अन्वयः—यदा लग्नांशेशः लवं अथवा तनुं पश्यति वा युतः भवेत् तदा अयं वोढुः अनल्पं शुभफलं रचयति। यदि लवद्यूनस्वामी लवमदनभं लग्नमदनं वा प्रपश्येत्तदा वध्वाः शुभं रचयति। इतरथा अशुभं ज्ञेयम् ॥ ७६ ॥

भा०—यदि लग्ननवमांशपति लग्न के नवमांश को या लग्न को देखता हो या उसमें बैठा हो तो वरको अधिक शुभ फल देता है। तथा लग्न नवमांश से सप्तम राशि का स्वामी नवमांश से सप्तम या लग्न से सप्तम भाव को देखता हो तो कन्या का शुभकारक होता है। अन्यथा अशुभ फल समझना ॥ ७६ ॥

लवेशो लवं लग्नपो लग्नगेहं
प्रपश्येन्मिथो वा शुभं स्याद्वरस्य।
लवद्यूनपोऽशद्युनं लग्नपोऽस्तं
मिथोऽवेक्षते स्याच्छुभं कन्यकायाः ॥ ७७ ॥

अन्वयः—लवेशः लवं, लग्नपः लग्नगेहं वा मिथः यदि प्रपश्येत्तदा वरस्य

शुभं भवति। लवद्यूनपः अंशद्युनं, पुनः लग्नपः अस्तं, वा मिथः अवेक्षते तदा कन्यकायाः शुभं स्यात् ॥ ७७ ॥

भा०—यदि नवमांश पति नवमांश राशि को और लग्नेश लग्न को अथवा नवमांश पति लग्न को और लग्न पति नवमांश को इस प्रकार परस्पर देखते हों तो वरको शुभ फल देते हैं तथा नवमांश से सप्तम का पति नवमांश से सप्तम को और लग्नपति लग्न से सप्तम को अथवा परस्पर (नवमांश से सप्तमेल लग्न से सप्तम को तथा लग्न-पति नवमांश से सप्तम को) देखे तो कन्या को शुभफल देते हैं ॥७७॥

लवपतिशुभमित्रं वीक्षतेंऽशं तनुं वा
परिणयनकरस्य स्याच्छुभं शास्त्रदृष्टम्।
मदनलवपमित्रं सौम्यमंशद्युनं वा
तनुमदनगृहश्चेद् वीक्षते शर्म वध्वाः ॥ ७८ ॥

अन्वयः—लवपतिशुभमित्रं अंशं तनुं वा यदि वीक्षते तदा परिणयनकरस्य शास्त्रदृष्टं शुभं स्यात्। सौम्यं मदनलवपमित्रं चेत् अंशद्युनं वा तनुमदनगृहं वीक्षते तदा वध्वाः शर्म (कल्याणं) स्यात् ॥ ७८ ॥

भा०—लग्नगत नवमांश का शुभग्रह मित्र यदि नवमांश या लग्न को देखता हो तो वरका शुभ, तथा सप्तम भाव के नवमांशपति शुभग्रह होकर नवमांश से सप्तम को अथवा लग्न से सप्तम को देखे तो कन्या का शुभ फल समझना ॥ ७८ ॥

संक्रान्ति के दोष—

विषुवायनेषु परपूर्वमध्यमान्
दिवसांस्त्यजेदितरसंक्रमेषु हि।
घटिकास्तु षोडश शुभक्रियाविधौ
परतोऽपि पूर्वमपि सन्त्यजेद् बुधः ॥ ७९ ॥

अन्वयः—विषुवायनेषु (संक्रमेषु) परपूर्वमध्यमान् दिवसान् त्यजेत्। इतर-संक्रमेषु हि (निश्चयेन) परतः पूर्वं अपि षोडश घटिकाः शुभक्रियाविधौ बुधःत्यजेत्॥

भा०—मेष तुला और कर्क मकरकी संक्रान्तिमें आगे और पीछे तथा मध्यके एक-एक दिन इस तरह ३ दिन शुभ कार्य के लिये त्याज्य हैं और अन्य संक्रान्ति में केवल१६घड़ी मात्र आगे पीछे को त्याज्य है॥७९॥

वेदद्व्यङ्कर्त्तवोष्टाष्टौ नाड्योऽङ्काः खनृपाः क्रमात्।
वर्ज्याः संक्रमणेऽर्कादेः प्रायोऽर्कस्यातिनिन्दिताः ॥ ८० ॥

अन्वयः—अर्कादिः संक्रमणे क्रमात् वेदद्वयङ्कतंत्रः अष्टाष्टौ अंकाः खनृपाः नाड्यः वर्ज्याः । अर्कस्य प्रायः अतिनिन्दिताः [भवन्ति] ॥ ८० ॥

भा०—सूर्य के संक्रमण काल के पहले की १६॥ घड़ी और संक्रमण काल के बाद की १६॥ घड़ी इस तरह कुल ३३ घड़ी सूर्य की, इसी प्रकार संक्रमण काल के पूर्व की एक घड़ी और संक्रमण काल के बाद की एक एक घड़ी इस तरह दो घड़ी चन्द्र की, आदि और अन्त की ४॥-४॥ घड़ी मिलाकर मंगल की ९ घड़ी, आदि और अन्त की तीन-तीन घड़ी मिलाकर बुध की ६ घड़ी इसी तरह ४४-४४ आदि और अन्त की मिलाकर गुरु की ८८ घड़ी, आदि और अन्त की ४॥-४॥ घड़ी मिलाकर शुक्र की ९ घड़ी, और ८०-८० आदि अन्त की घड़ी मिलाकर १६० घड़ी शनि की निन्दित है। परन्तु विशेषकर सूर्य संक्रान्ति की ही घड़ियाँ अति निन्दित हैं ॥ ८० ॥

लग्नों की पंग्वादि संज्ञा—

घस्रे तुलाली बधिरौ मृगाश्वौ रात्रौ च सिंहाजवृषा दिवान्धाः ।
कन्यानृयुक्कर्कटका निशान्धा दिने घटोऽन्त्यो निशि पंगुसंज्ञः ॥८१॥

अन्वयः—घस्रे तुलाली बधिरौ स्याताम्, रात्रौ मृगाश्वौ बधिरौ स्याताम् । च (पुनः) सिंहाजवृषाः दिवान्धाः कन्यानृयुक्कर्कटकाः निशान्धाः सन्ति । दिने घटः (कुम्भः), निशि अन्त्यः मीनः पंगुसंज्ञः स्यात् ॥ ८१ ॥

भा०—तुला और वृश्चिक लग्न दिन में बहरे होते हैं । मकर और धनु रात्रि में बहरे होते हैं । मेष और वृष और सिंह लग्न दिन में अन्धे और कन्या मिथुन कर्क रात्रिमें अन्धे होते हैं । रात्रिमें मीन और दिन में कुम्भ पंगु होते हैं ॥ ८१ ॥

बधिरा धन्वितुलालयोऽपराह्णे
मिथुनं कर्कटकोऽङ्गना निशान्धाः ।
दिवसान्धा हरिगोक्रियास्तु कुब्जा
मृगकुम्भान्तिमभानि सन्ध्ययोर्हि ॥ ८२ ॥

अन्वयः—धन्वितुलालयः अपराह्णे बधिराः (भवन्ति) । मिथुनं कर्कटकः अंगना (एते) निशान्धाः । हरिगोक्रिया दिवसान्धाः (सन्ति) । तु (पुनः) मृगकुम्भान्तिमभानि सन्ध्ययोः हि (निश्चयेन) कुब्जा भवन्ति ॥ ८२ ॥

भा०—धनु तुला वृश्चिक दोपहर के बाद बधिर होतें हैं । मिथुन, कर्क कन्या रात्रि में अन्धा होते हैं । दिन में सिंह वृष मेष अन्धा होता है । मकर कुम्भ मीन दोनों संध्याओं में पंगु होते हैं ॥ ८२ ॥

पंगु आदि लग्नों के फल—

दारिद्र्यं बधिरतनौ दिवान्धलग्ने
वैधव्यं शिशुमरणं निशान्धलग्ने ।

पंग्वंगे निखिलधनानि नाशमीयुः
सर्वत्राधिपगुरुदृष्टिभिर्न दोषः ॥ ८३ ॥

अन्वयः—बधिरतनौ (विवाहे जाते सति) दारिद्र्यं स्यात्। दिवान्धलग्ने वैधव्यम्। निशान्धलग्ने शिशुमरणं, पंग्वंगे निखिलधनानि नाशं ईयुः, सर्वत्र अधिपगुरुदृष्टिभिः न दोषः स्यात् ॥ ८३ ॥

भा०—विवाह समय में बधिर लग्न हो तो दारिद्रय, दिवान्ध लग्न हो तो वैधव्य, निशान्ध लग्न हो तो सन्तान मरण, पंगु लग्न हो तो सम्पूर्ण धनका नाश होता है। परन्तु ये लग्न अपने अपने स्वामी और गुरु से दृष्ट हो तो उक्त दोष नहीं होता है ॥ ८३ ॥

विवाह में विहित नवांश—

कार्मुकतौलिककन्यायुग्मलवे झषगे वा।
यर्हि भवेदुपयामस्तर्हि सती खलु कन्या ॥ ८४ ॥

अन्वयः—कार्मुकतौलिककन्यायुग्मलवे वा झषगे सति यर्हि यदा, उपयामः (विवाहः) भवेत्तर्हि सा (कन्या) खलु (निश्चयेन) सती स्यात् ॥ ८४ ॥

भा०—यदि धनु, तुला, मिथुन, कन्या, मीन इन राशियों के किसी भी राशि के नवांश में विवाह हो तो कन्या सती (पतिव्रता) होती है ॥ ८४ ॥

नवांश में विशेष विचार—

अन्त्यनवांशे न च परिणेया काचन वर्गोत्तममिह हित्वा।
नो चरलग्ने चरलवयोगं तौलिमृगस्थे शशभृति कुर्यात् ॥८५॥

अन्वयः—इह वर्गोत्तमं हित्वा अन्त्यनवांशे काचन कन्या न परिणेया। तौलिमृगस्थे शशभृति चरलग्ने चरलवयोगं नो कुर्यात् ॥ ८५ ॥

भा०—लग्न के अन्तिम नवांश में किसी का विवाह न करे, किन्तु वह नवांश यदि वर्गोत्तम हो तो श्रेष्ठ है। तुला मकर में चन्द्रमा के रहने पर चर लग्न में चर नवांश का योग नहीं करना चाहिये ॥ ८५ ॥

लग्नभंगयोग—

व्यये शनिः खेऽवनिजस्तृतीये भृगुस्तनौ चन्द्रखला न शस्ताः।
लग्नेट् कविग्लौश्च रिपौ मृतौ ग्लौर्लग्नेट् शुभाराश्च मदे च सर्वे ॥

अन्वयः—शनिः व्यये, अवनिजः खे, भृगुः तृतीये, चन्द्रखलाः तनौ न शस्ताः। लग्नेट् कविः, ग्लौः, रिपौ, च [पुनः] ग्लौः लग्नेट् शुभाराः मृतौ, च (पुनः) सर्वे ग्रहाः मदे न शस्ताः भवन्ति ॥ ८६ ॥

भा०—विवाह लग्नसे बारहवें में शनि, दसवें में मंगल, तीसरे में शुक्र और लग्न में चन्द्रमा तथा पाप ग्रह हो तो विवाह शुभ नहीं है।

लग्नेश, शुक्र और चन्द्रमा छठे भाव में अशुभ हैं। चन्द्रमा लग्नेश शुभ ग्रह और मङ्गल आठवें स्थान में अशुभ हैं। परन्तु सप्तम में सभी ग्रह त्याज्य हैं ॥ ८६ ॥

त्र्यायाष्टषट्सु रविकेतुतमोऽर्कपुत्रा-
स्त्र्यायारिगः क्षितिसुतो द्विगुणायगोऽब्जः ।
सप्तव्ययाष्टरहितौ ज्ञगुरू सितोऽष्ट-
त्रिद्यूनषड्व्ययगृहान् परिहृत्य शस्तः ॥ ८७ ॥

अन्वयः—त्र्यायाष्टषट्सु रविकेतुतमोऽर्कपुत्राः शस्ताः (भवन्ति)। क्षितिसुतः त्र्यायारिगः, अब्जः द्विगुणायगः शुभः, ज्ञगुरू सप्तव्ययाष्टरहितौ शुभौ स्याताम्। अष्टत्रिद्यूनषड्व्ययगृहान् परिहृत्य सितः शस्तः स्यात् ॥ ८७ ॥

भा०—३।११।८।६ इन स्थानों में सूर्य केतु राहु और शनि, ३।११।६ इन स्थानों में मङ्गल, २।३।११ इन स्थानों में चन्द्रमा शुभ है। ७।१२।८ इन से भिन्न स्थानों में गुरु बुध शुभ होते हैं। ८।३।७।६।१२ इन स्थानों से भिन्न स्थानों में शुक्र शुभ होता है।

कर्तरी आदि दोषों का अपवाद—

पापौ कर्तरिकारकौ रिपुगृहे नीचास्तगौ कर्त्तरी-
दोषो नैव सितेऽरिनीचगृहगे तत् षष्ठदोषोऽपि न ।
भौमेऽस्ते रिपुनीचगे न हि भवेद् भौमोऽष्टमो दोषकृत्
नीचे नीचनवांशके शशिनि रिःफाष्टारिदोषोऽपि न ॥८८॥

अन्वयः—कर्तरिकारकौ पापौ (यदि) रिपुगृहे वा नीचास्तगौ तदा कर्तरीदोषो नैव भवति। अरिनीचगृहगे सिते तत्षष्ठदोषः अपि न भवेत्। भौमे अस्ते रिपुनीचगे अष्टमो भौमः दोषकृत् न हि भवेत्, शशिनि नीचे नीचनवांशके वा सति तस्य रिःफाष्टारिदोषः अपि न भवेत् ॥ ८८ ॥

भा०—यदि पापग्रह कर्तरी योग कारक होकर नीच में वा शत्रु के घर में अथवा वह अस्त हो तो कर्तरी जन्य दोष नहीं होता है। शत्रु के घरका वा नीचका शुक्र हो तो वह षष्ठ स्थान स्थित दोष नहीं देता है अर्थात् शुभ हो जाता है। मङ्गल अस्त हो या शत्रु अथवा नीच घर का हो तो भौमाष्टक दोष नहीं होता है। नीच का या नीच के नवांश का चन्द्रमा हो तो १२।८।६ स्थान स्थित होने का दोष नहीं होता है ॥ ८८ ॥

वर्षादि दोषका परिहार—

अब्दायनर्तु तिथिमासभपक्षदग्ध-
तिथ्यन्धकाणवधिरांगमुखाश्च दोषाः ।

नश्यन्ति विद्गुरुसितेष्विह केन्द्रकोणे
तद्वच्च पापविधुयुक्तनवांशदोषः ॥ ८९ ॥

अन्वयः—विद्गुरुसितेषु केन्द्रकोणे (स्थितेषु) अब्दायनर्तुतिथिमासभपक्षदग्धतिथ्यन्धकाणबधिरांगमुखा दोषा नश्यन्ति। तद्वच्च पापविधुयुक्तनवांशदोषः नश्यति ॥ ८९ ॥

भा०—बुध, गुरु, शुक्र ये केन्द्र त्रिकोण में हों तो वर्ष दोष, अयन दोष, ऋतुदोष, तिथि दोष, मास दोष, पक्ष दोष, दग्धतिथि, अन्ध काण बधिर लग्नादि दोषों का नाश होता है। जिस राशि में चन्द्रमा हो उस राशि में पाप ग्रह हो तो नवमांशजन्य दोष भी शान्त हो जाता है ॥ ८९ ॥

अन्य परिहार—।

केन्द्रे कोणे जीव आये रवौ वा लग्ने चन्द्रे वापि वर्गोत्तमे वा।
सर्वे दोषा नाशमायान्ति चन्द्रे लाभे तद्वद्दुर्मुहूर्त्तांशदोषाः॥९०॥

अन्वयः—जीवः केन्द्रे कोणे वा, रवौ आये वा, लग्ने वर्गोत्तमे अपि वा चन्द्रे वर्गोत्तमे (स्थिते सति) सर्वे दोषा नाशं आयान्ति। तद्वत् चन्द्रे लाभे सति दुर्मुहूर्तांशदोषाः नाशं आयान्ति ॥ ९० ॥

भा०—गुरु केन्द्र त्रिकोण में, सूर्य ग्यारहवें में, लग्न वर्गोत्तम में वा चंद्रमा वर्गोत्तम में हो तो सब दोष नाश हो जाते हैं। और चन्द्रमा ११ वें हो तो दुष्ट मुहूर्त जन्य दोष नाश हो जाता है ॥ ९० ॥

सर्व सामान्य दोषों का अपवाद—

त्रिकोणे केन्द्रे वा मदनरहिते दोषशतकं
हरेत्सौम्यः शुक्रो द्विगुणमपि लक्षं सुरगुरुः।
भवेदाये केन्द्रेऽङ्गप उत लवेशो यदि तदा
समूहं दोषाणां दहन इव तूलं शमयति ॥ ९१ ॥

अन्वयः—सौम्यः बुधः त्रिकोणे वा मदनरहिते केन्द्रे स्थितः दोषशतकं हरेत् (नाशयेत्)। शुक्रः द्विगुणं दोषं हरेत्। सुरगुरुः लक्षं दोषं हरेत्। अंगपः उत लवेशः यदि आये वा केन्द्रे स्यात्तदा दोषाणां समूहं दहनः (अग्निः) तूलमिव शमयति (नाशयति) ॥ ९१ ॥

भा०—९।५ इन स्थानों में तथा ७ से भिन्न केन्द्र १।४।१० में यदि बुध हो तो एक सौ दोष को नाश करता है, शुक्र उससे दूना दोष नाश करता है। गुरु लक्ष (एक लाख) दोष को नाश करता है। लग्नेश वा नवांशेश यदि आय ११ अथवा केन्द्र में हो तो दोष के समूह को नष्ट कर देता है। जिस तरह आग का एक कण सम्पूर्ण रुई के ढेर को नाश कर देता है ॥ ९१ ॥

विंशोपक—

द्वौ द्वौ ज्ञभृग्वोः पञ्चेन्दौ रवौ सार्धत्रयो गुरौ ।
रामा मन्दागुकेत्वारे सार्धैकैकं विंशोपकाः ॥ ९२ ॥

अन्वयः—ज्ञभृग्वोः द्वौ, द्वौ, इन्दौ पंच, रवौ सार्धत्रयः, गुरौ रामाः, मन्दागुकेत्वारे सार्धैकैकं विंशोपकाः भवन्ति ॥ ९२ ॥

भा०—बुध के २, शुक्र के २, चन्द्र के ५, सूर्य के ३।३०, गुरुके ३, शनि राहु केतु और मङ्गल के १०।।०, डेढ़ विंशोपक बल होता है॥९२॥

ग्रहों की श्वशुरादि संज्ञा—

श्वश्रूः सितोऽर्कः श्वसुरस्तनुस्तनु-
र्जामित्रपः स्याद्दयितो मनः शशी ।
एतद्बलं सम्प्रतिभाव्य तांत्रिक-
स्तेषां सुखं संप्रवदेद्विवाहतः ॥ ९३ ॥

अन्वयः—[सि]तः श्वश्रूः, अर्कः श्वशुरः, तनुः (लग्नं) तनुः (शरीरं), जामित्रपः दयितः, शशी मनः स्यात् । तान्त्रिकः एतद्बलं सम्प्रतिभाव्य विवाहतः तेषां सुखं सम्प्रवदेत् ॥ ९३ ॥

भा०—शुक्र सास, सूर्य श्वसुर, लग्न शरीर, जामित्र के स्वामी (सप्तमेश) पति तथा चन्द्रमा मन इनके बलों को देखकर विवाह से ज्यौतिषियों को उनके शुभाशुभ विचार करना चाहिये ॥ ९३ ॥

अन्त्यजों के विवाह का मुहूर्त—

कृष्णे पक्षे सौरिकुजार्केऽपि च वारे
वर्ज्ये नक्षत्रे यदि वा स्यात्करपीडा ।
संकीर्णानां तर्हि सुतायुर्धनलाभ-
प्रीतिप्राप्त्यै सा भवतीह स्थितिरेषा ॥ ९४ ॥

अन्वयः—कृष्णे पक्षे अपि च कुजार्के वारे वर्ज्ये नक्षत्रे यदि चेत् संकीर्णानां करपीडा (विवाहः) स्यात्तदा सा (करपीडा) इह सुतायुर्धनलाभप्रीतिप्राप्त्यै भवति एषा स्थितिर्ज्ञेया ॥ ९४ ॥

भा०—कृष्णपक्ष में शनि मंगल रविवार तथा विवाहमें वर्जित नक्षत्रों में संकीर्ण जातियों का विवाह हो तो बालक आयु, धन लाभ और प्रीति दायक होता है ॥ ९४ ॥

गान्धर्वादि विवाहार्थं नक्षत्रशुद्धि—

गान्धर्वादिविवाहेऽर्काद्वेद (४) नेत्र (२) गुणे (३) न्दवः ।
कु(१)युगां(४)गा(६)ग्नि(३)भू(१)रामा(३)स्त्रिपद्यामशुभः शुभाः ॥

अन्वयः—गान्धर्वादिविवाहे त्रिपद्यां अर्कात् (अर्कनक्षत्रात्) वेद-नेत्र-गुणेन्दवः कु-युगांगाग्नि-भू-रामाः क्रमशः अशुभाः शुभाश्च कथिताः ॥ ९५ ॥

भा०—गान्धर्वादि विवाह में त्रिपदी के विचार में सूर्य नक्षत्र से ४ अशुभ, दो शुभ, ३ अशुभ, बाद १ शुभ, १ अशुभ, बाद ४ शुभ ६ अशुभ, ३ शुभ, १ अशुभ, बाद ३ शुभ होता है ॥ ९५ ॥

विवाह में मण्डपादि कर्तव्य का मुहूर्त—

विधोर्बलमवेक्ष्य वा दलनकण्डनं वारकं
गृहांगणविभूषणान्यथ च वेदिकामण्डपान् ।
विवाहविहितोडुभिर्विरचयेत् तथोद्वाहतो
न पूर्वमिदमाचरेत् त्रिनवषण्मिते वासरे ॥ ९६ ॥

अन्वयः—विधोः बलं अवेक्ष्य विवाहविहितोडुभिः दलनकण्डनं वारकं गृहांगणविभूषणानि (कर्तव्यानि) । अथ वेदिकामण्डपान् च विरचयेत् । उद्वाहतः पूर्वं त्रिनवषण्मिते वासरे इदं पूर्वोक्तं कर्म न आचरेत् ॥ ९६ ॥

भा०—विवाह विहित नक्षत्रों में अथवा वर के और कन्या के चन्द्रबल को देखकर, दाल दलना, चावल कूटना, मङ्गल कलश, घर आदि को लीपना पोतना, वेदी और मण्डप बनाना चाहिये । किन्तु विवाह दिन से ३, ६, ९ दिन पूर्व इन कार्यों को नहीं करे ॥ ९६ ॥

वेदी प्रमाण—

हस्तोच्छ्राया वेदहस्तैः समन्तात्
तुल्या वेदी सद्मनो वामभागे ।
युग्मे घस्रे षष्ठहीने न पञ्च-
सप्ताहे स्यान्मण्डपोद्वासनं सत् ॥ ९७ ॥

अन्वयः—सद्मनः वामभागे हस्तोच्छ्राया समन्तात् वेदहस्तैः तुल्या वेदी (कर्तव्या) च (पुनः) षष्ठहीने युग्मे घस्रे पञ्चसप्ताहे मण्डपोद्वासनं सत् स्यात् ॥ ९७ ॥

भा०—घर के बायें भाग में एक हाथ ऊँची तथा चारो तरफ चार-चार हाथ वेदी बनाना शुभ है । तथा सम दिनों में छठा दिन छोड़ कर और पाँचवें वा सातवें दिन में मण्डप का उत्थापन शुभ है ॥ ९७ ॥

विवाहादि में तेल आदि लगाने की दिनसंख्या—

मेषादिराशिजवधूवरयोर्घटोऽथ
तैलादिलापनविधौ कथितात्र संख्या ।

शैला दिशः शरदिगक्षनगाद्रिबाण-
बाणाक्षबाणगिरयो विबुधैस्तु कैश्चित् ॥ ९८ ॥

अन्वयः—अत्र मेषादिराशिजवधूवरयोः वटोः च तैलादिलापनविधौ कैश्चित् विबुधैः (क्रमशः) शैला दिशः शरदिगक्षनगाद्रिबाणबाणाक्षबाणगिरयः इति संख्या कथिता ॥ ९८ ॥

भा०—मेषादि राशियों में उत्पन्न कन्या वर एवं बालक जिसका संस्कार होने वाला हो उसको तैल आदि लगाने में विद्वानों ने क्रमशः ७।१०।५।१०।५।७।७।५।५।५।५।७ दिनों की संख्या कही है ॥ ९८ ॥

मंडप में स्तम्भस्थापननिर्णय—

सूर्येऽङ्गनासिंहघटेषु शैवे स्तम्भोऽलिकोदण्डमृगेषु वायौ ।
मीनाजकुम्भे निर्ऋतौ विवाहे स्थाप्योऽग्निकोणे वृषयुग्मकर्के ॥९९।

अन्वयः—अंगनासिंहघटेषु (स्थिते) सूर्ये शैवे (ईशानकोणे), अलिकोदण्डमृगेषु वायौ, मीनाजकुम्भे निर्ऋतौ, वृषयुग्मकर्के अग्निकोणे विवाहे (प्रथमः) स्तम्भः स्थाप्यः ॥ ९९ ॥

भा०—कन्या, सिंह, तुला इन राशियों के सूर्य में ईशान कोण में, वृश्चिक, धनु, मकर इन राशियों के सूर्य में वायव्य कोण में, कुम्भ, मीन, मेष इन राशियों के सूर्य में नैर्ऋत्य कोण में, वृष मिथुन कर्क इन राशियों के सूर्य में अग्नि कोण में स्तम्भ गाड़ना चाहिये ॥ ९९ ॥

गोधूलिलग्न की प्रशंसा—

नास्यामृक्षं न तिथिकरणं नैव लग्नस्य चिन्ता
नो वा वारो न च लवविधिर्नो मुहूर्त्तस्य चर्चा ।
नो वा योगो न मृतिभवनं नैव जामित्रदोषो
गोधूलिः सा मुनिभिरुदिता सर्वकार्य्येषु शस्ता ॥१००॥

अन्वयः—अस्यां (गोधूल्यां) ऋक्षं (नक्षत्रं) न, तिथिकरणं न, लग्नस्य चिन्ता नैव, वारः न च (पुनः) लवविधिः न, मुहूर्तस्य चर्चा नो, न वा योगः, मृतिभवनं नैव, जामित्रदोषोऽपि न (स्यात्) सा (गोधूलिः) सर्वकार्येषु, मुनिभिः शस्ता शुभा उदिता (प्रोक्ता) ॥ १०० ॥

भा०—नक्षत्र, तिथि, करण, लग्न, दिन, नवांश, मुहूर्त, योग, अष्टम स्थान, जामित्र दोष इन सबों का विचार गोधूलि लग्न में नहीं करना चाहिये। गोधूलि सभी कार्य में प्रशस्त है ऐसा मुनियों ने कहा है ॥ १०० ॥

गोधूलिका भेद—

पिण्डीभूते दिनकृति हेमन्तर्तौ-
स्यादर्द्धास्ते तपसमये गोधूलिः।
सम्पूर्णास्ते जलधरमालाकाले
त्रेधा योज्या सकलशुभे कार्यादौ ॥ १०१ ॥

अन्वय—हेमन्तर्तौ दिनकृति (सूर्ये) पिण्डीभूते सति, तपसमये अर्धास्ते सति, जलधरमालाकाले सम्पूर्णास्ते सूर्ये सति गोधूलिः स्यात्। एवं त्रेधा (त्रिप्रकारा गोधूलिः) सकलशुभे कार्यादौ योज्या ॥ १०१ ॥

भा०—हेमन्त ऋतु में संध्या समय सूर्य जब गोलाकार हो जाते हैं, गर्मी में जब आधे अस्त हो जाते हैं तथा वर्षा ऋतुमें सम्पूर्ण अस्त होने पर गोधूलि होती है। ये तीनों प्रकार के गोधूलि समय सब शुभ कार्य में देखे ॥ १०१ ॥

गोधूलि में वर्जनीय—

अस्तं याते गुरुदिवसे सौरे सार्के
लग्नान्मृत्यौ रिपुभवने लग्ने चेन्दौ।
कन्यानाशस्तनुमदमृत्युस्थे भौमे
वोढुर्लाभे धनसहजे चन्द्रे सौख्यम् ॥१०२॥

अन्वयः—गुरुदिवसे अस्तं याते (सूर्ये), सौरे (शनिवासरे) सार्के गोधूलिः शुभा भवति। लग्नात् मृत्यौ रिपुभवने च (पुनः) लग्ने इन्दौ कन्यानाशः स्यात्। तथा तनुमदमृत्युस्थे भौमे वोढुः स्यात्, लाभे धनसहजे चन्द्रे सति सौख्यं स्यात् ॥ १०२ ॥

भा०—गुरुवार में सूर्यास्त होने पर और शनिवार में सूर्य रहते गोधूलि शुभ है। लग्न से अष्टम षष्ठ वा लग्न में ही चन्द्रमा हो तो कन्या का नाश होता है। लग्न अथवा सप्तम वा अष्टम में मङ्गल हो तो वर का नाश होता है। ११।२।३ इनमें चन्द्रमा रहें तो सुख होता है१०२

मेषादि राशियों में क्रम से सूर्य की स्पष्ट गतिकला—

मेषादिगेऽर्केऽष्टशरा (५८) नगाक्षाः (५७)
सप्तेषवः (५७) सप्तशरा (५७) गजाक्षाः (५८)।
गोऽक्षाः (५६) खतर्काः (६०) कुरसाः (६१) कुतर्काः (६१)
कवङ्गानि (६१) षष्टि (६०) र्नवपञ्च (५६) भुक्तिः ॥१०३॥

अन्वयः—मेषादिगे अर्के सति क्रमशः अष्टशराः, नगाक्षाः, सप्तेषवः, सप्त-

शरघ, गजाक्षाः, गोऽक्षाः, खतर्काः, कुरसाः, कुतर्काः, ववंगानि, षष्टिः, नवपञ्च भुक्तिः स्यात् ॥ १०३ ॥

भा०—मेष आदि बारहों राशियों में क्रम से ५८।५७।५७।५७।५८।५९।६०।६१।६१।६१।६०।५९ कला सूर्य की स्पष्ट गति होती है ॥ १०३ ॥

तात्कालिक सूर्य बनाने का प्रकार—

संक्रान्तियातघस्राद्यैर्गतिर्निघ्नी खषड् (६०) हृता ।
लब्धेनांशादिना योज्यं यातर्क्षं स्पष्टभास्करः । १०४॥

अन्वयः—संक्रान्तियातघस्राद्यैः गतिः निघ्नी खषड्हृता लब्धेन अंशादिना यातर्क्षं योज्यं सः स्पष्टभास्करः (स्यात्) ॥ १०४ ॥

भा०—अभीष्ट दिन में संक्रान्ति से बीते हुये दिन घटी पल को स्पष्ट गति से गुणाकर ६० का भाग देने से लब्धि अंश कलादि होती है। उस अंशकला विकला को सूर्य के भुक्त राशि में जोड़ दे तो वह स्पष्ट सूर्य होगा ॥ १०४ ॥

विवाह में विहित लग्नानयन—

तनोरिष्टांशकात्पूर्वं नवांशा दशसंगुणाः ।
रामाप्ता लब्धमंशाद्यं तनोर्वर्गादिसाधने ॥१०५॥

अन्वयः—तनोः इष्टांशकात् पूर्वं नवांशाः दशसंगुणा रामाप्ताः लब्धं वर्गादिसाधने तनोः अंशाद्यं स्यात् ॥ १०५ ॥

भा०—अभीष्ट नवमांश से पूर्व के नवांश की संख्या को १० से गुणाकर ३ का भाग दे जो लब्धि अंशादि हो वह षड्वर्गादि साधन में इष्ट लग्न का अंशादि होता है ॥ १०५ ॥

स्पष्टलग्न तथा स्पष्टसूर्य से इष्ट घटी साधन—

अर्काल्लग्नात्सायनाद्भोग्यभुक्तै-
र्भागैर्निघ्नात् स्वोदयात् खाग्निभक्तात् ।
भोग्यं भुक्तं चान्तरालोदयाढ्यं
षष्ट्या भक्तं स्वेष्टनाड्यो भवेयुः ॥१०६॥

अन्वयः—सायनात् अर्कात् लग्नात् क्रमेण भोग्ययुक्तैः भागैः स्वोदयात् निघ्नात्, खाग्निभक्तात् (क्रमशः) यत् भोग्यं भुक्तं तत् अन्तरालोदयाढ्यं इष्टनाड्यो भवेयुः ॥ १०६ ॥

भा०—सायन सूर्य के भोग्यांश और लग्न के भुक्तांश को अपने स्वदेशीय उदयमान से गुणा कर ३० का भाग देकर जो लब्धि हो उसमें सूर्य और लग्न के मध्य के राशियों के उदयमान को जोड़े, फिर उसमें ६० से भाग दे तो घट्यादि इष्टकाल हो जाता है ॥ १०६ ॥

इष्टकाल के लाने में विशेषता—

चेल्लग्नार्कौ सायनावेकराशौ
तद्विश्लेषघ्नोदयः खाग्निभक्तः ।
स्वेष्टः कालो लग्नमूनं यदार्का-
द्रात्रेः शेषोऽर्कात् सषड्भान्निशायाम् ॥१०७॥

अन्वयः—चेत् (यदि) सायनौ लग्नार्कौ एकराशौ स्यताम् तदा तद्विश्लेषघ्नोदयः खाग्निभक्तः स्वेष्टः कालः स्यात् । यदा लग्नं अर्कात् ऊनं स्यात्तदा रात्रेः शेषः स्यात् । तथा निशायां सषड्भात् अर्कात् लग्नं साध्यम् ॥ १०७ ॥

भा०—यदि सायन लग्न और सायन सूर्य एक राशि में हो तो दोनों के अन्तर (अन्तरांश) को राशि के उदयमान से गुनाकर गुणनफल में ३० के भाग देने से इष्टकाल होता है। सायन सूर्य से लग्न कम हो तो सूर्योदय से पहले रात्रि शेष इष्टकाल होता है। सूर्य में ६ राशि जोड़ कर रात्रिगत इष्टकाल से लग्नसाधन करना चाहिये ।१०७।

विवाह में त्याज्य दोष—

उत्पातान् सह पातदग्धतिथिभिर्दुष्टांश्च योगांस्तथा
चन्द्रेज्योशनसामथास्तमयनं तिथ्याः क्षयर्द्धी तथा ।
गण्डान्तं च सविष्टिसंक्रमदिनं तन्वंशपास्तं तथा
तन्वंशेशविधूनथाष्टरिपुगान् पापस्य वर्गांस्तथा ॥१०८॥

सेन्दुक्रूरखगोदयांशमुदयास्ताशुद्धिचण्डायुधान्
खार्जूरं दशयोगयोगसहितं जामित्रलत्ताव्यधम् ।
बाणोपग्रहपापकर्तरि तथा तिथ्यृक्षयोगोत्थितं
दुष्टं योगमथार्द्धयामकुलिकाद्यान् वारदोषानपि ॥१०९॥

क्रूराक्रान्तविमुक्तभं ग्रहणभं यत् क्रूरगन्तव्यभं
त्रेधोत्पातहतञ्च केतुहतभं सन्ध्योदितं भं तथा ।
तद्वच्च ग्रहभिन्नयुद्धगतभं सर्वानिमान् सन्त्यजे-
दुद्वाहे शुभकर्मसु ग्रहकृतान् लग्नस्य दोषानपि ॥११०॥

अन्वयः—पातदग्धतिथिभिः सह उत्पातान् तथा दुष्टान् योगान् अथ चन्द्रेज्योशनसां अस्तमयनं तथा तिथ्याः क्षयर्धी च (तथा) सविष्टिसंक्रमदिनं तथ । तन्वंशपास्तं, अथ अष्टरिपुगान् तन्वंशेशविधून्, पापस्य वर्गान् सेन्दुक्रूरखगोदयां ।

उदयास्ताशुद्धिचण्डायुधान् दशयोगयोगसहितं खार्जूरं जामित्रलत्ताव्यधम् तथा बाणोपग्रहपापकर्तरि तिथ्यृक्षयोगोत्थितं दुष्टं योगं अथ अर्धयामकुलिकाद्यान् वारदोषान् अपि क्रूराक्रान्तविमुक्तभं ग्रहणभं तथा यत् क्रूरगन्तव्यभं त्रेधोत्पातहतं तद्वत् ग्रहभिन्नयुद्धगतभं ग्रहकृतान् लग्नस्य दोषान् अपि इमान् सर्वान् उद्वाहे शुभकर्मसु च सन्त्यजेत् ॥ १०८-११० ॥

भा०—पात, व्यतीपात, दग्धतिथिसहित उत्पात, दुष्टयोग, चन्द्र, गुरु, शुक्र इन तीनों का अस्त, तिथिक्षय, तिथिवृद्धि, भद्रा सहित संक्रान्ति, लग्नेश और नवांशेश का अस्त, छठे और आठवें स्थित लग्नेश अंशेश और चन्द्रमा, पापग्रह के वर्ग, पापग्रह युत चन्द्रमा के लग्न और नवांश, उदयास्त शुद्धि चण्डायुध दश योग सहित खार्जूर, जामित्र, लत्ता वेध, बाण उपग्रह पाप कर्त्तरी तिथि नक्षत्र योग से उत्पन्न दुष्टयोग अर्धप्रहर कुलिक आदि योग वार दोष क्रूरग्रह जिस नक्षत्र में हो और जिस नक्षत्र को क्रूरग्रहने छोड़ दिया हो जिस नक्षत्र में क्रूर ग्रह जानेवाला हो, ग्रहण के नक्षत्र, त्रिविध उत्पात से हत नक्षत्र, इसी प्रकार ग्रहोंसे भिन्न खण्डित, जिस नक्षत्र में ग्रह के परस्पर युद्ध हुए हों उस नक्षत्र को तथा ग्रहकृत लग्नदोष इन सब को विवाह और शुभ कर्म में छोड़ देना चाहिये ॥ १०८-१०९-११० ॥

इति मुहूर्तचिन्तामणौ विवाहप्रकरणम् ।

वधूप्रवेशप्रकरणम्

वधूप्रवेश के लिये विहित काल—

समाद्रिपञ्चांकदिने विवाहाद्वधूप्रवेशोऽष्टिदिनान्तराले ।
शुभः परस्ताद्विषमाब्दमासदिनेऽक्षवर्षात् परतो यथेष्टम् ॥१॥

अन्वयः—विवाहात् अष्टिदिनान्तराले समाद्रिपञ्चाङ्कदिने वधूप्रवेशः शुभः स्यात् । परस्तात् विषमाब्दमासदिने शुभः स्यात् । अक्षवर्षात् परतः यथेष्टम् वधूप्रवेशः शुभः स्यात् ॥ १ ॥

भा०—विवाह से सोलह दिन के भीतर समदिनों में वा सातवें पाँचवें और नवें दिन में वधूप्रवेश शुभ होता है। सोलह दिन के बाद विषम वर्ष विषम दिन में वधूप्रवेश शुभ है। परन्तु ५ वर्ष के बाद किसी भी समय शुभ दिन में वधूप्रवेश हो सकता है ॥ १ ॥

वधूप्रवेश के नक्षत्र—

ध्रुवक्षिप्रमृदुश्रोत्रवसुमूलमघानिले ।
वधूप्रवेशः सन्नेष्टो रिक्तारार्के बुधे परैः ॥ २ ॥

अन्वयः—ध्रुवक्षिप्रमृदुश्रोत्रवसुमूलमघानिले वधूप्रवेशः सन् स्यात्। रिक्ताराके नेष्टः। परैः बुधेऽपि नेष्टः कथितः॥ २॥

भा०—ध्रुवसंज्ञक, क्षिप्रसंज्ञक, मृदुसंज्ञक, श्रवण, धनिष्ठा, मूल, मघा, स्वाती इन नक्षत्रों में वधूप्रवेश शुभ है। रिक्ता तिथि रवि और मंगलवार में अशुभ है। अन्य आचार्य ने बुधवार भी अशुभ कहा है॥ २॥

विवाह के प्रथम वर्ष की विशेषता—

ज्येष्ठे पतिज्येष्ठमथाधिके पतिं
हन्त्यादिमे भर्तृगृहे वधूः शुचौ।
श्वश्रूं सहस्ये श्वशुरं क्षये तनुं
तातं मधौ तातगृहे विवाहतः॥ ३॥

अन्वयः—विवाहतः आदिमे ज्येष्ठे भर्तृगृहे स्थिता वधूः पतिज्येष्ठं, आदिमे अधिकमासे पतिं तथा आदिमे शुचौ श्वश्रूं, आदिमे सहस्ये श्वशुरं, आदिमे क्षये च तनुं हन्ति। तथा आदिमे मधौ तातगृहे स्थिता वधूः तातं (पितरं) हन्ति॥३।

भा०—विवाह के बाद प्रथम ज्येष्ठ मास में पति के घरमें वधू रहे तो पति के बड़े भाई को, प्रथम मलमास में रहे तो पति को, प्रथम आषाढ़ में सास को, प्रथम पौष में ससुर को, प्रथम क्षयमास में अपने को ही नाश करती है। और प्रथम चैत्र में यदि पिता के घर रहे तो पिता का नाश करती है॥ ३॥

इति मुहूर्तचिन्तामणौ वधूप्रवेशप्रकरणम्।

द्विरागमनप्रकरणम्

द्विरागमनमुहूर्त—

चरेदथौजहायने घटालिमेषगे रवौ
रवीज्यशुद्धियोगतः शुभग्रहस्य वासरे।
नृयुग्ममीनकन्यकातुलावृषे विलग्नके
द्विरागमं लघुध्रुवे चरेऽस्रपे मृदूडुनि॥ १॥

अन्वयः—अथ ओजहायने (विषमे वर्षे) घटालिमेषगे रवौ, रवीज्यशुद्धियोगतः शुभग्रहस्य वासरे, नृयुग्ममीनकन्यकातुलावृषे विलग्नके, लघुध्रुवे चरे अस्रपे मृदूडुनि द्विरागमं चरेत्॥ १॥

भा०—विवाह से विषम वर्ष में कुम्भ, वृश्चिक, मेष के रवि में, रवि और गुरु शुद्ध हो, शुभ ग्रह के दिनों में, मिथुन, मीन, कन्या, तुला, वृष इन लग्नों में लघुसंज्ञक, ध्रुवसंज्ञक, चरसंज्ञक और मूल इन नक्षत्रों में द्विरागमन करना शुभ है॥ १॥

शुक्र का विचार तथा फल—

दैत्येज्यो ह्यभिमुखदक्षिणे यदि स्याद्
गच्छेयुर्न हि शिशुगर्भिणीनवोढाः ।
बालश्चेद् व्रजति विपद्यते नवोढा
चेद्वन्ध्या भवति च गर्भिणी त्वगर्भा ॥ २ ॥

अन्वयः—यदि दैत्येज्यः अभिमुखदक्षिणे स्यात्तदा शिशुर्गर्भिणीनवोढाः न गच्छेयुः । बालश्चेद् व्रजति तदा विपद्यते, नवोढा व्रजति चेत्तदा वन्ध्या भवति, च (पुनः) गर्भिणी नारी त्वगर्भा भवति ॥ २ ॥

भा०—द्विरागमन में शुक्र यदि सम्मुख या दक्षिण हो तो नवविवाहिता, गर्भवती और बच्चेवाली स्त्री को पति घर नहीं जाना चाहिये । यदि पति के घर जाय तो बच्चेवाली का बच्चा मर जाता है । गर्भिणी का गर्भपात हो जाता है और नव-विवाहिता वन्ध्या हो जाती है ॥ २ ॥

सम्मुख शुक्र का परिहार—

नगरप्रवेशविषयाद्युपद्रवे करपीडने विबुधतीर्थयात्रयोः ।
नृपपीडने नववधूप्रवेशने प्रतिभार्गवो भवति दोषकृन्न हि ॥३॥

अन्वयः—नगरप्रवेशविषयाद्युपद्रवे करपीडने विबुधतीर्थयात्रयोः नृपपीडने नववधूप्रवेशने प्रतिभार्गवः (सम्मुखशुक्रः) दोषकृत् न हि भवति ॥ ३ ॥

भा०—नगरप्रवेश में, किसी प्रकार के उपद्रव में, विवाह में, देवता के दर्शन और तीर्थयात्रा में, राजा से निर्वासित होने में, नववधूप्रवेश में सम्मुख शुक्र का दोष नहीं होता है ॥ ३ ॥

अन्य परिहार—

पित्र्ये गृहे चेत्कुचपुष्पसम्भवः
स्त्रीणां न दोषः प्रतिशुक्रसम्भवः ।
भृग्वंगिरोवत्सवसिष्ठकश्यपा-
त्रीणां भरद्वाजमुनेः कुले तथा ॥ ४ ॥

अन्वयः—चेत् यदि पित्र्ये गृहे स्त्रीणां कुचपुष्पसम्भवः स्यात्तदा प्रतिशुक्रसम्भवः दोषः न भवति । तथा भृग्वङ्गिरोवत्सवसिष्ठकश्यपात्रीणां तथा भरद्वाजमुनेः कुले प्रतिशुक्रसम्भवः दोषः न भवति ॥ ४ ॥

भा०—पिता के घर में कन्या को यदि पूर्ण युवती होने का चिह्न हो गया हो अथवा रजोवती हो गयी हो तो सम्मुख शुक्र का दोष नहीं

होता है। और भृगु अंगिरा वत्स वसिष्ठ कश्यप अत्रि और भरद्वाज गोत्र वालों को भी सम्मुख शुक्र का दोष नहीं होता है॥ ४॥

अग्निहोत्रप्रकरणम्।

अग्न्याधान का मुहूर्त—

स्यादग्निहोत्रविधिरुत्तरगे दिनेशे
मिश्रध्रुवान्त्यशशिशक्रसुरेज्यधिष्ण्ये।
रिक्तासु नो शशिकुजेज्यभृगौ न नीचे
नास्तंगते न विजिते न च शत्रुगेहे॥ १॥

अन्वयः—उत्तरगे दिनेशे मिश्रध्रुवान्त्यशशिशक्रसुरेज्यधिष्ण्ये अग्निहोत्रविधिः शुभः स्यात्। रिक्तासु नो, शशिकुजेज्यभृगौ नीचे न, अस्तंगतेऽपि न, विजिते न, शत्रुगृहे स्थिते च न शुभः स्यात्॥ १॥

भा०—उत्तरायण सूर्य में मिश्रसंज्ञक, ध्रुवसंज्ञक, रेवती, मृगशिरा, ज्येष्ठा और पुष्य इन नक्षत्रों में अग्न्याधान शुभ है। रिक्तातिथि में चन्द्रमा, मंगल, गुरु और शुक्र ये नीच हों अथवा अस्त हों या अन्य ग्रहोंसे विजित हों और शत्रुके घर में हों तो अग्न्याधान कर्म अशुभ है॥ १॥

लग्नशुद्धि—

नो कर्कनक्रझषकुम्भनवांशलग्ने
नोऽब्जे तनौ रविशशीज्यकुजे त्रिकोणे।
केन्द्रर्क्षषड्भवनगे च परैस्त्रिलाभ-
षट्खस्थितैर्निधनशुद्धियुते विलग्ने॥ २॥

अन्वयः—कर्कनक्रझषकुम्भनवांशलग्ने नो, अब्जे तनौ नो, शुभः। रविशशीज्यकुजे त्रिकोणे केन्द्रर्क्षषड्भवनगे च, परैः त्रिलाभषट्खस्थितैः, निधनशुद्धियुते विलग्ने अग्निहोत्रविधिः शुभो भवति॥ २॥

भा०—कर्क मकर मीन कुम्भ, इन राशियों के लग्न और नवांश में, जिस राशि में चन्द्रमा हो उस लग्न में अग्न्याधान न करे। सूर्य चन्द्रमा गुरु मंगल ये ग्रह त्रिकोण केन्द्र और छठे स्थानमें हों तो अग्न्याधान शुभ है। ३।११।६।१० इनमें अन्य ग्रह हो, लग्न से ८ वाँ स्थान शुद्ध हो तो अग्न्याधान शुभ है॥ २॥

याज्ञिक योग—

चापे जीवे तनुस्थे वा मेषे भौमेऽम्बरे द्युने।
षट्त्र्यायेऽब्जे रवौ वा स्याज्जातोऽग्नियजति ध्रुवम्॥ ३॥

अन्वयः—जीवे चापे तनुस्थे, वा भौमे मेषे तनुस्थे, अंबरे, द्युने, अब्जे (चन्द्रे), षट्त्र्याये रवौ वा षट्त्र्याये सति जाताग्निः ध्रुवं (निश्चयेन) यजति ॥ ३ ॥

भा०—धनु का गुरु लग्न में हो अथवा मेष का मंगल लग्न में हो अथवा सातवें या दशवें स्थान में हो और चन्द्रमा ३।६।११ में हो अथवा सूर्य ३।६।११ में हो तो इन योगों में अग्न्याधान करने वाला अवश्य यज्ञ करने वाला होता है ॥ ३ ॥

इति मुहूर्तचिन्तामणौ अग्न्याधानप्रकरणं समाप्तम् ।

राज्याभिषेकप्रकरणम् ।

राज्याभिषेकार्थं कालशुद्धि—

राजाभिषेकः शुभ उत्तरायणे गुर्विंदुशुक्रैरुदितैर्बलान्वितैः ।
भौमार्कलग्नेशदशेशजन्मपैर्नो चैत्ररिक्तारनिशामलिम्लुचे ॥ १ ॥

अन्वयः—उत्तरायणे गुर्विन्दुशुक्रैः उदितैः भौमार्कलग्नेशदशेशजन्मपैः बलान्वितैः राजाभिषेकः शुभः स्यात् । चैत्ररिक्तारनिशामलिम्लुचे नो शुभः स्यात् ॥

भा०—सूर्य उत्तरायण में हो, गुरु चन्द्रमा और शुक्र उदित हो और मंगल सूर्य तात्कालिक लग्न का स्वामी, सूर्य दशा का स्वामी और जन्म लग्नेश बली हो तो राज्याभिषेक शुभ होता है। चैत्र मास रिक्ता तिथि मंगलवार और रात्रि ये राज्याभिषेक में अशुभ हैं ॥ १ ॥

नक्षत्र एवं लग्नशुद्धि—

शाक्रश्रवःक्षिप्रमृदुध्रुवोडुभिः
शीर्षोदये वोपचये शुभे तनौ ।
पापैस्त्रिषष्ठायगतैः शुभग्रहैः
केन्द्रत्रिकोणायधनत्रिसंस्थितैः ॥ २ ॥

अन्वयः—शाक्रश्रवःक्षिप्रमृदुध्रुवोडुभिः शीर्षोदये वा उपचये शुभे तनौ, पापैः त्रिषष्ठायगतैः, शुभग्रहैः केन्द्रत्रिकोणायधनत्रिसंस्थितैः राजाभिषेकः प्रशस्तो भवति ॥ २ ॥

भा०—ज्येष्ठा श्रवण क्षिप्रसंज्ञक मृदुसंज्ञक ध्रुवसंज्ञक नक्षत्र में, शीर्षोदय लग्न में या उपचय राशि के शुभ लग्न में, पापग्रह ३।६।११ में हो और शुभग्रह केन्द्र त्रिकोण ११।२।३ इन स्थानों में हो तो राज्याभिषेक शुभ है ॥ २ ॥

लग्न से पाप का फल एवं परिहार—

पापैस्तनौ रुङ् निधने मृतिः सुते
पुत्रार्त्तिरर्थव्ययगैर्दरिद्रता ।

स्यात् खेऽलसो भ्रष्टपदो द्यूनाम्बुगैः
सर्वं शुभं केन्द्रगतैः शुभग्रहैः ॥ ३ ॥

अन्वयः—पापैः तनौ, लग्ने रुक्, निधने स्थितैः मृतिः, सुते [पञ्चमे] पुत्रार्तिः, अर्थव्ययगैः दरिद्रता, खे (दशमे पापैः) अलसः स्यात् । द्युनाम्बुगैः पापैः भ्रष्टपदः स्यात्, केन्द्रगतैः शुभग्रहैः सर्वं शुभं स्यात् ॥ ३ ।

भा०—पापग्रह लग्न में हो तो सिंहासन पर बैठने वाला राजा रोगी, ८ वें में पापग्रह हो तो मृत्यु, ५ वें में पाप ग्रह हो तो पुत्र कष्ट, दूसरे बारहवें में पापग्रह हो तो दरिद्र, १० वें में आलसी, ७ वें और ४ थे में राज्यच्युत और शुभ ग्रह केन्द्र में हो तो सब शुभ होता है ॥

सम्पत्तिका स्थिर योग—

गुरुर्लग्नकोणे कुजोऽरौ सितः खे
स राजा सदा मोदते राजलक्ष्म्या ।
तृतीयायगौ सौरिसूर्यौ खबंध्वो-
र्गुरुश्चेद् धरित्री स्थिरा स्यान्नृपस्य ॥ ४ ॥

अन्वयः—गुरुः लग्नकोणे, कुजः अरौ, सितः खे [दशमे स्थितस्तदा] स राजा सदा राजलक्ष्म्या मोदते । सौरिसूर्यौ तृतीयायगौ, गुरुः खबन्ध्वोः तदा नृपस्य धरित्री स्थिरा स्यात् ॥ ४ ॥

भा०—राज्याभिषेक समय में या लग्न या ५ और ६ वें स्थान में गुरु, ६ ठे स्थान में मंगल, दशवें शुक्र हो तो वह राजा सदा राज्य-लक्ष्मी से युत होकर आनन्द करता है । शनि ३ रे, सूर्य ११ वें और १०।४ इनमें गुरु हो तो राज्य सदैव स्थिर रहता है ॥ ४ ॥

इति मुहूर्तचिन्तामणौ राजाभिषेकप्रकरणम्

यात्राप्रकरणम् ।

यात्राके मुहूर्तकी कुछ विशेषतायें—

यात्रायां प्रविदितजन्मनां नृपाणां
दातव्यं दिवसमबुद्धजन्मनाश्च ।
प्रश्नाद्यैरुदयनिमित्तमूलभूते-
र्विज्ञाते ह्यशुभशुभे बुधः प्रदद्यात् ॥ १ ॥

अन्वयः—प्रविदितजन्मनां नृपाणां यात्रायां दिवसं दातव्यम् । अबुद्धजन्मनां

नृपाणां च प्रदनार्थं : उदयनिमित्तमूलभूतैः अशुभशुभे विज्ञाते बुधः यात्रायां दिवसं प्रदद्यात् ॥ १ ॥

भा०—जिनका जन्मसमय ज्ञात हो उन राजा आदि जनों को जन्मनक्षत्र राशि आदि से शुभ समय चन्द्र तारा बल आदि देखकर यात्रा समय बना कर देने चाहिये। तथा जिनका जन्मसमय नहीं ज्ञात हो उनको प्रश्न लग्नादि से निमित्त शकुनादि द्वारा शुभाशुभ विचार करके दिन (यात्रा समय) बना कर दें ॥ १ ॥

यात्रा के लिये प्रश्न से फल—

जननराशितनू यदि लग्नगे तदधिपौ यदि वा तत एव वा।
त्रिरिपुखायगृहं यदि वोदयो विजय एव भवेद्वसुधापतेः ॥ २ ॥

अन्वयः—यदि जननराशितनू लग्नगे वा तदधिपौ लग्नगौ वा तत एव त्रिरिपुखायगृहं यदि उदयः स्यात्तदा वसुधाधिपतेः विजय एव स्यात् ॥ २ ॥

भा०—यात्रा करने वालों की जन्मराशि या जन्मलग्न यदि प्रश्न कालिक या यात्राकालिक लग्नमें हो, अथवा जन्मराशीश या जन्म-लग्नेश अथवा उनसे ३, ६, १०, ११ वीं राशि लग्न में हो तो पूछने वाले राजा की (राजा यहाँ उपलक्षण है, अन्य जनों की भी) विजय होती है ॥ २ ॥

अन्ययोग—

रिपुजन्मलग्नभमथाधिपौ तयोस्तत एव वोपचयसद्म चेद्भवेत्।
हिबुके द्युनेऽथ शुभवर्गकस्तनौ यदि मस्तकोदयगृहं तदा जयः॥

अन्वयः—रिपुजन्मलग्नभं अथवा तयोः अधिपौ वा तत एव उपचयसद्म चेद् हिबुके द्युनेऽथ भवेत्तदा वसुधापतेः जयः स्यात्। अथ यदि तनौ शुभवर्गकः वा मस्तकोदयगृहं तनौ स्यात्तदाऽपि जयः स्यात् ॥ ३ ॥

भा०—शत्रु की जन्मलग्न या जन्मराशि अथवा दोनों के स्वामी या उनसे उपचय (३,६,१०,११) स्थान में से कोई प्रश्नलग्न या यात्रा लग्न से ४,७ स्थान में हो, अथवा शुभ ग्रह का वर्ग लग्न में हो या शीर्षोदय राशि (मिथुन, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, कुम्भ) लग्न में हो तो भी विजय होती है ॥ ३ ॥

शकुन से विजययोग—

यदि पृच्छितनौ वसुधा रुचिरा शुभवस्तु यदि श्रुतिदर्शनगम्।
यदि पृच्छति चादरतश्च शुभग्रहदृष्टयुतं चरलग्नमपि ॥ ४ ॥

अन्वयः—यदि पृच्छितनौ वसुधा रुचिरा स्यात्, यदि वा शुभवस्तु श्रुतिदर्शनं भवेत्तथा यदि आदरतः पृच्छति अपि च शुभग्रहदृष्टयुतं चरलग्नं यदि स्यात् तदा तस्य जय एव स्यात् ॥ ४ ॥

भा०—यदि प्रश्न समय में पृथ्वी देखने में शोभायुक्त मालूम हो, मांगलिक वस्तु या शब्द देखने या सुनने में आवे, तथा पूछनेवाला यदि आदर से पूछे तथा शुभ ग्रह से दृष्ट या युत चरराशि का लग्न हो तो प्रष्टा की विजय होती है ॥ ४ ॥

अन्य प्रकार—

विधुकुजयुतलग्ने सौरिदृष्टेऽथ चन्द्र
मृतिभमदनसंस्थे लग्नगे भास्करेऽपि ।
हिबुकनिधनहोराद्यूनगे वापि पापे
सपदि भवति भंगः प्रश्नकर्त्तुस्तदानीम् ॥ ५ ॥

अन्वयः—अथ विधुकुजयुतलग्ने सौरिदृष्टे सति, चन्द्रे मृतिभमदनसंस्थे, अपि वा भास्करे लग्नगे सति अपि वा पापे (पापग्रहे) हिबुकनिधनहोराद्यूनगे, तदानीं प्रश्नकर्तुः सपदि भंगः भवति ॥ ५ ॥

भा०—यदि लग्नमें चन्द्रमा और मंगल शनिसे दृष्ट हो अथवा चन्द्रमा यदि लग्न से ८वें, वा ७ वें स्थान में हो, वा सूर्य लग्न में हो और अन्य पापग्रह ४, ८, १, ७ भावों में हो तो प्रश्नकर्ता की पराजय समझना चाहिये ॥ ५ ॥

अन्य फल—

त्रिकोणे कुजात्सौरिशुक्रज्ञजीवा
यदैकोपि वा नो गमोऽर्काच्छशी वा ।
बलीयांस्तु मध्ये तयोर्यो ग्रहः स्यात्
स्वकीयां दिशं प्रत्युतासौ नयेच्च ॥ ६ ॥

अन्वयः—सौरिशुक्रज्ञजीवाः (एते सर्वेऽपि) वा एकोऽपि यदा कुजात् त्रिकोणे स्थितः, वा शशी अर्कात् त्रिकोणे स्यात्तदा गमः गमनं नो भवेत् । प्रत्युत तयोर्मध्ये यः ग्रहः बलीयान् स्यात् असौ स्वकीयां (निजां) दिशं नयेत् ॥ ६ ॥

भा०—यदि मङ्गल से ५, ६ स्थान में शनि, शुक्र, बुध और गुरु हो या इनमें से एक भी हो अथवा सूय से यदि चन्द्रमा ५, ६ में हो तो यात्रा नहीं होती है। यदि यात्रा हो भी तो दोनों में जो प्रबल हो वह ग्रह अपनी दिशा में ले जाता है। अर्थात् इस योग में गन्तव्य स्थान में नहीं पहुँचता है ॥ ६ ॥

अन्ययोग—

प्रश्ने गम्यदिगीशात् खेटः पञ्चमगो यः ।
बोभूयाद् बलयुक्तः स्वामाशां नयतेऽसौ ॥ ७ ॥

अन्वयः—प्रश्ने (प्रश्नकाले) गम्यदिगीशात् यः पञ्चमगः खेटः बलयुक्तः बोभूयात् असौ (बलवान् खेटः) स्वां आशां नयते ॥ ७ ॥

भा०—यदि प्रश्न समय में गन्तव्य दिशा के स्वामी से पञ्चम स्थान में कोई बलवान् ग्रह हो तो वह भी अपनी ही दिशा को ले जाता है ॥ ७ ॥

यात्रासमय—

धनुर्मेषसिंहेषु यात्रा प्रशस्ता
शनिज्ञोशनोराशिगे चैव मध्या ।
रवौ कर्कमीनालिसंस्थेऽतिदीर्घा
जनुःपञ्चसप्तत्रिताराश्च नेष्टाः ॥ ८ ॥

अन्वयः—धनुर्मेषसिंहेषु रवौ स्थिते यात्रा प्रशस्ता स्यात् । च (पुनः) शनिज्ञोशनोराशिगे रवौ यात्रा मध्या स्यात् । कर्कमीनालिसंस्थे रवौ अतिदीर्घा यात्रा स्यात् । तथा जनुःपञ्चसप्तत्रिताराश्च नेष्टा भवन्ति ॥ ८ ॥

भा०—धनु, मेष और सिंह राशि में सूर्य हो तो यात्रा प्रशस्त होती है। शनि बुध और शुक्र की राशि में सूर्य हो तो यात्रा मध्यम तथा कर्क मीन और वृश्चिक में सूर्य हो तो यात्रा लम्बी होती है। तथा यात्रा में १, ५, ७, ३ तारा अशुभ होती है ॥ ८ ॥

विहित तिथि एवं नक्षत्र—

न षष्ठी न च द्वादशी नाष्टमी नो सिताद्या तिथिः पूर्णिमामा न रिक्ता।
हयादित्यमित्रेन्दुजीवान्त्यहस्तश्रवोवासवैरेव यात्रा प्रशस्ता ॥ ९ ॥

अन्वयः—षष्ठी न (शुभा), द्वादशी न, अष्टमी न, सिताद्या तिथिः पूर्णिमा अमा रिक्ता च यात्रायां न प्रशस्ता स्यात् । हयादित्यमित्रेन्दुजीवान्त्यहस्तश्रवोवासवैः एव नक्षत्रैः यात्रा प्रशस्ता स्यात् ॥ ९ ॥

भा०—यात्रा में ६, १२, ८ तिथियाँ तथा शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा, पूर्णिमा, अमावस्या, रिक्ता तिथियाँ भी प्रशस्त नहीं हैं। नक्षत्रों में अश्विनी, पुनर्वसु, अनुराधा, मृगशिरा, पुष्य, रेवती, हस्त, श्रवण और धनिष्ठा ये ही नौ नक्षत्र यात्रा में प्रशस्त हैं ॥ ९ ॥

दिशाओं में वारशूल एवं नक्षत्रशूल—

न पूर्वदिशि शक्रभे न विधुसौरिवारे तथा
न चाजपदभे गुरौ यमदिशीनदैत्येज्ययोः ।
न पाशिदिशि धातृभे कुजबुधेऽर्यमर्क्षे तथा
न सौम्यककुभि व्रजेत् स्वजयजीवितार्थी बुधः ॥ १० ॥

अन्वयः—स्वजयजीवितार्थी बुधः पूर्वदिशि शक्रभे [ज्येष्ठाभे] तथा विधुसौरिवारे न गच्छेत् । च [पुनः] अजपदभे गुरौ च यमदिशि [दक्षिणस्यां]

न व्रजेत् । इनदैत्येज्ययोः धातृभे पाशिदिशि न व्रजेत्, कुजबुधे अर्यमर्क्षे सौम्यककुभि (उत्तरस्यां) न गच्छेत् ॥ १० ॥

भा०—ज्येष्ठा नक्षत्र और शनि सोमवार में पूर्व दिशा में यात्रा न करे । पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र और गुरुवार में दक्षिण दिशा में न जाय । रवि और शुक्रवार, रोहिणी नक्षत्र में पश्चिम न जाय । मङ्गल, बुधवार तथा उत्तरफाल्गुनी नक्षत्र में उत्तर दिशा की यात्रा अपनी विजय और जीवन चाहने वाला जन न करे ॥ १० ॥

त्याज्यकाल—

पूर्वाह्णे ध्रुवमिश्रभैर्न नृपतेर्यात्रा न मध्याह्नके
तीक्ष्णाख्यैरपराह्णके न लघुभैर्नो पूर्वरात्रे तथा ।
मित्राख्यैर्न च मध्यरात्रिसमये चोग्रैस्तथा नो चरै
रात्र्यन्ते हरिहस्तपुष्यशशिभिः स्यात् सर्वकाले शुभा ॥११॥

अन्वयः—पूर्वाह्णे ध्रुवमिश्रभैः नृपतेः यात्रा न शुभा, मध्याह्नके तीक्ष्णाख्यैः न शुभा, अपराह्णके लघुभैः, पूर्वरात्रे मित्राख्यैः तथा मध्यरात्रिसमये उग्रैः, चरैः रात्र्यन्ते यात्रा न शुभा स्यात् । हरिहस्तपुष्यशशिभिः सर्वकाले नृपतेः यात्रा शुभा स्यात् ॥ ११ ॥

भा०—ध्रुव और मिश्र संज्ञक नक्षत्रों में पूर्वाह्ण काल में राजा की यात्रा शुभ नहीं होती है । मध्याह्न काल में तीक्ष्ण संज्ञक नक्षत्रों में यात्रा शुभ नहीं होती है । अपराह्ण समय में, लघुसंज्ञक नक्षत्रों में, यात्रा नहीं शुभ होती है । मित्र संज्ञक नक्षत्रों में, रात्रि के पूर्वभाग में, यात्रा शुभ नहीं होती और उग्र संज्ञक नक्षत्रों में, रात्रि के मध्य भाग में, शुभ नहीं होती तथा चर नक्षत्रों में, रात्रि के अन्तिम भाग में, यात्रा शुभ नहीं होती । श्रवण, हस्त, पुष्य और मृगशिरा इन ४ नक्षत्रों में सब काल में यात्रा शुभ होती है ॥ ११ ॥

अशुभ नक्षत्र और उनकी त्याज्य घड़ियाँ—

पूर्वाग्निपित्र्यन्तकृतारकाणां भूपप्रकृत्युग्रतुरङ्गमाः स्युः ।
स्वातीविशाखेन्द्रभुजंगमानां नाड्यो निषिद्धा मनुसम्मिताश्च ॥

अन्वयः—पूर्वाग्निपित्र्यन्तकतारकाणां भूपप्रकृत्युग्रतुरङ्गमा नाड्यः च (पुनः) स्वातीविशाखेन्द्रभुजङ्गमानां मनुसम्मिताः नाड्यः निषिद्धा भवन्ति ॥ १२ ॥

भा०—तीनों पूर्वा, कृत्तिका मघा और भरणी इन नक्षत्रोंमें क्रमसे आदि को १६, २१, ११ और ७ घड़ी अत्यन्त निषिद्ध है । स्वाती, विशाखा, ज्येष्ठा और आश्लेषा इन सबों की आरम्भ से १४ घड़ी अतिशय निषिद्ध है । अर्थात् ये नक्षत्र यात्रा में निन्द्य हैं । आवश्यकता में इन नक्षत्रों की उक्त घड़ी को अवश्य त्याग करके शेष घड़ी में यात्रा करनी चाहिये ॥ १२ ॥

मतान्तर से त्याज्य नक्षत्र—

पूर्वार्द्धमाग्नेयमघानिलानां त्यजेद्धि चित्राहियमोत्तरार्द्धम् ।
नृपः समस्तां गमने जयार्थी स्वातीं मघाश्चोशनसो मतेन ॥१३॥

अन्वयः—जयार्थी नृपः गमने आग्नेयमघानिलानां पूर्वार्धं, चित्राहियमोत्तरार्धं, हि (निश्चयेन) त्यजेत् । उशनसः मतेन स्वातीं मघां च समस्तां त्यजेत् ॥ १३ ॥

भा०—कृत्तिका, मघा, स्वाती, इन नक्षत्रों के पूर्वार्ध तथा चित्रा, आश्लेषा और भरणी के उत्तरार्ध को यात्रा में त्याग देना चाहिये। तथा उशना आचार्य के मत से स्वाती और मघा को विजय चाहनेवाले समस्त त्याग कर दें ॥ १३ ॥

नक्षत्रों की जीव मृत्यु संज्ञा—

तमोभुक्तताराः स्मृता विश्वसंख्याः शुभो जीवपक्षो मृताश्चापि भोग्याः
तदाक्रान्तभं कर्त्तरीसंज्ञमुक्तं ततोऽक्षेन्दुसंख्यं भवेद्ग्रस्तनाम॥१४॥

अन्वयः—विश्वसंख्याः तमोभुक्तताराः जीवपक्षः शुभः स्मृतः । च (पुनः) भोग्याः विश्वसंख्याः मृता उक्ताः । तदाक्रान्तभं कर्तरी, ततः राहोः अक्षेन्दुसंख्यं ग्रस्तनाम भवेत् ॥ १४ ॥

भा०—राहु के भुक्त (जिसमें राहु हो उसको छोड़ कर आगे के) १३ नक्षत्र जीव पक्ष तथा शुभ कहे गये हैं। तथा भोग्य (जिस नक्षत्र में राहु हो उससे पीछे के) १३ नक्षत्र मृत पक्ष (अशुभ) कहे गये हैं। जिसमें राहु वर्तमान हो वह नक्षत्र कर्तरी तथा उससे १५ वाँ नक्षत्र ग्रस्त संज्ञक कहा गया है ॥ १४ ॥

जीवपक्ष आदि के फल—

मार्त्तण्डे मृतपक्षगे हिमकरश्चेज्जीवपक्षे शुभा
यात्रा स्याद्विपरीतगे क्षयकरी द्वौ जीवपक्षे शुभा ।
ग्रस्तर्क्षे मृतपक्षतः शुभकरं ग्रस्तात्तथा कर्त्तरी
यायीन्दुः स्थितिमान् रविर्जयकरौ तौ द्वौ तयोर्जीवगौ ॥

अन्वयः—मार्तण्डे (सूर्ये) मृतपक्षगे चेत् हिमकरः [शशी] जीवपक्षे तदा यात्रा शुभा स्यात् । विपरीतगे क्षयकरी स्यात् । द्वौ [सूर्याचन्द्रमसौ] यदि जीवपक्षे [स्याताम्] तदा यात्रा शुभा स्यात् । ग्रस्तर्क्षं मृतपक्षतः शुभकरं, ग्रस्तात् [शुभकरी] इन्दुः यायी, रविः स्थितिमान् तौ द्वावपि जीवगौ सन्तौ तयोः जयकरौ स्याताम् ॥ १५ ॥

भा०—यदि सूर्य मृत पक्ष नक्षत्र में और चन्द्रमा जीव पक्ष नक्षत्र में हो तो यात्रा अत्यन्त शुभप्रद होती है। इससे विपरीत (अर्थात जीव-पक्षमें सूर्य और मृत पक्षमें चन्द्रमा) हो तो यात्रा हानि (पराजय) करानेवाली होती है। यदि सूर्य और चन्द्रमा दोनों जीव पक्ष

में ही हो तो भी यात्रा शुभ होती है। मृत पक्ष नक्षत्रों की अपेक्षा ग्रस्त नक्षत्र शुभकारक तथा ग्रस्त नक्षत्र की अपेक्षा कर्तरी नक्षत्र शुभ होता है। चन्द्रमा यायी (पहिले युद्ध में चलने वाला) अर्थात् मुद्दई, तथा सूर्य स्थायी (मुद्दालेह) ग्रह है। ये जीव पक्ष में रह कर अपने अपने पक्षों को विजय कराने वाले हैं। अर्थात् चन्द्रमा जीव पक्ष में हो तो मुद्दई की और सूर्य जीव पक्ष में हो तो मुद्दालेह की विजय तथा दोनों जीव पक्ष में हो तो दोनों में यथोचित सन्धि होती है॥ १५॥

अकुल, कुल तथा कुलाकुल नक्षत्र—

स्वात्यन्तकाहिवसुपौष्णकरानुराधा-
दित्यध्रुवाणि विषमास्तिथयोऽकुलाः स्युः।
सूर्येन्दुमन्दगुरवश्च कुलाकुला ज्ञो
मूलाम्बुपेशत्रिधिभं दशषड्द्वितिथ्यः॥१६॥
पूर्वाश्वीज्यमघेन्दुकर्णदहनद्वीशेन्द्रचित्रास्तथा
शुक्रारौ कुलसंज्ञकाश्च तिथयोऽर्काष्टेन्द्रवेदैर्मिताः।
यायी स्यादकुले जयी च समरे स्थायी च तद्वत्कुले
सन्धिः स्यादुभयोः कुलाकुलगणे भूमीशयोर्युध्यतोः॥१७॥

गण	अकुलगण	कुलाकुल	कुलगण
नक्षत्र	भ. पुन. श्ले. उफा. ह. स्वा. अनु. मू. उषा. ध. उभा. रे.	मूल, शत. आर्द्रा. अभि.	अश्वि. कृ. मृग. पुष्य. म. पूफा. चि. विशा. ज्ये. पूषा. श्रव. पूभा.
तिथि	१, ३, ५, ७, ९, ११. १३, १५	२, ६, १०	४, ८, १२, १४,
वार	श. र. चं. बृ..	बुध.	मङ्गल, शुक्र.

अन्वयः—स्वात्यन्तकाहिवसुपौष्णकरानुराधादित्यध्रुवाणि (नक्षत्राणि) विषमाः तिथयः, सूर्येन्दुमन्दगुरवश्च अकुलाः स्युः। ज्ञो बुधः, मूलाम्बुपेशत्रिधिभं नक्षत्रं, दशषड्द्वितिथ्यः कुलाकुलाः स्युः। पूर्वाश्वीज्यमघेन्दुकर्णदहनद्वीशेन्द्रचित्राः तथा शुक्रारौ अर्काष्टेन्द्रवेदैर्मिताः तिथयः कुलसंज्ञकाः स्युः। अकुले समरे (संग्रामे) यायी जयी स्यात्। तद्वत् कुले स्थायी जयी स्यात्। कुलाकुलगणे युध्यतोः उभयोः भूमीशयोः सन्धिः स्यात्॥ १६-१७॥

भा०—स्वाती, भरणी, आश्लेषा, धनिष्ठा, रेवती, हस्त, अनुराधा, पुनर्वसु, ध्रुवसंज्ञक (३ उत्तरा, रोहिणी) ये नक्षत्र तथा विषम (१,

३, ५ आदि) तिथियाँ एवं रवि, सोम, शनि और गुरुवार ये अकुल नामक गण हैं। तथा मूल, शतभिषा, आर्द्रा, अभिजित् ये नक्षत्र १०, ६, २ ये तिथियाँ और बुधवार ये कुलाकुल गण हैं। तथा ३ पूर्वा, अश्विनी, पुष्य, मघा, मृगशिरा, श्रवण, कृत्तिका, विशाखा, ज्येष्ठा, चित्रा ये नक्षत्र, शुक्र, मङ्गलवार, १२, ८, १४, ४ ये तिथियाँ कुल नामक गण हैं। अकुल संज्ञक नक्षत्रादि में यायी (मुदई) की विजय और कुल संज्ञक नक्षत्रादि में स्थायी (मुद्दालेह) की विजय होती है। तथा कुलाकुल नामक नक्षत्रादि में युद्धार्थ यात्रा करने से दोनों में सन्धि हो जाती है ॥ १६–१७ ॥

पथिराहुचक्र—

स्युर्धर्मे दस्रपुष्योरगवसुजलपद्वीशमैत्राण्यथार्थे
याम्याजांघ्रीन्द्रकर्णादितिपितृपवनोडून्यथो भानि कामे ।
वह्न्यार्द्राबुध्न्यचित्रानिर्ऋतिविधिभगाख्यानि मोक्षेऽथ रोहि-
ण्यर्यम्णाप्येन्दुविश्वान्तिमभदिनकरर्क्षाणि पथ्यादिराहौ ॥१८॥

अन्वयः—पथ्यादिराहौ दस्रपुष्योरगवसुजलपद्वीशमैत्राणि (नक्षत्राणि) धर्मे स्युः। अथ याम्याजांघ्रीन्द्रकर्णादितिपितृपवनोडूनि अर्थे स्युः। अथो वह्न्यार्द्राबुध्न्यचित्रानिर्ऋतिविधिभगाख्यानि भानि कामे स्युः। अथ रोहिण्यर्यम्णाप्येन्दुविश्वान्तिमभदिनकरर्क्षाणि मोक्षे स्युः। १८॥

भा०—अश्विनी, पुष्य, आश्लेषा, धनिष्ठा, शतभिषा, विशाखा और अनुराधा ये धर्म के नक्षत्र हैं। भरणी, पूर्वभाद्र, ज्येष्ठा, श्रवण, पुनर्वसु, मघा और स्वाती ये अर्थ के नक्षत्र हैं। कृत्तिका, आर्द्रा, उत्तर भाद्रपद, चित्रा, मूल, अभिजित् और पूर्व फाल्गुनी ये काम के नक्षत्र हैं। रोहिणी, उत्तर फाल्गुनी, पूर्वाषाढ़, मृगशिरा, उत्तराषाढ़, रेवती और हस्त ये मोक्ष मार्ग के नक्षत्र हैं। यह पथिराहु चक्र कहलाता है ॥१८॥

अश्विनी से आरम्भ कर चतुर्नाडी चक्र बनाने से सर्पाकार चक्र बनता है। राहु का आकार सर्प सदृश है, इसलिये ही इसे पथिराहु चक्र कहा गया है ॥ १८ ॥

स्पष्टार्थ पथि राहुचक्रम्

धर्ममार्ग	अ०	पुष्य	श्ले०	वि०	अनु०	ध०	श०
अर्थमार्ग	भ०	पुन०	म०	स्वा०	ज्ये०	श्र०	पू०
काममार्ग	कृ०	आ०	पू०	चि०	मू०	अभि.	उ०
मोक्षमार्ग	रो०	मृ०	उ०	ह०	पू०	उ०	रे०

इसके फल—

धर्म्मगे भास्करे वित्तमोक्षे शशी
वित्तगे धर्म्ममोक्षस्थितः शस्यते।
कामगे धर्म्ममोक्षार्थगः शोभनो
मोक्षगे केवलं धर्मगः प्रोच्यते ॥ १९ ॥

अन्वयः—धर्मगे भास्करे वित्तमोक्षे शशी शस्यते। वित्तगे भास्करे धर्ममोक्षे स्थितः, कामगे भास्करे धर्ममोक्षार्थगः शशी शोभनो भवति। मोक्षगे भास्करे केवलं धर्मगः शशी शुभः प्रोच्यते ॥ १९ ॥

भा०—यदि धर्म नक्षत्र में सूर्य हो और अर्थ या मोक्षमें चन्द्रमा हो, अथवा अर्थ में सूर्य और धर्म या मोक्ष में चन्द्रमा हो तो यात्रा प्रशस्त होती है। काम नक्षत्र में सूर्य हो तो धर्म या मोक्ष में चन्द्रमा शुभ होता है। तथा मोक्ष में सूर्य हो तो केवल धर्म नक्षत्र में ही चन्द्रमा प्रशस्त होता है ॥ १९ ॥

अशुभ तथा शुभ तिथि—

पौषे पक्षत्यादिका द्वादशैवं
तिथ्यो माघादौ द्वितीयादिकास्ताः।
कामात्तिस्रः स्युस्तृतीयादिवच्च
याने प्राच्यादौ फलं तत्र वक्ष्ये ॥ २० ॥

अन्वयः—पौषे पक्षत्यादिकाः द्वादश तिथ्यः एवं माघादौ द्वितीयादिकाः ताः तिथयः। च [पुनः] कामात् तिस्रः तृतीयादिवत् सन्ति। तत्र प्राच्यादौ याने फलं वक्ष्ये ॥ २० ॥

भा०—पौषमास में प्रतिपदा (१) से आरम्भ करके द्वादशी तक १२ तिथियाँ, एवं माघ आदि मासों में (२) द्वितीया आदि तिथि से आरम्भ करके बारह तिथियाँ लिखें। यहाँ द्वादशी के बाद फिर तिथियाँ प्रतिपदादि को ही लिखे। इस प्रकार चक्र में तिथियों को लिख कर पूर्व आदि दिशाओं की यात्रा के फल समझे। तथा १३, १४, १५ इन तिथियों के क्रम से ३, ४, ५ तिथियों के सदृश ही फल समझना चाहिये ॥ २० ॥

पूर्वादि के फल—

सौख्यं क्लेशो भीतिरर्थागमश्च शून्यं नैःस्वं निःस्वता मिश्रता च।
द्रव्यक्लेशो दुःखमिष्टाप्तिरर्थो लाभः सौख्यं मंगलं वित्तलाभः ॥
लाभो द्रव्याप्तिर्धनं सौख्यमुक्तं भीतिर्लाभो मृत्युरर्थागमश्च।
लाभः कष्टद्रव्यलाभौ सुखञ्च कष्टं सौख्यं क्लेशलाभौ सुखं च ॥

सौख्यं लाभः कार्यसिद्धिश्च कष्टं क्लेशः कष्टात्सिद्धिरर्थो धनञ्च।
मृत्युर्लाभो द्रव्यलाभश्च शून्यं शून्यं सौख्यं मृत्युरत्यन्तकष्टम् ॥२३॥

अन्वयः—सौख्यं क्लेशः भीतिः अर्थागमः, शून्यं नैःस्वं निःस्वता मिश्रता, च [पुनः] द्रव्यक्लेशः दुःखम् इष्टाप्तिः अर्थः, लाभः सौख्यं मङ्गलं, वित्तलाभः लाभः, द्रव्याप्तिः धनं सौख्यं च उक्तम्। भीतिर्लाभः मृत्युः अर्थागमः, लाभः कष्टद्रव्यलाभो सुखं च, कष्टं सौख्यं क्लेशलाभो सुखं च [पुनः] सौख्यं लाभः कार्यसिद्धिः कष्टं, क्लेशः कष्टात् सिद्धिः अर्थो धनं मृत्युर्लाभः द्रव्यलाभः शून्यं च (पुनः), शून्यं सौख्यं मृत्युः अत्यन्तं कष्टं (इदं) प्राच्यादी याने क्रमेण फलं ज्ञेयम्॥ २१–२२–२३॥

भा०—एवं पौषादिक मास के १ आदि तिथियों में क्रम से पूर्वादि दिशाओं में सौख्य, क्लेश, भय, धनागम। २ आदि तिथियोंमें शून्य, निर्धनता, निर्धनता, मिश्रता। ३ आदि तिथियों में द्रव्यहानि, दुःख, इष्ट लाभ, धन प्राप्ति। ४ आदि तिथियोंमें लाभ, सुख, मङ्गल, धन लाभ। ५ आदि तिथियों में लाभ, धन लाभ, धन, सुख। ६ आदि तिथियों में भय, लाभ, मृत्यु, धनागम। ७ आदि तिथियों में लाभ, कष्ट, धन-लाभ, सुख। ८ आदि तिथियों में कष्ट, सुख, क्लेश, सुख। ९ आदि तिथियों में सुख, लाभ, कार्यसिद्धि, कष्ट। १० आदि तिथियों में क्लेश, कष्ट से सिद्धि, धन लाभ, धन लाभ। ११ आदि तिथियों में मृत्यु, लाभ, धन लाभ, शून्य। १२ आदि तिथियों में शून्य, सुख, मृत्यु, कष्ट और अत्यन्त कष्टफल होते हैं। स्पष्टार्थ चित्र पृ० १३७ में देखिये॥२१–२३॥

यात्रा में सर्वाङ्क ज्ञान—

तिथ्यृक्षवारयुतिरद्रिगजाग्नितष्टा
स्थानत्रयेऽत्र वियति प्रथमेऽतिदुःखी।
मध्ये धनक्षतिरथो चरमे मृतिः स्यात्
स्थानत्रयेऽङ्कयुजि सौख्यजयौ निरुक्तौ ॥ २४ ॥

अन्वयः—तिथ्यृक्षवारयुतिः स्थानत्रये क्रमेण अद्रिगजाग्नितष्टा प्रथमे स्थाने वियति शून्ये सति अतिदुःखी स्यात्। मध्ये वियति धनक्षतिः स्यात्। अथो चरमे वियति मृतिः स्यात्। स्थानत्रयेऽङ्कयुजि सति सौख्यजयौ निरुक्तौ॥ २४॥

भा०—शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से तिथिकी संख्या, अश्विनी आदि नक्षत्र, रवि आदि वार इन तीनों की संख्या के योग करके तीन स्थान में रक्खे। प्रथम स्थान में ७ के, द्वितीय स्थान में ८ के और तृतीय स्थान में ३ के भाग देने से, यदि प्रथम स्थान में शेष शून्य हो तो उस दिन यात्रा करने से अत्यन्त दुःखी, द्वितीय स्थान में शून्य हो तो धन-हानि और तृतीय स्थान में शेष शून्य हो तो मरण होता है। यदि तीनों स्थान में शेष बचे तो यात्रा करने से सुख और विजय होती है॥ २४॥

तिथिचक्रम् ।

पौ०	मा०	फा०	चै०	वै०	ज्ये०	आ०	श्रा०	भा०	आ०	का०	मा०	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर
१	२	३।१३	४।१४	५।१५	६	७	८	९	१०	११	१२	सौख्य	क्लेश	भीति	अर्थागम
२	३।१३	४।१४	५।१५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	शून्य	निर्धन	निर्धन	मिश्रता
३।१३	४।१४	५।१५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	द्रव्यक्लेश	दुःख	इष्टाप्ति	अर्थ
४।१४	५।१५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३।१३	लाभ	सौख्य	मंगल	वित्तलाभ
५।१५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३।१३	४।१४	लाभ	द्रव्याप्ति	धन	सौख्य
६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३।१३	४।१४	५।१५	भीति	लाभ	मृत्यु	अर्थागम
७	८	९	१०	११	१२	१	२	३।१३	४।१४	५।१५	६	लाभ	कष्ट	द्रव्यलाभ	सुख
८	९	१०	११	१२	१	२	३।१३	४।१४	५।१५	६	७	कष्ट	सौख्य	क्लेश	सुख
९	१०	११	१२	१	२	३।१३	४।१४	५।१५	६	७	८	सुख	लाभ	कार्यसिद्धि	कष्ट
१०	११	१२	१	२	३।१३	४।१४	५।१५	६	७	८	९	क्लेश	कष्टसिद्धि	अर्थ	धन
११	१२	१	२	३।१३	४।१४	५।१५	६	७	८	९	१०	मृत्यु	लाभ	द्रव्यलाभ	शून्य
१२	१	२	३।१३	४।१४	५।१५	६	७	८	९	१०	११	शून्य	सुख	मृत्यु	अतिकष्ट

यात्रा में महाडल तथा भ्रम दोष—

रवेर्भतोऽब्जभोन्मितिर्नगावशेषिता द्व्यगा ।
महाडलो न शस्यते त्रिषण्मिता भ्रमो भवेत् ॥ २५ ॥

अन्वयः—रवेर्भतः, अब्जभोन्मितिः नगावशेषिता द्व्यगा (द्विसप्तमिता चेत्स्युस्तदा) महाडलः स्यात् । स (महाडलः) न शस्यते यदि त्रिषण्मितः स्यात्तदा भ्रमो भवेत्, सोऽपि न शस्यते ॥ २५ ॥

भा०—सूर्य जिस नक्षत्रमें हो उससे चन्द्र नक्षत्र तक की संख्या जो हो उसमें ७ के भाग देने से २ या ७ (अर्थात् शून्य) शेष बचे तो महाडल नामक दोष अशुभ फल देने वाला होता है। तथा ३, ६ शेष बचे तो भ्रम नाम का दोष समझना। यह भी नाम तुल्य अशुभ फल को देता है। अर्थात् १, ४ या ५ शेष बचे तो यात्रा शुभ होती है ।२५।

शुभप्रद हिम्बर योग—

शशाङ्कभं सूर्यभतोऽत्र गण्यं पक्षादितिथ्या दिनवासरेण ।
युतं नवाप्तं नगशेषकं चेत् स्याद्धिम्बरं तद्गमनेऽतिशस्तम् ॥२६॥

अन्वयः—सूर्यभतः शशांकभं गण्यं तत् पक्षादितिथ्या दिनवासरेण युतं नवाप्तं चेत् नगशेषकं भवेत् तदा हिम्बर स्यात् तत् गमने अतिशस्तं स्यात् ॥ २६ ॥

भा०—सूर्य नक्षत्र से चन्द्र नक्षत्र तक की संख्या तथा शुक्ल प्रतिपदादि तिथि संख्या और रवि आदि वार की संख्या का योग करके उसमें ९ के भाग देने से यदि ७ शेष बचे तो हिम्बर नामक योग होता है। वह यात्रा में अत्यन्त प्रशस्त कहा गया है ॥ २६ ॥

जन्म राशि से घातचन्द्र विचार—

भूपश्वांकद्व्यङ्गदिग्वह्निसप्त-
वेदाष्टेशार्काश्च घाताख्यचन्द्रः ।
मेषादीनां राजसेवाविवादे
यात्रायुद्धाद्ये च नान्यत्र वर्ज्यः ॥ २७ ॥

अन्वयः—मेषादीनां क्रमात् भूपश्वाङ्कद्व्यङ्गदिग्वह्निसप्तवेदाष्टेशार्काः घाताख्यचन्द्रः स्यात् । स राजसेवाविवादे च (पुनः) यात्रायुद्धाद्ये च वर्ज्यः ॥२७॥

भा०—मेष आदि जन्म राशि वालों के लिये क्रम से १, ५, ९, २, ६, १०, ३, ७, ४, ८, ११, १२ इतने संख्यक चन्द्रमा (जन्मराशि से चन्द्रराशि तक की संख्या) घातक है, जो राजसेवा (नौकरी आरम्भ), वादविवाद और युद्ध यात्रा में त्याज्य हैं। अन्य कार्यों में नहीं ॥२७॥

घातचन्द्र चक्रम्।

मे॰	वृ॰	मि॰	क॰	सिं॰	कं॰	तु॰	वृ॰	ध॰	म॰	कुं॰	मी॰	राशि
१	५	९	२	६	१०	३	७	४	८	११	१२	घातचन्द्र

घाततिथि—

गोस्त्रीझषे घाततिथिस्तु पूर्णा भद्रा नृयुक्कर्कटकेऽथ नन्दा।
कौर्प्याजियोर्नक्रघटे च रिक्ता जया धनुःकुम्भहरौ न शस्ताः ॥२८॥

अन्वयः—गोस्त्रीझषे पूर्णा घाततिथिः स्यात्। तु (पुनः) नृयुक्कर्कटके भद्रा घाततिथिः। अथ कौर्प्याजियोः नन्दा, नक्रघटे रिक्ता, धनुःकुम्भहरौ जया घाततिथिः (ताः) न शस्ताः सन्ति॥ २८॥

भा॰—वृष, कन्या और मीन राशि वालों के लिये पूर्णा (५, १०, १५) तिथि, मिथुन कर्क राशि वालों के लिये भद्रा (२, ७, १२) तिथि, वृश्चिक और मेष राशि वालों के लिये नन्दा (१, ६, ११) तिथि, मकर तुला राशि वालों के लिये रिक्ता (४, ९, १४) तिथि तथा धनु, कुम्भ और सिंह राशि वालों के लिये जया (३, ८, १३) तिथि प्रशस्त नहीं अर्थात् घातक हैं॥ २८॥

तिथिघातकचक्रम्—

मे॰	वृ॰	मि॰	क॰	सिं॰	कं॰	तु॰	वृ॰	ध॰	म॰	कुं॰	मी॰	राशि
१	५	२	२	३	५	४	१	३	४	३	५	
६	१०	७	७	८	१०	९	६	८	९	८	१०	घाततिथि
११	१५	१२	१२	१३	१५	१४	११	१३	१४	१३	१५	

घातकवार—

नक्रे भौमो गोहरिस्त्रीषु मन्दश्चन्द्रो द्वन्द्वेऽर्कोऽजभे ज्ञश्च कर्के।
शुक्रः कोदण्डालिमीनेषु कुम्भे जूके जीवो घातवारा न शस्ताः॥२९॥

अन्वयः—नक्रे भौमः, गोहरिस्त्रीषु मन्दः, द्वन्द्वे चन्द्रः, अजभे अर्कः, च तथा कर्के ज्ञः, कोदण्डालिमीनेषु शुक्रः, कुम्भे जूके जीवः, इमे घातवारा न शस्ता भवन्ति॥ २९॥

भा॰—मकर राशि वाले को मङ्गल; वृष, सिंह, कन्या राशि वाले को शनि; मिथुन राशि वाले को सोम; मेष वाले को रवि; कर्क वाले को बुध; धनु, वृश्चिक, मीन राशिवाले को शुक्र तथा कुम्भ और तुला राशि वाले को गुरु वार घातक हैं। जो यात्रा में अशुभ है॥ २९॥

घातवारचक्रम्—

मे॰	वृ॰	मि॰	क॰	सिं॰	कं॰	तु॰	वृ॰	ध॰	म॰	कुं॰	मी॰	राशि
सू॰	श॰	चं॰	बु॰	श॰	श॰	बृ॰	शु॰	शु॰	मं॰	बृ॰	शु॰	घातवार

घातक नक्षत्र—

मघाकरस्वातिमैत्रमूलश्रुत्यम्बुपान्त्यभम् ।
याम्यब्राह्मेशसार्पञ्च मेषादेर्घातभं न सत् ॥ ३० ॥

अन्वयः—मघाकरस्वातिमैत्रमूलश्रुत्यम्बुपान्त्यभं च (पुनः) याम्यब्राह्मेशसार्पं मेषादेः क्रमात् घातभं (भवति, तत् यात्रायां) न सत् स्यात् ॥ ३० ॥

भा०—मेषादि राशि वाले को क्रम से मघा, हस्त, स्वाती, अनुराधा, मूल, श्रवण, शतभिषा, रेवती, भरणी, रोहिणी, आर्द्रा और श्लेषा ये घात नक्षत्र हैं। जो यात्रादि में अशुभ हैं ॥ ३० ॥

नक्षत्रघातचक्रम्—

मे·	वृ·	मि·	क·	सिं·	कं·	तु·	वृ·	ध·	म·	कुं·	मी·	राशि
म·	ह·	स्वा·	अ·	मू·	श्र·	श·	रे·	भ·	रो·	आ·	श्ले·	घातनक्षत्र

योगिनीविचार—

नवभूम्यः शिववह्नयोऽक्षविश्वेऽर्ककृताः शक्ररसास्तुरङ्गतिथ्यः ।
द्विदिशोऽमावसवश्च पूर्वतः स्युस्तिथयः सम्मुखवामगा न शस्ताः ३१

अन्वयः—नवभूम्यः शिववह्नयः अक्षविश्वे अर्ककृताः शक्ररसाः तुरंगतिथ्यः । द्विदिशः अमावसवश्च तिथयः पूर्वतः स्युः । ताः सम्मुखवामगा न शस्ता भवन्ति ॥

भा० – १, ९ तिथियों में पूर्व दिशा में, ११, ३ तिथियों में अग्निकोण में ५, १३ तिथियों में दक्षिण दिशा में, १२, ४ में नैर्ऋत्य कोण में, ६, १४ में पश्चिम में, ७, १५ में वायव्य कोण और २, १० तिथियों में उत्तर दिशा में, ८, ३० तिथियों में ईशान कोण में योगिनी का वास रहता है। यात्रा में सम्मुख योगिनी और वाम दिशा की योगिनी अशुभ फल देती है ॥ ३१ ॥

योगिनीवासचक्रम् ।

८।३० ई०	१।९ पू.	३।११ आ०
२।१० उ०	योगिनी वास	५।१३ द०
७।१५ वा०	६ १४ प०	४।१२ नै०

घातकलग्न—

भूमि (१) द्वय (२) ब्ध्य (४) द्रि (७) दिक् (१०) सूर्या (१२) ङ्गा (६) ष्टा (८) ङ्के (९) शा (११) ग्नि (३) सायकाः (५) ।
मेषादिघातलग्नानि यात्रायां वर्जयेत्सुधीः ॥ ३२ ॥

अन्वयः—भूमिद्वयब्ध्यद्रिदिक्सूर्याङ्गाष्टांकेशाग्निसायकाः (क्रमशः) मेषादिघातकलग्नानि सुधीः यात्रायां वर्जयेत् ॥ ३२ ॥

भा०—मेषादि जन्म राशि वालों के लिये क्रम से १ मेष, २ वृष, ३ कर्क, ७ तुला, १० मकर, १२ मीन, ६ कन्या, ८ वृश्चिक, ९ धनु, ११ कुम्भ, ३ मिथुन और ५ सिंह ये घात लग्न हैं। इनको भी यात्रा में विज्ञजन छोड़ दें ॥ ३२॥

घातलग्नचक्रम्—

मे·	वृ·	मि·	क·	सिं·	कं·	तु·	वृ·	ध·	म·	कुं·	मी·	राशि
मे·	वृ·	क·	तु·	म·	मी·	कं·	वृ·	ध·	कुं·	मि·	सिं·	घातलग्न

कालपाश—

कौवेरीतो वैपरीत्येन कालो वारेऽर्काद्ये सम्मुखे तस्य पाशः ।
रात्रावेतौ वैपरीत्येन गण्यौ यात्रायुद्धे सम्मुखे वर्ज्जनीयौ ॥३३॥

अन्वयः—कौवेरीतः (उत्तरदिशमारभ्य क्रमशः) अर्काद्ये वारे कालः स्यात्। तस्य (कालस्य) सम्मुखे पाशश्च स्यात् । एतौ (कालपाशौ) रात्रौ वैपरीत्येन गण्यौ । यात्रायुद्धे च सम्मुखे वर्जनीयौ भवेताम् ॥ ३३ ॥

भा०—उत्तर दिशा से आरम्भ करके विलोम क्रम से उत्तर, वायव्य, पश्चिम, नैर्ऋत्य, दक्षिण, अग्नि, पूर्व दिशाओं में रवि आदि वारों के दिन में काल रहता है। और उसके सामने की दिशा में पाश रहता है। रवि आदि वारों की रात्रि में इन दोनों के विपरीत (दक्षिण आदि में काल और उत्तर आदि में पाश) समझना। इन दोनों काल और पाशों को युद्ध-यात्रा में त्याग देना चाहिये ॥ ३३ ॥

कालपाशचक्रम्—

सू·	चं·	मं·	बु·	बृ·	शु·	श·	दिन
उ.	वा.	प.	नै.	द.	आ.	पू.	दिशाकालदिन
द.	आ.	पू.	ई.	उ.	वा.	प.	दिशापाशदिन
द.	आ.	पू.	ई.	उ.	वा.	प.	दिशाकालरात्रि
उ.	वा.	प.	नै.	द.	आ.	पू.	दिशापाशरात्रि

परिघदण्ड—

भानि स्थाप्यान्यङ्घिदिक्षु सप्त सप्तानलर्क्षतः ।
वायव्याग्नेयदिक्संस्थं परिघं नैव लंघयेत् ॥ ३४ ॥

अन्वयः—अनलर्क्षतः (कृत्तिकातः) सप्त सप्त भानि पूर्वादिषु दिक्षु (भवन्ति) तत्र वायव्याग्नेयदिक्संस्थं परिघं नैव लंघयेत् ॥ ३४ ॥

भा०—कृत्तिका से आरम्भ करके ७।७ नक्षत्र (अभिजित् सहित) पूर्व आदि दिशा में स्थापन करे। और वायव्य कोण से अग्नि कोण तक परिघ दण्ड (रेखा रूप) रहता है। इसलिये जिस प्रकार परिघ दण्ड का उल्लंघन न हो उस प्रकार यात्रा करनी चाहिये ॥ ३४ ॥

जैसे पूर्व के नक्षत्रों में पश्चिम, एवं उत्तर के नक्षत्रों से दक्षिण जाने से परिघ दण्ड का लंघन होगा। चक्र देखने से स्पष्ट है ॥ ३४ ॥

परिघदण्डचक्रम्—
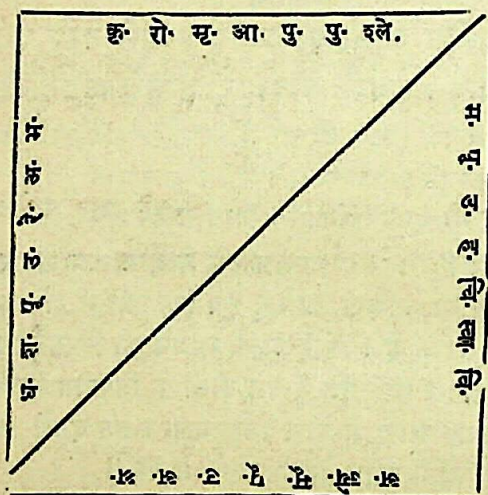
परिघ का परिहार—

अग्नेर्दिशं नृप इयात् पुरुहूतदिग्भै-
रेवं प्रदक्षिणगता विदिशोऽथ कृत्ये।
आवश्यकेऽपि परिघं प्रविलङ्घ्य गच्छेत्
शूलं विहाय यदि दिक्तनुशुद्धिरस्ति ॥ ३५ ॥

अन्वयः—नृपः पुरुहूतदिग्भैः अग्नेः दिशं इयात् (चेत्) एवं प्रदक्षिणगताः विदिशः गच्छेत्। अथ आवश्यके कार्ये शूलं विहाय यदि दिक्तनुशुद्धिरस्ति तदा परिघं प्रविलंघ्य अपि गच्छेत् ॥ ३५ ॥

भा०—पूर्व के नक्षत्रों में आग्नेय दिशा, दक्षिण के नक्षत्रों में नैऋत्य, पश्चिम के नक्षत्रों में वायव्य और उत्तर के नक्षत्रों में ईशान-कोण में यात्रा करनी चाहिये। तथा आवश्यक होने पर, यदि दिशा-शूल न हो तथा दिग्द्वार लग्न (सम्मुख, दक्षिण राशि का लग्न) हो तो परिघ दण्ड का उल्लंघन करके भी यात्रा करनी चाहिये ॥ ३५ ॥

सर्वदिग्यात्रा के नक्षत्र और विशेष—

मैत्रार्कपुष्याश्विनभैर्निरुक्ता यात्रा शुभा सर्वदिशासु तज्ज्ञैः।
वक्री ग्रहः केन्द्रगतोऽस्य वर्गो लग्ने दिनश्चास्य गमे निषिद्धम् ३६

अन्वयः—मैत्रार्कपुष्याश्विनभैः सर्वदिशासु तज्ज्ञैः यात्रा शुभा निरुक्ता। वक्री ग्रहः केन्द्रगतः वा लग्ने अस्य वर्गः, दिनं च गमे (यात्रायां) निषिद्धम्॥ ३६॥

भा०—अनुराधा, हस्त, अश्विनी और पुष्य इन चार नक्षत्रों में सभी दिशाओं में यात्रा प्रशस्त है। अर्थात् इनमें परिघ दण्ड उल्लंघन, पृष्ठ चन्द्र और शूल का दोष नहीं होता है। तथा यात्रा समय में वक्रगति ग्रह केन्द्र में हो वा वक्री ग्रह के षड्वर्ग (राशि नवमांशादि) लग्न में हो और वक्री ग्रह का दिन यह सब यात्रा में निषिद्ध कहा गया है३६

अयनशुद्धि—

सौम्यायने सूर्यविधू तदोत्तरां प्राचीं व्रजेत्तौ यदि दक्षिणायने।
प्रत्यग्यमाशाश्च तयोर्दिवानिशं भिन्नायनत्वेऽथ वधोन्यथा भवेत् ३७

अन्वयः—यदि सूर्यविधू सौम्यायने स्यातां तदा उत्तरां प्राचीं दिशं व्रजेत्। यदि तौ (सूर्यविधू) दक्षिणायने तदा प्रत्यग्यमाशां व्रजेत्। अथ च तयोर्भिन्नायनत्वे क्रमेण दिवानिशं व्रजेत्। अन्यथा वधः भवेत्॥ ३७॥

भा०—यदि सूर्य और चन्द्रमा दोनों उत्तरायण (मकरादि ६ राशि) में हों तो उत्तर और पूर्व की यात्रा करे। यदि दोनों दक्षिणायन (कर्कादि ६ राशि) में हों तो पश्चिम और दक्षिण की यात्रा करे। दोनों भिन्न अयन में हों तो जिधर सूर्य हो उधर दिन में तथा जिधर चन्द्रमा हो उधर रात्रि में यात्रा करनी चाहिए। अन्यथा मरण होता है॥३७॥

तीन तरह का सम्मुख शुक्र—

उदेति यस्यां दिशि यत्र याति गोलभ्रमाद् वाथ ककुम्भसंघे।
त्रिधोच्यते सम्मुख एव शुक्रो यत्रोदितस्तां तु दिशं न यायात्॥३८

अन्वयः—शुक्रः यस्यां दिशि उदेति, गोलभ्रमात् यत्र (यस्यां दिशि) याति, अथवा ककुम्भसंघे यत्र तिष्ठति त्रिधा सम्मुख एवोच्यते। शुक्रः यत्र उदितः तां दिशं तु न यायात् (गच्छेत्)॥ ३८॥

भा०—सूर्य सान्निध्य से अस्त के बाद जिस दिशा में शुक्र उदित हुआ हो तथा भ्रमणवश आकाश गोल में जिस दिशा में वर्तमान हो और जिस दिशा के नक्षत्र में हो एवं तीनों प्रकार से शुक्र सम्मुख समझा जाता है। किन्तु केवल जिस दिशा में सूर्य सान्निध्य से अस्त के बाद उदित हुआ हो उस दिशा में यात्रा न करनी चाहिये॥ ३८॥

शुक्र का वक्रादि दोष और अपवाद—

वक्रास्तनीचोपगते भृगोः सुते राजा व्रजन्याति वशं हि विद्विषाम्।
बुधोऽनुकूलो यदि तत्र सञ्चलन् रिपूञ्जयेन्नैव जयः प्रतीन्दुजे ॥३९॥

अन्वयः—भृगोः सुते वक्रास्तनीचोपगमे व्रजन् सन् राजा हि (निश्चयेन) विद्विषां (शत्रूणां) वशं याति। बुधः अनुकूलः तत्र संचलन् रिपून् जयेत्। प्रतीन्दुजे (बुधे) सम्मुखे सति जयः नैव स्यात् ॥ ३९ ॥

भा०—शुक्र जिस समय वक्र, अस्त या अपने नीच में हो उस समय में यात्रा करने वाला राजा शत्रु के वश में हो जाता है। यदि बुध अनुकूल हो तो यात्रा करने से शत्रुओं को जीतता है। किन्तु सम्मुख बुध हो तो यात्रा करने से विजय नहीं होती है ॥ ३९ ॥

सम्मुख शुक्र का अपवाद—

यावच्चन्द्रः पूषभात्कृत्तिकाद्ये पादे शुक्रोऽन्धो न दुष्टोऽग्रदक्षे।
मध्ये मार्गे भार्गवास्तेऽपि राजा तावत्तिष्ठेत् सम्मुखत्वेऽपि तस्य ४०

अन्वयः—पूषभात् कृत्तिकाद्ये पादे यावत् चन्द्रः (तिष्ठति) तावत् शुक्रः अन्धः (स्यात्) तदा अग्रदक्षे दुष्टः न (स्यात्)। मार्गे मध्ये भार्गवास्ते अपि वा तस्य सम्मुखत्वे राजा तावत्तिष्ठेत् ॥ ४० ॥

भा०—जब तक रेवती, अश्विनी, भरणी और कृत्तिका के प्रथम चरण में शुक्र रहता है तब तक वह अन्ध रहता है, इसलिये उस समय में सम्मुख या दक्षिण शुक्र का दोष नहीं होता है। युद्ध यात्रा करने वाले राजा को चाहिए कि मध्यमार्ग में जानेपर भी यदि शुक्र अस्त हो जाय तो तब तक (शुक्रोदय तक) वहाँ ठहर जाय। तथा सम्मुख पड़े तो भी वहाँ ठहर जाना चाहिये ॥ ४० ॥

त्याज्य लग्न—

कुम्भकुम्भांशकौ त्याज्यौ सर्वथा यत्नतो बुधैः।
तत्र प्रयातुर्नृपतेरर्थनाशः पदे पदे ॥ ४१ ॥

अन्वयः—बुधैः पण्डितैः यत्नतः सर्वथा कुम्भकुम्भांशकौ त्याज्यौ। यतः तत्र प्रयातुः नृपतेः पदे पदे अर्थनाशः स्यात् ॥ ४१ ॥

भा०—कुम्भ लग्न, कुम्भ का नवमांश लग्न में हो तो उसको यात्रा में त्याग कर देना चाहिये। क्योंकि उसमें यात्रा करने वाले राजा का पद पद में अर्थ का नाश होता है ॥ ४१ ॥

निषिद्ध और शुभ लग्न—

अथ मीनलग्न उत वा तदंशके चलितस्य वक्रमिह वर्त्म जायते।
जनिलग्नजन्मभपती शुभग्रहौ भवतस्तदा तदुदये शुभो गमः ॥४२॥

अन्वयः—अथ मीनलग्ने उत वा तदंशके चलितस्य वर्त्म (मार्गम्) इह वक्रं जायते । यदि जन्मलग्नभपती शुभग्रहौ भवतः तदा तदुदये गमः शुभः स्यात् ॥ ४२ ॥

भा०—मीन लग्न या मीन के नवमांश में यात्रा करने से मार्ग वक्र होता है (अर्थात् उसको व्यर्थ भटकना पड़ता है) । यदि जन्म लग्न या जन्म की राशि का स्वामी शुभ ग्रह हो तो उस लग्न में यात्रा शुभप्रद होती है ॥ ४२ ॥

दूसरा अनिष्ट लग्न—

जन्मराशितनुतोऽष्टमेऽथवा स्वारिभाच्च रिपुभे तनुस्थिते ।
लग्नगास्तदधिपा यदाथवा स्युर्गतं हि नृपतेर्मृतिप्रदम् ॥४३॥

अन्वयः—जन्मराशितनुतः अष्टमे अथवा स्वारिभात् रिपुभे तनुस्थिते सति, अथवा तदधिपाः यदि लग्नगाः स्युः तदा नृपतेः गतं (गमनं) मृतिप्रदं स्यात् ॥

भा०—अपनी जन्म राशि से या जन्म लग्न से ८ आठवीं राशि अथवा शत्रु की राशि से ६ छठी राशि लग्न में हो अथवा उनके स्वामी लग्न में हो तो यात्रा करने वाले राजा का मरण होता है ॥ ४३ ॥

शुभलग्न और नौका यात्रा—

लग्ने चन्द्रे वापि वर्गोत्तमस्थे यात्रा प्रोक्ता वाञ्छितार्थैकदात्री ।
अम्भोराशौ वा तदंशे प्रशस्तं नौकायानं सर्वसिद्धिप्रदायि ॥४४॥

अन्वयः—लग्ने अपि वा चन्द्रे वर्गोत्तमस्थे सति यात्रा वाञ्छितार्थैकदात्री प्रोक्ता । अम्भोराशौ वा तदंशे (जलचरनवमांशे) नौकायानं सर्वसिद्धिप्रदायि स्यात् ॥ ४४ ॥

भा०—लग्न या चन्द्रमा वर्गोत्तम नवमांश में हो तो उस समय में यात्रा करने से अभीष्ट सिद्ध होता है । तथा जलचर राशि या जलचर नवमांश लग्न में हो तो नौकाद्वारा यात्रा सर्वथा सिद्धिप्रद होती है ॥४४॥

दिग्द्वारलग्न में यात्रा का फल—

दिग्द्वारभे लग्नगते प्रशस्ता यात्रार्थदात्री जयकारिणी च ।
हानिं विनाशं रिपुतो भयञ्च कुर्यात्तथा दिक्प्रतिलोमलग्ने ॥४५॥

अन्वयः—दिग्द्वारभे लग्नगते सति यात्रा प्रशस्ता अर्थदात्री जयकारिणी च भवेत् । तथा दिक्प्रतिलोमलग्ने यात्रा हानिं विनाशं रिपुतः भयं च कुर्यात् ॥४५

भा०—गन्तव्य दिशा की राशि लग्न में हो तो यात्रा करने से धनलाभ और विजय होता है । तथा पृष्ठदिशा की राशि लग्न में हो तो हानि, मृत्यु और शत्रुओं का भय होता है ॥ ४५ ॥

शुभ लग्न—

राशिः स्वजन्मसमये शुभसंयुतो यो
यः स्वारिभान्निधनगोऽपि च वेशिसंज्ञः ।

लग्नोपगः स गमने जयदोऽथ भूप-
योगैर्गमो विजयदो मुनिभिः प्रदिष्टः ॥४६॥

अन्वयः—स्वजन्मसमये यः राशिः शुभसंयुतः, यः स्वारिभात् निधनगः। अपि च यः वेशिसंज्ञः स लग्नोपगः जयदः स्यात्। अथ भूपयोगैः गमः विजयदः प्रदिष्टः ॥ ४६ ॥

भा०—अपने जन्म समय में शुभ ग्रह से युत जो राशि और शत्रु की जन्म राशि से ८ वीं तथा जन्मकालिक सूर्य से द्वितीय राशि यदि यात्रा लग्न में हो तो विजय होता है। तथा जातकसंहिता में जो राज-योग कहे गये हैं उनमें भी यात्रा करने से विजय होता है ऐसा मुनियों ने कहा है ॥ ४६ ॥

दिशाओं के स्वामी—

सूर्यः सितो भूमिसुतोऽथ राहुः शनिः शशी ज्ञश्च बृहस्पतिश्च।
प्राच्यादितो दिक्षु विदिक्षु चापि दिशामधीशाः क्रमतः प्रदिष्टाः॥४७

अन्वयः—अथ सूर्यः सितः भूमिसुतः राहुः शनिः शशी ज्ञः च बृहस्पतिः (इमे) दिक्षु विदिक्षु अपि च (क्रमशः) प्राच्यादितः दिशां अधीशाः (स्वामिनः) प्रदिष्टाः ॥ ४७ ॥

भा०—१ सूर्य, २ शुक्र, ३ मङ्गल, ४ राहु, ५ शनि, ६ चन्द्र, ७ बुध और ८ बृहस्पति ये क्रम से पूर्वादि दिशा विदिशाओं के स्वामी हैं ।४७।

पू०	आ०	द०	नै०	प०	वा०	उ०	ई०	दिशा
सू.	शु.	मं.	रा.	श.	चं.	बु.	बृ.	स्वामी

इनका प्रयोजन--

केन्द्रे दिगधीशे गच्छेदवनीशः नै
लालाटिनि तस्मिन्नेयादरिसेनाम् ॥४८॥

अन्वयः—दिगधीशे केन्द्रे सति अवनीशः गच्छेत्। तस्मिन् दिगधीशे लाला-टिनि सति अवनीशः अरिसेनां न इयात् नो गच्छेत् ॥ ४८ ॥

भा०—गन्तव्य दिशा का स्वामी केन्द्र में हो तो राजा को यात्रा करनी चाहिये। और दिशा का स्वामी लालाटी हो तो शत्रु की सेना पर चढ़ाई करने के लिये नहीं चलना चाहिये ॥ ४८ ॥

लालाटिकयोग लक्षण—

प्राच्यादौ तरणिस्तनौ भृगुसुतो लाभव्यये भूसुतः
कर्मस्थोऽथ तमो नवाष्टमगृहे सौरिस्तथा सप्तमे।

चन्द्रः शत्रुगृहात्मजेऽपि च बुधः पातालगो गीष्पति-
र्वित्तभ्रातृगृहे विलग्नसदनाल्लालाटिकाः कीर्त्तिताः ॥४९॥

अन्वयः—अथ तरणिः तनौ (लग्ने), भृगुसुतः लाभव्यये, भूसुतः कर्मस्थः, तमः (राहुः) नवाष्टमगृहे तथा सौरिः सप्तमे, चन्द्रः शत्रुगृहात्मजे अपि, च बुधः पाताले, गीष्पतिः वित्तभ्रातृगृहे (स्थितः) इमे विलग्नसदनात् प्राच्यादौ लालाटिकाः कीर्तिताः ॥ ४९ ॥

भा०—लग्न में सूर्य हो तो पूर्व दिशा में लालाटी होता है। लग्न से ११, १२ वें भाव में शुक्र हो तो अग्नि कोण में, १० वें भाव में मङ्गल हो तो दक्षिण में, ८ वें और ९ वें भाव में राहु हो तो नैर्ऋत्य कोण में, ७ वें भाव में चन्द्रमा हो तो वायव्य कोण में, ४ चतुर्थ भाव में बुध हो तो उत्तर दिशा में, ३ तीसरे २ दूसरे भाव में गुरु हो तो ईशान कोण में यात्रा करने में लालाटी होता है ॥ ४९ ॥

प्रस्थान क्रम से यात्रा का समय—

मृगे गत्वा शिवे स्थित्वादितौ गच्छञ्जयेद्रिपून्।
मैत्रे प्रस्थाय शाक्रे हि स्थित्वा मूले व्रजंस्तथा ॥ ५० ॥

अन्वयः—मृगे [मृगशिरानक्षत्रे] गत्वा, शिवे [आर्द्रायां] स्थित्वा, अदितौ [पुनर्वसौ] गच्छन् सन् रिपून् जयेत्। तथा मैत्रे [अनुराधानक्षत्रे] प्रस्थाय शाक्रे (ज्येष्ठायां, स्थित्वा, मूले व्रजन् हि निश्चयेन रिपून् जयेत् ॥५०॥

भा०—मृगशिरा नक्षत्र में गन्तव्य दिशा में प्रस्थान करके आर्द्राभर विश्राम करे फिर पुनर्वसु में यात्रा करे तो वह निश्चय शत्रुओं को जीतता है। एवं अनुराधा में प्रस्थान करके ज्येष्ठा में विश्राम करे पुनः मूल में चले तो भी शत्रुओं को जीतता है ॥ ५० ॥

प्रस्थाय हस्तेऽनिलतक्षधिष्ण्ये स्थित्वा जयार्थी प्रवसेद् द्विदैवे।
वस्वन्त्यपुष्ये निजसीम्नि चैकरात्रोषितः क्ष्मां लभतेऽवनीशः॥५१॥

अन्वयः—जयार्थी अवनीशः हस्ते प्रस्थाय अनिलतक्षधिष्ण्ये स्थित्वा, द्विदैवे प्रवसेत्। च (पुनः) वस्वन्त्यपुष्ये निज सीम्नि एकरात्रोषितः अवनीशः क्ष्मां (मेदिनीं) लभते ॥ ५१ ॥

भा०—विजय चाहने वाले को चाहिये कि हस्त में प्रस्थान करके, चित्रा और स्वाती में विश्राम करे पुनः विशाखा में यात्रा करे। धनिष्ठा, रेवती, या पुष्य में यात्रा करके यदि अपने गाँव की सीमा में एक रात्रि वासकर चले तो वह राजा अपने शत्रु की भूमि को प्राप्त करता है ॥ ५१ ॥

कालबल—

उषःकालो विना पूर्वां गोधूलिः पश्चिमां विना।
विनोत्तरां निशीथः सन् याने याम्यां विनाभिजित् ॥५२॥

अन्वयः—पूर्वां विना उषःकालः, पश्चिमां विना गोधूलिः, उत्तरां विना निशीथः याने (यात्रायां) सन् (शुभः) स्यात्। तथा याम्यां विना अभिजिन्मुहूर्तः सन् स्यात् ॥ ५२ ॥

भा०—पूर्व दिशा को छोड़ उषःकाल में अन्य सब दिशाओं में यात्रा शुभ है। पश्चिम को छोड़कर गोधूलि, एवं मध्य रात्रि समय उत्तर को छोड़कर तथा अभिजित् (मध्याह्न) काल दक्षिण छोड़कर अन्य दिशाओं की यात्रा में शुभ है ॥ ५२ ॥

लग्नादि भावों की संज्ञा—

लग्नाद्भावाः क्रमाद्देह १ कोश २ धानुष्क ३ वाहनम् ४।
मंत्रो५ऽरि६र्मार्ग७आयुश्च८हृद्९व्यापारा१०गम११व्ययाः१२॥

अन्वयः—देहकोशधानुष्कवाहनम् मंत्रः अरिः मार्गः आयुः च [पुनः] हृद्व्यापारागमव्ययाः (एते क्रमशः) लग्नात् भावाः (कथिताः) ॥ ५३ ॥

भा०—१ देह, २ कोश, ३ धानुष्क, ४ वाहन, ५ मंत्र, ६ अरि, ७ मार्ग, ८ आयु, ९ हृदय, १० व्यापार, ११ आगम और १२ व्यय ये क्रम से लग्न आदि द्वादश भावों के नाम हैं ॥ ५३ ॥

लग्न में विशिष्ट शुभाशुभ—

केन्द्रे कोणे सौम्यखेटाः शुभाः स्युर्याने पापास्त्र्यायषट्खेषु चन्द्रः।
नेष्टो लग्नान्त्यारिरन्ध्रे शनिः खेऽस्ते शुक्रो लग्नेट् नगान्त्यारिरन्ध्रे॥

अन्वयः—केन्द्रे कोणे सौम्यखेटाः, त्र्यायषट्खेषु पापाः याने शुभाः स्युः, चन्द्रः लग्नान्त्यारिरन्ध्रे, नेष्टः शनिः खे नेष्टः, स्यात् शुक्रः अस्ते नेष्टः, नगान्त्यारिरन्ध्रे लग्नेट् नेष्टः स्यात् ॥ ५४ ॥

भा०—यात्रा में शुभ ग्रह १, ४, ७, १०, ५, ९ स्थानों में तथा पाप ग्रह ३, ६, १०, ११ भावों में, शुभप्रद होते हैं। चन्द्रमा लग्न, १२, ६, ८ भावों में, शनि १० में, शुक्र ७ में तथा लग्नेश ७, १२, ६, ८ भावों में अशुभ होता है ॥ ५४ ॥

सिद्धियोग—

योगात्सिद्धिर्धरणिपतीनामृक्षगुणैरपि भूदेवानाम्।
चौराणां शुभशकुनैरुक्ता भवति मुहूर्त्तादपि मनुजानाम् ॥ ५५ ॥

अन्वयः—धरणिपतीनां योगात्, भूदेवानां (विप्राणां) ऋक्षगुणैः, चौराणां शुभशकुनैः सिद्धिः उक्ता। मनुजानां मुहूर्तात् अपि सिद्धिः भवति ॥५५॥

भा०—आगे वर्णित योगों में यात्रा करने से क्षत्रियों की अभीष्ट सिद्धि होती है। विहित नक्षत्रों के गुणों से ब्राह्मणों की, सुन्दर शकुनों से चोरों की और शुभ मुहूर्त्त से अन्य जनों की यात्रा सिद्धिप्रद होती है ॥ ५५ ॥

यात्राकाल के विजययोग—

सहजे रविर्दशमे शशी तथा शनिमङ्गलौ रिपुगृहे सितः सुते ।
हिबुके बुधो गुरुरपीह लग्नगः स जयत्यरीन् प्रचलितोऽचिरान्नृपः ५६

अन्वयः—रविः सहजे, शशी दशमे, तथा शनिमंगलौ रिपुगृहे, सितः सुते, हिबुके (चतुर्थे) बुधः, गुरुः अपि लग्नगः (भवेत् चेत्) इह यः नृपः प्रचलितः स अचिरात् (शीघ्रं) अरीन् जयति ॥ ५६ ॥

भा०—यदि लग्न से ३ रे भाव में सूर्य, १० वें चन्द्रमा, ६ षष्ठ भाव में शनि और मङ्गल, ५ वें में शुक्र, ४ थे में बुध और लग्न में गुरु हो तो ऐसे समय में यात्रा करनेवाला शत्रुओं को जीतता है ॥५६॥

जययोग—

भ्रातरि सौरिर्भूमिसुतो वैरिणि लग्ने देवगुरुः ।
आयगतेऽर्के शत्रुजयश्चेदनुकूलो दैत्यगुरुः ॥ ५७ ॥

अन्वयः—भ्रातरि सौरिः, वैरिणि भूमिसुतः, लग्ने देवगुरुः, आयगते अर्के च (पुनः) दैत्यगुरुश्चेत् अनुकूलः स्यात्तदा शत्रुजयः स्यात् ॥ ५७ ॥

भा०—यदि ३ में शनि, ६ में मंगल, लग्न में गुरु, ११ में सूर्य, तथा शुक्र अनुकूल (पृष्ठ या वाम भाग) हो तो विजय होता है ॥५७॥

दूसरा जययोग—

तनौ जीव इन्दुर्मृतौ वैरिगोऽर्कः ।
प्रयातो महेन्द्रो जयत्येव शत्रून् ॥ ५८ ॥

अन्वयः—यदि तनौ (लग्ने) जीवः (गुरुः), मृतौ इन्दुः, वैरिगः अर्कः, स्यात्तदा प्रयातः (प्रचलितः) महीन्द्रः शत्रून् जयत्येव ॥ ५८ ॥

भा०—लग्न में गुरु, ८ में चन्द्रमा, ६ में सूर्य हो तो ऐसे समय में यात्रा करने वाला राजा शत्रु को निश्चय जीतता ही है ॥ ५८ ॥

जययोग—

लग्नगतः स्याद्देवपुरोधाः ।
लाभधनस्थैः शेषनभोगैः ॥ ५९ ॥

अन्वयः—यदि देवपुरोधा लग्नगतः स्यात्, शेषनभोगैः लाभधनस्थैः सद्भिः नृपः शत्रून् जयत्येव ॥ ५९ ॥

भा०—लग्न में गुरु हो तथा अन्य सब ग्रह यदि २, ११ भावों में हो तो भी निश्चय विजय होती ही है ॥ ५९ ॥

जययोग—

द्यूने चन्द्रे समुदयगेऽर्के जीवे शुक्रे विदि धनसंस्थे।
ईदृग्योगे चलति नरेशो जेता शत्रून् गरुड इवाहीन् ॥६०॥

अन्वयः—चन्द्रे द्यूने, अर्के समुदयगे, जीवे शुक्रे विदि धनसंस्थे, ईदृग्योगे यदि नरेशः चलति तदा सः गरुडः अहीनिव शत्रून् जेता ॥ ६० ॥

भा०—७ वें भाव में चन्द्रमा हो, लग्न में सूर्य हो, बृहस्पति शुक्र और बुध ये तीनों द्वितीय भाव में हो तो ऐसे योग में चलने वाला राजा शत्रुओं को उसी प्रकार जीतता है जैसे सर्पों को गरुड़ ॥ ६० ॥

पुनः जययोग—

वित्तगतः शशिपुत्रो भ्रातरि वासरनाथः।
लग्नगतो भृगुपुत्रः स्युः शलभा इव सर्वे ॥ ६१ ॥

अन्वयः—शशिपुत्रः वित्तगतः, वासरनाथः भ्रातरि, भृगुपुत्रे लग्नगते सति सर्वे शत्रवः शलभा इव स्युः ॥ ६१ ॥

भा०—द्वितीय भाव में बुध, ३सरे में सूर्य और लग्न में शुक्र हो तो यात्रा करने वाले के सब शत्रु उसी प्रकार नष्ट हो जाते हैं जैसे दीप पर पतंग अपने आप गिरकर नष्ट होते हैं ॥ ६१ ॥

जययोग—

उदये रविर्यदि सौरिररिगः शशी दशमेऽपि।
वसुधापतिर्यदि याति रिपुवाहिनी वशमेति ॥ ६२ ॥

अन्वयः—यदि रविः उदये, सौरिः अरिगः, शशी दशमे (संस्थिते) यदि वसुधाधिपतिः याति तदा रिपुवाहिनी वशम् एति ॥ ६२ ॥

भा०—लग्न में सूर्य, ६ में शनि, १० में चन्द्रमा हो तो ऐसे योग में जो राजा यात्रा करता है उसके वश में शत्रुओं की सेना हो जाती है॥

जययोग—

तनौ शनिकुजौ रविर्दशमे बुधो भृगुसुतोऽपि लाभदशमे।
त्रिलाभरिपुभेषु भूसुतशनी गुरुज्ञभृगुजास्तथा बलयुताः ॥६३॥

अन्वयः—तनौ शनिकुजौ, रविर्दशमे, बुधो भृगुसुतोऽपि लाभदशमे, भूसुतशनी त्रिलाभरिपुभेषु (स्याताम्) गुरुज्ञभृगुजाः बलयुताः (स्युश्चेत्तदा) जयः स्यात् ॥ ६३ ॥

भा०—लग्न में शनि और मंगल, १० में सूर्य, बुध और शुक्र ११, और १० में, ३, ११, ६ में मंगल और शनि हो और गुरु, बुध एवं शुक्र ये तीनों बली हों तो ऐसे योग में यात्रा करने वाला राजा विजयी होता है ॥ ६३ ॥

जययोग—

समुदयगे विबुधगुरौ मदनगते हिमकिरणे ।
हिबुकगतौ बुधभृगुजौ सहजगताः खलखचराः ॥ ६४ ॥

अन्वयः—विबुधगुरौ समुदयगे, हिमकिरणे मदनगते (सति), बुधभृगुजौ हिबुकगतौ, खलखचराः सहजगता (भवन्ति) तदाऽपि जयः स्यात् ॥ ६४ ॥

भा०—लग्न में गुरु, ७ में चन्द्रमा, ४ में बुध शुक्र और अन्य सब पाप ग्रह ३ में हो तो भी विजय होती है ॥ ६४ ॥

जययोग—

त्रिदशगुरुस्तनुगो मदने हिमकिरणो रविरायगतः ।
सितशशिजावपि कर्मगतौ रविसुतभूमिसुतौ सहजे ॥ ६५ ॥

अन्वयः—त्रिदशगुरुः (बृहस्पतिः) तनुगः, हिमकिरणः मदने, रविः आयगतः, सितशशिजौ कर्मगतौ, रविसुतभूमिसुतौ सहजे (स्थितौ सन्तौ) तथापि जयः ॥ ६५ ॥

भा०—लग्न में गुरु, ७ में चन्द्रमा, ११ में सूर्य, १० में शुक्र और बुध तथा ३ में शनि मंगल हों तो भी विजय होती है ॥ ६५ ॥

जययोग—

देवगुरौ वा शशिनि तनुस्थे वासरनाथे रिपुभवनस्थे ।
पञ्चमगेहे हिमकरपुत्रः कर्मणि सौरिः सुहृदि सितश्च ॥ ६६ ॥

अन्वयः—देवगुरौ वा शशिनि तनुस्थे, वासरनाथे रिपुभवनस्थे, हिमकरपुत्रः पञ्चमगेहे (स्थितः), सौरिः कर्मणि च (पुनः) सितः सुहृदि (स्यात्तदाऽपि जयः) ॥ ६६ ॥

भा०—लग्न में गुरु या चन्द्रमा हो, ६ में सूर्य, ५ वें में बुध, १० में शनि और ४ में शुक्र हो तो भी राजा विजयी होता है ॥ ६६ ॥

जययोग—

हिमकिरणसुतो बली चेत्तनौ त्रिदशपतिगुरुर्हि केन्द्रस्थितः ।
व्ययगृहसहजारिधर्म्मस्थितो यदि च भवति निर्बलश्चन्द्रमाः ॥६७॥

अन्वयः—बली हिमकिरणसुतः तनौ चेत्, त्रिदशपतिगुरुः केन्द्रस्थितः, च (पुनः) यदि निर्बलः चन्द्रमाः व्ययगृहसहजारिधर्मस्थितः भवति (तदा) यातुः जय (एव) ॥ ६७ ॥

भा०—लग्न में बलवान् बुध हो, केन्द्र में बृहस्पति हो और निर्बल चन्द्रमा १२, ३, ६, ९ भाव में हो तो यात्रा करने में विजय होता है ॥

विजययोग—

अशुभखगैरनवाष्टमदस्थैर्हिबुकसहोदरलाभगृहस्थः
कविरिह केन्द्रगगीष्पतिदृष्टो वसुचयलाभकरः खलु योगः ॥६८॥

अन्वयः—अशुभखगैः अनवाष्टमदस्थैः, कविः हिबुकसहोदरलाभगृहस्थः केन्द्रगगीष्पतिदृष्टः इह खलु वसुचयलाभकरः योगः स्यात् ॥ ६८ ॥

भा०—यदि ७, ८, ६ भावों से भिन्न भावों में पाप ग्रह हों, तथा शुक्र यदि ४, ३, ११ भाव में हो केन्द्रगत बृहस्पति से देखे जाते हों तो यह योग यात्रा करने वाले को धन समूह दिलाने वाला होता है ॥६८॥

जययोग—

रिपुलग्नकर्म्महिबुके शशिजे परिवीक्षिते शुभनभोगमनैः ।
व्ययलग्नमन्मथगृहेषु जयः परिवर्जितेष्वशुभनामधरैः ॥ ६९ ॥

अन्वयः—शशिजे रिपुलग्नकर्महिबुके (गते सति) शुभनभोगमनैः परिवीक्षिते, अशुभनामधरैः (पापग्रहैः) व्ययलग्नमन्मथगृहेषु परिवर्जितेषु जय एव स्यात् ॥ ६९ ॥

भा०—यदि बुध ६, १, १०, ४ भाव में हो उस पर शुभ ग्रह की दृष्टि हो तथा पाप ग्रह यदि १२, १, ७ इन भावों से भिन्न भाव में हो तो ऐसे योग में चलने से भी विजय होती है ॥ ६९ ॥

जयलाभ योग—

लग्ने यदि जीवः पापा यदि लाभे कर्म्मण्यपि चेद्राज्याधिगमः स्यात्।
द्यूने बुधशुक्रौ चन्द्रो हिबुके वा तद्वत्फलमुक्तं सर्वैर्मुनिवर्यैः ॥७०॥

अन्वयः—यदि जीवः लग्ने, पापाः यदि लाभे अपि वा कर्मणि चेत् स्युः तदा राज्याधिगमः स्यात् । वा बुधशुक्रौ द्यूने, चन्द्रः हिबुके स्यात्तदापि सर्वैरपि मुनिवर्यैः तद्वत् फलमुक्तम् ॥ ७० ॥

भा०—लग्न में गुरु हो, ११ में या १० में पापग्रह हो तो इस योग में यात्रा करने से राज्यलाभ होता है। अथवा ७ वें में बुध शुक्र, ४ में चन्द्रमा हो तो भी सब मुनियों ने वही फल (राज्यलाभ) कहा है ॥ ७० ॥

राज्यप्राप्तियोग—

रिपुतनुनिधने शुक्रजीवेन्दवो ह्यथ बुधभृगुजौ तुर्यगेहस्थितौ ।
मदनभवनगश्चन्द्रमा अम्बुगः शशिसुतभृगुजान्तर्गतश्चन्द्रमाः॥७१॥

अन्वयः—शुक्रजीवेन्दवः रिपुतनुनिधने (स्थिताः) अथ बुधभृगुजौ तुर्यगेहस्थितौ, चन्द्रमा अम्बुगः, चन्द्रमा मदनभवनगः, वा शशिसुतभृगुजान्तर्गतः स्यात्तदाऽपि यातुः जय एव स्यात् ॥ ७१ ॥

भा०—६, १, ८ भावों में यथाक्रम शुक्र, गुरु, चन्द्रमा हो, अथवा चतुर्थ में बुध और शुक्र हो चन्द्रमा सप्तम हो अथवा ४ र्थ चन्द्रमा बुध शुक्र के बीच में हो तो इन सब योगों में भी राज्यलाभ होता है ॥ ७१ ॥

राज्यप्राप्तियोग—

सितजीवभौमबुधभानुतनूजास्तनुमन्मथारिहिबुकत्रिगृहे चेत् ।
क्रमतोऽरिसोदरखशात्रवहोराहिबुकायगैर्गुरुदिनेऽखिलखेटैः॥७२।

अन्वयः—सितजीवभौमबुधभानुतनूजाः तनुमन्मथारिहिबुकत्रिगृहे (स्थिताः स्युः) चेत्तदाऽपि जय एव । वा गुरुदिने अखिलखेटैः (क्रमतः) अरिसोदरख-शात्रवहोराहिबुकायगैः सद्भिः यातुः जयः स्यात् ॥ ७२ ॥

भा०—१, ७, ६, ४, ३ भावों में क्रम से शुक्र, गुरु, मङ्गल, बुध, शनि हो तो राज्यलाभ होता है । अथवा बृहस्पति के दिन यदि सूर्यादि ग्रह क्रम से ६, ३, १०, ६, १, ४, ११ भावोंमें हो तो ऐसे योगमें भी यात्रा करनेसे लाभ होता है ॥ ७२ ॥

राजयोग—

सहजे कुजो निधनगश्च भार्गवो मदने बुधो रविररौ तनौ गुरुः ।
अथ चेत्स्युरिज्यसितभानवो जलत्रिगता हि सौरिरुधिरौ रिपुस्थितौ

अन्वयः—कुजः सहजे, भार्गवश्च निधनगः, बुधः मदने, रविः अरौ, गुरुः तनौ अथ चेत् इज्यसितभानवः जलत्रिगताः, सौरिरुधिरौ रिपुस्थितौ [स्याताम् तदा] हि [निश्चयेन] जयः स्यात् ॥ ७३ ॥

भा०—३ रे मंगल, ८ में शुक्र, ७ में बुध, ६ में सूर्य, लग्न में गुरु हो तो भी विजय होती है । अथवा ४, ३ भाव में गुरु, शुक्र, सूर्य हों और ६ में शनि मंगल हों तो भी यात्रा करने से विजय होती है ॥७३॥

योग अधियोग योगाधियोग—

एको ज्ञेज्यसितेषु पञ्चमतपःकेन्द्रेषु योगस्तथा
द्वौ चेत्तेष्वधियोग एषु सकला योगाधियोगः स्मृतः ।
योगे क्षेममथाधियोगगमने क्षेमं रिपूणां वध-
श्चाथो क्षेमयशोऽवनीश्च लभते योगाधियोगे व्रजन् ॥७४॥

अन्वयः—ज्ञेज्यसितेषु एकः यदि पञ्चमतपःकेन्द्रेषु तदा योगः, द्वौ चेत् तदा अधियोगः स्यात् । एषु यदि सकलाः स्थिताः तदा योगाधियोगः स्यात् । अथ योगे (गमने विहिते सति) क्षेमं, अधियोगगमने रिपूणां वधं च लभते, योगाधियोगे व्रजन् क्षेमयशोऽवनीश्च लभते ॥ ७४ ॥

भा०—बुध, गुरु और शुक्र इनमें कोई एक ग्रह यदि लग्न से ५, ९, १, ४, ७, १० में हो तो योग, यदि २ ग्रह उक्त स्थान में हों तो अधि-

योग और तीनों उक्त स्थान में हों तो योगाधियोग कहलाता है। योग में यात्रा करने से कल्याण, तथा अधियोग में चलने से कल्याण और शत्रुओं का नाश, एवं योगाधियोग में चलने से कल्याण, सुयश और भूमि का लाभ होता है ॥ ७४ ॥

विजया दशमी—

इषमासि सिता दशमी विजया शुभकर्मसु सिद्धिकरी कथिता।
श्रवणर्क्षयुता सुतरां शुभदा नृपतेस्तु गमे जयसन्धिकरी ॥७५॥

अन्वयः—इषमासि (आश्विने मासे) सिता (शुक्लपक्षीया) दशमी विजया (प्रोक्ता, सा) शुभकर्मसु सिद्धिकरी कथिता। श्रवणर्क्षयुता सा सुतरां शुभदा स्यात्। नृपतेः गमे तु जयसंधिकरी भवेत् ॥ ७५ ॥

भा०—आश्विन शुक्ल पक्ष की दशमी विजया दशमी कहलाती है। वह यात्रा तथा सब शुभकार्य में सिद्धि देनेवाली कही गई है। यदि यह दशमी श्रवण नक्षत्र से युत हो तो अत्यन्त शुभप्रद होती है। राजा की युद्ध यात्रा में तो विजय अथवा सन्धि (मैत्री) करानेवाली होती है ॥ ७५ ॥

चित्तशुद्धि और शकुन में यात्रा विचार—

चेतोनिमित्तशकुनैरति सुप्रशस्तै-
र्ज्ञात्वा विलग्नबलमुर्व्यधिपः प्रयाति।
सिद्धिर्भवेदथ पुनः शकुनादितोऽपि
चेतोविशुद्धिरधिका न च तां विनेयात् ॥७६॥

अन्वयः—यदि विलग्नबलं ज्ञात्वा अति सुप्रशस्तैः चेतोनिमित्तशकुनैः उर्व्यधिपः (भूपतिः) प्रयाति चेत्तदा खलु (निश्चयेन) सिद्धिः भवेत्। अथ पुनः शकुनादितोऽपि अधिका चेतोविशुद्धिः स्यात् तां विना न इयात् (न गच्छेत्) ।७६।

भा०—हृदय, निमित्त, शकुन (आगे कहे हुए) ये सब प्रशस्त हों तब राजा लग्नबल आदि को देखकर यात्रा करे। इस प्रकार यात्रा करने से अभीष्ट सिद्ध होता है। शकुन आदि शब्द से और निमित्त तथा लग्नबलादि से भी मनकी प्रसन्नता ही अधिक फल देनेवाली होती है। इसलिये मनकी प्रसन्नता के बिना अच्छे मुहूर्त में भी यात्रा नहीं करनी चाहिये ॥ ७६ ॥

यात्रा में प्रतिबन्ध—

व्रतबन्धनदेवताप्रतिष्ठाकरपीडोत्सवसूतकासमाप्तौ।
न कदापि चलेदकालविद्युद्घनवर्षातुहिनेऽपि सप्तरात्रम् ॥७७॥

अन्वयः—व्रतबन्धनदेवताप्रतिष्ठाकरपीडोत्सवसूतकासमाप्तौ कदापि न चलेत्। अकालविद्युद्घनवर्षातुहिनेऽपि सप्तरात्रं यावत् न चलेत् ॥ ७७ ॥

भा०—यदि घर में उपनयन, देवता की प्रतिष्ठा, विवाहादि उत्सव तथा जन्म या मरण जन्य सूतक हो तो इन सबों को समाप्त होने से पूर्व कदापि यात्रा नहीं करनी चाहिये। तथा अकाल (वर्षा ऋतु से भिन्न) समय में बिजली, मेघ, वर्षा एवं शिशिर से भिन्न समय में पाला (कोहरा) हो तो ७ दिन पर्यन्त यात्रा नहीं करनी चाहिये ॥७७॥

एक दिन में गमन प्रवेश में दिक्शूलादि निषेध—

महीपतेरेकदिने पुरात्पुरे यदा भवेतां गमनप्रवेशकौ।
भवारशूलप्रतिशुक्रयोगिनीर्विचारयेन्नैव कदापि पण्डितः ॥७८॥

अन्वयः—यदा महीपतेः एकदिने पुरात् पुरे गमनप्रवेशकौ भवेताम् तदा भवारशूलप्रतिशुक्रयोगिनीः पण्डितः कदापि नैव विचारयेत् ॥ ७८ ॥

भा०—राजा को चाहिये कि—यदि एक ही दिन में यात्रा करके गन्तव्य स्थान में पहुँच जाने की सम्भावना हो तो ऐसी स्थिति में वार या नक्षत्र शूल, सम्मुख शुक्र, योगिनी का विचार कदापि नहीं करे ॥७८॥

प्रवेशमुहूर्त—

यद्येकस्मिन् दिवसे महीपतेर्निर्गमप्रवेशौ स्तः।
तर्हि विचार्य्यः सुधिया प्रवेशकालो न यात्रिकस्तत्र ॥ ७९ ॥

अन्वयः—यदि महीपतेः एकस्मिन् दिवसे निर्गमप्रवेशौ स्तः तर्हि तत्र सुधिया प्रवेशकालः विचार्यः, यात्रिकः न (विचार्यः) ॥ ७९ ॥

भा०—यदि एक ही दिन में एक गाँव से यात्रा का गन्तव्य गाँव में पहुँचना हो तो इस हालत में गन्तव्य गाँव में प्रवेश करने के ही मुहूर्त का विचार करे, यात्राकाल का विचार नहीं करे ॥ ७९ ॥

त्रिनवमीदोष—

प्रवेशान्निर्गमं तस्मात् प्रवेशं नवमे तिथौ।
नक्षत्रे च तथा वारे नैव कुर्यात् कदाचन ॥ ८० ॥

अन्वयः—प्रवेशात् निर्गमं, तस्मात (निर्गमदिवसात्) नवमे तिथौ नवमे नक्षत्रे तथा च नवमे वारे कदाचन प्रवेशं नैव कुर्यात् ॥ ८० ॥

भा०—नगर या गाँव में प्रवेश दिन से नवमें नक्षत्र, नवमी तिथि, ९ वें वार में फिर यात्रा तथा यात्रा दिन से नवमी तिथि, नवमें नक्षत्र या नवमें वारमें गन्तव्य स्थान में प्रवेश कदापि नहीं करना चाहिये ॥

यात्राविधि—

अग्निं हुत्वा देवतां पूजयित्वा
नत्वा विप्रानर्च्चयित्वा दिगीशम्।

दत्वा दानं ब्राह्मणेभ्यो दिगीशं
ध्यात्वा चित्ते भूमिपालोऽधिगच्छेत् ॥ ८१ ॥

अन्वय.—अग्नि हुत्वा, देवतां पूजयित्वा, विप्रान् नत्वा, दिगीशं अर्चयित्वा, ब्राह्मणेभ्यो दानं दत्वा, दिगीशं ध्यात्वा भूमिपालः अधिगच्छेत् ॥ ८१ ॥

भा०—विधान पूर्वक अग्नि में हवन करके, इष्ट देवता की पूजा करके, ब्राह्मणों को प्रणाम करके, गन्तव्य दिशा के स्वामी का पूजन करके, ब्राह्मणों को यथाशक्ति दान देकर और दिशास्वामी का ध्यान करता हुआ राजा यात्रा करे ॥ ८१ ॥

दोषशान्त्यर्थं नक्षत्रदोहद—

कुल्माषांस्तिलतण्डुलानपि तथा माषांश्च गव्यं दधि
त्वाज्यं दुग्धमथैणमांसमपरं तस्यैव रक्तं तथा ।
तद्वत् पायसमेव चाषपललं मार्गञ्च शाशं तथा
षाष्टिक्यश्च प्रियंग्वपूपमथवा चित्राण्डजान् सत्फलम् ॥८२॥
कौर्मं सारिकगोधिकञ्च पललं शाल्यं हविष्यं हया-
द्यृक्षे स्यात् कृसरान्नमुद्गमपि वा पिष्टं यवानां तथा ।
मत्स्यान्नं खलु चित्रितान्नमथवा दध्यन्नमेवं क्रमाद्
भक्ष्याभक्ष्यमिदं विचार्य्य मतिमान् भक्षेत् तथालोकयेत् ॥८३॥

अन्वयः—हयाद्यृक्षे (अश्विन्यादिनक्षत्रे क्रमात्) कुल्माषान् तिलतण्डुलान् तथा माषान् गव्यं दधि आज्यं दुग्धं अथ ऐणमांसं तस्यैव रक्तं, तथा पायस, चाषपललं, मार्गं, शाशं (मांसम्) तथा षाष्टिक्यं प्रियंग्वपूपम् अथ चित्राण्डजान् सत्फलम् कौर्मं पललं च (पुनः) सारिकगोधिकं पललं, शाल्यं हविष्यं, कृसरान्नम् मुद्गम् अपि वा यवानां पिष्टम् तथा मत्स्यान्नं चित्रितान्नं दध्यन्नं एवं कुल-देशानुसारेण भक्ष्याभक्ष्यं विचार्य मतिमान् भक्षेत् तथा आलोकयेत् ॥८२-८३॥

भा०—१ उड़द, २ तिल और चावल, ३ माष (उड़द), ४ गायका दही, ५ गोघृत, ६ गोदुग्ध, ७ मृग (हरिण) का मांस, ८ हरिण का शोणित, ९ खीर, १० चाष पक्षीका मांस, ११ मृगमांस, १२ खरगोश का मांस, १३ साठी धान्य का भात, १४ कंकुनी, १५ पूआ, १६ अनेक रंग के पक्षी का मांस, १७ सुन्दर फल, १८ कछुए का मांस, १९ सारिका पक्षी का मांस, २० गोह का मांस, २१ शाही का मांस, २२ मूंग आदि हविष्यान्न, २३ खिचड़ी, २४ मूंग, २५ जौ की पिट्ठी, २६ मछली भात, २७ खिचड़ी, २८ दही-भात ये अश्विनी आदि (अभिजित् सहित), २८ नक्षत्रों के दोहद हैं। जिस नक्षत्र में यात्रा करनी हो उस नक्षत्र के दोहद को भक्ष्य-अभक्ष्य विचार करके भोजन करके था दर्शन करके यात्रा करनी चाहिये। इस प्रकार नक्षत्रजन्य दोष की शान्ति हो जाती है ॥ ८२-८३ ॥

दिशाओं के दोहद—

आज्यं तिलौदनं मत्स्यं पयश्चापि यथाक्रमम् ।
भक्षयेद्दोहदं दिश्यमाशां पूर्वादिकां व्रजेत् ॥ ८४ ॥

अन्वयः—आज्यं तिलौदनं मत्स्यं अपि च पयः यथाक्रमं दिश्यं दोहदं भक्षयेत् (पश्चात्) पूर्वादिकां आशां (दिशं) व्रजेत् ॥ ८४ ॥

भा०—१ घृत, २ तिल और भात, ३ मछली, और ४ दूध ये क्रम से पूर्व आदि चारों दिशाओं के दोहद हैं अतः गन्तव्य दिशा के दोहद भक्षण करके उस दिशाको यात्रा करने से इष्टसिद्धि होती है ॥ ८४ ॥

रवि आदि वारदोहद—

रसालां पायसं काञ्जीं शृतं दुग्धं तथा दधि ।
पयोऽशृतं तिलान्नञ्च भक्षयेद्वारदोहदम् ॥ ८५ ॥

अन्वयः—रसालां, पायसं, काञ्जीं, शृतं दुग्धं, तथा दधि, अशृतं पयः तिलान्नं च [रविमारभ्य क्रमशः] वारदोहदं भक्षयेत् ॥ ८५ ॥

भा०—रविवार में रसाला (सिखरन), सोमवार को पायस (खीर), मंगलवार को काँजी, बुधवार को उबाला हुआ दूध, बृहस्पति में दही, शुक्र में कच्चा दूध, शनि में तिल भात—ये वार दोहद हैं। जिस वार में यात्रा करनी हो उस दिन उसके दोहद भोजन करके यात्रा करना चाहिये ॥ ८५ ॥

प्रतिपदादि तिथिदोहद—

पत्रादितोऽर्कदलतण्डुलवारिसर्पिः
श्राणाहविष्यमपि हेमजलं त्वपूपम् ।
भुक्त्वा व्रजेद्रुचकमम्बु च धेनुमूत्रं
यावान्नपायसगुडानसृगन्नमुद्गान् ॥ ८६ ॥

अन्वयः—पक्षादितः (क्रमशः) अर्कदलतण्डुलवारिसर्पिःश्राणाहविष्यं हेमजलं अपूपम् रुचकं अम्बु च (पुनः) धेनुमूत्रम् यावान्नपायसगुडानसृगन्नमुद्गान् भुक्त्वा व्रजेत् ॥ ८६ ॥

भा०—१ मदार का पत्ता, २ चावल का धोवन जल, ३ घृत, ४ श्राणा (हलुआ), ५ हविष्य (मूँग जौ आदि), ६ सुवर्ण से धोया जल, ७ मालपूआ, ८ अनार, ९ जल १० गोमूत्र, ११ जौ का भात, १२ खीर, १३ गुड़, १४ खाद्य जन्तु के रक्त और भात १५ मूँग ये क्रम से प्रतिपदादि १५ तिथियों के दोहद हैं। जिस तिथि में यात्रा करनी हो उसकी दोहद खाकर यात्रा करने से तिथिदोष शान्त होकर इष्ट सिद्धि होती है ॥ ८६ ॥

यात्राविधि—

उद्धृत्य प्रथमत एव दक्षिणाङ्घ्रिं
द्वात्रिंशत् पदमधिगत्य दिश्ययानम् ।
आरोहेत्तिलघृतहेमताम्रपात्रं
दत्वादौ गणकवराय च प्रगच्छेत् ॥ ८७ ॥

अन्वयः—प्रथमतः दक्षिणाङ्घ्रि एव उद्धृत्य, द्वात्रिंशत्पदम् अधिगत्य, दिश्ययानं दिशोक्तवाहनम् आरोहेत् । च (पुनः) आदौ गणकवराय तिलघृतहेमताम्रपात्रं दत्वा प्रगच्छेत् ॥ ८७ ॥

भा०—यात्रा समय में पहिले दाहिने पैर को उठाकर ३२ पद चलकर आगे कहे हुए गन्तव्य दिशा के सवारी पर चढ़कर तिल, घृत और सुवर्ण सहित ताँबे का पात्र ज्यौतिषशास्त्रज्ञों को देकर चलना चाहिये ॥ ८७ ॥

दिशा में यात्रा का वाहन—

प्राच्यां गच्छेद् गजेनैव दक्षिणस्यां रथेन हि ।
दिशि प्रतीच्यामश्वेन तथोदीच्यां नरैर्नृपः ॥ ८८ ॥

अन्वयः—नृपः प्राच्यां गजेनैव, दक्षिणस्यां हि रथेन, प्रतीच्यां दिशि अश्वेन तथा उदीच्यां नरैः गच्छेत् ॥ ८८ ॥

भा०—पूर्व दिशा में जाना हो तो हाथी पर, दक्षिण में रथ (घोड़ा गाड़ी आदि) पर, पश्चिम में घोड़े पर और उत्तर दिशा में नरयान (पालकी) पर चढ़कर जाना चाहिये ॥ ८८ ॥

यात्रा कहाँ से करे—

देवगृहाद्वा गुरुसदनाद्वा स्वगृहान्मुख्यकलत्रगृहाद्वा ।
प्राश्य हविष्यं विप्रानुमतः पश्यन् शृण्वन् मङ्गलमेयात् ॥८९॥

अन्वयः—देवगृहात् वा गुरुसदनात् वा स्वगृहात् वा मुख्यकलत्रगृहात् विप्रानुमतः नृपः हविष्यं मंगलं पश्यन् शृण्वन् एयात् (व्रजेत्) ॥ ८९ ॥

भा०—अपने इष्टदेव के मन्दिर से, अथवा गुरु के घर से अथवा मुख्य पत्नी के घर से हविष्य अन्नादि भोजन करके ब्राह्मणों से आज्ञा लेकर मङ्गल वस्तुओं को देखता और मङ्गल शब्दों को सुनता हुआ चलना चाहिये ॥ ८९ ॥

यात्रा में प्रस्थान की वस्तु—

कार्य्याद्यैरिह गमनस्य चेद्विलम्बो
भूदेवादिभिरुपवीतकायुधश्च ।
क्षौद्रश्चामलफलमाशु चालनीयं
सर्वेषां भवति यदेव हृत्प्रियं वा ॥ ९० ॥

अन्वयः—कार्यार्थं चेत् गमनस्य विलम्बो भवेत् तदा भूदेवादिभिः क्रमात् उपवीतं, आयुधं, च [पुनः] क्षौद्रं, आमलफलं च आशु चालनीयम्। वा सर्वेषां यदेव [वस्तु] हृत्प्रियं भवति तदेव चालनीयम् ॥ ६० ॥

भा०—यदि किसी आवश्यक कार्यवश निश्चित किये हुए यात्रा लग्न में चलने में विलम्ब की सम्भावना हो तो निश्चित लग्न समय में ब्राह्मण यज्ञोपवीत, क्षत्रिय शस्त्र, वैश्य शहद और शूद्रवर्ण आँवला का फल प्रस्थान करावे, अथवा जिस व्यक्ति को जो वस्तु परम प्रिय हो उसी को सुलग्न में प्रस्थान करावे, फिर पीछे अपने कार्य को सम्पन्न करके चलना चाहिये ॥ ६० ॥

प्रस्थान के स्थान की अवधि—

गेहाद्गेहान्तरमपि गमस्तर्हि यात्रेति गर्गः
सीम्नः सीमान्तरमपि भृगुर्बाणविक्षेपमात्रम् ।
प्रस्थानं स्यादिति कथयतेऽथो भरद्वाज एवं
यात्रा कार्या बहिरिह पुरात्स्यात् वसिष्ठो ब्रवीति ॥ ६१ ॥

अन्वयः—यदि गेहात् गेहान्तरमपि गमः तर्हि यात्रा (भवति) इति गर्गः (ब्रवीति)। तथा सीम्नः सीमान्तरं (यावत्) यात्रा भवति इति भृगुः ब्रवीति। अथो बाणविक्षेपमात्रं (यात्रा) स्यात् एवं भरद्वाजः कथयते, इह पुरात् बहिः यात्रा कार्या इति वसिष्ठः ब्रवीति ॥ ९१ ॥

भा०—ऊपर कहे हुए अपने प्रिय वस्तु का अपने घर से दूसरे घर में भेजे तो यात्रा (प्रस्थान) समझी जाती है ऐसा गर्ग ऋषि ने कहा है। तथा अपनी गाँव की सीमा से दूसरी सीमा तक वस्तु को भेजे ऐसा भृगु ऋषि ने कहा है। एवं धनुष द्वारा बाण (शर) जहाँ तक जा सके उससे अधिक दूर प्रिय वस्तु को प्रस्थित करे, ऐसा भरद्वाज ऋषि ने कहा है। तथा अपने गाँव से बाहर प्रिय वस्तु को प्रस्थित करे ऐसा वसिष्ठ ने कहा है ॥ ६१ ॥

प्रस्थानविशेष—

प्रस्थानमत्र धनुषां हि शतानि पञ्च
केचिच्छतद्वयमुशन्ति दशैव चान्ये ।
संप्रस्थितो य इह मन्दिरतः प्रयातो
गन्तव्यदिक्षु तदपि प्रयतेन कार्य्यम् ॥ ६२ ॥

अन्वयः—अत्र केचित् धनुषां पञ्चशतानि (दूरं यावत्) प्रस्थानं उशन्ति। इह यः संप्रस्थितः स मन्दिरतः गन्तव्यदिक्षु प्रयातः स्यात्तदपि प्रयतेन (सावधानतया) कार्यम् ॥ ९२ ॥

भा०—कोई आचार्य कहते हैं कि—५०० धनुष पर प्रिय वस्तु प्रस्थित करावे। कोई २०० धनुष और कोई १० दश ही धनुष पर्यन्त कहते हैं। तथा सर्वसम्मति यह है कि—यात्रा करने वाले को चाहिये कि जिस दिशा में जाना हो उसी दिशा में अपने घर से प्रिय वस्तु को प्रस्थित करावे॥ ९२॥

प्रस्थान के बाद ठहरने का परिमाण—

प्रस्थाने भूमिपालो दशदिवसमभिव्याप्य नैकत्र तिष्ठेत्
सामन्तः सप्तरात्रं तदितरमनुजः पञ्चरात्रं तथैव।
ऊर्ध्वं गच्छेच्छुभाहेऽप्यथ गमनदिनात् सप्तरात्राणि पूर्वं
चाशक्तौ तद्दिनेऽसौ रिपुविजयमना मैथुनं नैव कुर्यात्॥९३॥

अन्वयः—प्रस्थाने (सति) भूमिपालः दशदिवसं अभिव्याप्य एकत्र न तिष्ठेत्। ऊर्ध्वं शुभाहे गच्छेत्। अथ रिपुविजयमनाः असौ गमनदिनात् पूर्वं सप्तरात्राणि मैथुन न कुर्यात्। अशक्तौ तद्दिने मैथुनं नैव कुर्यात्॥ ९३॥

भा०—इस प्रकार प्रस्थान करने के बाद राजा को १० दश दिन एक स्थान में नहीं ठहरना चाहिये अर्थात् दश अहोरात्र के भीतर ही यात्रा भी कर देनी चाहिये एवं सामन्त (मण्डलेश्वर राजा के आधीन छोटा राजा) ७ रात्र तथा अन्य पुरुष ५ रात्र तक ठहरे। यदि इससे अधिक समय ठहरना पड़े तो उसके बाद फिर शुभ लग्न मुहूर्त बनाकर यात्रा करे। तथा शत्रुओं को जीतने की कामना करने वाले को चाहिये कि यात्रा समय से पूर्व ७ रात्रि मैथुन नहीं करे। यदि अशक्त हो तो १ दिन पूर्व अवश्य ही मैथुन को त्याग करे॥ ९३॥

त्याज्य वस्तु—

दुग्धं त्याज्यं पूर्वमेव त्रिरात्रं क्षौरं त्याज्यं पञ्चरात्रञ्च पूर्वम्।
क्षौद्रं तैलं वासरेऽस्मिन् वमिश्च त्याज्यं यत्नाद्भूमिपालेन नूनम्॥९४॥

अन्वयः—गमनदिनात् पूर्वमेव त्रिरात्रं दुग्धं त्याज्यम्, पञ्चरात्रं पूर्वं क्षौरं च (पुनः) अस्मिन् वासरे (गमनदिवसे) क्षौद्रं तैलं वमिश्च (एतत्सर्वं) भूमिपालेन यत्नात् नूनं त्याज्यम्॥ ९४॥

भा०—यात्रा दिन से पूर्व ३ दिन दूध, ५ दिन पूर्व क्षौर, तथा यात्रा के दिन में शहद (मधु), तेल और वमन—राजा को छोड़ देना चाहिये॥ ९४॥

विशेष त्याज्य—

भुक्त्वा गच्छति यदि चेत् तैलगुडक्षारपक्वमांसानि।
विनिवर्त्तते स रुग्णः स्त्रीद्विजमवमान्य गच्छतो मरणम्॥९५॥

अन्वयः—यदि चेत् तैलगुडक्षारपक्वमांसानि भुक्त्वा गच्छति तदा स रुग्णः सन् विनिवर्त्तते, तथा स्त्रीद्विजमवमान्य गच्छतः मरणं भवेत्॥ ९५॥

भा०—यदि यात्री यात्राके दिन तेल, गुड़, नमक और पकाया मांस का भोजन करके चलता है तो वह रोगी होकर लौटता है। तथा स्त्री और ब्राह्मणका अपमान करके यात्रा करनेवालोंका मरण होता है ॥९५

अकालवृष्टि—

यदि मा:सु चतुर्षु पौषमासादिषु वृष्टिर्हि भवेदकालवृष्टिः।
पशुमर्त्यपदाङ्किता न यावद्वसुधा स्यान्न हि तावदत्र दोषः ॥ ९६ ॥

अन्वयः—यदि पौषमासादिषु चतुर्षु मा:सु वृष्टिर्भवेत् असौ अकालवृष्टिः स्यात्। अथ यावत् पशुमर्त्यपदाङ्किता वसुधा न भवेत् तावत् दोषः न हि स्यात् ॥९६॥

भा०—पौष आदि चार (पौष, माघ, फाल्गुन, चैत्र) मासों में वर्षा हो तो अकाल वृष्टि कहलाती है। इस समय में वृष्टि होने से जब तक पशु या मनुष्यों के पैर से पृथ्वी पर चिह्न नहीं होता है तबतक दोष नहीं कहा गया है ॥ ९६ ॥

अकालवृष्टि दोषों की शान्ति—

अल्पायां वृष्टौ दोषोऽल्पो भूयस्यां दोषो भूयान्
जीमूतानां निर्घोषे वृष्टौ वा जातायां भूपः।
सूर्येन्द्वोर्बिम्बे सौवर्णे कृत्वा विप्रेभ्यो दद्याद्
दुःशाकुन्ये साज्यं स्वर्णं दत्त्वा गच्छेत्स्वेच्छाभिः ॥ ९७ ॥

अन्वयः—अल्पायां वृष्टौ अल्पो दोषः, भूयस्यां वृष्टौ भूयान् दोषः, जीमूतानां निर्घोषे वा वृष्टौ जातायां भूपः सूर्येन्द्वोः सौवर्णे बिम्बे कृत्वा विप्रेभ्यः दद्यात्, दुःशाकुन्ये (जाते सति) साज्यं स्वर्णं दत्त्वा स्वेच्छाभिः गच्छेत् ॥ ९७ ॥

भा०—थोड़ी वर्षा में थोड़ा और अधिक वर्षा में अधिक दोष होता है। अकाल वृष्टिमें मेघका शब्द या वृष्टि हो तो उसकी शान्तिके लिये राजाको चाहिये कि सूर्य और चन्द्रमा की सोने की प्रतिमा बनाकर ब्राह्मणों को देकर यात्रा करे। तथा अपशकुन होनेपर घृत और सुवर्ण दान करके इच्छानुसार यात्रा करे ॥ ९७ ॥

यात्रा में शुभसूचक शकुन—

विप्राश्वेभफलान्नदुग्धदधिगोसिद्धार्थपद्माम्बरं
वेश्यावाद्यमयूरचाषनकुला बद्धैकपश्वामिषम्।
सद्वाक्यं कुसुमेक्षुपूर्णकलशच्छत्राणि मृत्कन्यका-
रत्नोष्णीषसितोक्षमद्यससुतस्त्रीदीप्तवैश्वानराः ॥ ९८ ॥

आदर्शाञ्जनधौतवस्त्ररजका मीनाज्यसिंहासनं
शावं रोदनवर्जितं ध्वजमधुच्छागास्त्रगोरोचनम्।
भारद्वाजनृयानवेदनिनदा माङ्गल्यगीताङ्कुशा
दृष्टाः सत्फलदाः प्रयाणसमये रिक्तो घटः स्वानुगः ॥ ९९ ॥

अन्वयः—विप्राश्वेभफलान्नदुग्धदधिगोसिद्धार्थपद्माम्बरं वेश्यावाद्यमयूरचाषनकुला बद्धैकपश्वामिषं सद्वाक्यं कुसुमेक्षुपूर्णकलशश्छत्राणि मृत्कन्यकारत्नोष्णीषसितोक्षमद्यससुतस्त्रीदीप्तवैश्वानराः आदर्शाञ्जनधौतवस्त्ररजका मीनाज्यसिंहासन रोदनवर्जितं शावं, ध्वजमधुच्छागास्त्रगोरोचनम् भारद्वाजनृयानवेदनिनदामाङ्गल्यगीतांकुशाः (एते) प्रयाणसमये दृष्टाः सन्तः सत्फलदाः भवन्ति (तथा) स्वानुगः रिक्तो घटः शुभः स्यात् ॥ ९८–९९ ॥

भा०—ब्राह्मण, घोड़ा, हाथी, फल, अन्न, दूध, दही, गौ, सरसों, कमल, श्वेत वस्त्र, वेश्या, बाजा, मयूर, चाष (चाहा पक्षी), न्यौला, बाँधा हुआ एक पशु, मांस, प्रिय वाक्य, पुष्प, ऊख, जलपूर्णकलश, छाता, मिट्टी, कन्या, रत्न, पगड़ी, श्वेत बैल, मदिरा, सन्तानसहित स्त्री, प्रज्वलित अग्नि, ऐना, अंजन, धोया हुआ वस्त्रसहित धोबी, मछली, घृत, सिंहासन, रोदनरहित मुर्दा, ध्वजा, शहद, बकरा, अस्त्र शस्त्र, गोरोचन, भारद्वाज (भरदूल पक्षी), पालकी, वेदध्वनि, माङ्गल्यगीत, अंकुश—ये यात्रा समय में सामने देख पड़े तो शुभ फल देने वाले होते हैं। तथा खाली घड़ा अपने पीछे भाग में देख पड़े तो भी इष्टसिद्धि होती है ॥ ९८–९९ ॥

अपशकुन—

वन्ध्याचर्मतुषास्थिसर्पलवणाङ्गारेन्धनक्लीबविट्-
तैलोन्मत्तवसौषधारिजटिलप्रवाट्तृणव्याधिताः ।
नग्नाभ्यक्तविमुक्तकेशपतिताव्यङ्गक्षुधार्त्ता असृक्
स्त्रीपुष्पं सरठः स्वगेहदहनं मार्जारयुद्धं क्षुतम् ॥ १०० ॥
काषायीगुडतक्रपङ्कविधवाकुब्जाः कुटुम्बे कलि-
र्वस्त्रादेः स्खलनं लुलायसमरं कृष्णानि धान्यानि च ।
कार्पासं वमनञ्च गर्दभरवो दक्षेऽतिरुट्गर्भिणी
मुण्डार्द्राम्बरदुर्वचोऽन्धबधिरोदक्यो न दृष्टाः शुभाः ॥ १०१ ॥

अन्वयः—वन्ध्याचर्मतुषास्थिसर्पलवणांगारेन्धनक्लीबविट्तैलोन्मत्तवसौषधारिजटिलप्रवाट्तृणव्याधिताः नग्नाभ्यक्तविमुक्तकेशपतिताः व्यंगक्षुधातअसृक् स्त्रीपुष्पं सरठः स्वगेहदहनं मार्जारयुद्धं क्षुत काषायी गुडतक्रपंकविधवा कुब्जाः कुटुम्बे कलिः वस्त्रादेः स्खलन लुलायसमर च (पुनः) कृष्णानि धान्यानि कार्पासं वमनं च (पुनः) दक्षे (दक्षिणे भागे) गर्दभरवः अतिरुट् गर्भिणी मुण्डार्द्राम्बरदुर्वचोऽन्धबधिरोदक्यः प्रयाणसमये दृष्टाः न शुभाः (भवन्ति) ॥ १००–१०१ ॥

भा०—वन्ध्या स्त्री, चाम, भूसा, हड्डी, साँप, नमक, अङ्गार (आग), जलावन की लकड़ी, नपुंसक, विष्ठा, तेल, पागल आदमी,

चर्बी, औषध, शत्रु, जटाधारी, संन्यासी, तृण, रोगी मनुष्य, नंगा, तैल लगाया हुआ मनुष्य, खुले केश वाला मनुष्य, पतित (स्वकर्मच्युत), अङ्गहीन, भूखा, शोणित, स्त्री का रज, गिरगिट, अपने घर का जलना, बिड़ाल की लड़ाई, छींक, गेरुआ वस्त्रधारी, गुड़, मट्ठा, कीचड़, विधवा स्त्री, कुबड़ा, कुटुम्बों में झगड़ा, निर्निमित्त हाथ से वस्त्रादि का गिरना, भैंसों की लड़ाई, काला धान्य, रूई, वमन, दहिने भाग में गदहे का शब्द, दीर्घ रोगी, गर्भवती स्त्री, मुड़ाए हुए शिर वाला मनुष्य, भींगा वस्त्र वाला, कटु (अप्रिय) वचन, अन्धा, बहरा, रजस्वला स्त्री, ये यात्रा समय में सामने देख पड़ें तो अशुभ फल होते हैं ॥१००-१०१॥

अन्य शुभ शकुन—

गोधाजाहकसूकराहिशशकानां कीर्त्तनं शोभनं
नो शब्दो न विलोकनञ्च कपिऋक्षाणामतो व्यत्ययः।
नद्युत्तारभयप्रवेशसमरे नष्टार्थसंवीक्षणे
व्यत्यस्ताः शकुना नृपेक्षणविधौ यात्रोदिताः शोभनाः॥१०२।

अन्वयः—गोधाजाहकसूकराहिशशकानां कीर्तनं (एतेषां नामोच्चारणं) शोभनं (भवेत्)। (किन्तु एतेषां) शब्दः नो शुभः, विलोकनं च न शोभनं भवति। कपिऋक्षाणां अतो व्यत्ययो ज्ञेयः। नद्युत्तारभयप्रवेशसमरे नष्टार्थसंवीक्षणे शकुनाः व्यत्यस्ताः (भवन्ति)। नृपेक्षणविधौ यात्रोदिताः शकुनाः शोभनाः (स्युः) ॥ १०२ ॥

भा०—गोह, जाहक (देहके अवयवों को बटोरने वाला पशु), सूअर, सर्प, खरगोश के नाम का उच्चारण स्वयं या कोई दूसरा आदमी भी करे तो शुभ फल समझना चाहिये। किन्तु इन सबों का शब्द या दर्शन शुभ नहीं होता है। बानर और भालुओं का इसके विपरीत समझना (अर्थात् बानर और भालू का नाम लेना या सुनना अशुभ तथा इन दोनों का शब्द और दर्शन शुभ होता है)। नदी के पार उतरने में, भय से भागने के समय में, युद्ध में, गाँव या गृहप्रवेश में, नष्ट वस्तुओं की खोज में इनका फल विपरीत (शुभ को अशुभ और अशुभ फल वाले को शुभ) समझना चाहिये। तथा राजा के दर्शन में जैसे यात्रा में शुभ या अशुभ कहा गया है उसी प्रकार शुभ या अशुभ शकुन समझे ॥ १०२ ॥

पुनः शुभ शकुन—

वामाङ्गे कोकिला पल्ली पोतकी सूकरी रला ।
पिङ्गला छुच्छुकाः श्रेष्ठाः शिवाः पुरुषसंज्ञिताः ॥ १०३ ॥

अन्वयः—कोकिला पल्ली पोतकी सूकरी रला पिंगला छुच्छुका तथा पुरुषसंज्ञिताः शिवाः वामांगे (वामपार्श्वे) श्रेष्ठा भवन्ति ॥ १०३ ॥

भा०—कोयल, छिपकली, कबूतरी, सूकरी, गौरैया, उल्लू, छुछुन्दरी, शृगाली, तथा पुरुष नामक जैसे हंस, खञ्जन इत्यादि यात्रा करनेवाले को वाम भाग में देख पड़े तो शुभ फल होता है ॥ १०३ ॥

दक्षिण भाग में शुभ शकुन—

छिक्करः पिक्कको भासः श्रीकण्ठो वानरो रुरुः ।
स्त्रीसंज्ञकाः काकऋक्षश्वानः स्युर्दक्षिणाः शुभाः ॥१०४॥

अन्वयः—छिक्करः पिक्ककः भासः श्रीकण्ठः वानरः रुरुः स्त्रीसंज्ञकाः काकऋक्षश्वानः दक्षिणाः शुभाः स्युः ॥ १०४ ॥

भा०—छिक्कर नामक मृग विशेष, पिक्कक (पक्षी विशेष), भास, श्रीकण्ठ, वानर, रुरु (मृग विशेष), स्त्री संज्ञक, कौआ, भालू, कुत्ता ये यात्रा समयमें दहिने भागमें देख पड़े तो शुभ फल समझना ॥१०४॥

दाहिने सामान्य शकुन—

प्रदक्षिणगताः श्रेष्ठा यात्रायां मृगपक्षिणः ।
ओजा मृगा व्रजन्तोऽतिधन्या वामे खरस्वनः ॥ १०५ ॥

अन्वयः—यात्रायां प्रदक्षिणगताः मृगपक्षिणः श्रेष्ठाः (भवन्ति)। ओजाः (विषमसंख्याकाः) व्रजन्तः मृगाः (दृष्टाः सन्तः) अतिधन्याः । वामे खरस्वनः शुभः ॥ १०५ ॥

भा०—यात्रा समय में मृग और पक्षी यदि प्रदक्षिण (सामने से दहिने भाग होकर पीछे की ओर) जाते देख पड़े तो श्रेष्ठ फल समझना। तथा विषम संख्या में १, ३, ५ इत्यादि मृग देख पड़े और बायें भाग में गदहे का शब्द सुन पड़े तो भी अत्यन्त शुभ फल समझना चाहिये ॥ १०५ ॥

अपशकुन परिहार—

आद्येऽपशकुने स्थित्वा प्राणानेकादश व्रजेत् ।
द्वितीये षोडश प्राणांस्तृतीये न क्वचिद् व्रजेत् ॥ १०६ ॥

अन्वयः—आद्ये अपशकुने एकादश प्राणान् स्थित्वा, द्वितीये षोडश प्राणान् स्थित्वा व्रजेत्, तृतीये अपशकुने क्वचिदपि न व्रजेत् ॥ १०६ ॥

भा०—यात्रा समय में प्रथम बार अपशकुन हो तो ठहर कर ११ प्राणायाम करके चलना चाहिये। दूसरा अपशकुन हो जाय तो फिर ठहर कर १६ प्राणायाम करके चले, यदि तीसरे बार भी अपशकुन हो जाय तो यात्रा स्थगित कर देनी चाहिये ॥ १०६ ॥

यात्रा से लौटकर गृहप्रवेश काल—

यात्रानिवृत्तौ शुभदं प्रवेशनं मृदुध्रुवैः क्षिप्रचरैः पुनर्गमः ।
द्वीशेऽनले दारुणभे तथोग्रभे स्त्रीगेहपुत्रात्मविनाशनं क्रमात् ॥१०७॥

अन्वयः—यात्रानिवृत्तौ मृदुध्रुवैः (नक्षत्रैः) प्रवेशनं शुभदं स्यात् । क्षिप्रचरैः पुनः गमनं स्यात् । द्वीशे अनले दारुणभे तथा उग्रभे (प्रवेशे सति) क्रमात् स्त्रीगेहपुत्रात्मविनाशनं स्यात् ॥ १०७ ॥

भा०—राजा के लिये यात्रा से लौटने पर मृदुसंज्ञक (मृगशिरा, रेवती, चित्रा, अनुराधा) तथा ध्रुव (तीनों उत्तरा, रोहिणी) नक्षत्रों में गृहप्रवेश शुभ है। तथा क्षिप्र (हस्त, अश्विनी, पुष्य, अभिजित्) और चर (स्वाती, पुनर्वसु, श्रवण, धनिष्ठा, शततारका) संज्ञक नक्षत्रों में प्रवेश करने से फिर शीघ्र ही यात्रा करनी पड़ती है। इसलिये ये नक्षत्र मध्यम हैं। तथा विशाखा, कृत्तिका वारुण संज्ञक (मूल, ज्येष्ठा, आर्द्रा, श्लेषा) और उग्र संज्ञक (३ पूर्वा, भरणी, मघा) नक्षत्र में प्रवेश करने से क्रम से स्त्री,घर,पुत्र और अपना विनाश होता है॥१०७॥

पूर्वोक्त दोषों का पुनः स्मरण—

अयनर्क्षमासतिथिकालवासरोद्भवशूलसम्मुखसितज्ञदिक्पाः ।
भृगुवक्रतादिपरिघाख्यदण्डको युवतीरजोऽप्यशुचितोत्सवादिकम्

अन्वयः—अयनर्क्षमासतिथिकालवासरोद्भवशूलसम्मुखसितज्ञदिक्पाः भृगुवक्रतादिपरिघाख्यदण्डको युवतीरजः अपि उत्सवादिकं यात्रायां त्यजेत् ॥१०८॥

भा०—पूर्व कहे हुए अयन दोष, नक्षत्र दोष, मासदोष, तिथि दोष, काल पाश, वार शूल, सन्मुख शुक्र और बुध तथा दिशा स्वामी के दोष (लालाटिक), शुक्र की वक्रता, अस्त, क्षीण आदि, परिघदण्ड, अपनी स्त्री का रजोधर्म, अशौच, विवाहादि उत्सव ये सब यात्रा में त्याज्य हैं ॥ १०८ ॥

मृतपक्षरिक्तरवितर्कसंख्यकास्तिथयश्च सौरिरविभौमवासराः ।
अपि वामपृष्ठगविधुस्तथाडलो वसुपञ्चकाभिजिदथापि दक्षिणे ॥

अन्वयः—मृतपक्षरिक्तरवितर्कसंख्यकाः तिथयः च (पुनः) सौरिरविभौमवासराः अपि वामपृष्ठगविधुः तथा अडलः, वसुपंचकाभिजित् अपि दक्षिणे त्याज्यं भवेत् ॥ १०९ ॥

भा०—मृतपक्ष रिक्ता, ४, ९, १४, ६, १२ तिथि, शनि, रवि, मङ्गल वार, वाम और पृष्ठ चन्द्र, अडल दोष तथा धनिष्ठादि पञ्चक, दक्षिण दिशा में अभिजित् मुहूर्त ये भी यात्रा में त्याज्य हैं ॥ १०९ ॥

लग्ने जन्मर्क्षतन्वोर्मृतिगृहमहितर्क्षाच्च षष्ठं तदीशा
वा लग्ने कुम्भमीनर्क्षं नवलवतनू चापि पृष्ठोदयश्च ।
पृष्ठाशासंस्थमृक्षं दशमशनिरथो सप्तमे चापि काव्यः
केन्द्रे वक्राश्च वक्रिग्रहदिवसविवाहोक्तदोषाश्च नेष्टाः ॥११०॥

अन्वयः—जन्मर्क्षतन्वोः मृतिगृहं च (पुनः) अहितर्क्षात् षष्ठं (लग्ने स्थितं) वा तदीशाः (लग्नस्थिताः) च पुनः कुम्भमीनर्क्षनवलवतनू अपि च पृष्ठोदयं पृष्ठाशासंस्थं ऋक्षं अथो दशमशनिः सप्तमे काव्यः अपि च केन्द्रे वक्राः च (पुनः) वक्रिग्रहदिवसविवाहोक्तदोषाः (यात्रायां) नेष्टाः ॥ ११० ॥

भा०—जन्म राशि जन्म लग्न से अष्टम राशि लग्न में, अपने शत्रु की राशि से ६ छठी राशि या उसका स्वामी लग्न गत, कुम्भ मीन इन दोनों राशि की लग्न और नवांश, पृष्ठोदय राशि लग्न, पृष्ठ दिशा के नक्षत्र, लग्न से दशम शनि, और सप्तम भावगत शुक्र, केन्द्र में वक्री ग्रह, वक्री ग्रह के वार तथा विवाह में कहे हुए समस्त दोष यात्रा में अशुभ समझकर त्याग देना चाहिये ॥ ११० ॥

इति मुहूर्तचिन्तामणौ यात्राप्रकरणम् ॥ ११ ॥

अथ वास्तुप्रकरणम् ।

ग्रामवास में लाभालाभ विचार—

यद्भं द्व्यङ्कसुतेशदिङ्मितमसौ ग्रामः शुभो नामभात्
स्वं वर्गं द्विगुणं विधाय परवर्गाढ्यं गजैः शेषितम् ।
काकिण्यस्त्वनयोश्च तद्विवरतो यस्याधिकाः सोऽर्थदो
ऽथ द्वारं द्विजवैश्यशूद्रनृपराशीनां हितं पूर्वतः ॥ १ ॥

अन्वयः—नामभात् यद्भं द्व्यङ्कसुतेशदिङ्मितं भवेत् असौ ग्रामः शुभः । स्वं वर्गं द्विगुणं विधाय परवर्गाढ्यं गजैः शेषितं अनयोः काकिण्यः भवन्ति । तद्विवरतो यस्य अधिकाः (काकिण्यः) स अर्थदः (धनी), अथ पूर्वतः द्विज-वैश्यशूद्रनृपराशीनां द्वारं हितं (स्यात्) ॥ १ ॥

भा०—किसी गाँव में जाकर बसने की इच्छा करने वालों के नाम की राशि से जिस गाँव की राशि २, ९, ५, ११, १० संख्या में हो तो वह गाँव शुभ (बसने योग्य) समझना चाहिये । अर्थात् अन्य संख्या में राशि पड़े तो अशुभ समझना । अब काकिणी (धन) विचार करते हैं—नाम और गाँव की काकिणी विचार करना हो तो नाम के वर्ग (व-क-च-ट इत्यादि) की संख्या को दूना करके उसमें गाँव की वर्ग संख्या जोड़े फिर योगफल में ८ के भाग देने से जो शेष बचे वह नामकी (अपनी) काकिणी होती है । एक गाँव की वर्ग संख्या को दूना करके उसमें नामकी वर्ग संख्या जोड़ कर योगफल में ८ के भाग देने से जो शेष बचे वह गाँव की काकिणी होती है । इन दोनों में जिसकी काकिणी अधिक हो वह अर्थद (धनदाता-उत्तमर्ण) होता है ।

अथ द्वार विचार कहते हैं कि—द्विज, (कर्क, वृश्चिक, मीन) राशि वालों के लिए पूर्व द्वार, वैश्य, (वृष, कन्या, मकर) राशिवालों के

लिये दक्षिण द्वार, शूद्र (मिथुन, तुला, कुम्भ) राशिवालोंके लिये पश्चिम द्वार, क्षत्रिय (मेष, सिंह, धनु) राशि वालों के लिये उत्तर द्वार इस तरह प्रत्येक दिशा में घरका द्वार शुभप्रद होता है ॥ १ ॥

उदाहरण—जैसे शिवप्रसाद को काशी में वास कैसा होगा ? यह विचारना है तो 'शिवप्रसाद' की राशि कुम्भ से गाँव (काशी) की राशि मिथुन तक गिनने से ५ हुआ, इसलिये—'शिवप्रसाद' को काशी में बसना शुभप्रद सिद्ध हुआ।

अब काकिणी (धन) विचारनेके लिये नाम (शिवप्रसाद) की वर्ग संख्या ८ को दूना करने से १६ इसमें गाँव (काशी) की वर्ग संख्या २ जोड़कर १८ हुआ इसमें ८ के भाग देने से शेष २ बचा यह नाम की काकिणी हुई। एवं गाँव की वर्ग संख्या २ को गुणा करके ४ हुआ इसमें नाम की वर्ग संख्या ८ जोड़ने से १२ फिर इसमें ८ के भाग से शेष ४ बचा यह गाँव की काकिणी हुई। यहाँ नाम की काकिणी अल्प है इसलिये उत्तम नहीं हुआ। क्योंकि काकिणी धन को कहते हैं। अतः अपना धन अधिक होना चाहिये। परन्तु बहुत से लोग गाँव की काकिणी को अधिक होने से ही शुभ मानते हैं। किन्तु यह युक्ति और अन्य ग्रन्थों से विरुद्ध होने के कारण मान्य नहीं है ॥ १ ॥

अथ निषिद्ध वासस्थानचक्रम् ।

ई०	पू०	अग्नि
कुंभ	वृश्चिक	मीन
मेष	वृष सिंह मकर मिथुन	कन्या
तुला	धनु	कर्क
वा०	प०	नै०

(उ० left side, द० right side)

राशिवश गाँव में निषिद्धस्थान—

गोसिंहनक्रमिथुनं निवसेन्न मध्ये
ग्रामस्य पूर्वककुभोऽलिझषाङ्गनाश्च ।
कर्कौ धनुस्तुलभमेषघटाश्च तद्व-
द्वर्गाः स्वपश्चमपरा बलिनः स्युरैन्द्रयाः ॥ २ ॥

अन्वयः—गोसिंहनक्रमिथुनं ग्रामस्य मध्ये न निवसेत् । च (पुनः) अलिझषांगनाः कर्कः धनुस्तुलभमेषघटाः (क्रमशः पूर्वतः अष्टासु दिक्षु) न निवसेयुः च (पुनः) तद्वत् स्वपचमपतोः वर्गाः ऐन्द्रयाः (पूर्वतः क्रमात्) बलिनः स्युः २

भा०—वृष सिंह मिथुन और मकर राशिवाले-किसी गाँव के बीच भाग में निवास नहीं करे। तथा वृश्चिक, मीन, कन्या, कर्क, धनु, तुला, मेष और कुम्भ राशि वाले के क्रम से पूर्व आदि दिशाओं में न

बसे। तथा अवर्गादि ८ वर्ग क्रम से पूर्व आदि दिशाओं में बली होते हैं। इन ८ वर्गों में अपने अपने से पाँचवाँ पाँचवाँ वर्ग शत्रु होता है २

स्पष्टज्ञानार्थं वर्ग चक्र—

ईशान	पूर्व	अग्नि
शवर्ग	अवर्ग	कवर्ग
उत्तर — यवर्ग		चवर्ग — दक्षिण
पवर्ग	तवर्ग	टवर्ग
वायु	पश्चिम	नैऋत्य

आमने सामने की दिशा में परस्पर शत्रुता समझना। शत्रु की दिशा में वास नहीं करना चाहिये ॥ २ ॥

गृहका पिण्ड—

एकोनितेऽष्टर्क्षहता द्वितिथ्यो
रूपोनितेष्टायहतेन्दुनागैः ।
युक्ता घनै (१७) श्रापि युता विभक्ता
भूपाश्विभिः शेषमितो हि पिण्डः ॥ ३ ॥
स्वेष्टायनक्षत्रभवोऽथ दैर्घ्यहृत्
स्याद्विस्तृतिर्विस्तृतिहृच्च दीर्घता ॥ ३½ ॥

अन्वयः—द्वितिथ्यः एकोनितेष्टर्क्षहताः रूपोनितेष्टायहतेन्दुनागैः युक्ताः घनैश्चापि युता भूपाश्विभिः विभक्ताः शेषमितः स्वेष्टायनक्षत्रभवः पिण्डः स्यात् स दैर्घ्यहृत् विस्तृतिः स्यात, विस्तृतिहृत् लब्धिः दीर्घता स्यात् ॥ ३-३½ ॥

भा०—(अपने नाम के नक्षत्र से जिस नक्षत्र के साथ विवाह-मेलापक विधि से अधिक गुण मिले वह इष्ट नक्षत्र कहलाता है) उस इष्ट नक्षत्र की संख्या में एक घटा कर शेष से १५२ को गुना करे तथा इष्ट आय संख्या में एक घटा करके शेष से ८१ को गुना करे फिर इन दोनों गुणनफलको जोड़े, फिर योगफल में १७ और जोड़कर पूरे योगफल में २१६ के भाग देने से जो शेष बच जाय वह घर का पिण्ड (क्षेत्रफल=अर्थात् लम्बाई चौड़ाईका गुणनफल) होता है। इसको अपने इष्ट नक्षत्र और इष्ट आय सम्बन्धी समझना। इस पिण्ड में अपने अभिमत लम्बाई के भाग देने से लब्धि विस्तार और विस्तार के भाग देने से लब्धि दैर्घ्य (लम्बाई) समझें ॥ ३-३½ ॥

विशेष—यदि इस प्रकार लम्बाई चौड़ाई थोड़ी हो तो पिण्ड में एकादि गुणित २१६ जोड़कर पिण्ड समझना ॥ ३½ ॥

उदाहरण—जैसे 'लक्ष्मीनाथ' नामक व्यक्ति का नाम नक्षत्र अश्विनी हुआ, उसको पुष्य नक्षत्र के साथ मेलापक विधि से ३१॥ गुण मिलते हैं इसलिये इष्टनक्षत्र पुष्य हुआ। तथा पूर्वमुख का घर बनाना है तो इष्टआय वृष हुआ। अब इष्टनक्षत्र संख्या ८ में १ घटाकर शेष ७ से १५२ को गुना करने से १०६४ हुआ, इसमें एकोन आय संख्या ५–१=४ से ८१ को गुना कर गुणनफल ३२४ को जोड़ा तो १३८८ हुआ इसमें १७ और जोड़ा तो १४०५ हुआ इसमें २१६ के भाग देने से शेष १०६ यह मूल गृहपिण्ड हुआ। परन्तु इस पर से लम्बाई चौड़ाई थोड़ी है। इसलिये इस १०६ में २१६ और मिलाने से ३२५ यह द्वितीय पिण्ड हुआ, इसमें लम्बाई २५ हाथ का भाग दिया तो लब्धि १३ यह चौड़ाई हुई। इसलिये 'लक्ष्मीनाथ' याने अश्विनी नाम नक्षत्र वालों के लिये यह पिण्ड शुभप्रद कहना चाहिये ॥ ३½ ॥

आयों के नाम और घर के द्वार विचार—

आया ध्वजो धूमहरिश्वगोखरे-
भध्वांक्षकाः पिण्ड इहाष्टशेषिते ॥ ४ ॥
ध्वजादिकाः सर्वदिशि ध्वजे मुखं
कार्य्यं हरौ पूर्वयमोत्तरे तथा।
प्राच्यां वृषे प्राग्यमयोर्गजेऽथवा
पश्चादुदक् पूर्वयमे द्विजादितः ॥ ५ ॥

अन्वयः—अथ स दैर्घ्यहृत् विस्तृतिः च (पुनः) विस्तृतिहृत् दीर्घता स्यात्। इह पिण्डे अष्टशेषिते (क्रमशः) ध्वजः धूमहरिश्वगोखरेभध्वांक्षकाः इति ध्वजादिकाः आयाः स्युः। ध्वजे आये सति सर्वदिशि मुखं (स्यात्) हरौ पूर्वयमोत्तरे तथा वृषे प्राच्यां गजे प्राग्यमयोः अथवा द्विजादितः (क्रमेण) पश्चादुदक् पूर्वयमे द्वारं शुभं (भवति) ॥ ४–५ ॥

भा०—ऊपर कहे हुए पिण्ड में ८ के भाग देने से १ आदि शेष में क्रम से १ ध्वज, २ धूम, ३ सिंह, ४ श्वान, ५ वृष, ६ खर, ७ हस्ती, ८ काक ये आय होते हैं। यदि इस प्रकार ध्वज आय हो तो घर में चार दिशाओं में मुख करना, वृष आय हो तो पूर्व दिशा में तथा गज आय हो तो पूर्व और दक्षिण द्वार करना चाहिये। तथा ब्राह्मण पश्चिम, क्षत्रिय उत्तर, वैश्य पूर्व और शूद्र दक्षिण में द्वार बनावे ॥ ४ ॥ ५ ॥

गृहारम्भ में निषेध—

गृहेशतत्स्त्रीसुतवित्तनाशोऽर्केन्द्विज्यशुक्रे विबलेऽस्तनीचे।
कर्त्तुः स्थितिर्नो विधुवास्तुनोर्भे पुरःस्थिते पृष्ठगते खनिः स्यात् ६

अन्वयः—अर्केन्दुज्यशुक्रे विबले अस्तनीचे सति (क्रमशः) गृहेशतत्स्त्रीसुत-वित्तनाशः स्यात् । विधुवास्तुनोर्भे पुरःस्थिते कर्तुः स्थितिः नो भवेत् । पृष्ठगते सति खनिः स्यात् ॥ ६ ॥

भा०—गृहारम्भ समय में यदि सूर्य, चन्द्र, बृहस्पति और शुक्र ये निर्बल, अस्त या अपनी नीच राशि में हों तो क्रम से गृह का मालिक, उसकी स्त्री, उसके पुत्र और धन का नाश होता है। तथा चन्द्र नक्षत्र, या गृह का नक्षत्र गृहारम्भ समय में सम्मुख हो तो उस घर में गृह-पति की स्थिति (निवास) नहीं रहती है। तथा पृष्ठ हो तो चोरी का भय होता है ॥ ६ ॥

व्यय और अंशज्ञान—

भं नागतष्टं व्यय ईरितोऽसौ ध्रुवादिनामाक्षरयुक्सपिण्डः ।
तष्टो गुणैरिन्द्रकृतान्तभूपा ह्यंशा भवेयुर्न शुभोऽन्तकोऽत्र ॥ ७ ॥

अन्वयः—भं नागतष्टं व्यय ईरितः, असौ ध्रुवादिनामाक्षरयुक् सपिण्डः गुणैः तष्टः इन्द्रकृतान्तभूपा अंशा भवेयुः । अत्र अन्तकः अंशः न शुभः ॥ ७ ॥

भा०—पूर्वोक्त गृह नक्षत्र की संख्या में ८ के भाग देने से शेष व्यय होता है। तथा आगे कहे हुए गृहके ध्रुव आदि नामकी अक्षर संख्याको इस व्यय में जोड़कर फिर उसमें पिण्ड को जोड़े पुनः योग-फल में ३ के भाग देने से १ शेष बचे तो इन्द्र, २ बचे तो यम और ३ बचे तो राज अंश होता है। इस प्रकार यम का अंश हो तो अशुभ समझना चाहिये ॥ ७ ॥

इसका विशेष विवरण १० वें श्लोक में देखिये ॥ ७ ॥

शालाध्रुवाङ्क—

दिक्षु पूर्वादितः शालाध्रुवा भूद्वौ कृता गजाः ।
शालाध्रुवाङ्कसंयोगः सैको वेश्म ध्रुवादिकम् ॥ ८ ॥

अन्वयः—पूर्वादितः (चतसृषु दिक्षु क्रमशः) भूद्वौ कृताः गजाः शाला-ध्रुवाः स्युः । शालाध्रुवाङ्कसंयोगः सैकः ध्रुवादिक वेश्म स्यात् ॥ ८ ॥

भा०—पूर्व आदि चारों दिशाओं में क्रम से १, २, ४, ८ ये शाला ध्रुवाङ्क होते हैं। घर में जिस दिशा में शाला (मुख और बरामदा) हों उन ध्रुवाङ्क संख्या को जोड़कर योगफल में १ जोड़ने से जितनी संख्या हो उतनी संख्या का ध्रुव आदि घर का नाम समझना ॥ ८ ॥

ध्रुवादि गृहों के नामकी अक्षरसंख्या—

तिथ्यर्काष्टाष्टिगोरुद्रशक्रे नामाक्षरं त्रयम् ।
भूद्व्यब्धोष्वङ्गदिग्वह्निविश्वेषु द्वौ नगाब्धयः ॥ ९ ॥

अन्वयः—तिथ्यर्काष्टाष्टिगोरुद्रशक्रे नामाक्षरं त्रयं भवेत् । भूद्व्यब्धोष्वङ्गदिग्वह्निविश्वेषु द्वौ नगाब्धयः स्युः ॥ ९ ॥

भा०—यदि उपरोक्त सैक ध्रुवाङ्क योग की संख्या १५, १२, ८, १६, ९, ११, १४ हो तो गृह के नाम में ३ अक्षर समझें । और १, २, ४, ५, ६, १०, ३, १३ हो तो घर की नामाक्षर संख्या २ समझें और ७ हो तो नामाक्षर संख्या ४ समझें ॥ ९ ॥

उक्त षोडश गृहों के नाम—

ध्रुवधान्ये जयनन्दौ खरकान्तमनोरमं सुमुखदुर्मुखोग्रश्च ।
रिपुदं वित्तदं नाशं चाक्रन्दं विपुलविजयाख्यं स्यात् ॥१०॥

अन्वयः—ध्रुवधान्ये जयनन्दौ खरकान्तमनोरमं सुमुखदुर्मुखोग्रं च (पुनः) रिपुदं वित्तदं नाशं आक्रन्दं विपुलविजयाख्यं च स्यात् ॥ १० ॥

भा०—१ ध्रुव, २ धान्य, ३ जय, ४ नन्द, ५ खर, ६ कान्त, ७ मनोरम, ८ सुमुख, ९ दुर्मुख, १० उग्र, ११ रिपुद, १२ वित्तद, १३ नाश, १४ आक्रन्द, १५ विपुल और १६ वाँ विजय नामक घर होता है ॥१०॥

व्यय और अंश का उदाहरण—पूर्व कल्पित गृह नक्षत्र पुष्य की संख्या ८ में आठ के भाग देने से शेष=० शून्य बचा अर्थात्-शून्य से ८ संख्या तुल्य व्यय हुआ । क्योंकि जहाँ शेष ० शून्य हो वहाँ शेष की संख्या हर (भाजक) तुल्य ली जाती है ।

अब पूर्व मुख का घर बनाना है तो उसका शाला ध्रुवाङ्क १ में १ जोड़ने से २ हुआ, इससे ध्रुवादि गणना से दूसरा धान्य नामक गृह हुआ । इसकी नामाक्षर संख्या २ को व्यय ८ में जोड़ने से १० हुआ । फिर इसमें पूर्वोक्त पिण्ड १०९ को जोड़ो तो ११९ हुआ इसमें ३ के भाग देने से शेष यम का अंश हुआ, इसलिये इसको अशुभ समझना ॥१०॥

घर के आय-वार आदि—

पिण्डे नवाङ्काङ्गगजाग्निनागनागाब्धिनागैर्गुणिते क्रमेण ।
विभाजिते नागनगाङ्कसूर्यनागर्क्षतिथ्यृक्षखभानुभिश्च ॥११॥
आयो वारोऽशको द्रव्यमृणमृक्षं तिथिर्युतिः ।
आयुश्चाथ गृहेशर्क्षगृहभैक्यं मृतिप्रदम् ॥ १२ ॥

अन्वयः—पिण्डे नवांकांगगजाग्निनागनागाब्धिनागैः क्रमेण गुणिते सति नागनगांकसूर्यनागर्क्षतिथ्यृक्षखभानुभिः विभाजिते (क्रमात्) आयः वारः अंशकः द्रव्यं ऋणं ऋक्ष, तिथिः युति आयुश्च स्यात् । अथ गृहेशर्क्षगृहभैक्यं मृतिप्रदं स्यात् ॥ ११–१२ ।

भा०—पूर्वोक्त पिण्ड को ९ स्थान में रखकर क्रम से ९, ९, ६, ८, ३, ८, ८, ४, ८ से पृथक् पृथक् गुना करे और गुणनफलों में क्रम से ८, ७, ९, १२, ८, २७, १५, २७, और १२० के भाग देने पृथक् पृथक् क्रम से शेष तुल्य आय, वार, अंश, द्रव्य, ऋण, नक्षत्र, तिथि, योग और आयुर्दाय समझे । गृह में मालिक और गृह का नक्षत्र एक ही हो तो उसको मरणप्रद समझे ॥११–१२॥

उदाहरण—जैसे पूर्वोक्त स्थिर पिण्ड ३२५ को ६ से गुना करने से २९२५ इसमें ८ के भाग देने शेष ५ यह आय हुआ।

पुनः पिण्ड ३२५ को ९ से गुनाकर गुणनफल २९२५ में ७ के भाग देने से शेष ६ यह वार हुआ।

पुनः पिण्ड ३२५ को ६ से गुना करने से १९५० में ९ के भाग देने से शेष ६ यह अंश हुआ।

पुनः पिण्ड ३२५ को ८ से गुना करने से २६०० इसमें १२ के भाग देने से शेष ८ यह द्रव्य हुआ।

पुनः पिण्ड ३२५ को ३ से गुना करने से ९७५ इसमें ८ के भाग देने से शेष ७ यह ऋण हुआ।

पुनः पिण्ड ३२६ को ८ से गुना करने से २६०० इसमें २७ के भाग देने से शेष ८ नक्षत्र संख्या हुई, इसी प्रकार तिथि आदि भी समझना चाहिये ॥११-१२॥

वृषवास्तु चक्र—

गेहाद्यारम्भेऽर्कभाद्वत्सशीर्षे रामैर्दाहो वेदभैरग्रपादे।
शून्यं वेदैः पृष्ठपादे स्थिरत्वं रामैः पृष्ठे श्रीर्युगैर्दक्षकुक्षौ ॥१३॥
लाभो रामैः पुच्छगैः स्वामिनाशो वेदैर्नैःस्वं वामकुक्षौ मुखस्थैः।
रामैः पीडा सन्ततं वार्कधिष्ण्यादश्वैरुद्रैर्दिग्भिरुक्तं ह्यसत्सत् १४

अन्वयः—गेहाद्यारम्भे अर्कभात् वत्सशीर्षे रामैः [त्रिभिर्नक्षत्रैः] दाहः, अग्रपादे वेदभैः शून्यं, पृष्ठपादे वेदैः स्थिरत्वं, पृष्ठे रामैः श्रीः, दक्षकुक्षौ युगैः लाभः, पुच्छगैः रामैः स्वामिनाशः, वामकुक्षौ वेदैः नैःस्वम्, मुखस्थैः रामैः संततं पीडा स्यात्. वा अर्कधिष्ण्यात् अश्वैः रुद्रैः दिग्भिः (क्रमशः) असत् सच्च उक्तम् ॥ १३-१४॥

अथ सूर्यभात् वृषभचक्रम्।

शिर	अ.पा.	पृ.पा.	पृष्ठ	द.कु.	पुच्छ	वाकु	मुख	अङ्ग
३	४	४	३	४	३	४	३	नक्षत्र
दाह	शून्य	स्थिर	श्री	लाभ	नाश	दरिद्र	पीड़ा	फल

भा०—गृहादि आरम्भ समय में सूर्य जिस नक्षत्र में हो उस नक्षत्र से आरम्भ करके नक्षत्र वत्स के मस्तक के होते हैं—उसमें अग्नि भय उसके आगे के ४ नक्षत्र अगले पैर के होते हैं उसमें शून्य, उसके आगे के ४ पिछले पैर के होते हैं—उसमें स्थिरता, उसके आगे के ३ नक्षत्र पृष्ठ के होते हैं उसमें सम्पत्ति, उसके आगे ४ नक्षत्र दहिने भाग पेट में रहते हैं उसमें लाभ, उसके आगे के ३ पुच्छ के नक्षत्रों में गृहपति

का नाश, उसके आगे के ४ बायें भाग पेट के होते हैं, उसमें निर्धनता और उसके आगे ३ नक्षत्र मुख के होते हैं उसमें सर्वदा पीड़ा होती है। अथवा इस प्रकार समझना कि—सूर्य नक्षत्र से ७ नक्षत्रों में गृहारम्भ करने में अशुभ, उसके आगे ११ नक्षत्रों में शुभ और उसके आगे के १० नक्षत्रों में गृहारम्भ करने से अशुभ फल होता है ॥१३-१४॥

अथ सूर्यभात् गृहारम्भचक्रम्।

७	११	१०	वर्तमान नक्षत्र
अशुभ	शुभ	अशुभ	फल

प्रकारान्तर से द्वार निर्णय—

कुम्भेऽर्के फाल्गुने प्रागपरमुखगृहं श्रावणे सिंहकर्क्योः
पौषे नक्रे च याम्योत्तरमुखसदनं गोजगेऽर्के च राधे।
मार्गे जूकालिगे सद् ध्रुवमृदुवरुणस्वातिवस्वर्कपुष्यैः
सूतीगेहं त्वदित्यां हरिभविधिभयोस्तत्र शस्तः प्रवेशः ॥१५॥

अन्वयः—कुम्भे अर्के सति फाल्गुने, सिंहकर्क्योः अर्के सति श्रावणे मासे, नक्रे पौषे च प्रागपरमुखगृहं सत् (शुभं) स्यात्। च (पुनः) गोऽजगे अर्के राधे याम्योत्तरमुखसदनं स्यात्। ध्रुवमृदुवरुणस्वातिवस्वर्कपुष्यैः (गृहारम्भः शुभः स्यात्) अदित्यां सूतीगेहं सत्, तत्र सूतीगेहे हरिभविधिभयोः प्रवेशः शस्तः स्यात् ॥ १५ ॥

भा०—कुम्भ के सूर्य रहने पर फाल्गुन मास में पूर्व और पश्चिम मुख का, तथा सिंह या कर्क के सूर्य रहने पर श्रावण मास में भी पूर्व पश्चिम मुख का घर बनावे। एवं पौष मास मकर के सूर्य में दक्षिण या उत्तर मुख का, तथा अगहन में और तुला वृश्चिक के सूर्य में भी दक्षिण उत्तर मुखका घर बनावे। इसी तरह ध्रुवसंज्ञक, मृदुसंज्ञक, शतभिषा, स्वाती, धनिष्ठा, हस्त और पुष्य नक्षत्रों में भी गृहारम्भ करना चाहिये। तथा पुनर्वसु में सूतिकागृह बनाना चाहिये। और श्रवण तथा रोहिणी नक्षत्र में सूतिकागृह में प्रवेश प्रशस्त कहा गया है ॥ १५ ॥

दूसरी रीति—

केश्चिन्मेषरवौ मधौ वृषभगे ज्येष्ठे शुचौ कर्कटे
भाद्रे सिंहगते घटेऽश्वयुजि चोर्जेऽलौ मृगे पौषके।
माघे नक्रघटे शुभं निगदितं गेहं तथोर्जे न सत्
कन्यायाश्च तपा धनुष्यपि न सत् कृष्णादिमासाद्भवेत् ॥१६॥

अन्वयः—केश्चित् मेषरवौ मधौ, वृषभगे रवौ ज्येष्ठे, कर्कटे रवौ शुचौ, सिंहगते भाद्रे, घटे अश्वयुजि (आश्विने) च (पुनः) अलौ ऊर्जे, मृगे पौषके नक्रघटे रवौ माघे शुभं स्यात् । तथा कन्याया ऊर्जे (कार्तिके) धनुषि तथा अपि न सत् स्यात् । मासगणना कृष्णादिमासाद् भवेत् ॥ १६ ॥

भा०—किसी आचार्य का मत है कि मेष का सूर्य हो तो चैत्र में, वृष का सूर्य हो तो ज्येष्ठ में, कर्क का सूर्य हो तो आषाढ़ में, सिंह का रवि हो तो कार्तिक में, मकर का रवि हो तो पौष में तथा मकर या कुम्भ का रवि हो तो माघ में भी गृहारम्भ शुभ होता है । किन्तु कन्या का रवि हो तो कार्तिक में, तथा धनु का रवि हो तो माघ में गृहारम्भ अशुभ होता है । यहाँ मास-कृष्ण पक्ष प्रतिपदा से समझना ॥ १६ ॥

गृहारम्भ में मासों के फल—

व्याधिं चैत्रे समाप्नोति यो गृहं कारयेन्नरः ।
वैशाखे धनधान्यानि ज्येष्ठे मृत्युभयं तथा ॥
आषाढे भृत्यरत्नानि पशुवर्जमवाप्नुयात् ।
श्रावणे मित्रलाभं च हानिं भाद्रपदे तथा ॥
भार्याहानिमिषे मासि कार्तिके धनधान्यकम् ।
मार्गशीर्षे वित्तलाभं पौषे तस्करतो भयम् ॥
माघे तु बहुशो लाभं तथैवाग्निभयं दिशेत् ।
काञ्चनं फाल्गुने विन्द्यादिति मासफलं गृहे ॥

पुनः विशेष-पक्षफल—

"शुक्लपक्षे भवेत् सौख्यं कृष्णे तस्करतो भयम् ।
गीर्वाण-पूर्वगीर्वाणमन्त्रिणोर्दृश्यमानयोः ।
शुक्ले पक्षे दिवा कार्यं निशायां न कदाचन ।"

अन्वयः—शुक्लपक्षे सौख्यं भवेत्, कृष्णे तस्करतः भयं (भवेत्) । गीर्वाण-पूर्वगीर्वाणमन्त्रिणोः दृश्यमानयोः शुक्ले पक्षे दिवा (अपि गृहारम्भः कर्तव्यः) निशायां कदाचन (अपि) न कर्तव्यः ॥ १६ ॥

भा०—शुक्ल पक्ष में गृहारम्भ से सुख होता है । और कृष्ण पक्ष में चोर का भय होता है । बृहस्पति और शुक्र उदित होने चाहिये गृहारम्भ रात्रि में कदापि नहीं करना चाहिये ॥ १६ ॥

द्वारनिषेध—

पूर्णेन्दुतः प्राग्वदनं नवम्यादिषूत्तरास्यं त्वथ पश्चिमास्यम् ।
दर्शादितः शुक्लदले नवम्यादौ दक्षिणास्यं न शुभं वदन्ति ॥१७॥

अन्वयः—पूर्णेन्दुतः (पूर्णिमामारम्य) प्राग्वदनं तु (पुनः) नवम्यादिषु उत्तरास्यम् । अथ दर्शादितः शुक्लदले पश्चिमास्यम्, नवम्यादौ दक्षिणास्यं गृहं शुभं न वदन्ति ॥ १७ ॥

भा०—पूर्णिमा से कृष्णपक्ष ८ अष्टमी पर्यन्त पूर्वमुख का, कृष्ण पक्ष नवमी से १४ पर्यन्त उत्तर मुख का, अमावास्या से शुक्ल पक्ष ८ अष्टमी तक पश्चिम मुख का और नवमी से शुक्ल १४ चतुर्दशी तक दक्षिण मुख का घर बनाना शुभ नहीं होता है ॥ १७ ॥

तृण काष्ठ में विशेष—

"पाषाणेष्टयादिगेहानि निन्द्यमासे न कारयेत् ।
तृणदारुगृहारम्भे मासदोषो न विद्यते ॥"

भा०—ऊपर जो मास तिथि आदि निन्दित कहे गये हैं, उनमें ईंटा-पत्थर आदि के घर नहीं बनावे । काष्ठ और तृण से घर बनाने में निन्द्यमासों का दोष नहीं लगता है ॥ १७ ॥

पञ्चाङ्गशुद्धि—

भौमार्करिक्तामाद्यूने चरोनेऽङ्गे विपञ्चके ।
व्यष्टान्त्यस्थैः शुभैर्गेहारम्भस्त्र्यायारिगैः खलैः ॥ १८ ॥

अन्वयः—भौमार्करिक्तामाद्यूने चरोने अङ्गे विपञ्चके नक्षत्रे शुभैः व्यष्टान्त्यस्थैः खलैः त्र्यायारिगैः गेहारम्भः स्यात् ॥ १८ ॥

भा०—मङ्गल और रविवार रिक्ता (४।९।१४) अमावास्या प्रतिपदा इन सबों से भिन्न वार और तिथियों में, चर लग्न को छोड़ कर अन्य लग्न में तथा पञ्चक (धनिष्ठादि ५ नक्षत्र) को छोड़ कर अन्य नक्षत्रों में, तथा लग्न से १२, ८ स्थान से भिन्न स्थान में शुभ ग्रह और ३, ६, ११ भावों में पाप ग्रह हों तो गृहारम्भ शुभ होता है ॥ १८ ॥

देवालयादि में राहुमुख—

देवालये गेहविधौ जलाशये राहोर्मुखं शम्भुदिशो विलोमतः ।
मीनार्कसिंहार्कमृगार्कतस्त्रिभे खाते मुखात् पृष्ठविदिक् शुभा भवेत् ॥

अन्वयः—देवालये गेहविधौ जलाशये (क्रमशः) मीनार्कसिंहार्कमृगार्कतः त्रिभे शम्भुदिशः विलोमतः राहोः मुखं स्यात्, खाते मुखात् पृष्ठविदिक् शुभा भवेत् ॥ १९ ॥

भा०—देवालय, गृह और जलाशय के बनवाने में यथाक्रम मीन से ३, ३ राशियों के सूर्य में वायु, नैर्ऋत्य, आग्नेय और ईशान कोण में राहु का मुख रहता है। तथा गृहारम्भ में सिंह से ३, ३ राशियों के सूर्य में उसी प्रकार वायुकोण से विपरीत क्रम से चारों कोण में राहु का मुख समझना चाहिये। मुख दिशा से पृष्ठ दिशा में खात बनाना शुभ होता है। स्पष्टार्थ के लिये नीचे चक्र देखिये ॥ १६ ॥

अथ राहुमुखचक्रम्।

राहु	ईशान	वायव्य	नैर्ऋत्य	आग्नेय	मुख
देवालयारम्भ	मी.मे.वृ.	मि.क.सि	क.तु.वृ.	ध.म.कु.	सूर्यस्थिति
गृहारम्भ	सि.क.तु.	वृ.ध.म.	कुं.मी मे.	वृ.मि.क.	सूर्यस्थिति
जलाशयारंभ	म.कुं.मी.	मे.वृ.मि.	क.सि.क.	तु.वृ.ध.	सूर्यस्थिति
राहु	आग्नेय	ईशान	वायव्य	नैर्ऋत्य	पृष्ठ

कूप का विचार

कूपे वास्तोर्मध्यदेशेऽर्थनाशस्त्वैशान्यादौ पुष्टिरैश्वर्यवृद्धिः। सूनोर्नाशः स्त्रीविनाशो मृतिश्च सम्पत्पीडा शत्रुतः स्याच्च सौख्यम्॥

अन्वयः—वास्तोः मध्यदेशे कूपे सति अर्थनाशः स्यात्। तु (पुनः) ऐशान्यादौ पुष्टिः ऐश्वर्यवृद्धिः सूनोर्नाशः स्त्रीविनाशः मृतिः सम्पत् शत्रुतः पीडा च [पुनः] सौख्य स्यात् ॥ २० ॥

अथ गृहकूपचक्रम्।

ईशान (पुष्टि)	पूर्व ऐश्वर्यवृद्धि	आग्नकोण (पुत्रनाश)
उत्तर (सौख्य)	धननाश	दक्षिण स्त्रीनाश
वायव्य शत्रुकृतपीड़ा	पश्चिम सम्पत्ति	नैर्ऋत्य स्वामिमरण

भा०—वास्तुभूमि के मध्यभाग में कुआँ खोदवाने से धन का नाश होता है। ईशान कोण में पुष्टि, पूर्व में ऐश्वर्यवृद्धि, अग्निकोण में पुत्रहानि, दक्षिण में स्त्रीका नाश, नैर्ऋत्य कोण में अपना मरण, पश्चिम में सम्पत्तिवृद्धि, वायुकोण में शत्रु द्वारा पीड़ा और उत्तर भाग में सुख प्राप्ति होती है ॥ २० ॥

दिशाओं में गृह के विभाग—

स्नानाग्निपाकशयनास्त्रभुजश्च धान्य-
भाण्डारदैवतगृहाणि च पूर्वतः स्युः ।
तन्मध्यतस्तु मथनाज्यपुरीषविद्या-
भ्यासाख्यरोदनरतौषधसर्वधाम ॥ २१ ॥

अन्वयः—पूर्वतः [क्रमात्] स्नानाग्निपाकशयनास्त्रभुजः [सदनानि] च [पुनः] धान्यभाण्डारदैवतगृहाणि स्युः । तु [पुनः] तन्मध्यतः [क्रमशः] मथनाज्यपुरीषविद्याभ्यासाख्यरोदनरतौषधसर्वधाम [कार्यम्] ॥ २१ ॥

भा०—वास्तु भूमिके पूर्व भागमें स्नान का, अग्निकोणमें रसोई का, दक्षिण में शयन का, नैर्ऋत्य कोण में अस्त्र शस्त्र का, पश्चिम में भोजन का, वायव्य कोण में अन्न आदि का, तथा उत्तर में भण्डार घर बनवाना चाहिये । तथा उक्त दो दो स्थानके बीच बीचमें क्रमसे दही मथने का, घृत रखने का, पैखाने का, विद्याभ्यास का, रोदन का, सुरत का, औषध रखने का और ८ वाँ शेष सब वस्तुओं का स्थान (घर या कमरा) बनाना चाहिये ॥२१॥

स्पष्टार्थ चक्र—

ई० पू० अ०

ईशान देवता	सर्ववस्तु	पूर्व स्नान	मन्थन	आग्नेय रसोई
औषध				घृतसंग्रह
उत्तर भण्डार				दक्षिणशयन
मैथुन				पाखाना
वायव्य धान्यसंग्रह	रोदन	पश्चिम भोजन	विद्याभ्यास	नैर्ऋत्य अस्त्र शस्त्र

उ० (बाएँ) द० (दाएँ)

वा० प० नै०

गृह की आयु के योग—

जीवार्कविच्छुक्रशनैश्चरेषु लग्नारिजामित्रसुखत्रिगेषु ।
स्थितिः शतं स्याच्छरदां सितार्कारेज्ये तनुत्र्यङ्गसुते शते द्वे ।२२।

अन्वयः—जीवार्कविच्छुक्रशनैश्चरेषु (क्रमशः) लग्नारिजामित्रसुखत्रिगेषु (गृहस्य) शरदां शतं स्थितिः स्यात् । सितार्कारेज्ये (क्रमशः) तनुत्र्यंगसुते द्वे शते स्थितिः स्यात् ॥ २२ ॥

भा०—गृहारम्भ समय में यदि बृहस्पति, सूर्य, बुध, शुक्र और शनि ये क्रम से लग्न, ६, ७, ४, ३ भावों में हो तो उस घर की आयु १०० सौ वर्ष होती है। तथा लग्न में शुक्र, तृतीय में सूर्य, षष्ठ भाव में मङ्गल और पञ्चम में बृहस्पति हो तो २०० दो सौ वर्ष उस घर की आयु होती है॥ २२॥

गृहकी आयु—

लग्नाम्बरायेषु भृगुज्ञभानुभिः केन्द्रे गुरौ वर्षशतायुरालयः।
बन्धौ गुरुर्व्योम्नि शशी कुजार्कजौ लाभे तदाऽशीतिसमायुरालयः

अन्वयः—भृगुज्ञभानुभिः लग्नाम्बरायेषु (स्थितैः सद्भिः), गुरौ केन्द्रे स्थिते सति आलयः वर्षशतायुः स्यात्। गुरुः बन्धौ, शशी व्योम्नि, कुजार्कजौ लाभे सति, अशीतिसमायुः आलयः स्यात्॥ २३॥

भा०—जिस घर के बनवाने के समय यदि लग्न, १०, ११ इन भावों में क्रम से शुक्र, बुध और सूर्य हो और गुरु केन्द्र में हो तो भी सौ वर्ष की आयु होती है। चतुर्थ में गुरु, दशम भाव में चन्द्रमा और एकादश में शनि या मङ्गल हो तो ८० वर्ष गृह की आयु होती है॥ २३॥

लक्ष्मीयुक्त गृहयोग—

स्वोच्चे शुक्रे लग्नगे वा गुरौ वेश्मगतेऽथ वा।
शनौ स्वोच्चे लाभगे वा लक्ष्म्या युक्तं चिरं गृहम्॥ २४॥

अन्वयः—शुक्रे स्वोच्चे लग्नगे वा गुरौ स्वोच्चे वेश्मगते अथवा शनौ स्वोच्चे लाभगे सति चिरं लक्ष्म्या युक्तं गृहं स्यात्॥ २४॥

भा०—यदि अपने उच्च (मीन) का शुक्र लग्न में, अथवा स्वोच्च (कर्क) का गुरु चतुर्थ भाव में, या स्वोच्च (तुला) का शनि एकादश भाव में हो तो ऐसे योग में गृह आरम्भ किया जाय तो वह चिरकाल पर्यन्त लक्ष्मी से युक्त रहता है॥ २४॥

पराये हाथ में गृह के जाने का योग—

द्यूनाम्बरे यदैकोपि परांशस्थो ग्रहो गृहम्।
अब्दान्तः परहस्तस्थं कुर्याच्चेद्वर्णपोऽबलः॥ २५॥

अन्वयः—यदा एकोऽपि ग्रहः परांशस्थः द्यूनाम्बरे स्थितः तथा चेत् वर्णपः अबलः तदा अब्दान्तः गृहं परहस्तस्थं कुर्यात्॥ २५॥

भा०—यदि गृहारम्भ समय में लग्न से ७ या १० वें भाव में शत्रु के नवमांश में कोई ग्रह हो तो वर्ष के भीतर ही वह घर दूसरों के हाथ में चला जाता है, यदि गृहपति का वर्णपति ग्रह निर्बल हो तभी यह फल समझना। अर्थात् ग्रह यदि अपने नवमांश में हो या वर्णपति सबल हो तो शुभ फल होता है॥ २५॥

गृहारम्भ में नक्षत्र-वार की विशेषता—

पुष्यध्रुवेन्दुहरिसर्पजलैः सजीवै-
स्तद्वासरेण च कृतं सुतराज्यदं स्यात् ।
द्वीशाश्वितक्षवसुपाशिशिवैः सशुक्रै-
र्वारे सितस्य च गृहं धनधान्यदं स्यात् ॥ २६ ॥

अन्वयः—सजीवैः पुष्यध्रुवेन्दुहरिसर्पजलैः (नक्षत्रैः) तद्वासरेण (गुरुवासरेण) च कृतं (भवनम्) सुतराज्यदं स्यात् । सशुक्रैः द्वीशाश्वितक्षवसुपाशिशिवैः सितस्य वारे च (कृतं) धनधान्यदं (भवेत्) ॥ २६ ॥

भा०—यदि गृहारम्भ समय में—बृहस्पतिसे युत पुष्य, ध्रुवसंज्ञक, मृगशिरा, श्रवण, आश्लेषा या पूर्वाषाढ़ा में से कोई नक्षत्र हो तथा बृहस्पति वार भी हो तो वह घर पुत्र और राज्य की वृद्धि करनेवाला होता है । तथा शुक्र युत—विशाखा, अश्विनी, चित्रा, धनिष्ठा, शतभिषा या आर्द्रा नक्षत्र हो तथा शुक्रवार भी हो तो वह घर धन-धान्य की वृद्धि करने वाला होता है ॥ २६ ॥

दूसरा योग—

सारैः करेज्यान्त्यमघाम्बुमूलैः कौजेऽह्नि वेश्माग्निसुतार्तिदं स्यात्
सज्ञैः कदास्वार्यमतक्षहस्तैर्ज्ञस्यैव वारे सुखपुत्रदं स्यात् ॥ २७॥

अन्वयः—सारैः करेज्यान्त्यमघाम्बुमूलैः (नक्षत्रैः) कौजे अह्नि (कृतं) वेश्म अग्निसुतार्तिदं स्यात् । सज्ञैः कदास्वार्यमतक्षहस्तैः ज्ञस्यैव वारे वेश्म सुखपुत्रदं स्यात् ॥ २७ ॥

भा०—यदि मङ्गल से युक्त हस्त, पुष्य, रेवती, मघा, पूर्वाषाढ या मूल नक्षत्र हो और मंगलवार हो तो वह घर अग्नि और सन्तान को पीड़ा देने वाला होता है । तथा बुध से युत रोहिणी, अश्विनी, उत्तरफाल्गुनी, चित्रा, हस्त नक्षत्र हो और बुधवार हो तो वह घर सुख और सन्तान की वृद्धि करने वाला होता है ॥ २७ ॥

अशुभयोग—

अजैकपादहिर्बुध्न्यशक्रमित्रानिलान्तकैः ।
समन्दैर्मन्दवारे स्याद्रक्षोभूतयुतं गृहम् ॥ २८ ॥

अन्वयः—समन्दैः अजैकपादहिर्बुध्न्यशक्रमित्रानिलान्तकैः मन्दवारे कृतं गृहं रक्षोभूतयुतं स्यात् ॥ २८ ॥

भा०—यदि शनि से युत पूर्वाभाद्र, उत्तरभाद्र, ज्येष्ठा, अनुराधा, स्वाती या भरणी नक्षत्र हो और शनिवार भी हो तो उस समय में बनाया हुआ घर राक्षस और भूत प्रेत से युक्त होता है ॥ २८ ॥

सूर्य नक्षत्र से द्वार चक्र—

सूर्यर्क्षाद्युगभैः शिरस्यथ फलं लक्ष्मीस्ततः कोणभै-
र्नागैरुद्वसनं ततो गजमितैः शाखासु सौख्यं भवेत् ।
देहल्यां गुणभैर्मृतिर्गृहपतेर्मध्यस्थितैर्वेदभैः
सौख्यं चक्रमिदं विलोक्य सुधिया द्वारं विधेयं शुभम् ॥२९॥

अन्वयः—सूर्यर्क्षात् शिरसि युगभैः (द्वारारम्भे सति) फलं लक्ष्मीः, अथ नागैः कोणभैः उद्वसनं, ततः शाखासु गजमितैः सौख्यं भवेत् । देहल्यां गुणभैः गृहपतेः मृतिः, मध्यस्थितैः वेदभैः सौख्यं स्यात् । सुधिया इदं चक्रं विलोक्य शुभं द्वारं विधेयम् ॥ २९ ॥

भा०—घर में नवीन द्वार बनाना हो तो सूर्य नक्षत्र से ४ नक्षत्र तक शिर के होते हैं। इनमें द्वार बनाने से लक्ष्मी की प्राप्ति, उसके आगे ८ नक्षत्र कोण के होते हैं उसमें द्वार बनाने से उद्वास, उसके बाद ८ नक्षत्र शाखा के होते हैं उसमें द्वार बनाने से सुख, उसके बाद ३ देहली के नक्षत्र होते हैं उसमें द्वार बनाने से गृहपति का मरण, उसके बाद ४ नक्षत्र मध्यभाग के होते हैं उसमें द्वार बनाया जाय तो सुख की प्राप्ति होती है ॥ २९ ॥

इति मुहूर्तचिन्तामणौ वास्तुप्रकरणम् ।

गृहप्रवेशप्रकरणम् ।

गृहप्रवेशमुहूर्त—

सौम्यायने ज्येष्ठतपोऽन्त्यमाधवे यात्रानिवृत्तौ नृपतेर्नवे गृहे ।
स्याद्वेशनं द्वाःस्थमृदुध्रुवोडुभिर्जन्मर्क्षलग्नोपचयोदये स्थिरे ॥१॥

अन्वयः—सौम्यायने ज्येष्ठतपोऽन्त्यमाधवे द्वाःस्थमृदुध्रुवोडुभिः जन्मर्क्षलग्नोपचयोदये स्थिरे यात्रानिवृत्तौ सत्यां नृपतेः नवे गृहे वेशनं शुभं स्यात् ॥ १ ॥

भा०—राजा को चाहिये कि—यात्रा से लौटने पर, या नवीन घर में उत्तरायण समय में, ज्येष्ठ, माघ, फाल्गुन, वैशाख मासों से द्वार दिशा के नक्षत्रों (कृत्तिकादि ७, ७ जो पूर्वादि दिशा में कहे गये हैं) उनमें तथा मृदुसंज्ञक, ध्रुवसंज्ञक नक्षत्रों में, जन्म लग्न और जन्म राशि से उपचय (३, ६, १०, ११) राशि तथा स्थिर राशि के लग्न में प्रवेश करे ॥ १ ॥

जीर्णगृहप्रवेशमुहूर्त—

जीर्णे गृहेऽग्न्यादिभयान्नवेऽपि मार्गोर्जयोः श्रावणिकेऽपि सन् स्यात्
वेशोऽम्बुपेज्यानिलवासवेषु नावश्यमस्तादिविचारणात्र ॥ २ ॥

अन्वयः—जीर्णे गृहे अग्न्यादिभयात् नवेऽपि गृहे मार्गोर्जयोः श्रावणिकेऽपि मासे वेशः [गृहप्रवेशः] सन् [शुभः] स्यात् । अम्बुपेज्यानिलवासवेषु [नक्षत्रेष्वपि] वेशः शुभः स्यात् । अत्र [गृहप्रवेशविषये] अस्तादिविचारणा नावश्यकी ॥ २ ॥

भा०—पुराने घर अथवा अग्नि आदि के भय से उसी स्थान पर बनाये नवीन घर में भी, अगहन, कार्तिक और श्रावण में भी तथा शतभिषा, पुष्य, स्वाती, धनिष्ठा नक्षत्रों में भी प्रवेश शुभ होता है। इसमें गुरु, शुक्रके अस्तादि दोष के विचार करने की आवश्यकता नहीं होती ॥ २ ॥

वास्तु पूजन और गृहप्रवेश विधि—

मृदुध्रुवक्षिप्रचरेषु मूलभे वास्त्वर्चनं भूतबलिश्च कारयेत् ।
त्रिकोणकेन्द्रायधनत्रिगैः शुभैर्लग्ने त्रिषष्ठायगतैश्च पापकैः ॥ ३ ॥
शुद्धाम्बुरन्ध्रे विजनुर्भमृत्यौ व्यर्कारिरिक्ताचरदर्शचैत्रे ।
अग्रेऽम्बुपूर्णं कलशं द्विजांश्च कृत्वा विशेद्वेश्म भकूटशुद्धम् ॥४॥

अन्वयः—मृदुध्रुवक्षिप्रचरेषु मूलभे वास्त्वर्चनं भूतबलिं च कारयेत् । शुभैः (ग्रहैः) त्रिकोणकेन्द्रायधनत्रिगैः (सद्भिः) च (पुनः) पापकैः त्रिषष्ठायगतैः शुद्धाम्बुरन्ध्रे, विजनुर्भमृत्यौ (लग्ने) व्यर्कारिरिक्ताचरदर्शचैत्रे तथा अग्रे अम्बुपूर्णं कलशं द्विजांश्च कृत्वा भकूटशुद्धं वेश्म (गृहं) विशेत् ॥ ३–४ ॥

भा०—मृदुसंज्ञक, ध्रुवसंज्ञक, क्षिप्रसंज्ञक, चरसंज्ञक, और मूल नक्षत्रों में वास्तुपूजन और भूतबलि करना चाहिये। और शुभ ग्रह ५, ९, १, ४, ७, १०, ११, २, ३, में हो और पापग्रह ३, ६, ११ स्थान में हो, लग्न से ४, ८ स्थान ग्रहवर्जित हो, जन्म राशि लग्न से ८ वीं राशि छोड़कर अन्य राशि लग्नमें हो, रवि, मंगलवार, रिक्ता तिथि, चर लग्न, अमावस्या और चैत्र मास इन सबों को छोड़कर अन्य दिन तिथि लग्न मासोंमें आगे पूर्ण कलश और ब्राह्मणोंको लेकर भकूटादि से शुद्ध किये हुए घर में प्रवेश करना चाहिये ॥ ३–४ ॥

गृह प्रवेश लग्न से वाम रविविचार—

वामो रविर्मृत्युसुतार्थलाभतोऽर्के पञ्चभे प्राग्वदनादिमन्दिरे ।
पूर्णातिथौ प्राग्वदने गृहे शुभो नन्दादिके याम्यजलोत्तरानने ॥५॥

अन्वयः—मृत्युसुतार्थलाभतः पञ्चभे अर्के (स्थिते सति) क्रमेण प्राग्वदनादिमन्दिरे वामः रविः स्यात् । पूर्णातिथौ प्राग्वदने गृहे नन्दादिके तिथौ याम्यजलोत्तरानने गृहे प्रवेशः शुभः स्यात् ॥ ५ ॥

भा०—गृह प्रवेश कालिक लग्न से ८, ९, १०, ११, १२ इन भावों में सूर्य हो तो पूर्व मुखवाले घरमें प्रवेश करने में वाम होता है। तथा

५, ६, ७, ८, ९ इन भावों में सूर्य हो तो दक्षिण मुख के घरमें प्रवेश करने में वाम होता है। २, ३, ४, ५, ६ इन भावों में सूर्य हो तो पश्चिम मुख के घर में प्रवेश करने में वाम भाग होता है। तथा ११, १२, १, २, ३ इन भावों में रवि हो तो उत्तर द्वार वाले घर में प्रवेश करने वाले को वाम रवि होता है। पूर्व मुखके घर में पूर्णा तिथि, दक्षिण मुख के घर में नन्दा तिथि, पश्चिम मुख के घर में भद्रा तिथि और उत्तर मुख के घर में जया तिथि प्रवेश में शुभ होती है ॥ ५ ॥

गृहप्रवेश में कुम्भ चक्र—

वक्त्रे भू रविभात्प्रवेशसमये कुम्भेऽग्निदाहः कृताः
प्राच्यामुद्वसनं कृता यमगता लाभः कृताः पश्चिमे।
श्रीर्वेदाः कलिरुत्तरे युगमिता गर्भे विनाशो गुदे
रामाः स्थैर्यमतः स्थिरत्वमनलाः कण्ठे भवेत् सर्वदा॥६॥

अन्वयः—कुम्भे (निर्मिते कुम्भनामके चक्रे) वक्त्रे रविभात् भूः (एकं नक्षत्रं) प्रवेशसमये (स्याच्चेत्तदा) अग्निदाहः स्यात्। प्राच्यां कृताः चत्वारः (स्युश्चेत्तदा) उद्वसनम्। कृताः याम्यगताः (तदा) लाभः स्यात्। पश्चिमे कृताः (तदा) श्रीः। उत्तरे वेदाः (स्युस्तदा) कलिः। गर्भे युगमिताः (तदा) विनाशः। गुदे रामाः (त्रयः स्युस्तदा) स्थैर्यम्। अतः अनलाः कण्ठे (स्युस्तदा प्रवेशे सति) सर्वदा स्थिरत्वं स्यात् ॥ ६ ॥

भा०—गृह प्रवेश समय में सूर्य जिस नक्षत्र में हो उससे १ नक्षत्र कलश के मुख का होता है उसमें प्रवेश करने से अग्निभय, उसके आगे के ४ नक्षत्र पूर्व दिशा के होते हैं उनमें प्रवेश करने से उद्वास (घर को छोड़कर चले जाना) होता है। उसके बाद के ४ नक्षत्र दक्षिण दिशा के होते हैं उनमें प्रवेश करने से धनादि सुख लाभ होता है। उससे आगे के ४ नक्षत्र पश्चिम दिशा के होते हैं उनमें प्रवेश करने से सम्पत्ति लाभ होता है। उसके बाद ४ नक्षत्र उत्तर दिशा के होते हैं उनमें गृह प्रवेश करने से कलह होता है। तदनन्तर ४ नक्षत्र गर्भ (भीतर) के होते हैं उनमें प्रवेश करने से विनाश होता है। उसके बाद ३ नक्षत्र अधोभाग के होते हैं उनमें प्रवेश करने से स्थिरता और उसके आगे के ३ नक्षत्र कण्ठ के होते हैं उनमें भी गृह प्रवेश करने से स्थिरत्व होता है ॥ ६ ॥

एवं सुलग्ने स्वगृहं प्रविश्य वितानपुष्पश्रुतिघोषयुक्तम्।
शिल्पज्ञदैवज्ञविधिज्ञपौरान् राजाऽर्चयेद्भूमिहिरण्यवस्त्रैः ॥ ७ ॥

अन्वयः—एवं राजा सुलग्ने वितानपुष्पश्रुतिघोषयुक्तं स्वगृहं प्रविश्य शिल्पज्ञदैवज्ञविधिज्ञपौरान् भूमिहिरण्यवस्त्रैः अर्चयेत् (पूजयेत्) ॥ ७ ॥

भा०—इस प्रकार वितान (चँदवा) फूल वन्दनवार आदि से सजे हुए वेदों के ध्वनि से युक्त अपने नवीन गृह में प्रवेश करके गृहपति

को चाहिये कि—शिल्पज्ञ (कारीगर), ज्यौतिषी (मुहूर्त बनाने वाले), विधिज्ञ (पुरोहित) तथा पुरवासियों का यथाशक्ति जमीन सुवर्ण-रुपया-वस्त्रादि से सत्कार करे ॥ ७ ॥

इति गृहप्रवेशप्रकरणम् ।

समाप्तोऽयं मुहूर्तचिन्तामणिः

—o:*:o—

ग्रन्थकारवंशप्रशस्तिः ।

आसीद्धर्मपुरे षडंगनिगमाध्येतृद्विजैर्मण्डिते
ज्योतिर्वित्तिलकः फणीन्द्ररचिते भाष्ये कृतातिश्रमः ।
तत्तज्जातकसंहितागणितकृन्मान्यो महाभूभुजां
तर्कालंकृतिवेदवाक्यविलसद्बुद्धिः स चिन्तामणिः ॥ १ ॥

ज्योतिर्विद्गणवंदितांघ्रिकमलस्तत्सूनुरासीत्कृती
नाम्नाऽनन्त इति प्रथामधिगतो भूमंडलाहस्करः ।
यो रम्यां जनिपद्धतिं समकरोद्दुष्टाशयध्वंसिनीं
टीकां चोत्तमकामधेनुगणितेऽकार्षीत् सतां प्रीतये ॥ २ ॥

तदात्मज उदारधीर्विबुधनीलकण्ठानुजो
गणेशपदपंकजं हृदि निधाय रामाभिधः ।
गिरीशनगरे वरे भुजभुजेषुचन्द्रैर्मिते (१५२२)
शके विनिरमादिमं खलु मुहूर्तचिन्तामणिम् ॥ ३ ॥

अन्वयः—षडङ्गनिगमाध्येतृद्विजैर्मण्डिते धर्मपुरे नगरे ज्योतिर्वित्तिलकः, फणीन्द्ररचिते भाष्ये कृतातिश्रमः, तत्तज्जातकसंहितागणितकृत् महाभूभुजां मान्यः, स चिन्तामणिः आसीत् । तत्सूनुः ज्योतिर्विद्गणवन्दितांघ्रिकमलः नाम्ना अनन्तः भूमंडलाहस्करः इति प्रथां अधिगतः आसीत्, यः दुष्टाशयध्वंसिनीं रम्यां जनिपद्धतिं समकरोत् । (पुनः) सतां प्रीतये उत्तमकामधेनुगणिते टीकां अकार्षीत् । तदात्मजः उदारधीः विबुधनीलकण्ठानुजः रामाभिधः वरे गिरीशनगरे (काशीपुरे) हृदि गणेशपदपङ्कजं निधाय भुजभुजेषुचन्द्रैर्मिते (१५२२) शके खलु इमं मुहूर्तचिन्तामणिं विनिरमात् रचितवान् ॥ १-३ ॥

भा०—व्याकरणादि साङ्ग वेदाध्ययन करने वाले ब्राह्मणों से परिपूर्ण परमसुन्दर धर्मपुर नामक ग्राममें ज्यौतिष शास्त्रज्ञों में श्रेष्ठ, शेष

कृत महाभाष्य को अच्छी तरह जाननेवाले जातक-संहिता और गणित ज्यौतिष ग्रन्थों के रचयिता, राजाओं के मान्य, न्याय साहित्य अलङ्कारादिकों में कुशाग्रबुद्धि वाले चिन्तामणि नामक पण्डित हुए। समस्त ज्यौतिष शास्त्रज्ञों से पूजित चरण कमल वाले उनके पुत्र अनन्त नामक पण्डित हुए, जो भूमण्डल में सूर्य के समान समझे जाते थे, जिन्होंने दूषित जन्मपत्र पद्धति को सुधार कर अतिशुद्ध जन्मपत्रपद्धति बनाई। तथा अति श्रेष्ठ 'कामधेनु' नामक ग्रन्थ की सरल टीका सज्जनों के प्रसन्नतार्थ लिखी। उनके पुत्र और नीलकण्ठ के छोटे सहोदर 'राम' ने श्रीगणेशजी के चरण कमल को हृदय में रखकर काशीपुरी में शाके १५२२ में इस मुहूर्तचिन्तामणि नामक ग्रन्थ को बनाया॥ १-३॥

अथ परिशिष्टप्रकरणम्।

नवीनभूमिमें गृह बनानेके पूर्व परमावश्यक बातें।

शुभाशुभ फल ज्ञानार्थ शिवाबलि—

रात्रौ मांसादिसंयुक्तं भक्तं भूमौ निधाय च।
कियद्दूरे ततो स्थित्वा तच्छब्दं परिचिन्तयेत्॥ १॥

भा०—जिस भूमि में वास करना हो उस भूमि में किसी अच्छे मुहूर्त में रात्रि के समय में मांस भात आदि की बलि रखकर वहाँ से कुछ दूर हटकर बैठे और सावधान होकर सुने कि उस बलिको खाकर शिवा (शृगाली सियार) वास्तु भूमिकी किस दिशामें शब्द करती है॥१॥

शिवाके शब्द का फल—

नैऋत्ये हि शिवा रौति तदा वासं न कारयेत्।
ईशाने मरणं प्रोक्तमुत्तरे शुभमादिशेत्॥
नादे वायव्यकोणेषु भयं किञ्चिद् विनिर्दिशेत्।
पश्चिमे वासकरणादानन्दः परिकीर्तितः॥
अन्यदिक्षु यदा रौति तदा वासं न कारयेत्॥ २॥

भा०—यदि बलिको खाकरके नैऋत्य कोण में शब्द करे तो उस स्थान में वास नहीं करना चाहिये। यदि वासभूमि के उत्तर में जाकर बोले तो वास करने से शुभ फल समझना। वायव्य कोण में शब्द करे तो भी वास करने से कुछ भय होता है। यदि पश्चिम भागमें जाकर शब्द करे तो वास करने से शुभ (आनन्द) समझना। अन्य दिशामें बोले तो उस स्थान में वास नहीं करना। अर्थात यदि बलिको खाकर शब्द नहीं करे तो उस स्थान को बसने योग्य समझे॥ २॥

अन्य प्रकार से भूमिपरीक्षा—

यत्र वृक्षाः प्ररोहन्ति सस्यं सम्यक् प्रवर्धते।
सा ज्ञेया जीविता भूमिर्मृता चातोऽन्यथा स्मृता ॥ ३ ॥

भा०—जिस भूमि में वृक्षादि रोपने से या अन्नादि बोने से अच्छी तरह से बढ़े और फले उस भूमि को जीवित समझे अन्यथा मृत समझना चाहिये। जीवित भूमि में वास करना चाहिये। मृत भूमि में वास नहीं करना चाहिये ॥ ३ ॥

भूमिपरीक्षा का तृतीय प्रकार—

श्वभ्रं हस्तमितं खनेदिह जलैः पूर्णं निशास्ये न्यसेत्।
प्रातर्दृष्टजलं स्थलं सदजलं मध्यं त्वसत् स्फाटितम् ॥ ४ ॥

भा०—सन्ध्याकाल में एक हाथ लम्बा एक हाथ चौड़ा तथा एक हाथ गहरा खात बनाकर उसको जलसे पूर्ण करे। प्रातःकाल उस खात में कुछ भी जल अवशेष रहे तो वह भूमि बसने में अत्यन्त शुभप्रद होती है। यदि जल शेष नहीं रहे तथा खातकी मिट्टी फटी न हो तो मध्यम समझना। यदि जल सूख जाय और मिट्टी छिन्न भिन्न होकर फट जाय तो अधम फल समझना चाहिये ॥ ४ ॥

भूमिके वर्ण—

शुक्लमृत्स्ना च या भूमिः ब्राह्मणी सा प्रकीर्तिता।
क्षत्रिया रक्तमृत्स्ना च हरिद् वैश्या प्रकीर्तिता ॥ ५ ॥
कृष्णा भूमिर्भवेच्छूद्रा चतुर्धा भूः प्रकीर्तिता।
श्वेता शस्ता द्विजेन्द्राणां रक्तभूमिर्महीभुजाम् ॥ ६ ॥
विशां पीता, च शूद्राणां कृष्णाऽन्येषां विमिश्रिता।

भा०—श्वेत वर्ण मिट्टी वाली भूमि ब्राह्मणी, लाल वर्णकी क्षत्रिया, हरेवर्ण की वैश्या और काली मिट्टी वाली भूमि शूद्रा कहलाती है। श्वेत वर्ण वाली भूमि ब्राह्मणोंके लिये, लालवर्ण क्षत्रियों के लिये, हरेवर्ण की वैश्यों के लिये और कृष्णवर्ण भूमि शूद्रों के लिये शुभप्रद होती है। अन्य वर्णों (म्लेच्छादिकों) के लिये मिश्रित वर्ण भूमि बसने योग्य होती है ॥ ५-६ ॥

भूमि प्लव (झुकाव) के फल—

शंभुकोणे प्लवा भूमिः कर्तुः श्रीसुखदायिनी ॥ ७ ॥
पूर्वप्लवा वृद्धिकरी धनदा तूत्तरप्लवा।
मृत्युशोकप्रदा नित्यं सर्वथा दक्षिणप्लवा ॥ ८ ॥
गृहक्षयकरी सा च या भूमिर्नैर्ऋतिप्लवा।
धनहानिकरी चैव कीर्तिदा वरुणप्लवा ॥ ९ ॥

वायुप्लवा च या भूमिः सा सदोद्वेगकारिणी ।

भा०—जिस भूमि में ईशान कोण की तरफ प्लव (झुकाव) अर्थात् पानी बहता हो वह बसने वाले को सम्पत्ति और सुख देनेवाली होती है। पूर्व दिशा में झुकी हुई भूमि सदा सुख सम्पत्ति को बढ़ाने वाली होती है। उत्तर दिशा में झुकी हुई भूमि धनवृद्धिकारिणी होती है। दक्षिण दिशामें झुकी भूमि मरण और शोक देनेवाली होती है। नैर्ऋत्यकोण में झुकी हुई भूमि गृह नाश करने वाली होती है। पश्चिम दिशा में झुकी हुई भूमि धन हानि करती है, किन्तु कीर्ति की वृद्धि करने वाली होती है। और वायु कोण में झुकी हुई भूमि सर्वदा उद्वेग करनेवाली होती है। इस प्रकार प्रथम भूमि की परीक्षा करके वास करना चाहिये ॥ ७-९½ ॥

विशेष—

मनसश्चक्षुषोर्यत्र सन्तोषो जायते भुवि ॥ १० ॥
तत्र कार्यं गृहं सर्वैरिति गर्गादिसम्मतम् ॥ १०½ ॥

भा०—गर्गादि आचार्यों का कहना है कि बसने वाले को जिस भूमि को देखने से मन प्रसन्न हो जाय वही भूमि उसके लिये शुभ होती है। शुभ लक्षणों से युक्त भूमिमें भी अपना मन प्रसन्न नहीं हो तो वहाँ वास नहीं करना चाहिये, और अशुभ लक्षण वाली भूमि को देखने से यदि अपने मन में प्रसन्नता हो तो उस भूमि में अवश्य वास करे। इस प्रकार उसको सदा शुभ फलकी प्राप्ति होती है ॥ १०½ ॥

गृहारम्भ में वर्जनीय भूमिशयन नक्षत्र—

प्रद्योतनात् पञ्च-नगाऽङ्क-सूर्य-नवेन्दु-षड्विंशमितानि भानि ।
शेते मही नात्र गृहं विधेयं तडागवापी-खननं न शस्तम् ॥ ११ ॥

भा०—जिस नक्षत्र में सूर्य हो उससे ५ वाँ, ७ वाँ, ९ वाँ, १२ वाँ, १९ वाँ और २६ वाँ इन नक्षत्रों में पृथिवी शयन करती है। इसलिये इनमें घरका आरम्भ या तालाब, वापी, कूप आदि का खनना नहीं करना चाहिये ॥ ११ ॥

वास्तु भूमि में शल्याशल्यका ज्ञान—

अ-क-च-ट-त-प-य-श-वर्णाः पूर्वादिषु सम्यगा ह्यपयाः ।
शल्यकरा इह नान्ये शल्यगृहे निवसतां नाशः ॥ १२ ॥

भा०—वास्तु भूमि में शल्य (हड्डी आदि) है या नहीं इसका विचार करना हो तो—वास्तुकर्ता अपने इष्टदेव के नाम का स्मरण कर ज्यौतिषी से प्रश्न पूछे। ज्यौतिषी को चाहिये कि प्रश्नकर्ता के मुख से जो शब्द निकले उसका प्रथम अक्षर ग्रहण करके शल्याशल्य का विचार करे। यथा—

भा०—यदि प्रश्न कर्ता के प्रश्न के प्रथम अक्षर में अ, क, च, ट,

इनसे ...
में वास करने से कर्ता की मृत्यु होती ...

शल्य ज्ञानार्थ चक्र—

पूर्व

ईशान्य				आग्नेय
	श	अ.	क.	
उत्तर	य	ह. प. य.	च	दक्षिण
वायव्य	प	त	ट	नैर्ऋत्य

पश्चिम

शल्य का रूप और फल—

पृच्छायां यदि अः प्राच्यां नरशल्यं तदा भवेत् ।
सार्धहस्तप्रमाणेन तच्च मानुष्यनाशकृत् ॥ १३ ॥
आग्नेयां यदि कः प्रश्ने शशशल्यं करद्वये ।
राजदण्डं भवेत्तत्र भयं नैव निवर्तते ॥ १४ ॥
याम्यायां यदि चः प्रश्ने कुर्यादाकटिसंस्थितम् ।
नरशल्यं गृहेशस्य मरणं चिररोगिताम् ॥ १५ ॥
नैर्ऋत्यां दिशि टः प्रश्ने सार्धहस्तादधस्तले ।
शुनोऽस्थि जायते तत्र बालानां जनयेन्मृतिम् ॥ १६ ॥
तः प्रश्ने पश्चिमायां तु शिशोः शल्यं प्रजायते ।
सार्धहस्तमिते तत्र स्वामिनं नेच्छति ध्रुवम् ॥ १७ ॥
वायव्यां दिशि यः प्रश्ने तुषाङ्गाराश्चतुः करे ।
कुर्वन्ति मित्रनाशं च दुःस्वप्नदर्शनं तथा ॥ १८ ॥
उदीच्यां दिशि यः प्रश्ने तदा शल्यं कटेरधः ।

वास्तुप्लवा च या भूमिः सा सदोद्वेगकारिणी ।

भा०—जिस भूमि में ईशान कोण की तरफ प्लव (झुकाव) अर्थात् पानी बहता हो वह बसने वाले को सम्पत्ति और सुख देनेवाली होती है । पूर्व दिशा में झुकी हुई भूमि सदा सुख सम्पत्ति वाली होती है । उत्तर दिशा [illegible] भवेदधः ।
है । दक्षिण दिशामें झुकी
नैर्ऋत्यकोण में [illegible] लोहं तत् कुलनाशकृत् ॥ २१ ॥

भा०—प्रश्न के प्रथम अक्षर 'अ' हो तो, वास्तु भूमि के पूर्व भाग में डेढ़ हाथ (१॥) नीचे मनुष्य की हड्डी समझना उससे मनुष्य का नाश कहना । यदि प्रथम अक्षर 'क' हो तो अग्नि कोण में २ हाथ नीचे खरोश की हड्डी समझे उससे सदा राजदण्ड होता है और भय बना रहता है । यदि 'च' हो तो दक्षिण भाग में कमर बराबर नीचे मनुष्य का शल्य समझना उससे गृहपति का मरण अथवा निरन्तर रोगी बना रहना होता है । यदि 'ट' हो तो नैर्ऋत्य भाग में कुत्ते की हड्डी १॥ डेढ़ हाथ नीचे रहती है उससे बच्चों का मरण होता है । यदि प्रथम अक्षर 'त' हो तो पश्चिम भाग में १॥ हाथ नीचे बच्चों की हड्डी रहती है— उससे गृहकर्त्ता की हानि होती है । यदि 'प' हो तो वायव्य कोण में ४ हाथ नीचे धान्य की भूसी, कोयला आदि रहता है उससे गृहपति के मित्रों के लिये अनिष्ट और दुःस्वप्नकारक होते हैं । यदि प्रथम अक्षर 'य' हो तो उत्तर भाग में कमर भर के नीचे शल्य रहता है उससे गृहपति कुबेर तुल्य भी हो तो निर्धन हो जाता है । यदि 'श' हो तो ईशान कोण में १॥ हाथ नीचे गोशल्य रहता है, वह गौ आदि पशुओं का नाशकारक होता है । तथा प्रश्न के प्रथम अक्षर ह, प, य, इनमें कोई हो तो वास्तु भूमि के मध्य भाग में छाती तुल्य नीचे मनुष्य का कपाल; भस्म या लोह रूप शल्य समझना । उससे वहाँ वास करने वाले के कुल का नाश होना कहना । इस प्रकार प्रश्न द्वारा शल्याशल्य विचार करके शल्य हो तो उसको निकलवा करके गृह निर्माण करे । प्रश्न के प्रथम अक्षर में 'प' हो तो वायव्य कोण और मध्य भाग दोनों स्थान में तथा 'य' हो तो मध्य भाग और उत्तर दोनों भाग में शल्य समझना चाहिये ॥ १३-२१ ॥

गृह में ग्रहों की दशा के अनुसार फल—

यन्नक्षत्रं गृहारम्भे तद्दशाक्रमभोग्यतः ।
विंशोत्तरीमतेनात्र दशां ज्ञात्वा फलं वदेत् ॥ २२ ॥

गजशरर्तु-युगाश्वकुवह्निदङ्मितशरा मघवादिदिशां क्रमात् ।
गृहपतेरभिधापुरदिङ्मिता नवहृता भवनस्य दशा रवेः ॥२३॥